साहित्य अकादेमी

(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

वार्षिकी

2017-2018

अध्यक्ष : डॉ. चंद्रशेखर कंबार

उपाध्यक्ष : श्री माधव कौशिक

सचिव : डॉ. के. श्रीनिवासराव

अनुक्रम

साहित्य अकादेमी के नव निर्वाचित अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष 4

साहित्य अकादेमी : संक्षिप्त परिचय 5

2017-2018 की प्रमुख गतिविधियाँ 8

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2017 11
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2017 15
साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2017 19
साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2017 23

कार्यक्रम

साहित्योत्सव 2017 27

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2017 अर्पण समारोह 28

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2016 अर्पण समारोह 44

युवा पुरस्कार 2017 अर्पण समारोह 47

बाल साहित्य पुरस्कार 2017 अर्पण समारोह 50

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद तथा सम्मेलन 55

वर्ष 2017-2018 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूची 123

वर्ष 2017-2018 में आयोजित शासकीय निकाय, भाषा परामर्श मंडलों तथा क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें 148

परियोजना एवं योजनाएँ 149

पुस्तक प्रदर्शनियाँ/पुस्तक मेले 153

प्रकाशित पुस्तकें 160

वार्षिक लेखा 185

साहित्य अकादेमी : नव निर्वाचित अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष

12 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् की 188वीं बैठक में दो लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों डॉ. चंद्रशेखर कंबार तथा डॉ. माधव कौशिक को क्रमशः अध्यक्ष और उपाध्यक्ष निर्वाचित किया गया, जिनका कार्यकाल वर्ष 2018 से 2022 तक पाँच वर्षों का होगा।

डॉ. चंद्रशेखर कंबार कन्नड के सुप्रसिद्ध कवि, नाटककार, लोक साहित्यकार, कन्नड फ़िल्म निर्देशक एवं शिक्षाविद् हैं। आप कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी के संस्थापक कुलपति रहे। उत्तर कर्नाटक की बोली को अपने नाटकों और कविताओं में प्रभावी रूप से अपनाने के कारण आपकी विशेष ख्याति है। आप कर्नाटक नाटक अकादमी और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के अध्यक्ष रहे। थोड़े समय के लिए शिकागो विश्वविद्यालय में शिक्षक के पश्चात् बंगलोर विश्वविद्यालय में आपने दो दशकों से भी अधिक समय तक अध्यापन किया। आपके 25 नाटक, 11 कविता-संग्रह, 5 उपन्यास और 16 शोध कृतियाँ प्रकाशित हैं। आपने लोक नाट्य, साहित्य और शिक्षा पर अनेक विद्वत्तापूर्ण आलेख लिखे हैं। बड़ी संख्या में आपके नाटकों का विभिन्न भारतीय भाषाओं सहित अंग्रेज़ी में अनुवाद और मंचन हुआ है। आपने कर्नाटक सरकार तथा भारत सरकार के लिए 5 फ़ीचर फ़िल्मों और अनेक वृत्तचित्रों का निर्माण किया है, जिनमें से कई को राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। आपने भारतीय लोक साहित्य और रंगमंच पर अनेक शोध आलेख भारत तथा विदेशों में प्रस्तुत किए हैं। आपको अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से विभूषित किया गया है, जिनमें प्रमुख हैं—भारत सरकार द्वारा पद्मश्री अलंकरण, ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादेमी पुरस्कार, संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार, संगीत नाटक अकादेमी फ़ेलोशिप, कबीर सम्मान, कालिदास सम्मान, नदोजा पुरस्कार, पम्प पुरस्कार तथा कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार।

श्री माधव कौशिक हिंदी के प्रख्यात कवि और लेखक हैं। आपकी दो दर्ज़न से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनमें काव्य-संग्रह, कहानी-संग्रह, बाल साहित्य आदि शामिल हैं। आपकी कुछ पुस्तकों का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। आपने टेली फ़िल्मों के लिए गीत एवं पटकथा लेखन भी किया है तथा टी.वी. और रेडियो के अनेक कार्यक्रमों में सहभागिता की है। आपकी कुछ रचनाएँ पंजाब के विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल हैं। आप चंडीगढ़ साहित्य अकादमी के पूर्व सचिव, पूर्व उपाध्यक्ष एवं वर्तमान में अध्यक्ष तथा हरियाणा साहित्य अकादमी की शासकीय परिषद् के सदस्य हैं। आपको अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से अलंकृत किया गया है, जिनमें प्रमुख हैं—हरियाणा साहित्य अकादमी पुरस्कार, बाबू बाल मुकुंद गुप्त सम्मान, अखिल भारतीय बलराज साहनी सम्मान, रवींद्रनाथ वशिष्ठ सम्मान, राष्ट्रीय हिंदी सेवी सहस्राब्दी सम्मान, अब्र सीमाबी सम्मान।

साहित्य अकादेमी

साहित्य अकादेमी भारत की एक प्रमुख साहित्यिक संस्था है, जो स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के साहित्य का संरक्षण एवं उन्हें प्रोत्साहन देती है। यह संस्था पूरे साल कार्यक्रमों का आयोजन भारतीय भाषाओं के लेखकों को पुरस्कार अर्पण तथा महत्तर सदस्यताएँ प्रदान करती है तथा स्वयं द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करती है।

अकादेमी ने अपने छह दशकों से अधिक समय के गतिशील अस्तित्व द्वारा 24 भाषाओं में 7000 हज़ार से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। अकादेमी मूल कृतियों के प्रकाशन के साथ ही अनुवाद, जिनमें—कथासाहित्य, कविता, नाटक तथा समालोचना भी शामिल हैं, के अलावा कालजयी, मध्यकालीन, पूर्व-आधुनिक तथा समकालीन साहित्य का भी प्रकाशन करती है। अकादेमी उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रोत्साहित करने में भी संलग्न है।

भारत में अकादेमी पुरस्कारों को सर्वाधिक प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार माना जाता है। साहित्य अकादेमी पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तक(कों) को प्रदान किया जाता है। भाषा सम्मान उन लेखकों/विद्वानों/संपादकों/संकलनकर्ताओं/अदाकारों/अनुवादकों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने उन भाषाओं के प्रचार-प्रसार एवं उन्हें समृद्ध करने के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो, जिन भाषाओं को साहित्य अकादेमी की औपचारिक मान्यता प्राप्त नहीं है तथा इसके अलावा जिन्होंने देश के कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो। अनुवाद पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यता प्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट अनुवादों को प्रदान किया जाता है, बाल साहित्य पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रदान किया जाता है तथा युवा पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट युवा भारतीय लेखकों को प्रदान किया जाता है। ये सारे पुरस्कार अकादेमी द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रदान किए जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष अकादेमी कम से कम 50 संगोष्ठियों का क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करती है तथा इसके अतिरिक्त 400 से अधिक साहित्यिक कार्यक्रमों, कार्यशालाओं तथा संवाद कार्यक्रमों का आयोजन करती है। अकादेमी के कुछ लोकप्रिय कार्यक्रम हैं—लेखक से भेंट (जिसमें कोई प्रख्यात लेखक अपने जीवन एवं कृतियों की चर्चा करता है), संवत्सर व्याख्यान (इसमें भारतीय साहित्य की गहन जानकारी रखनेवाला प्रख्यात लेखक/सृजनात्मक विचारक व्याख्यान देता है), कवि-अनुवाद (इस कार्यक्रम के अंतर्गत श्रोताओं को मूल एवं अनूदित दोनों कविताओं को एक साथ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), व्यक्ति एवं कृति (इसके अंतर्गत अंतः अनुशासनिक क्षेत्रों के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया जाता है), कथासंधि (इस कार्यक्रम के अंतर्गत नव-लिखित उपन्यास या नई कहानियों का एकल पाठ होता है तथा उन पर चर्चा की जाती है), कविसंधि (इसमें काव्य-प्रेमियों को कवि/कवयित्री द्वारा एकल कविता-पाठ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), लोक : विविध स्वर (यह कार्यक्रम लोक-साहित्य पर आधारित है, जिसमें व्याख्यानों के साथ-साथ प्रदर्शन भी सम्मिलित हैं), नारी चेतना (यह कार्यक्रम भारतीय भाषाओं में लिखनेवाली महिला साहित्यकारों को एक मंच प्रदान करता है), युवा साहिती (यह एक नया कार्यक्रम है, जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों को प्रोत्साहित किया जाता है), पूर्वोत्तरी (इस शृंखला में पूर्वोत्तर के लेखकों/साहित्यकारों को देश के विभिन्न प्रांतों में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में रचना-पाठ हेतु आमंत्रित किया जाता है), ग्रामालोक (ग्रामीण अंचलों में साहित्यिक आयोजन तथा अनुवाद कार्यशालाएँ (इसके अंतर्गत देश के विभिन्न प्रांतों के अनुवादकों को एक साथ आमंत्रित किया जाता है)। अकादेमी प्रत्येक वर्ष साहित्योत्सव का आयोजन करती है। अकादेमी अपने नई दिल्ली स्थित जनजातीय और वाचिक साहित्य केंद्र तथा इंफ़ाल में स्थित वाचिक पूर्वोत्तर साहित्य केंद्र द्वारा देश में जनजातीय और वाचिक साहित्य को प्रोत्साहित करती है।

अकादेमी भारतीय साहित्य की सेवा करनेवाले प्रख्यात भारतीय लेखकों तथा विदेशी विद्वानों को फ़ेलोशिप भी प्रदान करती है। अकादेमी द्वारा आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप उन एशियाई देशों के विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारत में अपनी पसंद की किसी साहित्यिक परियोजना पर कार्य करते हैं तथा प्रेमचंद फ़ेलोशिप सार्क (SAARC) देशों के उन सृजनात्मक लेखकों अथवा विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारतीय साहित्य पर शोध करते हैं।

अकादेमी द्वारा भारतीय लेखकों पर विनिबंध, एनसाइक्लोपीडिया तथा संचयन जैसी प्रमुख परियोजनाओं का कार्य भी किया जाता है। हाल ही में संस्कृति मंत्रालय ने 'इंडियन लिटरेचर एब्रॉड' नामक एक नई परियोजना अकादेमी को सौंपी है, जिसके अंतर्गत वैश्विक स्तर पर भारतीय साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए उसका विदेशी भाषाओं में अनुवाद कराया जाना है। इसके माध्यम से अकादेमी भारतीय साहित्यिक विरासत को प्रोत्साहित कर सकेगी तथा प्रमुख विदेशी भाषाओं में समकालीन भारतीय साहित्य का अनुवाद भी करा सकेगी। अकादेमी विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों का भी आयोजन करती है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष कई लेखकों के प्रतिनिधिमंडल एक-दूसरे देशों में आयोजित होनेवाले साहित्यिक कार्यक्रमों, पुस्तक मेलों तथा सम्मिलनों में भाग लेते हैं।

अध्यक्ष

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। फ़रवरी 1968 में नवगठित परिषद् ने डॉ. ज़ाकिर हुसैन को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया। मई 1969 में उनके निधन के पश्चात् परिषद् ने डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी को अध्यक्ष चुना। फ़रवरी 1973 में वह परिषद् द्वारा पुनः अध्यक्ष चुने गए। मई 1977 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उपाध्यक्ष प्रो. के. आर. श्रीनिवास आयंगर साहित्य अकादेमी के कार्यवाहक अध्यक्ष बनाए गए। फ़रवरी 1978 में प्रो. उमाशंकर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1983 में प्रो. वी.के. गोकाक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1988 में डॉ. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1993 में प्रो. यू.आर. अनंतमूर्ति अध्यक्ष चुने गए। 1998 में श्री रमाकांत रथ अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2003 में प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2008 में श्री सुनील गंगोपाध्याय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2013 में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया।

संविधान

साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार के 15 दिसंबर 1952 के प्रस्ताव के अंतर्गत हुई, जिसमें अकादेमी का संविधान मूलतः अंतर्भुक्त था। अकादेमी एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करती है और अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने का अधिकार अकादेमी की सामान्य परिषद् में न्यस्त है। समय-समय पर इस अधिकार का प्रयोग भी किया जाता रहा है।

मान्यताप्रदत्त भाषाएँ

भारत के संविधान में परिगणित बाईस भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी और राजस्थानी को ऐसी भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान कर चुकी है, जिसमें उसका कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा सकता है। इन 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यक्रम लागू करने के लिए परामर्श मंडल गठित किए गए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं—असमिया, बाङ्ला, बोडो, डोगरी, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम्, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिळ, तेलुगु और उर्दू।

संगठन

प्रधान कार्यालय : साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। यह भव्य भवन रवींद्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियाँ—संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी और साहित्य अकादेमी स्थित हैं।

यह कार्यालय ग्यारह भाषाओं यथा—डोगरी, अंग्रेज़ी, हिंदी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता : सन् 1956 में स्थापित और अब 4, डी.एल.खान रोड (एस.एस.के.एम. अस्पताल के निकट) कोलकाता-700025 में स्थित यह क्षेत्रीय कार्यालय असमिया, बाङ्ला, बोडो, मणिपुरी और ओड़िया में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा इसके अलावा यह अन्य उत्तर-पूर्वी भाषाओं में भी कार्यक्रमों का संयोजन करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु : साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1990 में हुई। इस दक्षिण ाी क्षेत्रीय कार्यालय की मूलतः स्थापना 1959 में चेन्नै में हुई थी तथा बाद में इसे 1990 में सेंट्रल कॉलेज परिसर, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बिल्डिंग, डॉ.बी.आर. आंबेडकर वीधी, बेंगळूरु-560001 में स्थानांतरित कर दिया गया। यह क्षेत्रीय कार्यालय कन्नड, मलयाळम्, तमिळ और तेलुगु में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

चेन्नै कार्यालय : दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1959 में चेन्नै में की गई थी तथा 1990 में उसे उप कार्यालय के रूप में परिवर्तित कर क्षेत्रीय कार्यालय को बेंगळूरु में स्थानांतरित कर दिया गया। चेन्नै उप कार्यालय तमिळ में अकादेमी के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा यह मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नै-600018 में स्थित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई : सन् 1972 में स्थापित और 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400014 में स्थित यह कार्यालय गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी में अकादेमी के प्रकाशनों और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

प्रकाशनों की बिक्री : साहित्य अकादेमी का बिक्री विभाग 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के प्रकाशनों की बिक्री नई दिल्ली स्थित मुख्यालय और मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु और चेन्नै कार्यालयों तथा कश्मीरी गेट एवं विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशन स्थित बिक्री केंद्र से भी की जाती है।

पुस्तकालय : साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ अकादेमी द्व ारा मान्यता प्राप्त चौबीस भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं के केंद्रों के रूप में स्थापित किया गया है और उन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भाषा पुस्तकालयों के लिए यह संपर्क संस्था के रूप में कार्य करता है।

साहित्य अकादेमी वेबसाइट : साहित्य अकादेमी की वेबसाइट http://www.sahitya-akademi.gov.in में इसकी स्थापना, उद्देश्यों, साहित्य अकादेमी की भूमिका एवं उसके इतिहास के विवरण उपलब्ध हैं। इसके अलावा अकादेमी की पुस्तकों की संपूर्ण सूची, जिसमें महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों का भाषानुसार विवरण उपलब्ध है, उसकी पत्रिकाओं, साहित्यिक गतिविधियाँ, विशेष परियोजनाओं के बारे में सूचनाएँ, अकादेमी पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यता के विवरण, पुस्तकालय के बारे में सूचना तथा गत वर्षों में संस्था की उपलब्धियों का मूल्यांकन उपलब्ध है। अकादेमी वेबसाइट को नियमित रूप से द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेज़ी) रूप में अद्यतन किया जाता है।

2017-2018 की प्रमुख गतिविधियाँ

- अकादेमी पुरस्कार 2017 प्रदत्त।
- अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2016 प्रदत्त।
- अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2017 प्रदत्त।
- अकादेमी युवा पुरस्कार 2017 प्रदत्त।
- भाषा सम्मान प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यताएँ प्रदत्त।
- एक नई कार्यक्रम शृंखला 'ग्रामालोक' का शुभारंभ।
- अपने इतिहास में पहली बार, अकादेमी ने लक्ष्यद्वीप और नागालैण्ड में कार्यक्रम का आयोजन किया।
- देशभर में कुल 555 कार्यक्रमों का आयोजन
  - ❖ 55 संगोष्ठियों, 88 परिसंवादों तथा 2 भाषा सम्मेलनों का आयोजन।
  - ❖ 115 साहित्य मंच कार्यक्रमों का आयोजन।
  - ❖ 'लोक : विविध स्वर' शृंखला के अंतर्गत 10, मुलाक़ात शृंखला के अंतर्गत 4, 'युवा साहिती' शृंखला के अंतर्गत 5, 'कथासंधि' शृंखला के अंतर्गत 16, 'कविसंधि' शृंखला के अंतर्गत 24, 'अस्मिता' शृंखला के अंतर्गत 9, 'बहुभाषी सम्मिलन' के अंतर्गत 7, 22 लेखक सम्मिलन, 12 जनजातीय और वाचिक साहित्य कार्यक्रम, 17 पूर्वोत्तर एवं क्षेत्रीय सम्मिलन, 11 नारी चेतना, 12 मेरे झरोखे से, 15 लेखक से भेंट, 5 व्यक्ति और कृति, 7 अनुवाद कार्यशालाओं तथा 6 सृजनात्मक लेखन कार्यशालाओं के अलावा 113 से अधिक विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों का समस्त भारत में आयोजन किया गया।
- 524 नई एवं पुनर्मुद्रित पुस्तकें प्रकाशित।
- वर्ष 2017-18 में 197 पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन एवं सहभागिता।
- साहित्य अकादेमी पुस्तकालयों में 1147 और नई पुस्तकें जुड़ीं।
- प्रख्यात भारतीय लेखकों पर 6 वृत्तचित्रों का निर्माण। साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों की कुल संख्या बढ़कर अब 136 हो गई।
- *इंडियन लिटरेचर* के 6 अंकों, *समकालीन भारतीय साहित्य* के 6 अंकों तथा *संस्कृत प्रतिभा* के 4 अंकों का प्रकाशन।

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार **2017**

21 दिसंबर 2017 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2017 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार के लिए 24 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2011 से 31 दिसंबर 2015 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार **2017** से सम्मानित लेखक

असमिया : जयंत माधव बर', *मरियाहोला* (उपन्यास)

बाङ्ला : आफसार आमेद, *सेइ निखोंज मानुषटा* (उपन्यास)

बोडो : रीता बर', *थैसाम* (उपन्यास)

डोगरी : शिव मैहता, *बन्नां* (कहानी-संग्रह)

अंग्रेज़ी : ममंग दई, *द ब्लैक हिल* (उपन्यास)

गुजराती : उर्मि घनश्याम देसाई, *गुजराती व्याकरणनां बसो वर्ष* (साहित्यिक आलोचना)

हिंदी : रमेश कुंतल मेघ, *विश्वमिथकसरित्सागर* (साहित्यिक समालोचना)

कन्नड : टी.पी. अशोक, *कथन भारती* (साहित्यिक समालोचना)

कश्मीरी : अवतार कृष्ण रहबर, *येलि पर्द वोथ* (कहानी-संग्रह)

कोंकणी : गजानन रघुनाथ जोग, *खांद आनी हेर कथा* (कहानी-संग्रह)

मैथिली : उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', *जहलक डायरी* (कविता-संग्रह)

मलयाळम् : के.पी. रामनुन्नी, *दैवतिंटे पुस्तकम* (उपन्यास)

मणिपुरी : राजेन तोइजांबा, *चही तरेत् खुंताकपा* (नाटक)

मराठी : श्रीकांत देशमुख, *बोलावें ते आम्ही...* (कविता-संग्रह)

नेपाली : वीणा हाङ्गखिम, *कृति विमर्श* (साहित्यिक समालोचना)

ओड़िया : गायत्री सराफ, *इटाभाटिर शिल्पी* (कहानी-संग्रह)

पंजाबी : नछत्तर, *स्लो डाउन* (उपन्यास)

राजस्थानी : नीरज दइया, *बिना हासलपाई* (समालोचना)

संस्कृत : निरंजन मिश्र, *गंगापुत्रावदानम्* (महाकाव्य)

संताली : भुजंग टुडू, *ताहेनाञ ताडिरे* (कविता-संग्रह)

सिंधी : जगदीश लछाणी, *आछींदे लज़ मरां* (निबंध-संग्रह)

तमिऴ : (स्व.) इंक़लाब, *कानधाल नाटकळ* (कविता-संग्रह)

तेलुगु : टी. देवीप्रिया, *गालीरंगु* (कविता-संग्रह)

उर्दू : बेग एहसास, *दख़्मा* (कहानी-संग्रह)

जयंत माधव बर'

आफसार आमेद

रीता बर'

शिव मेहता

ममंग दई

उर्मि घनश्याम देसाई

रमेश कुंतल मेघ

टी.पी. अशोक

अवतार कृष्ण रहबर

गजानन रघुनाथ जोग

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

के.पी. रामनुन्नी

राजेन तोइजांबा

श्रीकांत देशमुख

वीणा हाङ्गखिम

गायत्री सराफ

नछत्तर

नीरज दइया

निरंजन मिश्र

भुजंग टुडू

जगदीश लछाणी

टी. देवीप्रिया

बेग एहसास

साहित्य अकादेमी पुरस्कार **2017** के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
1. सुश्री लीना शर्मा
2. डॉ. लक्ष्मीनंदन बोरा
3. प्रो. सैलेन भराली

बाङ्ला
1. प्रो. अमित्र सूदन भट्टाचार्य
2. श्री बुद्धदेव दासगुप्ता
3. श्री देवेश राय

बोडो
1. डॉ. अदराम बसुमतारी
2. प्रो. दुर्गेश्वर बोरो
3. डॉ. रबिराम रामचियारी

डोगरी
1. डॉ. ज्ञान सिंह
2. श्री ज्ञानेश्वर
3. डॉ. ओम गोस्वामी

अंग्रेज़ी
1. श्री हरीश नारंग
2. प्रो. जुनिता वार
3. प्रो. श्यामला ए. नारायण

गुजराती
1. प्रो. कांतिलाल पटेल
2. श्री नरेश वेद
3. श्रीमती वर्षा अदालजा

हिंदी
1. डॉ. सदानंद गुप्त
2. श्री विजय बहादुर सिंह
3. सुश्री नासिरा शर्मा

कन्नड
1. डॉ. जी.एम. हेगड़े
2. डॉ. शांता इमरापुरा
3. डॉ. शिवराम पादिक्कल

कश्मीरी
1. प्रो. फ़ारूक़ नाज़की
2. श्री मनसूर बानिहाली
3. प्रो. ओ.एन. कॉल

कोंकणी
1. श्री रमेश वेलुस्कर
2. श्री महाबलेश्वर सैल
3. प्रो. एस.एम. बर्गीस

मैथिली
1. डॉ. ब्रजकिशोर मिश्र
2. श्री राजनंदन लालदास
3. श्री तुलानंद मिश्र

मलयाळम्
1. डॉ. अजयपुरम ज्योतिष कुमार
2. डॉ. एन. अनिल कुमार
3. डॉ. प्रभावर्मा

मणिपुरी
1. डॉ. के. नयन चंद सिंह
2. प्रो. ख. कुंज सिंह
3. प्रो. थोइदिङजम थोम्बी सिंह

मराठी
1. श्री जयंत पवार
2. सुश्री पुष्पा भावे
3. श्री सदानंद मोरे

नेपाली
1. सुश्री इंद्रमणि दरनाल
2. श्री लक्ष्मण श्रीमल
3. श्री पेम्पा तमाङ

ओड़िया
1. प्रो. मधुसूदन पाति
2. श्री शांतनु कुमार आचार्य
3. डॉ. सौभाग्य कुमार मिश्र

पंजाबी
1. प्रो. देविंदर सिंह
2. श्री जसबीर सिंह सिंधु
3. श्री केवल धालिवाल

राजस्थानी
1. डॉ. देव कोठारी
2. डॉ. कल्याण सिंह शेखावत
3. श्री शिवराज छनगानी

संस्कृत
1. प्रो. दीप्ति त्रिपाठी
2. प्रो. हरिदत्त शर्मा
3. प्रो. कुटुम्ब शास्त्री

संताली
1. श्री गोविंद चंद्र माझी
2. डॉ. जे.एन. मुर्मू
3. डॉ. रत्न चंद्र हेम्ब्रम

सिंधी
1. डॉ. दयाल आशा
2. श्री वासदेव मोही
3. श्री विम्मी सदरंगाणी

तमिऴ
1. श्री इंद्रन
2. श्री प. जयप्रकाशम
3. श्री पोन्नीलन

तेलुगु
1. श्री ए.एन. जगन्नाथ शर्मा
2. श्री के. शिव रेड्डी
3. डॉ. संपत कुमार

उर्दू
1. प्रो. अशरफ़ रफ़ी
2. श्री नंद किशोर विक्रम
3. श्री सलाम बिन रज़्ज़ाक़

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार **2017**

21 दिसंबर 2017 को नई दिल्ली में अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2017 के लिए 24 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। अंग्रेज़ी और मलयाळम् के पुरस्कार की घोषणा बाद में की गई। अनुवाद पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा में चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2011 से 31 दिसंबर 2015 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

अनुवाद पुरस्कार **2017** से सम्मानित अनुवादक

असमिया : (स्व.) बाबुल तामुली, *एटि कलि दुटि पात* (टू लीव्स एंड ए बड, अंग्रेज़ी उपन्यास—मुल्कराज आनंद)

बाङ्ला : (स्व.) उत्पल कुमार बसु, *केवल आत्माइ जाने किभावे गान गाइते हय* (ओनली द सोल नोज़ हाउ टू सिंग, अंग्रेज़ी कविता-संचयन—कमला दास)

बोडो : गबिन्द बसुमतारी, *गाद्दार* (गद्दार, हिंदी उपन्यास—कृश्न चंदर)

डोगरी : यश रैणा, *पिछलग्ग* (आंगलियात, गुजराती उपन्यास—जोसेफ़ मेकवान)

अंग्रेज़ी : रंजिता विश्वास, *रिटेन इन टीयर्स* (चयनित असमिया कहानियाँ तथा उपन्यासिका—अरूपा पतंगीया कलिता)

गुजराती : हरीश मीनाश्रु, *हम्पीना खदको* (रॉक्स ऑफ़ हम्पी, कन्नड कविता-संग्रह का अंग्रेज़ी अनुवाद—चंद्रशेखर कंबार)

हिंदी : प्रतिभा अग्रवाल, *अभिनय नाटक मंच* (अभिनय नाटक मंच, बाङ्ला निबंध-संग्रह—शंभु मित्र)

कन्नड : एच.एस. श्रीमती, *महाश्वेता देवी आवरा कथा साहित्य-1 एवं 2* (महाश्वेता देवी कृत चुनिंदा बाङ्ला कहानियाँ)

कश्मीरी : इक़बाल नाज़की, *आराम कुर्सी* (चायवु नारकालि, तमिऴ उपन्यास—तोप्पिल मोहम्मद मीरान)

कोंकणी : प्रशांती तळपणकार, *दीर्घ मौन तें* (दैट लांग साइलेंस, अंग्रेज़ी उपन्यास—शशि देशपांडे)

मैथिली : इंद्र कांत झा, *आंगलियात* (आंगलियात, गुजराती उपन्यास—जोसेफ़ मेकवान)

मलयाळम् : के.एस. वेंकिटाचलम, *अग्रहारातिले पूचा* (जयकांतन कृत चुनिंदा तमिऴ कहानियाँ)

मणिपुरी : नाओरेम विद्यासागर सिंह, *मणिमहेश* (मणिमहेश, बाङ्ला यात्रावृत्त—उमाप्रसाद मुखोपाध्याय)

मराठी : सुजाता लक्ष्मीकांत देशमुख, *गौहर जान म्हणतात मला!* (माई नेम इज़ गौहर जान, अंग्रेज़ी जीवनी—विक्रम संपत)

नेपाली : चंद्रमणि उपाध्याय, *जीवनका बाटामा* (जीवनर बाटत, असमिया उपन्यास—वीणा बरुवा)

ओड़िया : सूर्यमणि खुंटिआ, *युगांत* (युगांत, महाभारत की मराठी कथा—इरावती कर्वे)

पंजाबी : जिंदर, *रामदरश मिश्र दीआं चोणवीयां कहाणीयां* (रामदरश मिश्र का हिन्दी कहानी-संकलन)

राजस्थानी : कृष्णा जाखड़, *गाथा तिस्ता पार री* (तिस्ता पारेर बृत्तांत, बाङ्ला उपन्यास—देवेश राय)

संस्कृत : प्रवीण पण्ड्या, *सौंदर्यस्रोतस्विनी नर्मदा,* (सौंदर्यना नदी नर्मदा, गुजराती यात्रा-वृत्तांत—अमृतलाल वेगड़)

संताली : सूर्य सिंह बेसरा, *माटकॅम रस* (मधुशाला, हिंदी काव्य—हरिवंशराय बच्चन)

सिंधी : अर्जुन चावला, *सरहद तान* (सरहद से, हिंदी कविता-संग्रह—मनोहर बाथम)

तमिऴ : युमा वासुकि, *कासाक्किन इतिकासम* (कासक्किन्टे इतिहासम, मलयाळम् उपन्यास—ओ.वी. विजयन)

तेलुगु : वेन्ना वल्लभराव, *विराममेरुगनी पयनम* (ख़ानाबदोश, पंजाबी आत्मकथा—अजीत कौर)

उर्दू : महमूद अहमद सहर, *कालिदास की अज़ीम शायरी : मेघदूत (खंड-1)* (मेघदूत, संस्कृत महाकाव्य—कालिदास)

(स्व.) बाबुल तामुली

(स्व.) उत्पल कुमार बसु

गबिंद बसुमतारी

यश रैणा

रंजिता विश्वास

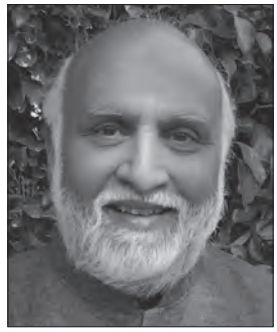

हरीश मीनाश्रु

प्रतिभा अग्रवाल

एच.एस.श्रीमती

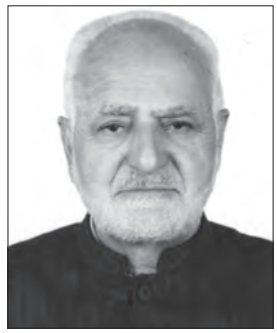

इक़बाल नाज़की

प्रशांती तळपणकार

इंद्र कांत झा

के.एस. वेंकिटाचलम

नाओरेम विद्यासागर सिंह

सुजाता लक्ष्मीकांत देशमुख

चंद्रमणि उपाध्याय

सूर्यमणि खुंटिआ

जिंदर

कृष्णा जाखड़

प्रवीण पण्ड्या

सूर्य सिंह बेसरा

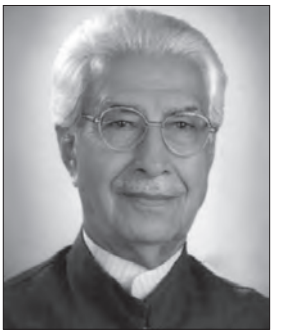

अर्जुन चावला

युमा वासुकि

वेन्ना वल्लभराव

महमूद अहमद सहर

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार **2017** के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. डॉ. कुतबुद्दीन अहमद
2. डॉ. लीलावती सइकिया बर'
3. डॉ. उमेश डेका

बाङ्ला

1. प्रो. सुदेशना चक्रवर्ती
2. प्रो. सुकांत चौधुरी
3. श्रीमती शुभा चक्रवर्ती दासगुप्ता

बोडो

1. श्री अलींद्र ब्रह्म
2. श्री मानेश्वर बसुमतारी
3. श्री उपेंद्र बर' (यू.देउरी)

डोगरी

1. श्री दर्शन दर्शी
2. डॉ. रतन बसोत्रा
3. श्री कृष्ण शर्मा

अंग्रेज़ी

1. डॉ. प्रदीप देशपांडे
2. सुश्री वनमाला विश्वनाथ
3. प्रो. बी.एम. भल्ला

गुजराती

1. प्रो. जयेंद्र एम. पटेल (जे. शेखादिवाला)
2. श्री प्रकाश एन. शाह
3. श्री वीणेश अंताणी

हिंदी

1. प्रो. गोपीनाथन
2. प्रो. पवन अग्रवाल
3. डॉ. रामशंकर द्विवेदी

कन्नड

1. श्रीमती जे.एन. तेजाश्री
2. प्रो. तेजस्वी कट्टिमणि
3. डॉ. के.आर. संध्या रेड्डी

कश्मीरी

1. श्री नाजी मुनव्वर
2. श्री रफ़ीक़ राज़
3. प्रो. रतन लाल शांत

कोंकणी

1. श्री पुंडलीक एन. नाइक
2. श्री श्रीधर कामत बमबोलकर
3. डॉ. प्रकाश वङ्नीकर

मैथिली

1. श्री पंचानन मिश्र
2. श्री वैद्यनाथ झा
3. डॉ. विजय कुमार चौधुरी

मलयाळम्

1. डॉ. के.जी. पॉलसे
2. डॉ. एम.डी. राधिका
3. श्री पी.पी. श्रीधरनुन्नी

मणिपुरी

1. श्रीमती एन.जी. सुशीला देवी
2. डॉ. इलांगबम विजय लक्ष्मी
3. श्री रतन थियम

मराठी

1. श्रीमती अनुराधा पाटिल
2. श्री मकरंद साठे
3. डॉ. नरेंद्र जाधव

नेपाली

1. डॉ. घनश्याम नेपाल
2. श्री हस्त नेचाली
3. डॉ. टी.एन. उपाध्याय

ओड़िया

1. प्रो. पंचानन महांति
2. प्रो. संघमित्र मिश्र
3. डॉ. कृष्णचंद्र भूइयां

पंजाबी

1. श्री तरसेम
2. प्रो. उमा सेठी
3. डॉ. वनीता

राजस्थानी

1. डॉ. माधो सिंह इंदा
2. श्री महिपाल सिंह राव
3. डॉ. श्री सत्यनारायण

संस्कृत

1. डॉ. देव नारायण झा
2. डॉ. पी.वी. रमनकुट्टि
3. प्रो. युगल किशोर मिश्र

संताली

1. श्री भोगला सोरेन
2. श्री जज्ञेश्वर सोरेन
3. श्री कृष्ण प्रसाद हांसदा

सिंधी

1. श्री आनंद खेमाणी
2. श्री नंद छुगाणी
3. श्रीमती गीता बिंद्राणी

तमिऴ

1. श्री वी. जयदेवन
2. डॉ. के. शिवमणि
3. डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम

तेलुगु

1. श्री डी. नवीन (अंपासय्या नवीन)
2. श्री बनदला माधव राव
3. डॉ. जे.एल. रेड्डी

उर्दू

1. श्री अज़ीज़उल्ला बेग
2. प्रो. इब्ने कँवल
3. प्रो. साहेब अली

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार **2017**

21 जून 2017 को गुवाहाटी में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2017 के लिए 24 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। युवा पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। नियमानुसार, कार्यकारी मंडल ने निर्णायक समिति के सर्वसम्मत अथवा बहुमत से की गई संस्तुति के आधार पर पुरस्कार घोषित किए। ये पुरस्कार उन लेखकों की पुस्तकों को दिए जाते हैं, जिनकी उम्र पुरस्कार वर्ष की 1 जनवरी को 35 वर्ष अथवा उससे कम हो।

युवा पुरस्कार **2017** से सम्मानित लेखक

असमिया : प्रतीम बरुवा, *सोधाहे नह'ल तोक ओ बकुल* (कविता-संग्रह)
बाङ्ला : शमीक घोष, *एलविस ओ अमलासुंदरी* (कहानी-संग्रह)
बोडो : बिजित गोरा रामसियारी, *गोरबोनि आर'ज* (कविता-संग्रह)
डोगरी : रजिंदर रांझा, *तेरे हिरखै च* (कविता-संग्रह)
अंग्रेज़ी : मनु एस. पिल्लै, *द आइवरी थ्रोन* (जीवनी)
गुजराती : राम मोरी, *महोतुं* (कहानी-संग्रह)
हिंदी : तारो सिंदिक, *अक्षरों की विनती* (कविता-संग्रह)
कन्नड : शांति के. अप्पण्ण, *मनसु अभिसारिके* (कहानी-संग्रह)
कश्मीरी : निगहत साहिबा, *ज़र्द पनिक डैर* (कविता-संग्रह)
कोंकणी : अमेय विश्राम नायक, *मोग डॉट कॉम* (कविता-संग्रह)
मैथिली : चंदन कुमार झा, *धरतीसँ अकास धरि* (कविता-संग्रह)
मलयाळम् : अस्वथी शशिकुमार, *जोसेफिन्ते मनम* (कहानी-संग्रह)
मणिपुरी : खङ्ग्रोकपम कृष्णमोहन सिंह, *केल्लबा ऊनागी ईशै* (कविता-संग्रह)
मराठी : राहुल कोसंबी, *उभं आडवं* (निबंध-संग्रह)
नेपाली : शरण मुस्कान, *मूलधारातिर* (कविता-संग्रह)
ओड़िया : सूर्यस्नात त्रिपाठी, *ई संपर्क इमिति* (कविता-संग्रह)
पंजाबी : हरमन, *राणी तत्त* (कविता-संग्रह)
राजस्थानी : उम्मेद धानियां, *लेबल* (कहानी-संग्रह)
संस्कृत : हेमचंद्र बेलवाल, *परिवर्तनकाव्यम्* (तीन संस्कृत शतकों का संग्रह)
संताली : मैना टुडु, *मार्साल दाहार* (कविता-संग्रह)
सिंधी : रेखा सचदेव पोहाणी, *उसाट* (कविता-संग्रह)
तमिऴ : ए. जयभारती (मानुषी), *आदिक्कादलिन निनैवुक कुरिप्पुकल* (कविता-संग्रह)
तेलुगु : मर्सी मारग्रेट, *माटल मड्डुगु* (कविता-संग्रह)
उर्दू : रशीद अशरफ़ ख़ान, *मौलाना मोहम्मद हुसैन आज़ाद और उनका शे'री सफ़र* (जीवनी)

प्रतीम बरुवा

शमीक घोष

विजित गोरा रामसियारी

रजिंदर रांझा

मनु एस. पिल्लै

राम मोरी

तारो सिंदिक

शांति के. अप्पण्ण

निगहत साहिबा

अमेय विश्राम नायक

चंदन कुमार झा

अस्वथी शशिकुमार

खङ्ज़ोकपम कृष्णमोहन सिंह

राहुल कोसंबी

शरण मुस्कान

सूर्यस्नात त्रिपाठी

हरमन

उम्मेद धानियां

हेमचंद्र बेलवाल

मैना टुडु

रेखा सचदेव पोहाणी

ए. जयभारती (मानुषी)

मर्सी मारग्रेट

रशीद अशरफ़ ख़ान

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार **2017** के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. श्री अनीस उज-ज़मान
2. डॉ. जयश्री गोस्वामी महन्त
3. श्री दिलीप चंदन

बाङ्ला

1. प्रो. बिमल कुमार मुखोपाध्याय
2. प्रो. पीनाकेश चन्द्र सरकार
3. डॉ. सौमित्र बसु

बोडो

1. डॉ. तुलन मशाहारी
2. श्री कामेश्वर बर'
3. श्री सीता राम बसुमतारी

डोगरी

1. प्रो. नीलाम्बर देव शर्मा
2. श्री मदन गोपाल पाढ़ा
3. श्री उत्तम चंद उत्तम

अंग्रेज़ी

1. प्रो. झरना सान्याल
2. प्रो. गणेश देवी
3. श्री रणजीत होसकोटे

गुजराती

1. श्री भीमजी खचरिया
2. डॉ. चन्द्रकान्त टोपीवाला
3. श्री मोहन परमार

हिंदी

1. श्री कमल किशोर गोयनका
2. श्रीमती मृदुला गर्ग
3. प्रो. रतन कुमार पांडे

कन्नड

1. श्री के. मरूलासिद्दप्पा
2. डॉ. केशव शर्मा के.
3. सुश्री ललिता सिद्दबसवय्या

कश्मीरी

1. प्रो. मिशल सुल्तानपुरी
2. श्री प्राण किशोर
3. श्री सैयद सद-उद्-दीन सैदी

कोंकणी

1. श्री परेश कामत
2. श्री प्रसाद लोलयैकर
3. श्री उदय एल. भेम्ब्रे

मैथिली

1. डॉ. वैद्यनाथ चौधरी
2. डॉ. मंत्रेश्वर झा
3. डॉ. योगेंद्र पाठक 'वियोगी'

मलयाळम्

1. डॉ. जॉय वजायिल
2. डॉ. पी.के. राजशेखरन
3. श्री एम. राजीव कुमार

मणिपुरी

1. श्री कोङजेङबम हेमचन्द्र
2. श्री सलाम तोम्बा सिंह
3. श्री वारेप्पम जुगिंद्र सिंह

मराठी

1. श्री आसाराम लोम्टे
2. श्री लक्ष्मण गायकवाड
3. प्रो. भालचंद्र मुंगेकर

नेपाली

1. श्री अर्जुन कुमार प्रधान
2. डॉ. दिवाकर प्रधान
3. डॉ. जयंत कृष्ण शर्मा

ओड़िया

1. डॉ. अर्चना नायक
2. श्री देबप्रसाद दाश
3. डॉ. अभिन चंद्र साहु

पंजाबी

1. डॉ. आतमजीत सिंह
2. डॉ. कुलजीत शैली
3. श्री स्वर्णजीत सवी

राजस्थानी

1. श्री अरविंद आशिया
2. श्री कुंदन माली
3. डॉ. सत्यनारायण

संस्कृत

1. प्रो. डी. प्रहलादाचार
2. प्रो. कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी
3. सुश्री नंदिनी रमानी

संताली

1. श्री रामराय माझी
2. श्री सनत हांसदा
3. श्री पूर्ण चंद्र हेम्ब्रम

सिंधी

1. श्री लछमण भम्भाणी
2. श्री लक्ष्मणदास केशवाणी
3. श्री नारी लछवाणी

तमिळ

1. प्रो. बी. मथीवनन
2. श्री बी. सेल्वपंडियन
3. श्री प्रपनचन

तेलुगु

1. डॉ. रामा चंद्रमौलि
2. डॉ. अनंत पद्मनाभ राव
3. श्री इंद्रगंती श्रीकांत शर्मा

उर्दू

1. श्री जानकी प्रसाद शर्मा
2. श्री नज़ीर फतेहपुरी
3. डॉ. शहीना तबस्सुम

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार **2017**

21 जून 2017 को गुवाहाटी में अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में बाल साहित्य पुरस्कार 2017 के लिए 14 पुस्तकों तथा समग्र योगदान के लिए 10 लेखकों के चयन को अनुमोदित किया गया। यह अनुमोदन इस उद्देश्य के लिए गठित संबंधित भाषाओं की त्रि-सदस्यीय चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार, कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। ये पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पूर्ववर्ती पाँच वर्षों (अर्थात् 1 जनवरी 2011 से 31 दिसंबर 2015 के मध्य) में प्रकाशित पुस्तकों पर दिए गए। लेकिन आरंभिक 10 वर्षों, जो 2010-2019 है, के लिए पुरस्कार बाल साहित्य के क्षेत्र में लेखक के समग्र योगदान के लिए दिए जा सकते हैं, यदि कोई पुस्तक पुरस्कार के योग्य नहीं है।

बाल साहित्य पुरस्कार **2017** से सम्मानित लेखक

असमिया : हरेंद्रनाथ बरठाकुर, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
बाङ्ला : षष्ठीपद चट्टोपाध्याय, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
बोडो : रेणू बर', *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
डोगरी : सुदेश राज, *जंगल दी सैर* (कहानी-संग्रह)
अंग्रेज़ी : पारो आनंद, *वाइल्ड चाइल्ड एंड अदर स्टोरीज़* (कहानी-संग्रह)
गुजराती : हरीश नायक, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
हिंदी : स्वयं प्रकाश, *प्यारे भाई रामसहाय* (कहानी-संग्रह)
कन्नड : एन.एस. लक्ष्मीनारायण भट्ट, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
कश्मीरी : शौकत अंसारी, *जिगर खाँट* (कविता-संग्रह)
कोंकणी : विन्सी क्वाद्रूस, *जादूचें पेटूल* (उपन्यास)
मैथिली : अमलेंदु शेखर पाठक, *लालगाछी* (उपन्यास)
मलयाळम् : एस.आर. लाल, *कुञ्ञुण्णियुटे यात्रा पुस्तकम्* (उपन्यास)
मणिपुरी : वारेपम युगिंद्रो सिंह, *अङाङगी वारी मचा निफु* (कहानी-संग्रह)
मराठी : लक्ष्मण महिपती कडू, *खारीच्या वाटा* (दीर्घ मराठी आख्यान)
नेपाली : शांति छेत्री, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
ओड़िया : शुभेंद्र मोहन श्रीचंदन सिंह, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
पंजाबी : सतपाल भीखी, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
राजस्थानी : पवन पहाड़िया, *नंबर वन आऊंला* (कविता-संग्रह)
संस्कृत : राजकुमार मिश्र, *डयते कथमाकाशे?* (कविता-संग्रह)
संताली : जोबा मुर्मू, *ओलोन बहा* (कहानी-संग्रह)
सिंधी : रोशन लखमीचंद गोलाणी, *रोशन बाराणा बोल* (कविता-संग्रह)
तमिऴ : वेलु सरवणन, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
तेलुगु : वासाला नरसय्या, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
उर्दू : नज़ीर फ़तेहपुरी, *मेरा देश महान* (कहानी-संग्रह)

हरेंद्रनाथ बरठाकुर

पारो आनंद

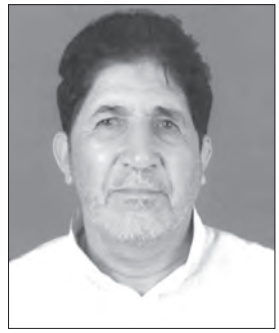

शौकत अंसारी

षष्ठीपद चट्टोपाध्याय

हरीश नायक

विन्सी क्वाद्रूस

रेणू बर'

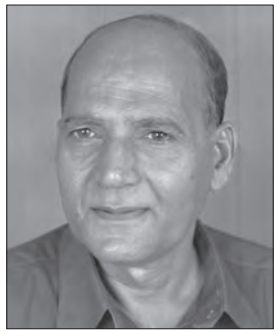

स्वयं प्रकाश

अमलेंदु शेखर पाठक

सुदेश राज

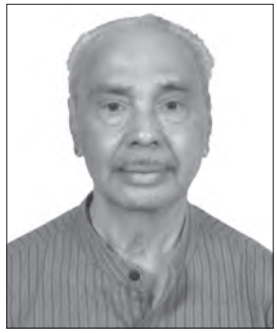

एन.एस. लक्ष्मीनारायण भट्ट

एस.आर. लाल

वारेपम युगिंद्रो सिंह

सतपाल भीखी

रोशन लखमीचंद गोलाणी

लक्ष्मण महिपती कडू

पवन पहाड़िया

वेलु सरवणन

शांति छेत्री

राजकुमार मिश्र

वासाला नरसय्या

शुभेंद्र मोहन श्रीचंदन सिंह

जोबा मुर्मू

नज़ीर फ़तेहपुरी

बाल साहित्य पुरस्कार **2017** के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. श्री देवव्रत दास
2. डॉ. प्रदीप ज्योति महंत
3. श्री हरे कृष्ण डेका

बाङ्ला

1. श्री नृसिंह प्रसाद भादुड़ी
2. प्रो. समीर कुमार रक्षित
3. श्री सुभाष भट्टाचार्य

बोडो

1. श्री विद्यासागर नर्जरी
2. डॉ. इंदिरा बोरो
3. डॉ. रीता बोरो

डोगरी

1. प्रो. अर्चना केसर
2. श्री जितेन ठाकुर
3. डॉ. वीणा गुप्ता

अंग्रेज़ी

1. सुश्री अनीता नायर
2. श्री परसा वेंकटेश्वर राव जू.
3. सुश्री मित्र फुकन

गुजराती

1. श्री नरोत्तम ककुभाई पालन
2. सुश्री वर्षा दास
3. श्री हर्षद त्रिवेदी

हिंदी

1. श्री असगर वजाहत
2. प्रो. रमेश कुंतल मेघ
3. प्रो. सत्य देव मिश्र

कन्नड

1. श्री बी.ए. सनादि
2. श्री एच.एस. वेंकटेशमूर्ति
3. डॉ. कारिगौडा बीचनहली

कश्मीरी

1. श्री अयाज़ रसूल नाज़की
2. श्री सतीश विमल
3. श्री बाल कृष्ण सन्यासी

कोंकणी

1. डॉ. जयन्ती नायक
2. डॉ. एल. सुनीता बाई
3. प्रो. नारायण देसाई

मैथिली

1. डॉ. इंद्रकांत झा
2. डॉ. प्रभास कुमार झा
3. डॉ. शशि नाथ झा

मलयाळम्

1. डॉ. वलसला बेबी
2. प्रो. सारा जोसेफ
3. सुश्री सुमंगला देशमंगला माना

मणिपुरी

1. श्री ख. प्रकाश सिंह
2. डॉ. कोइजम शांतिबाला देवी
3. श्री एल. जयचंद्र सिंह

मराठी

1. श्रीमती माधुरी पुरंदरे
2. सुश्री कविता महाजन
3. श्रीमती विजया राजाध्यक्ष

नेपाली

1. डॉ. आनंद छेत्री
2. प्रो. संजय राई
3. श्री सीताराम काफ्ले

ओड़िया

1. श्रीमती पुण्यप्रभा देवी
2. श्री नंदकिशोर सिंह
3. प्रो. महेश्वर महांति

पंजाबी

1. डॉ. दर्शन सिंह आशत
2. श्री गुलज़ार सिंह संधू
3. डॉ. जगबीर सिंह

राजस्थानी

1. श्री दीनदयाल शर्मा
2. श्री लक्ष्मणदन कविया
3. श्री मुकुट मणिराज

संस्कृत

1. प्रो. के. राम सूर्य नारायण
2. डॉ. के. श्यामला
3. प्रो. ओमप्रकाश पांडे

संताली

1. श्री आदित्य कुमार मांडी
2. श्री कृष्णचंद्र सोरेन
3. श्रीमती शर्मिला सोरेन

सिंधी

1. डॉ. जगदीश लछाणी
2. श्रीमती माया राही
3. श्री राम एच. दरयाणी

तमिऴ

1. श्री वी. अन्नामलै (इमायम)
2. डॉ. आर. इलनगोवन
3. डॉ. एम. पलानिअप्पन

तेलुगु

1. प्रो. डी. चिन्नी कृष्णैया
2. श्रीमती डी. सुजाता देवी
3. डॉ. डी. मधुसूदन राव

उर्दू

1. श्री अब्दुल रहमान
2. डॉ. मनाजिर आशिक हरगानवी
3. सुश्री कमर सुरूर

कार्यक्रम

साहित्योत्सव 2017

साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी 2017

साहित्य अकादेमी के वार्षिक साहित्योत्सव 2017 का शुभारंभ 12 फ़रवरी 2018 को रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी के साथ हुआ। प्रदर्शनी को इस प्रकार से सुसज्जित किया गया था कि किसी भी दर्शक उसे देखकर को अकादेमी के उद्देश्यों, कार्य और गतिविधियों और अन्य संबंधित जानकारी की एक सटीक और व्यापक समझ हो सकती है।

उद्घाटन समारोह का आरंभ आंध्र प्रदेश के कुचिपुड़ि भगवतमेलम की वंदना से हुआ। अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी की संक्षेप में वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें उन्होंने वर्ष 2017 के दौरान अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों, उपलब्धियों आदि पर प्रकाश डाला।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त समस्त 24 भारतीय भाषाओं में साहित्य को बढ़ावा देने के लिए साहित्य अकादेमी की विभिन्न पहलों की चर्चा की। उन्होंने उपस्थित सभी लोगों से आग्रह किया कि वह प्रदर्शनी का दौरा करें तथा वे न केवल भारत बल्कि विश्वभर की महानतम साहित्यिक संस्थानों में से एक संस्था के साहित्यिक इतिहास को जानें। प्रख्यात हिंदी कथाकार एवं विदुषी श्रीमती चित्रा मुद्गल ने अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया तथा अपने भाषण में उन्होंने देश को महान साहित्यिक सेवा प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी की सराहना की। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी के साहित्यिक कार्यक्रमों और प्रकाशनों की संख्या केवल शानदार ही नहीं है बल्कि यह भी दर्शाती है कि अकादेमी देश के साहित्यिक समुदाय की सेवा के प्रति अपने अस्तित्व के हर मिनट कैसे व्यतीत करती है।

साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी 2017 का उद्घाटन करतीं श्रीमती चित्रा मुद्गल (बीच में), साथ में डॉ. के. श्रीनिवासराव (बाएँ), प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं श्री एम.एल. श्रीवास्तव (दाएँ)

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2017 अर्पण समारोह

12 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव, मुख्य अतिथि श्री किरन नागरकर, साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार तथा उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक

साहित्योत्सव का मुख्य आकर्षण साहित्य अकादेमी पुरस्कार अर्पण समारोह 12 फ़रवरी 2018 को कमानी सभागार में सायं 5.30 बजे आयोजित हुआ, जिसमें 23 भारतीय भाषाओं के वर्ष 2017 के विजेताओं को साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। पुरस्कार समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात लेखक एवं विद्वान श्री किरन नागरकर थे। पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप अंगवस्त्रम, ताम्र फलक एवं एक लाख रुपये की राशि के चेक प्रदान किए गए।

कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी पुरस्कृत लेखकों, अकादेमी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सामान्य परिषद् के सदस्यों, सभागार में उपस्थित मीडियाकर्मियों तथा सभी साहित्यप्रेमियों का स्वागत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष को बधाई देते हुए अकादेमी की वर्ष 2017 की उपलब्धियों के बारे में विस्तार से चर्चा की और कहा कि हमारे पूर्व अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने उत्कृष्ट कार्यकाल में हमारे लिए ऐसा मानक निर्धारित किया है, जो आने वाले समय में हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। उन्होंने अकादेमी के उद्देश्यों और कार्यों के बारे में भी प्रकाश डाला। उन्होंने अकादेमी की छह दशकों से अधिक समय की विकास-यात्रा के महत्त्वपूर्ण पड़ावों के बारे में भी बताया। इस अवसर पर अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि साहित्य अकादेमी की साहित्य जगत् में एक विशिष्ट उपस्थिति है, जिसका एक लंबा इतिहास है। देश का साहित्य विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं और उनमें विभिन्न प्रकार के लेखन से आकार लेता है। यह इस देश के साहित्य की विरासत है कि यहाँ पारंपरिक लेखन के बीज आज भी हमारे लेखन में पाए जा सकते हैं।

प्रख्यात लेखक और समारोह के मुख्य अतिथि श्री किरन नागरकर ने इस अवसर पर कहा कि रचनात्मकता का केंद्रीय तत्त्व संवेदना है और विचारों से शब्दों की संवेदना को धार मिलती है। उन्होंने सृजनात्मकता की प्रक्रिया को भी रेखांकित किया। उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी तथा अकादेमी की गतिविधियों की सराहना की।

उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने लेखकों को विशिष्ट व्यक्ति मानते हुए कहा कि वे ऐसा लेखन इसलिए कर पाते हैं, क्योंकि प्रकृति उनको ऐसा कार्य करने के लिए चुनती है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि अकादेमी की

नई कार्यकारिणी भी अपनी क्षमतानुसार श्रेष्ठ कार्य करने का प्रयास करेगी। उन्होंने पुरस्कार अर्पण समारोह में पधारे सभी पुरस्कृत रचनाकारों, अतिथि विद्वानों, मीडियाकर्मियों और साहित्यप्रेमियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

पुरस्कार विजेताओं से मीडिया की बातचीत

12 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2017 से पुरस्कृत लेखकों के साथ मीडियाकर्मियों की बातचीत का एक सत्र 12 फ़रवरी 2018 को पूर्वाह्न 11.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए संपादक (हिंदी) श्री अनुपम तिवारी ने सभी पुरस्कार विजेताओं का स्वागत करते हुए मीडिया के समक्ष उनका परिचय प्रस्तुत किया। प्रसिद्ध फ़िल्म आलोचक एवं संपादक श्री अजित राय, दूरदर्शन के पूर्व निर्माता डॉ. अमरनाथ 'अमर' और प्रख्यात पत्रकार और लेखिका सुश्री सुमा राहा आदि ने इस बातचीत में भाग लिया। इन पत्रकारों द्वारा पूछे गए प्रश्नों पर पुरस्कृत लेखकों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए, जिस पर उपस्थित अन्य श्रोताओं के बीच गहन विचार-विमर्श हुआ।

मीडिया से बातचीत करते हुए अन्य पुरस्कृत लेखक

संगोष्ठी : वाचिक एवं जनजातीय साहित्य तथा आदिवासी कवि सम्मिलन

13-14 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान 13-14 फ़रवरी 2018 को वाचिक एवं जनजातीय साहित्य पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन लब्धप्रतिष्ठ विद्वान प्रो. मृणाल मिरी ने किया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात भाषा वैज्ञानिक एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष डॉ. बी. बी. कुमार ने की। प्रख्यात विदुषी प्रो. तेमसुला आओ इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थीं। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टी.वी. कट्टीमनी ने बीज वक्तव्य दिया।

संगोष्ठी के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि संसार का कोई भी देश भारत की भाषायी विविधता का मुक़ाबला नहीं कर सकता। भारत में अथाह और अमूल्य वाचिक साहित्य एवं संस्कृति उपलब्ध है और यह हमें धरोहर के रूप में मिली है। युवा पीढ़ी को अपनी समृद्ध परंपराओं का ज्ञान

आदिवासी कवि सम्मिलन का एक सत्र

हो सके इसलिए आवश्यकता है कि इसे संरक्षित, संपोषित और प्रोत्साहित किया जाए। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा इस दिशा में किए गए कार्यों की विस्तार से जानकारी दी। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रख्यात विद्वान प्रो. मृणाल मिरी ने कहा कि सभी भाषाओं की अपनी स्वायत्तता होती है और सभी भाषाएँ पूर्ण रूप से शुद्ध होती हैं, उन्हें अनुवाद के माध्यम से उसी शुद्धता के साथ प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। उन्होंने वाचिक और जनजातीय साहित्य के गुणों की चर्चा की और अन्य साहित्यों तथा संस्कृतियों के बरक्स इसकी विशिष्टताओं पर भी प्रकाश डाला।

विशिष्ट अतिथि प्रो. तेमसुला आओ ने वाचिक और जनजातीय साहित्य और संस्कृति के सूक्ष्म तत्त्वों पर प्रकाश डाला। सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात विद्वान डॉ. बी.बी. कुमार ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि भारत को समझना है तो हमें वाचिक और जनजातीय संस्कृति को समझना चाहिए। वाचिक साहित्य का संरक्षण, उसका अध्ययन आवश्यक है, बग़ैर इसके हम भारतीय संस्कृति को सूक्ष्मता से नहीं समझ सकेंगे। बीज वक्तव्य देते हुए प्रख्यात विद्वान प्रो. टी.वी. कट्टीमनी ने कहा कि आदिवासी क्षेत्रों में संस्कृति नहीं, बल्कि संस्कृतियाँ हैं क्योंकि उन क्षेत्रों में अनेक भाषाएँ हैं और प्रत्येक की अपनी संस्कृति है। इसीलिए जब संस्कृति ख़त्म होने लगती है तो भाषा अपने आप ख़त्म हो जाती है।

अगले विचार सत्र की अध्यक्षता महत्त्वपूर्ण सामाजिक चिंतक और विद्वान डॉ. डेज़्मंड खार्मावफ्लाङ ने की तथा इस सत्र में डॉ. डी. कोली, डॉ. जोथोनछिंगि खियाङटे और श्री अश्विनी कुमार पंकज ने अपने सुचिंतित गंभीर आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र में डॉ. डी. कोली ने 'पर्यावरण आलोचना और लोकसाहित्य', डॉ. जोथोनछिंगि खियाङटे ने 'लिंग और वाचिक साहित्य' तथा श्री अश्विनी कुमार पंकज ने आदिवासी संस्कृति के प्रदूषित किए जाने पर केंद्रित अपने आलेख पढ़े।

द्वितीय सत्र आदिवासी कवि सम्मिलन का था, जिसमें सर्वश्री अर्जुन सिंह धुर्वे (बैगा), राजकिशोर नायक (बाथुडी), कुलदीप सिंह बम्पल (भोटिया), सुदर्शन भूमिज (भूमिज), कुलीन पटेल (धोडीआ), कोलनट बी. मरक (गारो), रफ़ीक़ अंजुम (गोजरी), रूप सिंह कुश्राम (गोंडी), वीरा राठौड़ (गोरमाटी), रुद्र नारायण पाणिग्रही (हल्बी), कैरासिंह बांदिया (हो), ऑन तेरान (कार्बी), कलाचंद महाली (महाली) तथा श्रीमती मिनिमॅन लालू (खासी) ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। सभी कवियों ने एक कविता अपनी मूलभाषा में पढ़ते हुए अन्य कविताओं का हिंदी या अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किया। दूसरे दिन तृतीय सत्र साहित्य अकादेमी के भाषा सम्मान पुरस्कार विजेता तथा लोकसाहित्य मर्मज्ञ श्री वसंत निरगुणे की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। सत्र में डॉ. आशुतोष भारद्वाज, डॉ. महेंद्र कुमार मिश्र तथा डॉ. ओमप्रकाश भारती ने अपने विचार प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता प्रो. पुरुषोत्तम

बिलिमले ने की, जिसके अंतर्गत डॉ. निर्मल सेल्वामणि, डॉ. एस. नागमल्लेश्वर राव एवं श्यामा पी. ने क्रमशः तमिळ, तेलुगु एवं मलयाळम् भाषा के संदर्भ में अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. सेल्वामणि ने वाचिक तमिळ संगम साहित्य के विविध पक्षों पर अपने विचार रखे।

आदिवासी कवि सम्मिलन के आज के सत्र में एम. पी. रेखा (कोडवा), विकास राय देववर्मा (कोकबरॉक), महावीर उराँव (कुड़ुख़), दीनबंधु कँहर (कुई), कोंचोक रिग्ज़िन (लद्दाखी), थ. थुंबु मरम (मरम), दीपक कुमार दले (मिसिंग), पुनि लोसी (माओ), आश्रिता टूटी (मुंडारी), जमुना बीनी तादर (ञिशी), एन. वुमसुआन (पाइते), चारुमोहन राभा (राभा) तथा राजेश राठवा (राठवी) ने कोष्ठांकित भाषाओं में अपनी कविताओं का पाठ किया। सभी कवियों ने अपनी कविताओं के हिंदी-अंग्रेज़ी भावानुवाद भी प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

लेखक सम्मिलन

13 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2017 से पुरस्कृत साहित्यकारों के साथ लेखक सम्मिलन का आयोजन 13 फ़रवरी 2018 को पूर्वाह्न 10.00 बजे रवींद्र भवन परिसर में किया गया। इसकी अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने की। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया और सभी पुरस्कृत लेखकों का अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि यह जानना बहुत महत्त्वपूर्ण और प्रेरणादायी है कि एक लेखक का निर्माण कैसे होता है और वह किन-किन परिस्थितियों और संघर्षों तथा विचारसरणियों से गुज़रकर एक साहित्यकार बनता है। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री माधव कौशिक ने कहा कि भारतीय भाषा का साहित्य आज विश्वस्तर का साहित्य है। उन्होंने सभी पुरस्कृत रचनाकारों को अपनी बधाई दी।

लेखक सम्मिलन में 23 भाषाओं के उपस्थित साहित्यकारों ने अपने लेखकीय सृजनात्मक अनुभवों के बारे में विस्तार से बताया। इस कार्यक्रम में श्री जयंत माधव बरा (असमिया), श्री आफसार आमेद (बाङ्ला), श्रीमती रीता बर' (बोडो), श्री शिव मैहता (डोगरी), श्रीमती ममंग दई (अंग्रेज़ी), श्रीमती उर्मि घनश्याम देसाई (गुजराती), डॉ. रमेश कुंतल मेघ (हिंदी), श्री टी.पी. अशोक (कन्नड), श्री अवतार कृष्ण रहबर (कश्मीरी), श्री गजानन रघुनाथ जोग (कोंकणी), श्री उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' (मैथिली), श्री के.पी. रामनुन्नी (मलयाळम्), श्री राजेन तोइजांबा (मणिपुरी), श्री श्रीकांत देशमुख (मराठी), श्रीमती वीणा हाङ्गखिम (नेपाली), श्रीमती गायत्री सराफ (ओड़िया), श्री नछत्तर (पंजाबी), श्री नीरज दइया (राजस्थानी), श्री निरंजन मिश्र (संस्कृत), श्री भुजंग टुडू (संताली), श्री जगदीश लछाणी (सिंधी), श्री टी. देवीप्रिया (तेलुगु) एवं श्री मोहम्मद बेग एहसास (उर्दू) ने अपने विचार व्यक्त किए।

भारतीय-इज़राइली लेखक सम्मिलन

13 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान दिनांक 13 फ़रवरी 2018 को अपराह्न 2.30 बजे साहित्य अकादेमी के तृतीय तल स्थित सभाकक्ष में भारतीय-इज़राइली लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। भारत और इज़राइल के मध्य राजनयिक

कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव के साथ इज़राइली लेखक

संबंधों की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर यह विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें इज़राइल से पधारे विशिष्ट हिब्रू साहित्यकारों ने सहभागिता की। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने इज़राइली लेखक दल का स्वागत करते हुए कहा कि भारत और इज़राइल के बीच सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध लगभग 1000 ई. पू. से है। बावेरू में भारतीय व्यापारियों का संदर्भ एक बौद्ध कथा में मिलता है। सोलोमन किंग के समय में टर्किश जहाज़ों और अन्य विभिन्न उल्लेखों में ऐसे संदर्भ दोनों देशों में मिलते हैं। उन्होंने कहा कि हिंदुइज़्म और ज़्यूडिज़्म के बीच कई समानताएँ हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में आज बड़ी संख्या में ज़्यूडिज़्म के अनुयायी दूसरे संप्रदायों के साथ शांति, सौहार्द और आपसी सहयोग बनाए हुए निवास करते हैं। दोनों देशों में प्राचीन और समृद्ध साहित्यिक विरासत है। भारत और इज़राइल में विभिन्न साहित्यिक परंपराएँ हैं, जिनमें रहस्यवादी रंग भी हैं।

कार्यक्रम में श्री मेयर औज़िएल ने इज़राइल के हिब्रू राइटर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष तस्विका नीर का संदेश पढ़कर सुनाया और उसके बाद इज़राइली लेखकों ने अपने विचार व्यक्त किए। श्रीमती अदीवा जेफ्फेन ने हिब्रू पुरातत्त्व के बारे में बताया। श्रीमती दोरित सिल्वेर्मन ने अपनी एक कहानी प्रस्तुत की। श्रीमती अविवित लेवी कापच ने हिब्रू भाषा और उसके पुनरुत्थान आदि के बारे में बताने के बाद अपनी एक सुंदर कविता भी पढ़ी। श्रीमती स्मादर शीर ने बाल लेखन एवं अपनी साहित्यिक यात्रा के बारे में बताया। श्रीमती हावा पिन्हास कोहेन ने हिब्रू भाषा में अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं और अपनी साहित्यिक यात्रा के बारे में भी विस्तार से बताया।

भारतीय भाषाओं के लेखकों ने इज़राइल से पधारे लेखक दल के सदस्यों से वहाँ की भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के विषय में कुछ जिज्ञासाएँ भी व्यक्त कीं, जिनका यथोचित उत्तर हिब्रू लेखकों ने दिया।

परिसंवाद : मीडिया एवं साहित्य

14 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्योत्सव के तीसरे दिन 14 फ़रवरी 2018 को मीडिया एवं साहित्य के वर्तमान संबंधों पर बातचीत करने के लिए एक विशेष परिसंवाद आयोजित किया गया, जिसका उद्घाटन वक्तव्य प्रसार भारती के अध्यक्ष श्री ए. सूर्यप्रकाश ने दिया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में मीडिया बहुआयामी हुआ है और उसने बहुत-सी

प्राचीन परंपराओं को तोड़ा है। इस परिवर्तन के बावजूद उन्होंने चिंता व्यक्त की कि साहित्य ही नहीं कला और संस्कृति से जुड़ी बहुत-सी जानकारियाँ अब इन माध्यमों में लगभग न के बराबर होती हैं। लगभग सभी समाचार पत्र-पत्रिकाओं एवं चैनलों पर लोकप्रिय संस्कृति को बढ़ावा दिया जा रहा है।

सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की। इस अवसर पर अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि शब्द पर हमेशा संकट रहा है और रहेगा। आज टिकाऊ और बिकाऊ के बीच की लड़ाई है। लेकिन शब्दों ने अपनी लड़ाई हमेशा जीती है और यह संकट ही उसे और मज़बूत बनाएगा। उद्घाटन सत्र के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि मीडिया की बढ़ती दुनिया और साहित्य के रिश्तों की पड़ताल करने के उद्देश्य से हमने यह परिसंवाद आयोजित किया है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने की। इस सत्र में डॉ. सुधीश पचौरी ने कहा कि मास मीडिया पॉपुलर कल्चर पर चलता है। लेकिन नए माध्यमों को हमें संशयवादी बनकर नहीं देखना चाहिए, बल्कि इससे समाज को हो रहे फ़ायदों के बारे में भी सोचना होगा। श्री राहुल देव ने वर्तमान मीडिया में भाषा की स्थिति को लेकर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे सबसे बड़ा नुकसान देश की मातृभाषाओं को हो रहा है। श्री राजीव रंजन नाग ने समाचार चैनलों द्वारा ज़रूरी समाचारों की बजाय टीआरपी बढ़ाने वाले सस्ते और घटिया समाचारों पर चिंता व्यक्त की। तेलुगु के दोनों पत्रकारों डॉ. के. श्रीनिवास एवं श्री आर.वी. रामाराव ने भी तेलुगु भाषा के समाचार पत्रों से साहित्य के ग़ायब होते जाने की चर्चा विस्तार से की। सत्र के अध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि हमें सोशल मीडिया द्वारा बन रहे नए साहित्य को भी अपने विमर्श में लाना होगा।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री राहुल श्रीवास्तव ने की तथा सर्वश्री मुकेश भारद्वाज, अमरनाथ अमर, निधीश त्यागी एवं श्रीमती शशि प्रभा ने अपने विचार प्रकट किए। इन सभी वक्ताओं ने मीडिया पर बाज़ारवाद और नई पीढ़ी पर कम समय होने के कारण घटते शब्दों पर चिंता व्यक्त की। कार्यक्रम के अंतिम सत्र की अध्यक्षता राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष श्री बल्देव भाई शर्मा ने की और सर्वश्री शाहिद लतीफ़, देवप्रकाश, रवींद्र त्रिपाठी, अनंत विजय एवं बालेंदु शर्मा 'दाधीच' ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन संपादक (हिंदी) श्री अनुपम तिवारी ने किया।

संगोष्ठी का एक सत्र

आमने सामने : पुरस्कृत लेखकों से विद्वानों की बातचीत

14 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 14 फ़रवरी 2018 को रवींद्र भवन परिसर में 'आमने सामने' कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2017 के विजेताओं में से कुछ चुने हुए साहित्यकारों ने बातचीत की। श्री संदीप चटर्जी ने बाङ्ला भाषा में पुरस्कृत लेखक आफसार आमेद का साक्षात्कार किया। श्री आफसार आमेद ने कहा कि वे अपने समुदाय और भौगोलिक क्षेत्र के बारे में लिखते हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसा लगता है कि वे अखिल ब्रह्मांड के नागरिक हैं और उन्होंने मानवता के समक्ष उपस्थित चुनौतियों और समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया।

अंग्रेज़ी भाषा में पुरस्कृत श्रीमती ममंग दई के साथ डॉ. निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने संवाद किया। डॉ. निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने पूछा कि उनके लेखन को क्या राजनीति का उनके लेखन पर प्रभाव है? वे पत्रकारीय गद्य से रचनात्मक गद्य की ओर क्यों आईं या इसकी आवश्यकता क्यों महसूस हुई? डॉ. निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने श्रीमती ममंग दई के पुरस्कृत उपन्यास *द ब्लैक हिल* और उन्नीसवीं शताब्दी के मुद्दों के संदर्भ में भी बातचीत की। उनके गद्य और पद्य लेखन में आदिवासी जीवन के विभिन्न तत्त्वों के प्रभाव के बारे में उन्होंने प्रश्न किए, जिनके समुचित उत्तर सुश्री ममंग दई ने दिए।

हिंदी भाषा में पुरस्कृत डॉ. रमेश कुंतल मेघ से श्री प्रयाग शुक्ल ने बातचीत की। डॉ. रमेश कुंतल मेघ ने बताया कि बचपन से ही चित्रकला और साहित्य के प्रति उनमें एक जुनून-सा था। वास्तव में वे एक पैदाइशी चित्रकार हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन की साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत पुस्तक मध्य एशिया का इतिहास ने उन्हें गहरे तक प्रभावित किया है। यह पुस्तक राहुल जी के एकाग्र अनथक ध्यान का सुफल है।

आधुनिक युग के बाद सृजनात्मक लेखन में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए चर्चित मलयाळम् लेखक श्री के.पी. रामनुन्नी से डॉ. ए.जे. थॉमस ने संवाद स्थापित किया। उन्होंने उनके बहुचर्चित उपन्यास *चरम वार्षिकम* (बरसी) के बारे में बातचीत की। श्री रामनुन्नी ने कहा कि साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत उनके उपन्यास का लेखन स्वयं उनके लिए भी एक चुनौती था, क्योंकि इसमें समय और स्थान को उन्होंने जिस तरह से व्यक्त किया है, यह उनके लिए एक महत्त्वाकांक्षी योजना की तरह हो गया था और इसीलिए उनके लिए एक अभिनव समस्या बन गया था।

तेलुगु भाषा में पुरस्कृत लेखक श्री टी. देवीप्रिया से श्री कृष्णा राव ने बातचीत की। श्री टी. देवीप्रिया ने बताया कि उन्होंने काव्य संवेदना अपनी माँ से पाई। उन्होंने कहा कि उनके पास कविता इस तरह आती है, जैसे पौधे में फूल आता है। उन्होंने यह भी कहा कि सृजनात्मक लेखन के प्रति उनके भीतर एक जुनून है और वे 'स्क्रीन' के लिए कभी लिखना नहीं चाहते।

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारत की स्वाधीनता के 70 वर्ष : साहित्य में चित्रण

15-17 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्योत्सव 2018 के दौरान 15-17 फ़रवरी 2018 तक 'भारत की स्वाधीनता के 70 वर्ष : साहित्य में चित्रण' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात विद्वान लेखक, चिंतक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य डॉ. मनोज दास ने किया। 15 फ़रवरी 2018 को उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि स्वतंत्रता के समय में राष्ट्रवादी भावनाएँ प्रखर थीं और वे देश की सभी भाषाओं में अभिव्यक्त हो रही

थीं। आज के समय में लेखन की कई शाखाएँ अस्तित्व में हैं और उन सभी का अपना अलग महत्त्व है। कई लोग मिथकों को अपने लेखन में लाते हैं। उसी तरह दलित लेखक अपने साथ हुए उत्पीड़न को लिखता है। सभी तरह के लेखन का केंद्र मानवता है।

आरंभ में स्वागत भाषण देते हुए अकादेमी सचिव, डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि भारत को जिस तरह संघर्षों के बाद आज़ादी प्राप्त हुई, वह न केवल भारत की बल्कि विश्व की सभी सभ्यताओं में अनोखी स्वतंत्रता है। 1947 के दौर में राष्ट्रीय भावनाओं का साहित्य रचा गया। बाद के समय में कई आंदोलन हुए, उन पर भी साहित्य रचा गया। इसी तरह युद्ध के समय में भी जो साहित्य रचा गया, उसका भी अपना अलग महत्त्व है। इस संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में हम दलित साहित्य, बाल साहित्य, स्त्री साहित्य के अलावा युद्ध साहित्य पर भी परिचर्चा करेंगे। इसके अलावा 'लेखक कितने स्वतंत्र हैं' विषयक विमर्श भी होगा।

संगोष्ठी का बीज वक्तव्य देते हुए प्रख्यात लेखक एवं विद्वान प्रो. हरीश त्रिवेदी ने कहा कि साहित्य परिपक्व होने में समय लेता है, क्योंकि वह समाचार नहीं है। लेखक के लेखन में ख़ुशी और पीड़ा साथ-साथ अभिव्यक्त होती हैं। फ़िराक गोरखपुरी जैसे लेखक ने अपने लेखन में दोनों को जगह दी। 1947 के बाद का दौर ख़ुशी का दौर था, लेकिन 1964 के बाद मोहभंग का समय शुरू हुआ। कविता लेखन में जोश अधिक था, मगर गद्य में अधिक उत्सवधर्मिता नहीं दिखाई दी।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि हमारे साहित्यकारों ने लोक साहित्य को नई विधाओं से जोड़ते हुए उसे एक साथ इतिहास और भविष्य की संभावनाओं के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने कन्नड लेखक शिवराम कारंत और भैरप्पा के लेखन पर बोलते हुए उनमें दर्ज़ राष्ट्रीय भावनाओं का ज़िक्र किया। उन्होंने आगे कहा कि आज का समय उपभोक्तावादी एवं पूँजीवादी समय है। ऐसे समय में हमें भविष्य के लेखकों पर भरोसा करना होगा। समाहार वक्तव्य देते साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने कहा कि देश भले ही गुलाम रहा, लेकिन भारत के लेखकों का मन और कलम हमेशा आज़ाद रहे, वह कभी भी गुलाम नहीं हुए।

'दलित साहित्य : स्वाधीनता की पुनः प्राप्ति' विषयक प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित तेलुगु लेखक प्रो. के. इनोक ने की। इस सत्र में प्रसिद्ध मराठी दलित लेखक प्रो. शरण कुमार लिम्बाले तथा प्रो. श्योराज सिंह बेचैन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. मनोज दास, डॉ. चंद्रशेखर कंबार, श्री माधव कौशिक एवं प्रो. हरीश त्रिवेदी (बाएँ से दाएँ)

स्वाधीनता के 70 वर्ष : नारीवादी परिप्रेक्ष्य का सत्र

द्वितीय सत्र 'स्वाधीनता का सुदृढ़ीकरण : राष्ट्रीय एकता के उपकरण के रूप में साहित्य' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात गुजराती साहित्यकार डॉ. रघुवीर चौधरी ने की। इस सत्र में प्रो. शाफ़े किदवई तथा श्री मालन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के दूसरे दिन का तृतीय सत्र प्रो. के. सच्चिदानंदन की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। यह सत्र 'संकट में राष्ट्र : उन्नीस सौ पचास एवं साठ के दशक में भारत तथा साहित्य' विषय पर केंद्रित था, जिसमें प्रो. उदय नारायण सिंह, प्रो. सुभा चक्रवर्ती दासगुप्ता एवं डॉ. धनंजय सिंह ने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. सच्चिदानंदन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में भारतीय साहित्य के सौंदर्यपरक रूपांतरण के सवाल पर विचार करते हुए कहा कि साठ के दशक का भारत शहरीकरण के दौर से गुज़र रहा था, जिसका सटीक चित्रण उस समय के साहित्य और फ़िल्मों में नज़र आता है।

चतुर्थ सत्र 'भारतीय भाषाओं में युद्ध साहित्य' पर केंद्रित था, जो प्रख्यात मराठी साहित्यकार डॉ. भालचंद्र नेमाड़े की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में श्री भूपेंद्र अधिकारी, प्रो. जतिंद्र कुमार नायक एवं प्रो. राजकुमार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. नेमाड़े ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भारत में युद्ध की अवधारणा की गहरी जड़ें हैं। उन्होंने महाराष्ट्र के उदाहरण देते हुए बताया कि किस तरह वहाँ साहित्यिक कृतियों या राजनीतिक पार्टियों के नामों में 'सेना' शब्द का व्यवहार होता है।

'राजनीतिक उपकरण के रूप में आपातकाल और लेखन' विषयक पंचम सत्र की अध्यक्षता प्रो. एच. एस. शिवप्रकाश ने की। इस सत्र में श्री वेदप्रताप वैदिक और श्री आलोक मेहता ने अपने विचार प्रकट किए।

संगोष्ठी का षष्ठ सत्र डॉ. सुधीश पचौरी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में डॉ. श्रीभगवान सिंह, डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय एवं डॉ. सी. राजेंद्रन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

17 फ़रवरी 2018 को संगोष्ठी के अंतिम दिन 'स्वाधीनता के सात दशक : स्त्रीवादी परिप्रेक्ष्य' विषय पर प्रख्यात हिंदी लेखिका डॉ. मृदुला गर्ग की अध्यक्षता में प्रो. माया पंडित, श्रीमती सविता सिंह, डॉ. सी. मृणालिनी एवं श्रीमती जयवंती डिमरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अध्यक्षीय वक्तव्य में मृदुला गर्ग ने कहा लक्ष्मण राव और रवींद्रनाथ ठाकुर ने पुरुष होते हुए भी स्त्रीवादी लेखन किया। मूल्यों की लड़ाई ही असली नारीवादी लड़ाई

है। आज़ादी के बाद स्त्री लेखन के कई रूपक बदले हैं। आठवाँ सत्र 'सात दशकों के दौरान बाल साहित्य का विकास' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती दीपा अग्रवाल ने की। इस सत्र में श्री दिनेश गोस्वामी तथा श्री इरा. नटरासन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र 'आज लेखक कितने स्वतंत्र हैं?' विषय पर था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. एस.एल. भैरप्पा ने की और डॉ. सी. राधाकृष्णन, श्री दामोदर मावज़ो तथा प्रो. सुकृता पॉल कुमार अपने विचार व्यक्त किए। सत्राध्यक्ष डॉ. एस.एल. भैरप्पा ने अपने महत्त्वपूर्ण वक्तव्य में आज़ादी के बाद सत्तासीन नेताओं से जुड़े कई क़िस्से बताए। उन्होंने कहा कि इतिहास पढ़ाने का मतलब है अच्छाई को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना। हमारे देश में राजनीतिक सच्चाई का सामना करने से लोग घबराते हैं। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी सत्रों में वक्ताओं के संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किए। संगोष्ठी की समाप्ति पर अकादेमी उपसचिव डॉ. एस. राजमोहन ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

युवा साहिती : नई फ़सल

15 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्योत्सव 2018 के दौरान 15 फ़रवरी 2018 को 'युवा साहिती : नई फ़सल' कार्यक्रम में 27 युवा लेखकों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात विद्वान और आलोचक प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने दिया। स्वागत भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि साहित्य अकादेमी हमेशा से युवा रचनाकारों को आगे बढ़ाने के लिए सक्रिय रही है। युवा पुरस्कार के अतिरिक्त 'नवोदय योजना' के तहत भी युवाओं की प्रथम पुस्तक को प्रकाशित किया जाता है। अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने कहा कि युवा धूप के समान होते हैं, जो कहीं भी फैल जाते हैं। धूप की तरह ही वे खिड़की-दरवाज़ों से घरों के अंदर जाकर वहाँ की स्थितियों को अपने लेखन में लाकर प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने कई युवा लेखकों के उदाहरण देते हुए कहा कि छोटी या बड़ी उम्र विद्वत्ता के लिए कोई मायने नहीं रखती है। आगे उन्होंने कहा कि सभी महत्त्वपूर्ण आंदोलनों की सूत्रधार युवा पीढ़ी ही होती है। इस सत्र में सर्वश्री हिमालय जाना (बाङ्ला), रोशन बराल 'रोशन' (डोगरी), चंद्रेश मकवाना (गुजराती), प्रेम शंकर शुक्ल (हिंदी), लोन इम्तियाज़ (कश्मीरी), डी. अनिल कुमार (मलयाळम्), रवि कोरडे (मराठी), पाली ख़ादिम (पंजाबी) और वासिफ़ यार (उर्दू) ने अपनी-अपनी भाषाओं में कविताओं के पाठ किए। हिंदीतर भाषाओं के कवियों ने हिंदी-अंग्रेज़ी अनुवाद में भी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

'युवा साहिती' का अगला सत्र 'लेखन : जुनून या व्यवसाय?' विषय पर केंद्रित विचार सत्र था, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती नमिता गोखले ने की। उन्होंने कहा कि आजकल साहित्य का पूरा परिदृश्य बदल गया है। नई पीढ़ी में प्रोफ़ेशनल या पॉपुलर लेखन पर ज़्यादा विचार-विमर्श होता है। लेकिन नए माध्यमों के आने से युवा पीढ़ी में अपनी अभिव्यक्ति के प्रति सजगता बढ़ी है। इस सत्र में श्रीमती रत्नोत्तमा दास बिक्रम (असमिया), श्री अच्युतानंद मिश्र (हिंदी), सुश्री अनुश्री राठौड़ (राजस्थानी), श्री वेमपल्ली गंगाधर (तेलुगु) ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सभी का कहना था कि लेखक बनने के लिए जुनून की ज़रूरत होती है और उससे प्राप्त संतुष्टि को पैसे से नहीं ख़रीदा जा सकता। अगले कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात ओड़िया लेखिका श्रीमती पारमिता सत्पथी ने की। उन्होंने युवाओं की दृष्टि की चर्चा करते हुए कहा कि वे अपने आस-पास के परिवेश को बहुत गंभीरता

से पकड़ रहे हैं और उसे बेहद सच्चाई के साथ सबके सामने रखने का प्रयास कर रहे हैं। उनकी ईमानदारी उनकी रचनाओं को बहुत ताक़तवर बना देती है। इस सत्र में सुश्री उपासना (हिंदी), श्री श्रीधर बनवासी जी.सी. (कन्नड), सुश्री सुमिता प्रभु (कोंकणी), सुश्री देवप्रिया प्रियदर्शी चक्र (ओड़िया) ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। अंतिम सत्र कविता-पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता श्री अष्टभुजा शुक्ल ने की। इस सत्र में सर्वश्री धीरज बसुमतारी (बोडो), के. राजा अंजना (अंग्रेज़ी), उमेश पासवान (मैथिली), कर्ण बिरह (नेपाली), गुलाब लढाणी (सिंधी), युवराज भट्टराई (संस्कृत), बिरसांत हांसदा (संताली) एवं जे. तमिऴ सेलवन (तमिऴ) ने अपनी भाषा की कविताएँ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ प्रस्तुत कीं।

कवि सम्मेलन

15 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्योत्सव 2018 के दौरान 15 फ़रवरी 2018 को सायं 6.00 बजे रवींद्र भवन परिसर में कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात उर्दू कवि श्री शीन काफ़ निज़ाम ने की। सम्मेलन में हिंदी-उर्दू के प्रतिष्ठित कवियों—श्री आलोक श्रीवास्तव, श्री अशोक चक्रधर, श्री बुद्धिनाथ मिश्र, श्री चंद्रभान ख़याल, श्री कुँवर बेचैन, श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, श्रीमती मधु मोहिनी उपाध्याय, श्री माहेश्वर तिवारी, श्री मंसूर उस्मानी, श्री मुमताज़ मुनव्वर और श्री राजेश रेड्डी ने अपनी कविताओं, ग़ज़लों और गीतों की प्रस्तुति से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। श्रीमती मधुमोहिनी की वाणी वंदना से सम्मेलन का आरंभ हुआ। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कवि सम्मेलन संपन्न हुआ।

परिसंवाद : अनुवाद पुनर्कथन के रूप में

16 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्योत्सव 2018 के दौरान 16 फ़रवरी 2018 को विभिन्न कार्यक्रमों की शृंखला में 'अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात संस्कृत विद्वान एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. सत्यव्रत शास्त्री ने दिया। उन्होंने संस्कृत साहित्य के अनुवाद के समय आई समस्याओं से बात शुरू करते हुए कहा कि मैं अनुवाद के समय एक ही मूल मंत्र याद रखता हूँ और वह है 'अनुवाद में भाव मूल के रहेंगे और भाषा अनुवादक की होगी'। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हमारे यहाँ अनुवाद की बेहद प्राचीन परंपरा है और हमारे सामान्य जन-जीवन पर भी उसका गहरा असर है।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. रणजीत साहा ने की, जिसमें डॉ. आलोक गुप्त ने 'भारतीय चिंतन में अनुवाद का तात्पर्य', डॉ. अनामिका ने 'पाश्चात्य चिंतन में अनुवाद का तात्पर्य' और श्री तरसेम ने 'अनुवाद : तात्पर्य की तार्किकता' पर अपने विचार व्यक्त किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. ओ. वी. नागभूषण स्वामी ने की। इस सत्र में डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी ने 'अनुवादक के गुण, दायित्व एवं अपेक्षाएँ, विषय पर, डॉ. अंशुमान कर ने 'अनुवादक का दायित्व एवं चुनौतियाँ' तथा प्रो. वनमाला विश्वनाथ ने अनुवाद की चुनौतियों, समस्याओं और समाधान के संबंध में अपनी बात रखी।

डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी ने कहा कि एक सफल अनुवादक होने के लिए अनुवादक में धैर्य, निष्ठा, विवेक, परिश्रम और लगन होनी चाहिए। अनुवादक को यह ध्यान रखना चाहिए कि अनूदित पाठ में न तो निजी विचारधारा आए, न ही उसकी अपनी कोई व्यक्तिगत छाप। अनुवाद को हमेशा व्यक्ति निरपेक्ष होना चाहिए। श्रीमती वनमाला विश्वनाथ ने अनुवाद को एक कठिन कार्य मानते हुए कहा कि यह कहीं न कहीं स्वांतः सुखाय है। डॉ. अंशुमान कर ने अपने भाषण में अनुवादक के दायित्व की चर्चा करते हुए कहा कि यह चुनौतीपूर्ण कार्य है और हमें पाठ की मूल अभिव्यक्ति को बनाए रखना चाहिए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री ओ.एल. नागभूषण ने कहा कि श्रेष्ठ अनुवाद वही है जिसे पढ़कर लोग मूल लेखक के लेखन की ही प्रशंसा करें। ये प्रशंसा अन्यार्थ में अनुवादक की ही होती है। कार्यक्रम का संयोजन अकादेमी के संपादक (हिंदी) श्री अनुपम तिवारी ने किया।

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए प्रो. सत्यव्रत शास्त्री

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्वी और उत्तरी लेखक सम्मिलन

16 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्योत्सव 2018 के दौरान 16 फ़रवरी 2018 को रवींद्र भवन परिसर में 'पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्वी और उत्तरी लेखक सम्मिलन' का आयोजन हुआ। 'पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्वी और उत्तरी लेखक सम्मिलन' के उद्घाटन वक्तव्य में प्रतिष्ठित लेप्चा गीतकार एवं लोक संगीतकार श्री सोनम छिरिङ लेप्चा ने अपने संग्रहालय से जुड़े अनुभवों को सभी के साथ साझा किया तथा कई लेप्चा गीत भी सुनाए। सोनम जी ने अपने व्यक्तिगत प्रयासों से अपनी लेप्चा लिपि और लेप्चा संगीत को समृद्ध किया है और पारंपरिक ज्ञान को सँजोने का काम किया है। आरंभ में स्वागत भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि हमारे प्रदेशों ख़ासकर उत्तर-पूर्वी प्रदेशों में लोक साहित्य, लोक संगीत प्रदेशों को आपस में जोड़ने का काम करता है। उससे स्थानीय लोगों के दुख, तकलीफ़ें, ख़ुशी, दर्द जुड़े होते हैं।

'पूर्वोत्तरी' कार्यक्रम के अंतर्गत कहानी-पाठ सत्र हिंदी के प्रतिष्ठित कथाकार श्री एस.आर. हरनोट की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। श्रीमती निङ्गोंबम सनतोंबी देवी ने अपनी मणिपुरी कहानी के हिंदी अनुवाद 'दिल में गुदगुदी' का पाठ किया तथा कहानी का प्रथम अनुच्छेद मणिपुरी में भी प्रस्तुत किया। श्री टिकेंद्र मल्ल बसुमतारी ने अपनी बोडो कहानी का अंग्रेज़ी अनुवाद 'कंसेंट' शीर्षक से प्रस्तुत किया। श्री गोविंद प्रसाद शर्मा ने अपनी असमिया कहानी के अंग्रेज़ी अनुवाद 'ओ गोल्डेन ओरिओल ऑफ़ द हिल्स' का पाठ किया। श्री हरनोट ने अपनी कहानी 'आभी' का पाठ किया।

'मेरी रचना मेरा संसार' शीर्षक परिचर्चा में संयोजक के रूप में श्री येसे दरजे थोंगछी ने बोडो कवि, कथाकार श्री मंगल सिंह हाजोवारी, हिंदी कथाकार श्री शिवमूर्ति तथा ओड़िया कथाकार श्रीमती यशोधारा मिश्र से उनके रचना-संसार से जुड़े हुए कई प्रश्न पूछे।

कविता-पाठ सत्र में श्री लीलाधर जगूड़ी जी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि कविता की भाषा में लगातार परिवर्तन हो रहा है। शायद यह परिवर्तन इसलिए है कि हमारा समाज और हमारे विचारों में भी परिवर्तन हो रहा है, जिन्हें आज की कविता बख़ूबी अभिव्यक्त करती है। उन्होंने अपनी 'प्रेम की स्थानीयता', 'प्रेम किया मैंने', 'इतिहास में घास' आदि कविताओं का पाठ किया। कविता-पाठ में श्रीमती ज्योतिरेखा हाज़रिका (असमिया), श्रीमती रश्मि चौधुरी (बोडो), श्री विजय वली (कश्मीरी), श्री नारायण जी (मैथिली), श्रीमती इंदुप्रभा देवी (नेपाली), श्री शंकर सिंह राजपुरोहित (राजस्थानी), श्री रामशंकर अवस्थी (संस्कृत), श्रीमती क़मर सुरूर (उर्दू), श्री संजय चक्रवर्ती (बाङ्ला), श्रीमती प्रोमिला मन्हास (डोगरी), श्री एन.टी. लेप्चा (लेप्चा), श्री तोंग्ब्रम अमरजीत सिंह (मणिपुरी), श्री रविंदर (पंजाबी), श्री यशोदा मुर्मू (संताली) ने अपनी कविताओं के पाठ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किए।

परिसंवाद : भारतीय साहित्य में प्रकाशकों की भूमिका

17 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने साहित्योत्सव 2018 के दौरान 'भारतीय साहित्य में प्रकाशकों की भूमिका' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 17 फ़रवरी 2018 को रवींद्र भवन परिसर में किया। परिसंवाद का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात असमिया लेखक प्रो. ध्रुवज्योति बोरा ने दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने की। प्रो. बोरा ने अपने संबोधन में कहा कि भारत में क्षेत्रीय भाषाओं में लिखे जा रहे साहित्य की विपुल धरोहर है, लेकिन अनुवाद न होने के कारण वह साहित्य पाठकों तक नहीं पहुँच पा रहा है। प्रकाशकों और लेखकों की सबसे बड़ी चिंता अनुवाद को लेकर होनी चाहिए, जिससे इस समस्या का कोई ठोस समाधान हो सके।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने कहा कि प्रकाशक और लेखक का रिश्ता बड़ा संवेदनशील है। प्रकाशन उद्योग, जो कभी कुटीर उद्योग हुआ करता था, आज कॉरपोरेट युग में पहुँच चुका है। उन्होंने प्रकाशकों से अनुरोध किया कि लेखक के अधिकारों की सुरक्षा का ध्यान रखें, वहीं लेखकों से भी अपील की कि वे उनकी व्यावहारिक समस्याओं के प्रति सहानुभूतिपूर्वक सोचें। अपने स्वागत भाषण में सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि पुस्तक प्रकाशन की दृष्टि से भारत दुनिया में छठे स्थान पर है और अंग्रेज़ी पुस्तक प्रकाशन में अमेरिका और इंग्लैंड के बाद भारत तृतीय स्थान पर है। हमें इतने व्यापक क्षेत्र के बारे में गंभीरता से सोचने की ज़रूरत है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता बिकास डी. नियोगी ने की, जिसमें श्री अरुण माहेश्वरी (हिंदी), श्री अरुण जाखड़े (मराठी) तथा श्रीमती वैशाली माथुर (अंग्रेज़ी) ने अपनी भाषाओं में प्रकाशन की स्थिति पर प्रकाश डाला।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री लीलाधर मंडलोई ने की, जिसमें श्री रमेश के. मित्तल (प्रकाशन संघ के अध्यक्ष), श्री रवि डी. सी. (मलयाळम्), श्री विजय (तेलुगु) तथा श्री हक़्क़ानी अल-क़ासमी (उर्दू) ने अपनी-अपनी भाषाओं में प्रकाशन की स्थिति पर प्रकाश डाला। दोनों सत्रों के अंत में लेखकों और पाठकों ने प्रकाशकों से सवाल भी पूछे, जो मुख्यतः प्रकाशकों द्वारा पारदर्शिता न बरतने के संबंध में थे। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) श्री अनुपम तिवारी द्वारा किया गया।

आओ कहानी बुनें

17 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली में 17 फ़रवरी 2018 को 'आओ कहानी बुनें' कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों के लिए कविता तथा कहानी लेखन प्रतियोगिताओं का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में सर्वोदय कन्या विद्यालय, नई दिल्ली की बाल कलाकार शामिया बेग़म ने घूमर नृत्य प्रस्तुति दी तथा मास्टर कर्ण गौतम ने भगवान गणेश की वंदना प्रस्तुत की। जानेमाने बाल लेखक श्री रजनीकांत शुक्ल तथा प्रख्यात लेखक, कार्टूनिस्ट, पत्रकार, नाटककार तथा पटकथा लेखक श्री आबिद सुरती कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

कविता एवं कहानी लेखन प्रतियोगिता

श्री रजनीकांत शुक्ल ने राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार प्राप्त नाज़िया ख़ान का परिचय दिया तथा बच्चों को बताया कि किस प्रकार 1957 से राष्ट्रीय वीरता पुरस्कारों को शुरू किया गया। नाज़िया ने अपनी कहानी साझा की, कैसे उसने दो मोटर-बाइक चालकों द्वारा अपहरण की गई लड़की को बचाया। इस कृत्य ने उन्हें पहचान दिलाई तथा राज्य स्तर पर उन्हें सम्मानित किया गया, जिसने बाद में उन्हें अपने पड़ोस में चलने वाले ड्रग-शराब माफ़िया को समाप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। बच्चों ने नाज़िया से कई प्रश्न पूछे जैसे-उन्होंने किन-किन चुनौतियों का सामना किया, उनकी प्रेरणा तथा जीवन में उन्हें किसका समर्थन मिला तथा उनका बच्चों के लिए क्या संदेश है।

बाएँ से दाएँ : पुरस्कार वितरित करते हुए डॉ. के. श्रीनिवासराव, श्री आबिद सुरती तथा श्री रजनीकांत शुक्ल

श्री आबिद सुरती ने बच्चों को बताया कि किस प्रकार शुरुआती लोगों ने संकेतों का प्रयोग करते हुए कहानी की यात्रा प्रारंभ की, जो बाद में शब्द बन गए। उन्होंने बच्चों को भारत की वाचिक परंपरा के बारे में बताया। उन्होंने गिजू भाई के कार्यों का संदर्भ दिया, जिन्होंने दादीयों से कहानियों को एकत्रित किया तथा उन्हें पूर्व-स्वतंत्र भारत में प्रकाशित किया, जिसका बाद

में श्री आबिद सुरती ने अनुवाद किया तथा गिजू भाई का गुलदस्ता नाम से प्रकाशित किया।

निम्नलिखित दिल्ली के स्कूलों के लगभग 300 विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में भाग लिया : केंद्रीय विद्यालय, एन.एफ़.सी. विज्ञान विहार, सरदार पटेल स्कूल, लोधी एस्टेट, सर्वोदय कन्या विद्यालय, दरियागंज, मिलेनियम श्रीराम स्कूल, ग्रेटर नोएडा, सर्वोदय बाल विद्यालय, दल्लु पुरा, डी.पी.एस. वसंत विहार, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, श्रेष्ठ विहार, मॉर्डन स्कूल, बारहखंबा रोड तथा सर्वोदय विद्यालय, शकरपुर।

प्रतियोगिताएँ दो विभिन्न आयु-वर्गों तथा हिंदी एवं अंग्रेज़ी में पृथक् रूप से आयोजित की गईं। प्रत्येक आयु-वर्ग और सेगमेंट के लिए तीन-तीन पुरस्कार थे। कार्यक्रम का समापन बच्चों के पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरण के साथ हुआ।

संवत्सर व्याख्यान : एस. एल. भैरप्पा

13 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान प्रख्यात कन्नड लेखक और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य डॉ. एस.एल. भैरप्पा ने दिनांक 13 फ़रवरी 2018 को सायं 6.00 बजे साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली में 32वाँ संवत्सर व्याख्यान दिया। इस संवत्सर व्याख्यान का विषय था—'एसेंट टू व्यास गुहा' (व्यास गुफा की यात्रा)।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने एस.एल. भैरप्पा का स्वागत करते हुए कहा कि संवत्सर व्याख्यान साहित्य अकादेमी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्याख्यान शृंखला है और इसी क्रम में यह 32वाँ संवत्सर व्याख्यान एस.एल. भैरप्पा द्वारा दिया गया। उन्होंने डॉ. एस.एल. भैरप्पा का परिचय देते हुए कहा कि भारतीय साहित्य जगत में आपका विशिष्ट स्थान है।

संवत्सर व्याख्यान के पूर्व साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने डॉ. एस.एल. भैरप्पा के साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनका अभिनंदन और स्वागत किया।

व्याख्यान के प्रारंभ में अपने बौद्धिक और सांस्कृतिक निर्माण को स्पष्ट करने के लिए डॉ. एस.एल. भैरप्पा ने अपने प्रारंभिक जीवन संघर्षों और कार्यकारी जीवन के विभिन्न पड़ावों का ज़िक्र किया। उन्होंने उन साहित्यिक विभूतियों के बारे में भी बताया, जिनकी रचनाओं को पढ़कर उन्होंने अपनी समझ विकसित की। उन्होंने दर्शन के बारे में प्लेटो के सिद्धांत 'फ़िलोसोफ़िया' (दर्शन) - 'लव ऑफ़ विज़डम' (प्रेम की स्वतंत्रता) तथा अरस्तू के 'मेटाफ़िज़िक्स' (आत्मतत्त्वज्ञान) के सिद्धांत को संदर्भित करते हुए कहा कि मोटे तौर पर यह भारतीय सिद्धांत—'अध्यात्म', 'तत्त्वज्ञान' या 'तत्त्वशास्त्र' के अनुरूप ही है, बल्कि आधुनिक पाश्चात्य खोजें आधुनिक भौतिक वैज्ञानिक सिद्धांतों की विभिन्न छायाएँ मात्र हैं।

डॉ. एस.एल. भैरप्पा ने कहा कि हम अत्याधुनिक तकनीकी जीवन प्रणाली को आत्मसात् करने में कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि मृत्यु के प्रति जागरूकता भारतीय दर्शन की मूलभूत चेष्टा है। डॉ. भैरप्पा ने अपने व्याख्यान में विभिन्न प्राचीन एवं समकालीन भारतीय तथा विदेशी दार्शनिक चिंतकों के हवाले से दर्शन के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि 'वेदों' का सारतत्त्व 'उपनिषद्' में है, 'उपनिषदों' का सारतत्त्व भगवद्गीता और बादरायण के ब्रह्मसूत्र में है। उन्होंने आदिशंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य, भास्कराचार्य, वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य, श्रीकांत और कई अन्य दार्शनिक मनीषियों द्वारा की गई टीकाओं/मीमांसाओं का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि वेदों की प्रबोधात्मक परंपराओं को, इन सूत्रों और उनकी टीकाओं/मीमांसाओं के मूलतत्त्व को मात्र बौद्धिक ही समझ सकते हैं। उन्होंने कहा कि वेदों और उपनिषदों के सारतत्त्व को आम जनता

तक दो महाकाव्यों– रामायण और महाभारत ने पहुँचाया है, बिना उपदेशात्मक परंपरा के। डॉ. एस. एल. भैरप्पा ने कहा कि 'आइडिया' (विचार), 'आइडियल' (आदर्श) और 'आइडियोलॉजी' (विचारधारा) के बीच में बहुत बड़ा अंतर होता है। उन्होंने इस अंतर को विस्तार से स्पष्ट किया।

डॉ. एस.एल. भैरप्पा का स्वागत करते डॉ. चंद्रशेखर कंबार

अपने महत्त्वपूर्ण व्याख्यान के अंतिम भाग में डॉ. एस.एल. भैरप्पा ने बताया कि बद्रीनाथ में एक गुफा है, जिसे 'व्यासगुहा' कहा जाता है। 'स्थलपुराण' के अनुसार, इसी गुफा में महाभारतकार ने निवास किया था और मानवता का महानतम महाकाव्य लिखा (बोलकर लिखाया) था। यह एक ऐतिहासिक 'मिथ' है या एक तीर्थ स्थान की पवित्रता का निर्माण करने वाला 'मिथ', हम नहीं जानते। एक लेखक जो इस 'मिथ' का अर्थ नहीं प्राप्त कर पाता, वह इस 'व्यासगुहा' की ऊँची चढ़ाई की दुर्गम यात्रा में एक क़दम भी नहीं चल सकता।

इस अवसर पर डॉ. एस.एल. भैरप्पा द्वारा दिए गए संवत्सर व्याख्यान को पुस्तिकाकार प्रकाशित और लोकार्पित भी किया गया।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2016

पुरस्कार अर्पण समारोह

28-29 दिसंबर 2017, अगरतला, त्रिपुरा

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष एवं सचिव तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के साथ अनुवाद पुरस्कार विजेता

साहित्य अकादेमी के वर्ष 2016 के अनुवाद पुरस्कार साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा 24 अनुवाद पुरस्कार विजेताओं को 28 दिसंबर 2017 को अगरतला टाउन हॉल, त्रिपुरा में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किए गए। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में अनुवाद को एक साहित्यिक गतिविधि बताया। उन्होंने इंगित किया कि अनुवाद सदैव प्रत्येक मानवीय संप्रेषण तथा अभिव्यक्ति का हिस्सा रहा है, इसकी प्रामाणिकता आधुनिक मीडिया तथा तकनीक द्वारा मिली है। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने भाषण में यह माना कि अनुवाद को एक साहित्यिक गतिविधि के रूप में मानना बहुत कठिन है। बिना अनुवाद के एक वैश्विक गाँव की कल्पना नहीं कर सकते। उन्होंने मिथकों, प्रतीकों, बिना अर्थ और महत्त्व खोए एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति की रीतियों के अनुवाद के संबंध में आनेवाली कठिनाइयों की विस्तार से चर्चा की।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रोफ़ेसर तेमसुला आओ ने कहा कि अनुवाद के बिना पूर्वोत्तर की परंपराओं को विश्व साहित्य के समक्ष नहीं रखा जा सकता। उन्होंने अकादेमी से आग्रह किया कि वह पश्चिमी तथा भारतीय महाकाव्यों को नागा तथा पूर्वोत्तर की अन्य भाषाओं में भी अनूदित करवाए जाने की संभावनाओं पर विचार करे।

समाहार वक्तव्य साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने दिया। उन्होंने क्षेत्रीय संस्कृतियों को अनुवाद के साथ जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पुरस्कार प्रशस्ति-पाठ किया तथा विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

अनुवादक सम्मिलन

29 दिसंबर 2017, अगरतला

अनुवादक सम्मिलन कार्यक्रम का आयोजन 29 दिसंबर 2017 को सैय्यद भगत सिंह युवा आवास, खेजुरबगान, अगरतला में आयोजित किया गया, जहाँ पर पुरस्कृत अनुवाद पुरस्कार विजेताओं ने अपने लेखकीय अनुभवों को श्रोताओं के साथ साझा किया। प्रख्यात लेखक एवं साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता प्रो. नामदेव ताराचंदाणी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उपस्थितगणों का स्वागत करते हुए कहा कि इस सत्र में अनुवादक स्वयं अपने सृजनात्मक अनुभवों को साझा करेंगे। सम्मिलन के आरंभ में बीरहास गिरि बसुमतारी ने डॉ. मामोनि आर. गोस्वामी कृत उनके अंतिम असमिया उपन्यास *थेंफाख्रि तहसिलदारर तामर तर'वाल* को बोडो में अनुदित करने के अनुभवों के बारे में बताया। मीना काकोडकार ने अमिताभ घोष कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *द शैडो लाइन्स* को कोंकणी में अनूदित करने के बारे में बताया। मिलिंद चंपानेरकर ने सईद अख़्तर मिर्ज़ा कृत अंग्रेज़ी आत्मकथा *अम्मी : लेटर टु ए डेमोक्रेटिक मदर* को मराठी में *लोकशाहीवादी अम्मीस...दीर्घपत्र* के नाम से अनूदित करने के बारे में बताया। राजस्थान के रवि पुरोहित ने भाई वीर सिंह कृत पंजाबी कविता-संग्रह *मेरे साईंया जीओ* को राजस्थानी में अनूदित करने संबंधी अपने अनुभव साझा किए। अमरजीत कौंके ने अपने अनुवाद प्रेम की चर्चा की तथा पवन करण कृत हिंदी काव्य-संग्रह *स्त्री मेरे भीतर* को पंजाबी में अनुदित करने के अनुभवों को साझा किया। राणि सदाशिवमूर्ति ने डॉ. राळ्ळबंडि कविता प्रसाद कृत तेलुगु कविता-संग्रह *ओण्टरि पूल बुट्ट* को संस्कृत में अनुदित करने के अपने अनुभवों की चर्चा की। जी. पूर्णचंद्रन ने मनु जोसेफ़ कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *सीरियस मेन* को तमिळ में अनुदित करने संबंधी अपने अनुभवों को साझा किया।

कृष्ण शर्मा, ओ.एल. नागभूषण स्वामी, रेवती मिश्र, अनीता निङ्गोमबम, ज्ञानबहादुर छेत्री, मोनालिसा जेना, गणेश ठाकुर हांसदा, मोहन गेहाणी, अशोक तंकशला तथा हक़्क़ानी अलक़ासमी ने भी अपने अनुवादकीय अनुभव साझा किए। प्रो. नामदेव ताराचंदाणी ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए पुरस्कार विजेताओं की प्रस्तुतियों पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के अंत में डॉ. राव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

अभिव्यक्ति

29-30 दिसंबर 2017, अगरतला

'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम का आयोजन 29-30 दिसंबर 2017 को सैय्यद भगत सिंह युवा आवास, खेजुरबगान, अगरतला में किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया। डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने अपने आरंभिक व्याख्यान में लोगों को जोड़ने में समकालीन समय में साहित्य के महत्त्व पर बल दिया। उन्होंने कई सामाजिक मुद्दों जैसे विस्थापन तथा लिंग भेद जैसी असमानताओं पर अपने विचार किए, जिनको समकालीन साहित्य में गंभीरता से लिया जा रहा है। प्रो. सरोज चौधुरी ने उद्घाटन व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि अभिव्यक्ति कार्यक्रम के माध्यम से हम भारतीय साहित्य की समानताओं तथा विभिन्नताओं को अच्छे से जान सकते हैं। प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में भारतीय संस्कृति में गौतम बुद्ध के समय से प्राचीन अनुवादकों के बारे में बताया। उन्होंने राहुल सांकृत्यायन द्वारा प्राचीन पांडुलिपियों की

कविता-पाठ सत्र

खोज कर तथा उन्हें अनूदित करने के प्रयासों की चर्चा की तथा उन्होंने वर्तमान अनुवादकों से अनुरोध किया कि उन्हें प्राचीन भारतीय विरासत पर अनुवाद-कार्य करना चाहिए तथा उसे सबके समक्ष लाना चाहिए।

उद्घाटन सत्र के पश्चात विभिन्न भाषाओं के छह प्रख्यात कवियों ने कविता-पाठ सत्र में भाग लिया। प्रतिभागी कवि थे—श्री राजीव बोरा (असमिया), श्री अकबर अहमद (बाङ्ला), श्री मोहन सिंह (डोगरी), श्री आर. एस. भास्कर (कोंकणी), श्रीमती प्रवासिनी महाकुड (ओड़िया) तथा पी. श्रीधर बाबू (तेलुगु)।

30 दिसंबर 2017 को आयोजित अभिव्यक्ति कार्यक्रम तीन सत्रों में विभक्त था—अनुवाद : संस्कृति को जोड़ने वाला; कहानी-पाठ तथा कविता-पाठ। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सत्राध्यक्ष श्री दामोदर खडसे तथा अन्य प्रतिभागियों यथा—श्रीमती मयूरी शर्मा बरुआ (असमिया), डॉ. फूलचंद मानव (हिंदी) तथा श्री एस. वरदराज (तमिऴ) का परिचय दिया। श्रीमती मयूरी शर्मा बरुआ ''बाल साहित्य के अनुवादों'', पंजाब से आए संपादक, लेखक, पत्रकार डॉ. फूलचंद मानव ने पंजाबी साहित्य और संस्कृति के संदर्भ में अनुवाद की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए तथा तमिऴ साहित्य के विद्वान और समालोचक श्री एस. वरदराज ने कहा कि साहित्य अकादेमी के पुस्तकालय भारतीय एकता और अनेकता का प्रतीक हैं। श्री दामोदर खडसे ने इस बात पर बल दिया कि संस्कृति, भाषा तथा साहित्य के अनुवाद को एकता और आपसी समझ के हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है, जिससे भारतीयता और अधिक सुदृढ़ होगी।

द्वितीय सत्र कहानी-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता कन्नड साहित्यकार श्री श्रीधर बालागर ने की। सर्वश्री पाइपरा राधाकृष्णन (मलयाळम्), सुखजीत (पंजाबी) तथा प्रो. नामदेव ताराचंदाणी (सिंधी) ने अपनी कहानियाँ 'सैक्रिफाइस ऑफ़ ए सन', 'अंतरा' तथा 'सफाईवाला अंकल' क्रमशः प्रस्तुत कीं।

तृतीय सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. चंद्रकांत मुरासिंह ने की। इस सत्र के प्रतिभागी कवि थे—डॉ. गोबिंद चंद्र माझी (संताली), श्री अजीत नार्ज़ारी (बोडो), श्री बशीर आरिफ़ (कश्मीरी), श्रीमती शेफ़ाली देवब्रह्म (कॉकबोरोक), श्री अशोक मेहता (मैथिली), श्री सुकराज दियाली (नेपाली), श्री आशुतोष दयाल माथुर (संस्कृत) तथा श्री इमाम आज़म (उर्दू) ने अपनी मूल भाषा में लिखित कविताओं को उनके अनुवादों के साथ प्रस्तुत किया। डॉ. चंदकांत मुरासिंह ने कविता-पाठ सत्र के सफल आयोजन पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कविता-पाठ के इस प्रकार के सत्रों के आयोजनों द्वारा हमें एक-दूसरे की संस्कृति को अच्छे से जानने का अवसर मिलता है तथा इससे आपसी समझ और अटूट एकता बनती है।

युवा पुरस्कार 2017

पुरस्कार अर्पण समारोह

22-24 दिसंबर 2017, चंडीगढ़

साहित्य अकादेमी ने 22-24 दिसंबर 2017 को रंधावा सभागर, पंजाब कला भवन, चंडीगढ़ में युवा पुरस्कार अर्पण समारोह तथा युवा लेखक उत्सव का आयोजन किया। युवा पुरस्कार 2017 अर्पण समारोह कार्यक्रम का आरंभ वंदन-गीत से हुआ। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने युवा पुरस्कार विजेताओं, प्रतिभागियों, अतिथियों तथा मीडियाकर्मियों का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने युवा पुरस्कार की शुरुआत के बारे में विस्तार से बताया, जिसे साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भाषाओं की युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने हेतु प्रारंभ किया गया था।

लेखकों तथा साहित्यप्रेमियों को संबोधित करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि युवा लेखकों को साहित्यिक आयोजन में भाग लेने तथा साहित्य को अपने व्यवसाय के रूप में चुनते हुए देखना अच्छा लगता है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक समाज में लोगों को दिशा देने वालों तथा समाज के

युवा पुरस्कार (2017) प्राप्त रचनाकारों के साथ बैठे हुए प्रख्यात पंजाबी लेखक डॉ. सुरजीत पातर, अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव (बाएँ से दाएँ)

लिए कुछ कर गुज़रने वालों की आवश्यकता होती है तथा लेखक अपने इस कर्त्तव्य का पालन काफ़ी लंबे समय से कर रहे हैं। उन्होंने युवा रचनाकारों को दूसरों के विचारों से दूर रहने का सुझाव दिया तथा कहा कि वे जो महसूस करते हैं वे वही लिखें। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने 24 भाषाओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार अर्पित किए। प्रख्यात पंजाबी साहित्यकार सुरजीत पातर ने पुरस्कार विजेताओं का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी के सचिव ने प्रशस्ति-पाठ किया।

डॉ. सुरजीत पातर ने अपने भाषण में कहा कि साहित्य समाज का दर्पण है तथा लेखक और साहित्यिक व्यक्ति बिना किसी संकोच के वही लिखते हैं जो वह महसूस करते हैं। उन्होंने युवा लेखकों को यह सुझाव दिया कि वह अपना आराम छोड़कर समाज के उन लोगों के लिए लिखें जिनकी कोई सुध नहीं लेता।

पुरस्कार अर्पण समारोह के पश्चात् कला मंडली, दिल्ली द्वारा मैथिली कवि विद्यापति द्वारा वसंत गीतों पर आधारित एक सांस्कृतिक प्रस्तुति 'विद्यापति बसंत' प्रस्तुत की गई।

लेखक सम्मिलन

23 दिसंबर 2017, चंडीगढ़

साहित्य अकादेमी ने युवा पुरस्कार विजेताओं 2017 के लिए 23 दिसंबर 2017 को रंधावा सभागार, पंजाब आर्ट काउंसिल, चंडीगढ़ में 'लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य डॉ. रवेल सिंह ने की। पुरस्कृत लेखकों ने अपने लेखकीय अनुभवों को साझा किया।

श्रीमती निगहत साहिबा (कश्मीरी) ने कहा कि उनका मानना है कि हमारे पर्यावरण में हमें तोड़ने अथवा हमें बनाने की शक्ति है तथा वे अपने माहौल से बहुत व्यथित हुई, टुकड़ों में बंट गईं तथा वह एक नए सांचे में ढल गईं। सुश्री मर्सी मारग्रेट (तेलुगु) ने कहा हमने जो चलते-चलते पीछे छोड़ा है वह हमारा जीवन और हमारी अपनी भाषा है। श्री सूर्यस्नात त्रिपाठी (ओड़िया) ने कहा कि यह उन लोगों के लिए भी महत्वपूर्ण है जिन्हें लेखन पर अधिकार है उन्हें यह भी महसूस करना चाहिए कि वह सिर्फ़ अपने विचारों और भावनाओं के ही प्रतिनिधि नहीं हैं, बल्कि वे उन सभी की आवाज़ हैं जो अपनी आवाज़ को सुनाने के लिए पर्याप्त ज़ोर से बात नहीं कर सकते हैं।

अन्य पुरस्कार विजेताओं में प्रतीम बरुवा (असमिया), शमीक घोष (बाङ्ला), बिजित गोरा रामसियारी (बोडो), रजिंदर रांझा (डोगरी), मनु एस. पिल्लै (अंग्रेज़ी), राम मोरी (गुजराती), तारो सिंदिक (हिंदी), शांति के. अप्पण्ण (कन्नड), अमेय विश्राम नायक (कोंकणी), चंदन कुमार झा (मैथिली), अवस्थी शशिकुमार (मलयाळम्), खङ्ग्रोकपम कृष्णमोहन सिंह (मणिपुरी), राहुल कोसंबी (मराठी), शरण मुस्कान (नेपाली), हरमन जीत सिंह (पंजाबी), उम्मेद धानियां (राजस्थानी), हेमचंद्र बेलवात (संस्कृत), मैना टुडु (संताली), रेखा सचदेव पोहाणी (सिंधी), मानुषी (ए. जयभारती) (तमिऴ) तथा रशीद अशरफ़ ख़ान (उर्दू) ने अपने लेखकीय अनुभवों को श्रोताओं के साथ साझा किया।

आविष्कार-अखिल भारतीय युवा लेखक उत्सव

23-24 दिसंबर 2017, चंडीगढ़

अपराह्न 2:30 बजे, दो दिवसीय 'अखिल भारतीय युवा लेखक उत्सव' का उद्घाटन हुआ। साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. रवेल सिंह ने आरंभिक वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि साहित्य में संपूर्व विश्व को एक साथ लाने की शक्ति है। उन्होंने कहा कि लेखक को अपने समाज में घट रही घटनाओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए और उनके बारे में लिखना चाहिए। प्रख्यात पंजाबी विद्वान गुलज़ार सिंह संधू ने विशिष्ट अतिथि के रूप में व्याख्यान देते हुए कहा कि यह आज के समय की माँग है कि लेखन के माध्यम से भाईचारा की परंपरा को प्रोत्साहित किया जाए।

उद्घाटन सत्र में विभिन्न भारतीय भाषाओं के कवियों—किशोर मंजीत बर' (असमिया), अजित बसुमतारी (बोडो), मोनिका कुमार (हिंदी), रामेशर सिंह (मणिपुरी), ऋतुप्रिया (राजस्थानी), जगदीप (पंजाबी) तथा आदिल रज़ा मंसूरी (उर्दू) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

24 दिसंबर 2017 को चार सत्र आयोजित किए गए। प्रथम सत्र की अध्यक्षता पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने की तथा प्रमिता भौमिक (बाङ्ला), देवेंद्र ठाकुर (डोगरी), सत्यमंगला महादेव (कन्नड), दत्तराज नायक (कोंकणी), रश्मि रूपम (मैथिली) और एन. सबरीनाथन (तमिळ) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

द्वितीय सत्र का विषय 'मैं क्यों लिखता हूँ' था। राजीव कुमार (हिंदी), श्रीजीत पेरुमथाचन (मलयाळम्) तथा गुरप्रीत सिंह रतोल (पंजाबी) ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए। लेखकों ने अपने लेखन की प्रेरणाओं से जुड़े अनुभव साझा किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता पंजाबी लेखक श्री मनमोहन ने की जो कहानी-पाठ को समर्पित था। इस सत्र में सम्हिता अर्नी (अंग्रेज़ी), पूजा तत्सत (गुजराती), मनोज पांडेय (हिंदी), दीना नज़ीर (कश्मीरी) तथा अगाज़बीर (पंजाबी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

चतुर्थ और अंतिम सत्र कवि सम्मिलन का था जिसकी अध्यक्षता डॉ. माधव कौशिक ने की तथा नितिन भारत वाघ (मराठी), हनोक थापा (नेपाली), प्रतीक्षा जेना (ओड़िया), कौशल तिवारी (संस्कृत), गणेश मरांडी (संताली), जयेश शर्मा (सिंधी) और पायला मुरली कृष्ण (तेलुगु) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

बाल साहित्य पुरस्कार 2017

पुरस्कार अर्पण समारोह

14-16 नवंबर 2017, विजयवाड़ा

बाल साहित्य पुरस्कार (2017) प्राप्त पुरस्कार विजेता, विजयवाड़ा

साहित्य अकादेमी ने 14 नवंबर 2017 को चुक्कापल्ली पिचय्या सभागार, विजयवाड़ा में बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पुरस्कार विजेताओं, अतिथियों, लेखकों तथा श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि यह पहला अवसर है, जब साहित्य अकादेमी नव्यांध्र की राजधानी अमरावती में कार्यक्रम का आयोजन कर रही है। उन्होंने आगे कहा कि प्राचीनकाल से अब तक हम वाचिक परंपरा के द्वारा सैकड़ों कहानियों की गणना कर सकते हैं, जो लेखनकला से पूर्व विकसित हुई थीं। उन्होंने भारतीय साहित्य में प्रकाशित महत्त्वपूर्ण पुस्तकों यथा *पंचतंत्र, हितोपदेश* तथा *कथासरित्सागर* पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ये पुस्तकें दो हज़ार वर्ष पुरानी हैं।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। उन्होंने कहा कि समकालीन परिदृश्य में बाल साहित्यकारों द्वारा कम साहित्य लिखा जा रहा है। उन्होंने प्रख्यात लेखकों, यथा - गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर, अमृतलाल नागर, आर.के. नारायणन, सत्यजित राय तथा कई अन्य लेखकों द्वारा बाल साहित्य को दिए गए उनके योगदानों का स्मरण कराया। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक तथा सोशल मीडिया के युग में बाल साहित्य को विकसित करने हेतु विशेष बल दिए जाने की आवश्यकता हेतु सुझाव दिए। 24 भाषाओं के बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं को प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने पुरस्कार प्रदान किए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात मलयाळम् लेखक श्री सेतु माधवन ने कहा कि वर्तमान समाज में बच्चों के लिए लिखना बहुत कठिन है। बेशक मैंने मलयाळम् में कई कहानियाँ तथा उपन्यास लिखे हैं किंतु मैं बच्चों के लिए एक भी कहानी नहीं लिख सका। बच्चों के लिए लिखने हेतु धैर्य, भाषा तथा गहन विचारशीलता होनी चाहिए। मैं अब तक अपने नाती-पोतों को कहानी सुनाने में सक्षम नहीं हो पाया हूँ।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि बाल साहित्यकार का एक अलग स्थान होता है। यह काफ़ी अनूठा भी होता है। लोककथाओं की भाँति, जब यह साहित्य वाचिक परंपरा में आता है तब यह सार्वभौमिक हो जाता है।

पुरस्कार अर्पण समारोह के पश्चात् जवाहरलाल नेहरू मणिपुर डांस अकादमी, इंफ़ाल के जानेमाने कलाकारों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम (लाइ-हारोबा, काबुई जागोई तथा माओ जागोई) प्रस्तुत किए।

लेखक सम्मिलन

15 नवंबर 2017, विजयवाड़ा

15 नवंबर 2017 को इंडियन मेडिकल एसोसिएशन हॉल, विजयवाड़ा में 'लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की। बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं ने इस अवसर पर अपने विचारों और अनुभवों को साझा किया। बाङ्ला लेखक श्री षष्ठीपद चट्टोपाध्याय ने कहा कि, ''मैं बाल साहित्य की ओर प्रवृत्त हुआ तथा मुझमें बच्चों के लिए साहित्य लिखने की इच्छा विकसित हुई जिसने मुझे उस मील के पत्थर तक पहुँचने में मदद की जहाँ मैं आज खड़ा हूँ।'' मैथिली लेखक श्री अमलेंदु शेखर पाठक ने बताया कि ''मैथिली मिथिला की स्थानीय भाषा है। सीता जी की मातृभाषा भी मैथिली थी। हम बाल साहित्य को भी महत्व दे रहे हैं।'' संस्कृत लेखक श्री रामकुमार मिश्र ने कहा कि बच्चे स्कूल से आने के पश्चात् अपने गृहकार्य में व्यस्त हो जाते हैं तथा दादा-दादी के साथ समय नहीं बिताते हैं। तेलुगु लेखक श्री वासाला नरसय्या ने कहा कि आजकल के बच्चे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के आदी हो चुके हैं तथा उनकी पुस्तकें पढ़ने में कोई रुचि नहीं है। हमें उनमें पुस्तक-पाठन की रुचि विकसित करनी होगी। श्री हरेंद्रनाथ बरठाकुर (असमिया), श्रीमती सुदेश राज (डोगरी), श्री शौकत अंसारी (कश्मीरी), श्री विन्सी क्वाद्रूस (कोंकणी), श्री एस.आर. लाल (मलयाळम्), श्री वेलु सरवणन (तमिऴ), श्री नज़ीर फ़तेहपुरी (उर्दू) ने भी अपने अनुभव साझा किए। धन्यवाद ज्ञापन के साथ लेखक सम्मिलन कार्यक्रम संपन्न हुआ।

भाषा सम्मान

25 अप्रैल 2017, विजयवाड़ा

साहित्य अकादेमी ने भाषा सम्मान अर्पण समारोह का आयोजन दिनांक 25 अप्रैल 2017 को सिद्धार्थ कॉलेज ऑफ़ आर्ट एंड साइंस, सिद्धार्थनगर, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश में किया।

भाषा सम्मान समारोह के अवसर पर साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों और साहित्य-प्रेमियों का स्वागत किया। भाषाओं के विकास में अपना जीवन समर्पित करने वाली प्रख्यात विभूतियों को

भाषा सम्मान अर्पण के लिए अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि अकादेमी आदिवासी और ग़ैर-मान्यता प्राप्त भाषाओं के विकास के लिए भी विशेष रूप से संबद्ध है। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि हमारे भारत देश में बहुत सारी भाषाएँ हैं और उनका प्रचुर साहित्य है। अकादेमी सभी भाषाओं के मूल्यवान साहित्य के प्रकाशन में अपनी विशेष ज़िम्मेदारी महसूस करती है। इसके पश्चात् उन्होंने श्री नागल्ला गुरुप्रसादराव, प्रो. टी.आर. दामोदरन और श्रीमती टी.एस. सरोजा सौंदरराजन को भाषा सम्मान प्रदान किए। इसके बाद पुरस्कृत विद्वानों ने अपना स्वीकृति वक्तव्य दिया। श्री नागल्ला गुरुप्रसादराव ने भाषा सम्मान प्रदान करने के लिए अकादेमी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि प्राचीन कवियों में महाकवि तिक्कन उनके प्रिय रचनाकार हैं। उनकी रचनाओं में तेलुगु भाषा के प्रायोगिक और व्यावहारिक दोनों ही तरह के मनोरम चित्र हम देख सकते हैं। प्रो. दामोदरन ने सौराष्ट्र की भाषाओं के बारे में जानकारी दी कि कैसे यह गुजरात से तमिलनाडु प्रवर्जन करके आई और कैसे बोलियों की संस्कृति हज़ारों वर्षों से जीवित बची हुई है। श्रीमती टी.एस. सरोजा सौंदरराजन ने सौराष्ट्री-भाषी होने के कारण सम्मानित किए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने सौराष्ट्री भाषा और साहित्य का मूल्यांकन करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। काल्डवेलर जो एक महान विद्वान थे, कहते हैं कि मागधी, मराठी, लाडी, मैथिली, कतरी, कोंकणी, भोजपुरी भाषाएँ सौरसेनी से निःसृत हैं। साहित्य अकादेमी के सदस्य डॉ. पापिनेनी शिवशंकर, तेलुगु परामर्श मंडल, कार्यक्रम का संचालन किया।

भाषा सम्मान से सम्मानित विद्वानों के साथ प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी तथा डॉ. के. श्रीनिवासराव

भाषा सम्मान

14 सितंबर 2017, मंगलौर

डॉ. अमृत सोमेश्वर को उनके तुलु भाषा और साहित्य को दिए गए बहुमूल्य योगदान हेतु उन्हें 14 सितंबर 2017 को मंगलौर में आयोजित कार्यक्रम में भाषा सम्मान प्रदान किया गया। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने तुलु एवं कन्नड भाषाओं के लिए पुरस्कार प्रदान किए।

इस अवसर पर निट्टे विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. एन. विनय फ्लैज, वहाँ के सम-कुलाधिपति प्रो. एम. शांताराम शेट्टी तथा

डॉ. चंद्रशेखर कंबार से भाषा सम्मान 2016 प्राप्त करते हुए डॉ. अमृत सोमेश्वर

वहाँ के कुलपति एस. रामानंद शेट्टी एवं डॉ. सोमेश्वर की पत्नी श्रीमती नर्मदा और साहित्य अकादेमी के कन्नड भाषा परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. ना. दामोदर शेट्टी भी उपस्थित थे।

भाषा सम्मान

4 अक्तूबर 2017, पुणे

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने 4 अक्तूबर 2017 को मनोहर मंगल कार्यालय, पुणे में भाषा सम्मान अर्पण समारोह का आयोजन किया। प्रो. मधुकर अनंत मेहेंदले को उनके द्वारा कालजयी और मध्यकालीन साहित्य के क्षेत्र में दिए गए योगदान हेतु भाषा सम्मान प्रदान किया गया। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत व्याख्यान में कहा कि भाषाएँ संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती हैं तथा भाषा के माध्यम से ही मुख्यतः संस्कृति की अभिव्यिक्ति होती है, अतः भाषा की हार जीवन की हार है। इसलिए भाषाओं को बचाने तथा पोषित करने की आवश्यकता है। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि यह अकादेमी की परंपरा है कि सही समय पर मानवीय मूल्यों के प्रति उत्कृष्ट योगदान देने वाले विद्वानों को अकादेमी सम्मानित करती है। उन्होंने आगे कहा कि प्रो. मेहेंदले को वेदों, महाकाव्यों, पाली एवं प्राकृत, ऐतिहासिक भाषिकी तथा अवेस्ता और पारसी हस्तलेखों का अद्‌भुत ज्ञान है। प्रो. तिवारी ने प्रो. मेहेंदले को भाषा सम्मान प्रदान किया। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रशस्ति-पाठ किया। प्रो. मेहेंदले ने श्रोताओं से अपने अनुभवों को साझा किया।

प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी से भाषा सम्मान 2016 ग्रहण करते हुए प्रो. मधुकर अनंत मेहेंदले

भाषा सम्मान : शेष आनंद मधुकर

31 जनवरी 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी का प्रतिष्ठित 'भाषा सम्मान' 2016 मगही भाषा तथा साहित्य में उल्लेखनीय योगदान हेतु 31 जनवरी 2018 को साहित्य अकादेमी सभागार में डॉ. शेष आनंद मधुकर को प्रदान किया गया। यह सम्मान साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा दिया गया। सम्मान स्वरूप स्मृतिफलक, अंगवस्त्रम् एवं एक लाख रुपये की राशि प्रदान की गई। सम्मान प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि सभी भाषाएँ पूज्य होती हैं और अपने परिवेश को व्यक्त करने के लिए उनसे बेहतर कोई और भाषा नहीं हो सकती। उन्होंने भोजपुरी, अवधी आदि कई भाषाओं के उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया कि भाषाएँ नदियों की तरह होती हैं जो मुख्यधारा की भाषा की नदी को बल प्रदान करती हैं। अतः हर किसी भाषा का अपना वैशिष्ट्य होता है और उसका मुक़ाबला कोई भी बड़ी भाषा नहीं कर सकती।

डॉ. शेष आनंद मधुकर ने मगही भाषा में विभिन्न विधाओं में अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं और कहा कि कोई भी भाषा अभिव्यक्ति के मामले में कमज़ोर नहीं होती है। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने भाषा सम्मान प्रारंभ करने के कारणों की विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि भारत जैसे बहुभाषी देश में हर भाषा का सम्मान करना साहित्य अकादेमी का कर्तव्य है और भाषा सम्मान इसी दृष्टिकोण के साथ शुरू किए गए हैं। 1996 में शुरू किया गया यह भाषा सम्मान अभी तक 96 लेखकों को प्रदान किए जा चुके हैं।

प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी से भाषा सम्मान 2016 ग्रहण करते हुए डॉ. शेष आनंद मधुकर

मानद महत्तर सदस्यता अर्पण

14 मार्च 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने कोरियाई कवयित्री, निबंधकार एवं भारतविद् डॉ. किम यांग-शिक को 14 मार्च 2018 को साहित्य अकादेमी के सभाकक्ष में मानद महत्तर सदस्यता प्रदान की। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने डॉ. किम एवं विद्वानों का स्वागत करते हुए भारत और कोरिया के बीच के प्राचीन और समृद्ध सांस्कृतिक संबंधों पर तथा इन दोनों देशों के साहित्यिक आदान-प्रदान पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सम्मान-पत्र पढ़ा तथा साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने डॉ. किम यांग-शिक को मानद महत्तर सदस्यता प्रदान की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. माधव कौशिक ने कहा कि डॉ. किम यांग-शिक के समर्पित प्रयासों से दोनों देशों की सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपरा एक-दूसरे के क़रीब आई है। डॉ. किम यांग-शिक सिर्फ़ दक्षिण कोरिया की सांस्कृतिक दूत ही नहीं बल्कि भारत की भी हैं।

डॉ. किम यांग-शिक को भाषा सम्मान 2016 प्रदान करते हुए श्री माधव कौशिक

अपने स्वीकृति वक्तव्य में डॉ. किम यांग-शिक ने इस सम्मान के लिए अकादेमी को धन्यवाद दिया और अपने प्रारंभिक जीवन के बारे में बात की कि कैसे वह लेखिका बनीं और उनके देश के साहित्यिक परिदृश्यों का प्रभाव उनके लेखन पर पड़ा। अपने अभिनंदन भाषण में डॉ. दिविक रमेश ने कहा कि डॉ. किम यांग-शिक उन विरले लेखकों में से हैं, जो भारतीय परंपरा के आध्यात्मिक सदाचार को आत्मसात किए हैं तथा वे कोरियाई संवेदनशीलता को सन्निहित कर पाने में सफल रही हैं।

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद तथा सम्मेलन

भारतीय साहित्य और सामाजिक विकास पर संगोष्ठी

5-7 अप्रैल 2017, शिमला

साहित्य अकादेमी ने भारतीय आधुनिक अध्ययन संस्थान, शिमला के सहयोग से 'भारतीय साहित्य और सामाजिक विकास : सिद्धांत, उपयोग और सामुदायिक प्रभाव' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 5-7 अप्रैल 2017 को भारतीय आधुनिक अध्ययन संस्थान, शिमला में किया। उद्घाटन सत्र में संस्थान के राष्ट्रीय फ़ेलो प्रो. विजय शंकर वर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण में व्यक्त किया कि साहित्य किस प्रकार बौद्धिक एवं भौतिक वास्तविकता का प्रतिबिंब है और अतीत एवं वर्तमान के मध्य सेतु का कार्य करता है। प्रख्यात विचारक और मनोविश्लेषक डॉ. सुधीर कक्कड़ ने अपने भाषण में भारत एवं यूरोप के मध्य मनोवैज्ञानिक संघर्ष की बात की। साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. मालाश्री लाल ने धन्यवाद भाषण दिया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में नमिता गोखले ने ''रिमेम्बरिंग कुमाउं, रिकार्डिंग कुमाउं'' पर आलेख प्रस्तुत किया, जबकि प्रिया सरुक्कई छाबड़िया ने ''इवोल्विंग एन एस्थेटिक ऑफ रप्चर एंड रेप्चर'' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के दूसरे सत्र की अध्यक्षता भा.आ.अ. संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. चेतन सिंह ने की। सत्र में रेबा सोम, रागिनी कपूर और विनीता ढ़ोंडियाल भटनागर ने ''सिस्टर निवेदिताज़ वेब ऑफ़ इंडियन लाइफ़ (1903)—ए नैरेटिव फ़ॉर नेशन बिल्डिंग'', ''द इंडियन विजुअल आर्ट'' एंड ''राईटर्स फ़ॉर चेन्ज : ए हिस्ट्री एंड एकाउंट ऑफ़ प्रोगेसिव राइटर्स एसोसिएशन'' पर आलेख प्रस्तुत किए। तीसरे सत्र में मुनमुन मजुमदार ने ''द पॉलीटिक्स ऑफ़ रिप्रेजेन्टेशन इन सिलेक्ट वर्क्स ऑफ़ फिक्शन फ्रॉम इंडियाज़ नार्थइस्ट'' तथा निर्वाण मन्ना ने ''इंटेरोगेटिंग एप्लाईड थिएटर एज़ ए टूल फ़ॉर कैपेसिटी बिल्डिंग इन कंटेम्परेरी बंगाल : ए केस स्टडी'' पर आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के चौथे सत्र में भा.आ.अ. संस्थान के अध्यक्ष प्रो. चंद्रकला पाड़िया ने भारतीय साहित्य और परंपरा पर अपने विचार रखे। मार्टिन कैंपचेन ने ''रवींद्रनाथ टैगोरज़ वर्ल्डव्यू रिसेप्शन—ए क्रिटीकल ओवरव्यू'' विषय पर अपनी बात रखी। शैल मायाराम ने 'ए लिटरेरी जिनालोजी ऑफ़ राईट विंग नेशनलिज़्म' पर जबकि ज्योतिर्मय त्रिपाठी ने ''द प्रोडक्शन ऑफ़ लिटरेरी वैल्यूज़ इन कंटम्परेरी इंडिया'' पर आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के पाँचवें सत्र में सतीश आईकांत, आनंदिता पैन और अरुनाभ बोस ने ''इंडिया एंड यूरोप : निर्मल वर्मा एज़ ए क्रिटिकल इनसाइडर'', ''राइटिंग द सेल्फ : ऑटोबायोग्राफीज़ एंड द पॉललिटिक्स ऑफ़ चेन्ज'' और ''द एंडेन्जरिंग ऑफ़

ए सबाल्ट्रन हिस्ट्रीयोग्राफी इन द पलामु फिक्शन ऑफ महाश्वेता देवी'' विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। छठे सत्र में अक्षय कुमार ने ''प्रोग्रेसिव पंजाबी पोएट्री'' पर हिमाद्रि रॉय ने ''टॉर्न बिटवीन इमोशन्स : ए क्रिटिकल एनालिसिस ऑफ़ बाईसेक्सुएलिटि इन राओज़ लेडी लोलिताज़ लवर'' और रमा शंकर सिंह ने ''लाईफ लैंगुवेज एंड पालिटिक्स ऑफ़ नोमेड्स ऑफ़ उत्तर प्रदेश'' पर शोध प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के सातवें सत्र के दौरान सिमरन चड्ढा ने ''रिफ्रेरेक्टड विटनेसिंग : नरेटिव्स फ्रॉम द वैली'' और रोहित फुतेला ने ''फाइंडिंग एजेंसी, कॉम्बेटिंग द कलेक्टिव ट्रोमा : बलबीर माधोपुरी अगेंस्ट द नाइट'' विषय पर क्रमशः आलेख प्रस्तुत किए। आठवें सत्र में प्रेम कुमारी श्रीवास्तव, पांडुरंग कांशीराम भोये और अनिता बालकृष्णन ने ''आनटूलॉजिकल आर्टिकुलेशन्स ऑफ़ द फोक : देशीवाड एंड बारहमासा ऑफ़ नार्थ इंडिया'', ''लिटरेचर ऑन आदिवासीज़ अवेकनिंग इन महाराष्ट्र'' और ''रिक्विम फ़ॉर ए ट्राइब : एनवायरमेंटल एथिक्स एंड एथनोग्राफी रीरीडिंग राजम कृष्णनस वेन द कुरिंजी ब्लूमस'' विषयों पर क्रमशः आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के समापन सत्र में कौस्तुव चक्रवर्ती ने ''इन सर्च ऑफ़ एन एंडोजीनस इको-मैस्कूलिनिटि : ए जरनी थ्रु सिलेक्ट ट्राइबल टेल्स एंड ग्रीन पॉलिटिक्स ऑफ़ गुलज़ार'' विषय पर आलेख पढ़े, जबकि वी. दीपा ने ''द पोएटिक्स एंड पॉलिटिक्स ऑफ़ जल्लीकट्टू इन सी. एस. चेलप्पाज़ वाडीवासल : एरीना'' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का समापन प्रो. सुमन्यु सत्पथी, प्रो. मालाश्री लाल और डॉ. आर. उमा माहेश्वरी द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी : सर सैयद अहमद ख़ाँ जन्म द्वि-शतवार्षिकी

14-14 अप्रैल 2017, अलीगढ़

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की सर सैयद अहमद ख़ाँ जन्म द्वि-शतवार्षिकी समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में कला संकाय परिसर, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में 14-15 अप्रैल 2017 को द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.एल. हांगलू ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया, जबकि प्रोफ़ेसर फ़रहतुल्ला ख़ान (प्रोफ़ेसर एमेरिट्स) ने समारोह की अध्यक्षता की। उद्घाटन सत्र में प्रोफ़ेसर हांगलू ने कहा कि सर सैयद पर औपनिवेशिक समर्थन का आरोप ग़लत लगाया जाता है क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश शासन का समर्थन कभी नहीं किया। उन्होंने कहा कि सर सैयद सांस्कृतिक और शिक्षा क्रांति लाना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने अंग्रेज़ी भाषा को बढ़ावा दिया। प्रो. हांगलू ने आगे कहा कि सर सैयद एक देशभक्त थे, जो लोगों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध थे। सर सैयद ने ब्रिटिश साम्राज्य के समय भी सामान्य भारतीयों के सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और आर्थिक उत्थान के बारे में सोचा था। उन्होंने कहा कि जब हम सर सैयद की जन्म द्वि-शतवार्षिकी का जश्न मना रहे हैं, तो इस बात पर विचार करने के लिए यह उचित समय है कि हम योग्य

संगोष्ठी में व्याख्यान देते हुए प्रो. फरहतुल्ला ख़ान

लोगों का निर्माण करने में सक्षम क्यों नहीं हैं जो समाज-सुधार के लिए सर सैयद के नक़्शे-क़दम पर चल सकें। आज विश्व जब सभ्यताओं के संघर्ष के लिए तत्पर डटा है, तो यह महत्त्वपूर्ण है कि हम सर सैयद के विचारों को वास्तविक जीवन में प्रगति और सद्भाव लाने के लिए लागू करें।

आरंभिक वक्तव्य देते हुए प्रो. एम. शाफ़े किदवई ने कहा कि समकालीन विश्व में शिक्षा के अपने मिशन को नई दिशाओं में ले जाने के लिए सर सैयद के कार्यों को फिर से देखने का समय है। प्रोफ़ेसर किदवई ने कहा कि आज की दुनिया में मौजूद संघर्षों पर विचार करते हुए सर सैयद के विचार समाज की प्रगति और उसमें सुधार के लिए और भी महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं।

साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी को सर सैयद अहमद ख़ाँ पर यह आयोजन एएमयू के सहयोग से यहाँ आयोजित करने में गर्व है। इतिहास से तथ्यों को याद करते हुए, श्री ख़याल ने बताया कि सर सैयद एक ऐसे समय में थे, जिसने 1857 में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष को देखा था और उस समय में मिर्ज़ा ग़ालिब और रवींद्रनाथ टैगोर जैसे बुद्धिजीवी थे। बीज वक्तव्य देते हुए प्रो. असग़र अब्बास ने कहा कि सर सैयद एक ऐसे समय में थे, जब यूरोप में कार्ल मार्क्स जैसे विचारक थे। सर सैयद और कार्ल मार्क्स—दोनों ने समाज में सुधार लाने का कार्य किया है। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. फ़रहतुल्ला ख़ान ने ज़ोर देकर कहा कि धर्मनिरपेक्षता और सहिष्णुता बनाए रखने के लिए आज की दुनिया में सर सैयद के विचारों पर काम करना ज़रूरी है। प्रो. मौला बख्श ने कार्यक्रम का संचालन किया, जबकि श्री अजय कुमार शर्मा, सहायक संपादक, साहित्य अकादेमी ने सभी के प्रति औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

संताली उपन्यास की प्रवृत्तियाँ

23-24 अप्रैल 2017, जमशेदपुर

साहित्य अकादमी और जाहेर थान कमिटी, जमशेदपुर ने संयुक्त रूप से ''संताली उपन्यास की प्रवृत्तियाँ'' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन 23-24 अप्रैल 2017 को जनजाति सांस्कृतिक केंद्र, जमशेदपुर झारखंड में किया। साहित्य अकादेमी के विशेष कार्य अधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया, जबकि साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हंसदा ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। श्री हांसदा ने अपने परिचय वक्तव्य में संताली उपन्यास के विकास की यात्रा पर प्रकाश डाला। श्री रवींद्रनाथ मुर्मू ने अपने आरंभिक भाषण में संताली उपन्यास की समकालीन प्रवृत्तियों का संक्षिप्त परिचय दिया। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री शोभानाथ बेसरा ने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण है। अंत में, जाहेर थान कमिटी के अध्यक्ष प्रो. दिगंबर हांसदा ने धन्यवाद भाषण दिया। संगोष्ठी के प्रथम सत्र के समापन की अध्यक्षता श्री रतन हेमब्रम ने की जिसमें डॉ. मंसाराम मुर्मू ने संताली उपन्यास की प्रवृत्तियों पर आलेख पढ़ा, जबकि लक्ष्मी बास्के और लक्ष्मीनारायण हांसदा ने क्रमशः ''संताली उपन्यास के इतिहास'' और ''संताली उपन्यास का समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव'' विषयक आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री समय किस्कू ने की, जिसमें लखन मुर्मू ने सी.एम. हांसदा के उपन्यास मनुमती और अन्य उपन्यासों पर विस्तृत जानकारी थी। श्री विश्वनाथ टुडू ने ''संताली उपन्यास पर वैश्वीकरण का प्रभाव'' पर आलेख प्रस्तुत किया। श्रीमती दुली हेंब्रम ने डोमन हांसदा के उपन्यास *आतु ओढ़ा* पर आलेख प्रस्तुत किया। ''संताली उपन्यास में महिला किरदार'' विषय पर डॉ. रामु हेंब्रम ने आलेख प्रस्तुत किया। तृतीय सत्र श्री बादल हेंब्रम की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री मोहन बास्के और श्री गणेश टुडू ने क्रमशः

''संताली उपन्यासों में विस्थापन'' और ''संताली उपन्यास में चरित्र'' विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के चौथे सत्र की अध्यक्षता श्री सी.पी. माझी ने की जिसमें सर्वश्री पांचुगोपाल हेंब्रम, श्री माणिक हांसदा और माझो, मुर्मू ने पश्चिम बंगाल, झारखंड और ओड़िशा में संताली उपन्यास की वर्तमान स्थिति पर लेख प्रस्तुत किए। श्री सी.पी माझी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में संताली उपन्यास लेखन की वर्तमान स्थिति पर संतोष व्यक्त किया।

संगोष्ठी : 'भारतीय नेपाली भाषा में वर्तनी का मानकीकरण'

29-30 अप्रैल 2017, दार्जीलिङ

साहित्य अकादेमी तथा नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जीलिङ के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय नेपाली भाषा में वर्तनी का मानकीकरण' विषय पर 29 तथा 30 अप्रैल 2017 को दार्जीलिङ, पश्चिम बंगाल में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री कमल रेग्मी ने श्री महानंद पौड्याल के न आ पाने के कारण संगोष्ठी के उद्घाटन स्वरूप उनके द्वारा भेजे गए संदेश और आलेख का पाठ किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने श्रोताओं का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी की गतिविधियों की जानकारी दी। श्री प्रेम प्रधान, संयोजक, नेपाली परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने आरंभिक वक्तव्य देते हुए भारतीय नेपाली भाषा में वर्तनी के मानकीकरण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमारे कुछ प्रकाशन में हम नेपाल में उपयोग किए जाने वाली सामान्य वर्तनी का प्रयोग कर रहे हैं, जबकि भारतीय नेपाली भाषा को स्पष्ट रूप में अलग होना चाहिए। श्री शंकर देव ढकाल, प्रख्यात नेपाली साहित्यकार ने बीज भाषण दिया। श्री कर्ण थामी, अध्यक्ष, नेपाली साहित्य सम्मेलन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और बताया कि इस संबंध में एन.एस.एस. ने पहले ही कार्यवाही पूरी कर ली है। डॉ. जस योञ्जन 'प्यासी' ने संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में श्री लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं ने 'भारतीय नेपाली भाषा का भाषाशास्त्रीय भूगोल' विषय पर तथा डॉ. नवीन पौड्याल ने 'भारतीय नेपाली भाषा और नेपाल की नेपाली भाषा का तुलनात्मक दृष्टिकोण' विषय पर अपने आलेख का पाठ किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात नेपाली आलोचक श्री असीत राई ने की। श्री अर्जुन प्रधान ('भारतीय नेपाली भाषाको उच्चारण—भेद र अर्थ-संकेत'), श्री खेमराज नेपाल ('भारतीय नेपाली भाषामा तथा पंचम वर्णको आवश्यकता') तथा डॉ. गोकुल सिन्हा ('भारतीय नेपाली में स्वर तथा व्यंजन का प्रयोग') ने भी अपने आलेख का पाठ किया। तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री हस्त नेचाली ने की। श्री मिलन बांतवा और डॉ. सुजाता रानी राई ने सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रतिष्ठित नेपाली आलोचक डॉ. जीवन नामदुंग ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। श्री हरेन आले ने समापन वक्तव्य दिया। श्री भक्तराज सुनुवार, महासचिव, नेपाली साहित्य सम्मेलन ने संगोष्ठी के अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी : समकालीन मणिपुरी कविता और इसका परिप्रेक्ष्य

18-19 मई 2017, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी के कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय ने कल्चरल फ़ोरम, मणिपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'समकालीन मणिपुरी कविता और इसका परिप्रेक्ष्य' विषय पर एक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी 18-19 मई 2017 को दवे लिटरेचर सेंटर, डी.एम. कॉलेज कैंपस, इंफ़ाल, मणिपुर में आयोजित की। कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय प्रभारी गौतम पॉल

ने अतिथियों का स्वागत किया और अपने वक्तव्य में बीसवीं सदी के प्रारंभिक काल से आधुनिक काल तक मणिपुरी काव्य की शैलियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में 'समकालीन मणिपुरी कविता और इसका परिप्रेक्ष्य' विषयक संगोष्ठी को इंफ़ाल में आयोजित किए जाने के बारे में बताया। नाओरेम खगेंद्र सिंह ने सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने मणिपुरी भाषा और साहित्य को प्रोत्साहित किए जाने के प्रयासों के बारे में बताया। प्रथम विचार सत्र की अध्यक्षता इलांगबम दिनमणि सिंह ने की और नाओरेम विद्यासागर सिंह, था। तरुण सिंह और आर.जे. मैतेई ने अपने आलेख क्रमशः 'लोकसाहित्य और समकालीन मणिपुरी कविता', 'इलांगबम नीलकांत सिंह के काव्य में सांस्कृतिक पहचान की समस्याएँ' और 'समकालीन मणिपुरी कविता में उत्तर-आधुनिकता का परिप्रेक्ष्य' विषयों पर प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता लोंगजम जयचंद सिंह ने की तथा लैश्राम कोइरेंग सिंह, कोंजेंगबम मीनाकेतन मैतेयी और मोइरेंगथेम राजेश सिंह ने अपने आलेख क्रमशः 'समकालीन मणिपुरी कविता में प्रेम', 'समकालीन मणिपुरी कविता में युवा-बेचैनी' और 'समकालीन मणिपुरी कविता की शैली और पद-रचना' विषय पर प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता ख. कुंज सिंह ने की। सत्र में नंद निंगोम्बा, आहंजाओ मैतेई और टी. कुंजकिशोर ने क्रमशः 'समकालीन मणिपुरी कविता में स्त्रियाँ', 'समकालीन मणिपुरी कविता में रस' और 'समकालीन मणिपुरी कविता में आधुनिकता' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। राजेन तोइजम्बा ने चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता की। सत्र में हाओबिजम चानू प्रेमा, फुरित्सबम खेलेंद्र सिंह, बुद्धिचंद्र हेइसनांबा और टी. सूरजबाला ने क्रमशः 'प्रकृति और समकालीन मणिपुरी कविता', 'समकालीन मणिपुरी कविता में ग्राम्य जीवन का निरूपण', 'समकालीन मणिपुरी कविता का आलोचनात्मक मूल्यांकन' तथा 'समकालीन मणिपुरी कविता में मौजूदा अंतरराष्ट्रीय प्रवृत्तियाँ' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। कल्चरल फोरम की महासचिव खवैरकपम सुनीता देवी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

समकालीन मणिपुरी कविता और इसका परिप्रेक्ष्य विषयक संगोष्ठी के प्रतिभागी

संगोष्ठी : दीनूभाई पंत जन्मशतवार्षिकी

17-18 मई 2017, जम्मू

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली तथा जम्मू एंड कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के संयुक्त तत्त्वावधान में 17-18 जून 2017 को 'दीनूभाई पंत जन्मशतवार्षिकी' के अवसर पर दो-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन अभिनव थियेटर में किया गया।

प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि कोई भी लेखक उसी भाषा को माध्यम बनाकर आम जनता के लिए लिखता है। वह वही लिखता है जिसे आम जनता समाज में घटित घटनाओं को देख या महसूस नहीं कर पाई है।

बाएँ से दाएँ : प्रो. नीलांबर देव शर्मा, प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, डॉ. मनोज और प्रो. ललित मंगोत्रा

प्रो. एन.डी. शर्मा ने अपने बीज वक्तव्य में दीनूभाई पंत के योगदान के बारे में कहा कि दीनूभाई पंत द्वारा लिखी डोगरी कविता और साहित्य, डोगरी साहित्य के इतिहास में उस युग का महत्त्वपूर्ण मोड़ था। प्रो. ललित मगोत्रा ने अपने आरंभिक वक्तव्य में दीनूभाई पंत की जन्मशतवार्षिकी को इस तरह मनाने के लिए साहित्य अकादेमी की सराहना करते हुए कहा कि उनके जीवन के सभी पहलुओं को इस दो दिवसीय संगोष्ठी में शामिल करने के लिए साहित्य अकादेमी प्रशंसा की हकदार है। डॉ. मनोज ने इस अवसर पर अपने पिता दीनूभाई पंत से जुड़े अनुभव साझा करते हुए बताया कि वे एक कवि, एक प्रगतिशील व्यक्ति और एक मित्र की तरह थे।

प्रख्यात डोगरी साहित्यकार प्रो. वीणा गुप्ता ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में वेद राही द्वारा 'दीनूभाई पंत जी बार-बार समझने की लोर', यश रैना द्वारा 'आधुनिक डोगरी कविता के प्रवर्तक दीनू भाई पंत' तथा सुशील बेगाना द्वारा 'दीनू भाई पंत हुंद कविता च मानवी चेतना' आलेख प्रस्तुत किया गया।

एक संगीतमय शाम 'आविष्कार' का भी आयोजन किया गया। जिसमें बृजमोहन द्वारा संगीतबद्ध दीनूभाई पंत के गीतों को प्रस्तुत किया गया। गायकों में सोनाली डोगरा, वंशिका जराल, वर्षा जम्वाल और विवेक मोहन ने प्रस्तुति दी। राकेश आनंद (बाँसुरी), सुनील शर्मा (सिंथेसाइज़र) और करण मल्होत्रा (तबला) ने संगत दी।

पद्मश्री वेद कुमारी घई, लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, चंचल डोगरा, किरण बख्शी, छत्रपाल, डी.सी. रैना, राजकुमार, प्रकाश प्रेमी, चमन अरोड़ा, विजय वर्मा, एन.डी. जामवाल, शिवदेव सुशील, ज्ञानेश्वर शर्मा, नीरू शर्मा, ललित गुप्ता, शिव मेहता, राज राही, ओ.पी. शर्मा, दर्शन दर्शी, शिव निर्मोही, रीता जितेंद्र, सुषमा शर्मा, परमेश्वरी शर्मा, कृष्णा शर्मा, सुरिंदर सागर, बृजमोहन, बलजीत रैना, मोनोजीत, शाम, साजन, शाम तालिब, राजिंदर राँझा, चंचल भसीन, विजया ठाकुर, प्रोमिला मन्हास, डॉ. अग्निशेखर, पी.एन. त्रिशाल, रतन लाल शांत, सुरिंदर गोयल, महाराज कृष्ण संतोषी, मदन पाधा, विजय सेठ, जोगिंदर सिंह सहित कई साहित्यकार वहाँ उपस्थित थे। दूसरे दिन तीन सत्र आयोजित किए गए, जिसमें डोगरी साहित्यकारों एवं विद्वानों ने दीनू भाई पंत की कविताओं और नाटकों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। 'द्वितीय सत्र की अध्यक्षता नरसिंह देव जाम्वाल ने की, जिसमें श्री राजकुमार बहरूपिया, डॉ. जगदीप दुबे और डॉ. बंशीलाल शर्मा ने क्रमशः 'दीनूभाई पंत का नाटक सरपंच', 'पंत का नाटक अयोध्या' और 'महिलाओं के बारे में संवाद' तथा दीनूभाई पंत के काव्य' विषय पर आलेख प्रस्तुत किए गए। श्री दर्शन दर्शी ने तृतीय सत्र की अध्यक्षता की। सर्वश्री जोगिंदर सिंह, शिव निर्मोही और संदीप दुबे ने दीनूभाई पंत की कविताओं के विभिन्न पहलुओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के चौथे और अंतिम सत्र की अध्यक्षता श्री प्रकाश प्रेमी द्वारा की गई। यह सत्र भी दीनूभाई पंत की कविताओं पर केंद्रित था। सर्वश्री छत्रपाल, सुरजीत होश तथा पद्म सिंह देव ने 'पंत की कविता का सामाजिक महत्त्व' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी : गजानन माधव मुक्तिबोध जन्मशतवार्षिकी

27-28 मई 2017, राजनांदगाँव

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली तथा शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगाँव के संयुक्त तत्त्वावधान में गजानन माधव मुक्तिबोध जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 27-28 जून 2017 को मुक्तिबोध स्मारक, त्रिवेणी संगम, राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़ में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र

इस कार्यक्रम डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने अतिथियों, मीडियाकर्मियों तथा श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि मुक्तिबोध आधुनिक भारत के प्रबुद्ध चिंतकों में प्रमुख हैं। उनके चिंतन और सृजन में एक नया कोण मिलता है जिसने पीढ़ियों को आंदोलित और प्रभावित किया है। उनकी वैश्विक चेतना आदर्श जीवन-मूल्यों से समृद्ध है। उनकी रचनाओं में मनुष्य की अस्मिता, उसकी गरिमा और समष्टि के प्रति दृढ़ प्रेम प्रकट होता है। इस सत्र में प्रख्यात विद्वान एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री कन्हैयालाल अग्रवाल ने उद्घाटन वक्तव्य देते हुए कहा कि मुक्तिबोध जी की नज़र वैश्विक परिदृश्य पर लगी हुई थी। परसाई जी के बाद वे अकेले लेखक हैं जिन्होंने विश्व राजनीति के बनते-बिगड़ते समीकरणों पर दृष्टि डालने की कोशिश की। इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि मुक्तिबोध के पुत्र श्री रमेश मुक्तिबोध थे। उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि सच्चा और बड़ा लेखक वह होता है जिसके लेखन से अवधारण ाएँ बदल जाती हैं। मुक्तिबोध साहित्य और चिंतन की अवधारणाओं में बदलाव लाने वालों में से एक साहित्यकार हैं। मुक्तिबोध के काव्य ने हिंदी कविता को एक नई दिशा दी। बीज वक्तव्य दिया प्रख्यात हिंदी साहित्यकार और विद्वान नंदकिशोर आचार्य ने। उन्होंने कहा कि मुक्तिबोध जितने बड़े कवि हैं उतने ही बड़े आलोचक भी हैं। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात साहित्यकार राजेंद्र मिश्र ने मुक्तिबोध को 'वेदना का क्रांतिकारी लेखक' कहा।

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगाँव के प्राचार्य आर.एन. सिंह ने उद्घाटन सत्र के सभी वक्ताओं एवं श्रोताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कवि लीलाधर जगूड़ी ने की, जिसका विषय था 'मुक्तिबोध की कविता'। इस सत्र में मलय, मंगलेश डबराल, अरुण कमल और प्रफुल्ल शिलेदार ने अपने आलेख पढ़े।

द्वितीय सत्र 'मुक्तिबोध की कहानियाँ और उपन्यास' विषय पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता करते हुए प्रतिष्ठित भाषाविद् और आलोचक डॉ. अमरनाथ ने मध्यवर्ग के चरित्र को तार-तार करती मुक्तिबोध की कहानियों पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि मुक्तिबोध की अधिकांश कहानियों में मध्यवर्ग की हक़ीक़त बयान की गई है। उनकी कहानियाँ आज के संदर्भ में ज़्यादा प्रासंगिक हैं। इस सत्र में डॉ. चित्तरंजन मिश्र, डॉ. गोरख थोरात तथा डॉ. गजानन चव्हाण ने आपने आलेख पढ़े।

28 जून 2017 को तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित कवि, कथाकार, आलोचक और अनुवादक श्री प्रभात त्रिपाठी ने की। इस सत्र का विषय था—'मुक्तिबोध की डायरी एवं उनका संस्कृति चिंतन'। इस सत्र में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे और डॉ. रेवती रमण ने अपने आलेख का पाठ किया।

चतुर्थ सत्र का विषय था—'मुक्तिबोध का इतिहासबोध और आलोचना', जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात कवि, आलोचक तथा संपादक श्री विजय बहादुर सिंह ने की। इस सत्र में सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार माधव हाड़ा तथा प्रसिद्ध मराठी कवि, अनुवादक और चित्रकार गणेश विसपुते ने अपने आलेख का पाठ किया। गणेश विसपुते ने कहा कि मुक्तिबोध की रचनाओं को शैली के आधार पर भले बाँटा जाए किंतु कई विधाओं की आवाजाही ही मुक्तिबोध के लेखन की एक विशिष्टता भी है।

समापन समारोह में प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने साहित्य अकादेमी के प्रति आभार प्रकट किया। श्री अशोक चौधरी के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

इस दो दिवसीय आयोजन में नगर सहित प्रदेश के विभिन्न हिस्से से आए हुए साहित्यकारों सहित मुक्तिबोध के चारों पुत्र सर्वश्री रमेश मुक्तिबोध, दिवाकर मुक्तिबोध, दिलीप मुक्तिबोध और गिरीश मुक्तिबोध ने अपनी उपस्थिति से समारोह को सफल बनाया। नगर के वरिष्ठ साहित्यकार सर्वश्री डॉ. गणेश खरे, गणेश शंकर शर्मा, सरोज द्विवेदी, प्रभात तिवारी आदि ने अपनी उपस्थिति से समारोह को गरिमा प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन श्री अनुपम तिवारी, संपादक, साहित्य अकादेमी ने किया।

पश्चिमी और उत्तर-पूर्वी भारतीय भाषाओं में लोक-साहित्य पर संगोष्ठी

14-15 जुलाई 2017, गोआ

साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई, गोआ कोंकणी अकादेमी और इन्स्टीट्यूट मीनेज ब्रेग्रेंज़ा ने संयुक्त रूप से ''पश्चिम और उत्तर-पूर्वी भारतीय भाषाओं में लोक-साहित्य'' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन 14-15 जुलाई 2017 को इन्स्टीट्यूट मीनेज़ ब्रेग्रेन्ज़ा, पणजी, गोआ में किया गया। जाने-माने कोंकणी लेखक और विद्वान श्री उदय भेंब्रे ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया और प्रसिद्ध लोक-कथाकार श्री अनिल बोरो तथा गोआ कोंकणी अकादेमी के अध्यक्ष श्री प्रकाश वाज़रिकर उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि थे। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने श्रोताओं एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक श्री तानाजी हलर्णकर ने परिचय वक्तव्य दिया। श्री भेंब्रे ने आठ भारतीय भाषाओं के लोक-कथाकारों और विद्वानों को एकत्र करके विचार विनिमय हेतु एक अवसर प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी का धन्यवाद दिया। श्री अनिल बोरो ने कहा कि लोक साहित्य और कलाओं के कारण ही मानवी मूल्य संरक्षित किए जा सकते हैं। इन्स्टीट्यूट मीनेज ब्रेगेंजा के श्री संजय हरमालकर ने धन्यवाद ज्ञापित दिया।

प्रथम सत्र ''लोक साहित्य : विन्यास की शैली और सरलता'' की अध्यक्षता गुजराती परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. बलवंत जानी ने की। श्री सत्यकाम बरठाकुर (असमिया), श्री अनिल बोड़ो (बोडो), श्री भीमजीभाई खचारिया (गुजराती), श्री विंसी क्वाद्रस (कोंकणी) ने इस सत्र में आलेख प्रस्तुत किए। मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री एच. बिहारी सिंह ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की। ''लोक साहित्य में समय और मूल्य व्यवस्था'' विषयक इस सत्र में श्री पारसमणि दत्ता (असमिया), प्रणव ज्योति नारज़री (बोडो), श्री भगवानदास पटेल (गुजराती), श्री पांडुरंग फलदेसाई (कोंकणी) ने आलेख प्रस्तुत किए।

मराठी परामर्श मंडल के सदस्य श्री अविनाश सप्रे ने तीसरे सत्र की अध्यक्षता की—लोक साहित्य में सांस्कृतिक

विनिमय। श्री प्रदीप ज्योति महंत (असमिया), श्री देतसुंग सोरगियारी (बोडो), श्री बलवंत जानी (गुजराती) और सुश्री जयंती नाईक (कोंकणी) ने इस सत्र में आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी का चौथा सत्र ''लोक साहित्य : विन्यास में शैलियाँ और सरलता'' का आरंभ शनिवार, 15 जुलाई 2017 को आरंभ किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री पांडुरंग फलदेसाई ने की।

सुश्री वाई. नंदिनी (मणिपुरी), श्री अविनाश सप्रे (मराठी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री जेठो लालवानी ने डॉ. प्रेम प्रकाश (सिंधी) का आलेख पढ़ा। पाँचवां सत्र–''लोक साहित्य में समय और मूल्य व्यवस्था'' पर आधारित था इस सत्र की अध्यक्षता श्री अनिल बोडो ने की। इस सत्र में श्री एन. किरण कुमार (मणिपुरी), डॉ. तारा भावलकर (मराठी) और श्री जेठो लालवानी (सिंधी) ने अपने आलेख पढ़े। अंतिम सत्र–''लोक साहित्य में सांस्कृतिक विनिमय'' पर आधारित था इस सत्र की अध्यक्षता श्री जेठो लालवानी ने की। अंतिम सत्र में श्री एच. बिहारी सिंह (मणिपुरी), श्री प्रकाश खांडगे (मराठी) और श्री कलाधर मुतवा (सिंधी) ने अपने आलेख पढ़े। अंत में साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किम्बाहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आधुनिक कन्नड साहित्य में विचार शैली और पंथ विषयक संगोष्ठी

17-18 जुलाई 2017, हरूगेरी

साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने श्री वृहभंद्र एजुकेशन सोसायटी आर्ट्स एंड कामर्स और बी.सी.ए. कॉलेज हरूगेरी के साथ मिलकर दो दिवसीय संगोष्ठी ''आधुनिक कन्नड साहित्य में विचार शैली और पंथ'' का आयोजन 17-18 जुलाई 2017 को श्री रामप्पा दारूर सभागार, हरूगेरी में किया। प्रख्यात आलोचक डॉ. नारहल्ली बालासुब्रह्मण्या ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया और साहित्य पर बात की। श्री श्रीधर बालागर ने आशा व्यक्त की, कि साहित्य में प्रत्येक विचार एक पथ बने और समाज में व्यक्तियों का सम्मान हो। श्री वृहभंद्र एजुकेशन सोसायटी के अध्यक्ष ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। निदेशक आर.एस. यलशेट्टी और सचिव वी.एच. पावस मुख्य अतिथि थे। डॉ. वी.एस. माली, निदेशक बी.आर. दारूर शोध केंद्र ने परिचय भाषण दिया, उन्होंने हरूगेरी जैसे ग्रामीण क्षेत्र में दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी की प्रशंसा भी की। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया और प्रो. त्रिशला मंगोजे ने कार्यक्रम का संयोजन किया और प्राचार्य डॉ. ए.डी. तोनागेगवे ने धन्यवाद ज्ञापित किया। शिमोगा के श्री सिराज अहमद ने कन्नड साहित्य में विचार शैली पर बात की। श्री बालासाहेब लोकापुर ने एक सृजनात्मक लेखक के रूप में अपने अनुभव साझा किए। द्वितीय सत्र–''आधुनिक कन्नड साहित्य में विचार शैली और पंथ–कन्नड कल्पित कथा'' की अध्यक्षता प्रो. राजेंद्र चेनी ने की। डॉ. राजशेखर हालमाने ने अपने भाषण में कन्नड साहित्य के आंदोलन एवं प्रवृत्तियों और कन्नड कल्पित कथा के इतिहास की व्याख्या की। तृतीय सत्र–आधुनिक कन्नड साहित्य में विचार शैली और पंथ–कन्नड़ काव्य'' की अध्यक्षता प्रख्यात आलोचक डॉ. एस.आर. विजयशंकर ने की। के.एल.ई. डिग्री कॉलेज महालिंगपुर के कन्नड व्याख्याता डॉ. अशोक नरोडे ने आशा देवी का आलेख पढ़ा। संगोष्ठी के चौथे सत्र की अध्यक्षता मूर्धन्य लेखक और उपन्यासकार डॉ. राघवेंद्र पाटिल ने की। इस सत्र में डॉ. बालासाहेब लोकापुर, के.आर. सिद्धगंगम्मा, बसवनेप्पा कम्बार, पत्रकार पृथ्वीराज कोवात्तार ने आधुनिक कन्नड साहित्य पर अपने विचार रखे। समापन सत्र में डॉ. बसवराज कलगुड़ी ने अध्यक्षता की। डॉ. गुरुपद मारीगुड्डी ने संगोष्ठी और कन्नड साहित्य की विलक्षणता पर बात की। श्री वृहभंद्र एजुकेशन सोसायटी के सचिव श्री वी. एच. पवार ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

मलयाळम् फ़िल्मों के साहित्यिक रूपांतरण के सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य पर संगोष्ठी

9-10 अगस्त 2017, कालीकट

आरंभिक व्याख्यान देते हुए डॉ. अनिल वल्लतोल

साहित्य अकादेमी द्वारा मलयाळम् विभाग और केरला स्टडीज, कालीकट विश्वविद्यालय के तत्वावधान में 9-10 अगस्त 2017 को ई.एम.एस. सेमिनार परिसर, कालीकट विश्वविद्यालय में ''मलयाळम् फ़िल्मों के साहित्यिक रूपांतरण के सामाजिक सांस्कृति परिप्रेक्ष्य'' पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के प्रथम दिन उद्घाटन सत्र में श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने स्वागत भाषण दिया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अनिल वल्लतोल संगोष्ठी का परिचय दिया। उसके बाद कालीकट विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. के. मुहम्मद बशीर ने अध्यक्षीय भाषण दिया। कालीकट विश्वविद्यालय के मलयाळम् और केरल स्टडीज़ विभाग के विभाग प्रमुख प्रो. उमर थेरामल ने संगोष्ठी की विषय-वस्तु प्रस्तुत की। प्रसिद्ध मलयाळम् लेखक और अभिनेता श्री वी. के. श्रीरामन ने बीज-भाषण दिया।

मलयाळम् और केरल स्ट्डीज़ विभाग के अध्यापक श्री पी. सोमनाथन ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। मीना टी. पिल्लै और सी.एस. वेंकटेश्वरन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता के.एम. अनिल ने की। डॉ. उमर थेरामल, मधु इरावांगरा, अजु के. नारायणन और अनवर अब्दुल्ला ने अपने-अपने आलेख पढ़े।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय सत्र की अध्यक्षता मंजू के.पी. सोमनादन ने की। आई. षणमुखदास और जी. उषा कुमारी ने इस सत्र में आलेख प्रस्तुत किए। चौथे सत्र की अध्यक्षता मंजू एम.पी. ने की। एम. दिवाकरन और के.पी. जयकुमार ने आलेख पढ़े।

पाँचवें और अंतिम सत्र के अध्यक्ष रहे एम.बी. मनोज और पी. बालचंद्रन, प्रख्यात निदेशक, अभिनेता और फ़िल्म लेखक ने समापन भाषण दिया। एम.ए. रहमान और के. गोपीनाथन ने फ़िल्म निर्माण के अपने अनुभव साझा किए।

इन्शा अल्ला खाँ इन्शा की 200वीं पुण्यतिथि पर संगोष्ठी

18 अगस्त 2017, हैदराबाद

मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय के सहयोग में साहित्य अकादेमी ने हैदराबाद में एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन प्रख्यात उर्दू कवि, लेखक और भाषाविद् इन्शा अल्ला खाँ इन्शा की 200वीं पुण्यतिथि पर 18 अगस्त 2017 को मौलाना आज़ाद विश्वविद्यालय के सभागार में किया। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. मोहम्मद अमलम

परवेज़ ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया, उन्होंने कहा कि यह संगोष्ठी प्रतिभाशाली भाषाविद् इन्शा अल्ला खाँ इन्शा को श्रद्धांजलि है, उन्होंने उर्दू व्याकरण की पहली पुस्तक दरिया-ए-लताफत लिखी थी। प्रख्यात उर्दू लेखक प्रो. अशरफ़ी रफ़ी ने बीज-भाषण दिया जिसमें उन्होंने इन्शा अल्ला खाँ इन्शा की साहित्यिक कृतियों की समीक्षा की। सत्र के अंत में विश्वविद्यालय की एसोसिएट प्रोफ़ेसर और साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल की सदस्या डॉ. वसीम बेगम ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रो. फातिमा परवीन ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में प्रो. साहिब अली और डॉ. वसीम बेगम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र में प्रो. फातिमा परवीन और डॉ. याहिया नशीत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. बेग एहसास ने सत्र की अध्यक्षता की। तृतीय और अंतिम सत्र में डॉ. शम्सुल होदा दरयाबादी, प्रो. मौला बक्श और प्रो. हबीब निसार ने अपने आलेख पढ़े।

डोगरी कहानी पर संगोष्ठी

25-26 अगस्त 2017, जम्मू

जम्मू विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर डोगरी विभाग के साथ साहित्य अकादेमी ने डोगरी कहानी पर दो दिवसीय संगोष्ठी का अयोजन 25-26 अगस्त 2017 को जम्मू विश्वविद्यालय में किया। प्रख्यात डोगरी लेखिका प्रो. वेद कुमारी घई ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मंगोत्रा ने प्रारंभिक टिप्पणी की। सुविख्यात डोगरी कहानी लेखक श्री छत्रपाल ने बीज-भाषण दिया। डोगरी विभाग की प्रमुख प्रो. सुष्मा शर्मा ने धन्यवाद प्रकट किया और साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। उद्घाटन भाषण में प्रो. केशव शर्मा ने कहा कि डोगरी भाषा तेज़ी से आगे बढ़ रही है। साथ ही उन्होंने डोगरी विभाग, साहित्य अकादेमी, जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादेमी और अन्य संस्थाओं व व्यक्तिगत लेखकों की प्रशंसा की। उद्घाटन सत्र के बाद दो आलेख पाठ सत्र हुए, जिनकी अध्यक्षता प्रो. एन.डी. शर्मा और एन.डी. जम्वाल ने की। जिन लेखकों और विद्व ानों ने डोगरी कहानी के विभिन्न पक्षों पर आलेख प्रस्तुत किए उनमें डॉ. पद्म देव सिंह, श्रीमती सुनीता भदवाल, डॉ. जोगिंदर सिंह, श्री कृष्ण शर्मा, सुश्री राधा रानी और श्रीमती निर्मल विक्रम शामिल थे। संगोष्ठी के दूसरे दिन दो और सत्र आयोजित किए गए जिनकी अध्यक्षता प्रो. अर्चना केसर और प्रो. शिवदेव सिंह मनहस ने की। इन सत्रों के प्रतिभागी थे—श्री अशोक खजूरिया, श्रीमती चंचल भसीन, डॉ. सुनील कुमार, श्री राज राही, श्री राजेश्वर सिंह 'राजू' और श्री जगदीप दुबे। संगोष्ठी के अंत में प्रो. ललित मंगोत्रा ने सत्रों में पढ़े गए सभी 12 आलेखों की गुणवत्ता, स्तर और प्रसंगों पर संतोष व्यक्त किया।

ब्रजकिशोर ढल जन्मशती संगोष्ठी

27 अगस्त 2017, ओड़िशा

ब्रजकिशोर ढाल की जन्मशती पर एक संगोष्ठी का आयोजन टाउन हाल, ढेंकानाल, ओड़िशा में 27 अगस्त 2017 को किया गया। साहित्य अकादेमी के कार्यालय प्रभारी गौतम पॉल ने स्वागत भाषण देते हुए प्रख्यात राजनीतिक

बाएँ-दाएँ : सर्वश्री गुरु महांति, विभूति पट्टनायक, नृसिंह प्रसाद त्रिपाठी, गौरहरि दास तथा अंतर्यामी मिश्र

कार्यकर्त्ता ब्रजकिशोर ढल के ओड़िया साहित्य में अमूल्य योगदान पर चर्चा की। प्रख्यात ओड़िया लेखक विभूति पट्टनायक ने ब्रजकिशोर ढल के साथ अपने अनुभवों को साझा किया। साहित्य अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक श्री गौरहरि दास ने अपने परिचय भाषण में कहा कि ब्रजकिशोर ढाल ने अपनी पुस्तक में आधारशिला रखी जिसे प्रजा मंडल आंदोलन के पूर्ण इतिहास की नींव कहा जा सकता है। प्रख्यात लेखक श्री अंतर्यामी मिश्र ने ब्रजकिशोर के जीवन पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार ढेंकानाल के राजा ने 'समाज' जैसे अख़बारों और क्रुशाले एवं रणवेरज जैसी पत्रिकाओं को बैन किया और हज़ारों लोगों के साथ राजा का घेराव किया। श्री नृसिंह प्रसाद त्रिपाठी ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि ब्रजकिशोर ढाल ने 'प्रजा मेली' और 'प्रजा आंदोलन' के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात कवि श्री गुरु महांति ने ब्रजकिशोर ढल के जीवन की चार अवस्थाओं का वर्णन किया।

सत्र का प्रथम आलेख श्री मनोरंजन नंदा ने, दूसरा आलेख श्री प्रदीप्त कुमार बारिक ने और तीसरा आलेख श्री प्रकाश कुमार पट्टनायक ने प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता श्री सरोज समल ने की थी। उन्होंने ब्रजकिशोर ढल का वर्णन आमजन के एक मित्र, मार्गदर्शक और दार्शनिक के रूप में किया।

साहित्य अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य श्री बनोज त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

तेलुगु भाषा और साहित्य में आकाशवाणी का योगदान पर संगोष्ठी

28-29 अगस्त 2017, हैदराबाद

ऑल इंडिया, हैदराबाद और भाषा और संस्कृति विभाग, तेलंगाना सरकार, हैदराबाद के सहसोग से साहित्य अकादेमी ने 'तेलुगु भाषा और साहित्य में आकाशवाणी का योगदान' पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 28-29 अगस्त 2017 को कांफ्रेन्स हॉल, रवींद्र भारती सभागार, हैदराबाद में किया।

अकादेमी ने पहली बार भाषा और साहित्य के विकास में प्रसारण माध्यम के योगदान पर केंद्रित संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने श्रोताओं का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की और

विस्तार से संगोष्ठी के विभिन्न पक्षों पर चर्चा की। मूर्धन्य ड्रामा वॉईस और आकाशवाणी हैदराबाद की सेवानिवृत्त कर्मी श्रीमती शारदा श्रीनिवासन ने दीप प्रज्वलित किया और आरंभिक भाषण दिया। कार्यक्रम के सम्मानीय अतिथि और तेलंगाना सरकार के भाषा और संस्कृति विभाग के निदेशक श्री मामिदी हरिकृष्ण ने उन्हें एक बहुआयामी विचारक बनाने में आकाशवाणी द्वारा प्रदत्त प्रेरणा पर बात की।

डॉ. आर.ए.पी. ने सत्र की अध्यक्षता की और पिछले छह दशकों के दौरान तकनीकी उन्नति और स्टॉफ पदक्रम के कारण प्रसारण में हुए बदलावों पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. पी.एस. गोपालकृष्ण ने बताया कि किस प्रकार मल्लमपल्ली उमामहेश्वर राव की उद्घोषणा के साथ चेन्नै आकाशवाणी से वर्ष 1938 में मंत्री के.वी. नायडू द्वारा प्रथम तेलुगु संबोधन किया गया था।

श्री आई. श्रीकांत ने स्टॉफ के रूप में काम करनेवाले तेलुगु भाषा के महान लेखकों के बारे में बात की। श्री एस.बी. श्रीराममूर्ति ने अपने पुरस्कृत कार्यक्रमों का उदाहरण देते हुए नए कार्यक्रमों के निर्माण में भाषा प्रारूपों के प्रयोग से तकनीकों की व्याख्या की। अगले सत्र के अध्यक्षता अभिनेता, लेखक और रंगकर्मी श्री गोलापुड़ी मारुति ने की। श्री वोलेती पार्वतीसम ने आकाशवाणी की कविताओं पर बात करते हुए मनप्रागदा, श्री श्री और अन्य कवियों की कविताएँ पढ़ी। डॉ. नागसूरी वेणुगोपाल ने आकाशवाणी की कथा पद्धति पर आलेख पढ़ा।

संगोष्ठी के दूसरे दिन श्रीमती पी. वेदवती ने रेडियो के महिला कार्यक्रमों पर आलेख पढ़ा। उन्होंने सत्र की अध्यक्षता भी की। श्री पी.एस. भट्ट ने रेडियो पर प्रस्तुत व्यंग्य पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया। रेडियो द्वारा प्रस्तुत भक्ति रंजन कार्यक्रम में प्रचारित भक्तिपूर्ण साहित्य का प्रदर्शन श्री मालादी सुरीबाबू ने किया। श्री वी. गोपीचंद ने कृषि प्रसारण पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री कलगा कृष्ण मोहन ने रेडियो के सुगम संगीत पर आलेख प्रस्तुत किया।

डॉ. के. बी. गोपालम ने दोपहर के सत्र की अध्यक्षता की और इसी सत्र में श्रीमती मंजुलुरी कृष्ण कुमारी और श्री सम्मेता नागमल्लेश्वर राव ने आलेख पढ़े। सत्र के अंत में तेलंगाना सरकार के सलाहकार श्री के.वी. रामनचारी ने समापन टिप्पणी की। डॉ. गोपी ने संगोष्ठी की सफलता पर हर्ष व्यक्त किया और साहित्य अकादेमी और भाषा एवं संस्कृति विभाग, तेलंगाना सरकार का धन्यवाद भी दिया। संगोष्ठी के पश्चात् कविसंधि कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई।

आधुनिक मैथिली साहित्यक शिल्पी पर संगोष्ठी

2-3 सितंबर 2017, सहरसा

रमेश झा महिला महाविद्यालय, सहरसा के सहयोग से दो-दिवसीय संगोष्ठी ''आधुनिक मैथिली साहित्यक शिल्पी'' का आयोजन 2-3 सितंबर 2017, को सहरसा में किया गया। डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। मैथिली परामर्श मंडल की संयोजक डॉ. वीणा ठाकुर ने कहा कि साहित्य में कला एक सृजनात्मक प्रक्रिया है और कलाकार आविष्कारी और सृजनशील दोनों ही है।

अपने आरंभिक भाषण में डॉ. रामनरेश सिंह ने ''आधुनिक मैथिली साहित्यिक शिल्पी'' विषय पर चर्चा की। प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. महेंद्र ने कहा कि बहुत से ऐसे प्रबुद्ध लेखक हैं जिन्होंने कविताएँ व नाटक आदि लेखन की कला द्वारा स्वयं को स्थापित किया है। रमेश झा महाविद्यालय की प्रधानाचार्य डॉ. रेणु सिंह ने अतिथियों एवं श्रोताओं का धन्यवाद दिया। दूसरे सत्र में श्री विकास झा ने हरिमोहन झा के महान साहित्यिक जगत पर बात की। उनके बाद श्री पंचानन मिश्र ने महामहोपाध्याय की साहित्यिक यात्रा पर प्रकाश डाला। डॉ.

केशकर ठाकुर ने इस सत्र की अध्यक्षता की। अपने अध्ययीय वक्तव्य में सुश्री माधुरी झा ने कहा, ''हरिमोहन झा एक हवा के झोंके की तरह थे जिन्होंने मिथिला समुदाय को संगठित किया।'' दूसरे दिन श्री तारानंद सदा ने सत्र की अध्यक्षता की और श्री विश्वनाथ झा तथा श्री अमलेंदु शेखर पाठक ने अपने आलेख पढ़े। डॉ. नरेंद्र झा ने ''मणिपद्म लोक कथा के मालाकार'' पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री तारानंद सदा ने यह भी कहा कि इस तरह की संगोष्ठियाँ और कार्यक्रम सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत को मजबूत करते हैं। तीसरे सत्र में श्री के.पी. यादव अध्यक्ष थे। तीन जाने-माने विद्वानों श्री अशोक, श्री कृष्ण मोहन ठाकुर और श्री नारायण ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

गोपाल छोटराय जन्मशती संगोष्ठी

17 सितंबर 2017, भुवनेश्वर

17 सितंबर 2017 को भुवनेश्वर में गोपाल छोटराय पर एक जन्मशती संगोष्ठी का आयोजन किया गया। महान ओड़िया नाटककार, कहानीकार, कवि, मूर्धन्य संस्कृतिकर्मी और पद्मश्री गोपाल छोटराय पर जन्मशती समारोह का उद्घाटन करते हुए श्री मनोज मित्र ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। उद्घाटन सत्र में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत किया और ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक श्री गौरहरि दास ने श्रोताओं को संगोष्ठी की आधारभूत विषय-वस्तु का परिचय दिया। अपने भाषण में प्रख्यात विद्वान और आलोचक सुमन्यु सत्पथी ने गोपाल छोटराय के कार्यों की विविधता और महत्त्व को शब्दांकित किया। महान रंगकर्मी अनंत महापात्र ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की और अपने उद्बोधन में गोपाल छोटराय को अपने समय का बताया। गौतम पॉल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

बाएँ से दाएँ : सर्वश्री सुमन्यु सत्पथी, के.एस. राव, मनोज मित्र, अनंत महापात्र तथा गौरहरि दास

संगोष्ठी का प्रथम सत्र छोटराय के जीवन एवं कृतित्व पर बने वृत्तचित्र के फ़िल्मांकन से आरंभ हुआ। एक लेखक एवं सांस्कृतिक कार्यकर्त्ता के रूप में गोपाल छोटराय के बारे में बात करते हुए कहानीकार व फ़िल्म निर्माता श्री बियोतप्रजन त्रिपाठी ने उनके जीवन के कुछ विहंगम आशुचित्र प्रस्तुत किए। महान फ़िल्म निर्माता, अभिनेता और राजनीतिक व्यक्तित्व प्रशांत नंदा ने गोपाल जी के साथ अपनी अंतरंग आत्मीयता पर बात की। उत्कल विश्वविद्यालय के ओड़िया विभाग की प्रमुख संघमित्र मिश्र ने छोटराय के नाटकों की बहुस्तरीय शैलियों पर आलेख प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए मूर्धन्य नाटकार और फ़िल्म शख़्सियत विजय मिश्र ने श्रोताओं को याद दिलाया कि विश्व के किसी भी भाग में कोई दूसरा गोपाल छोटराय नहीं है। भोजन के पश्चात् आयोजित सत्र में नाटककार एवं विद्वान प्रो. विजय कुमार सत्पथी ने छोटराय की आत्मकथा के बारे में बात की। महान पत्रकार प्रशांत पटनायक ने बताया कि छोटराय आम संवेदनाओं और बौद्धिक प्रबलता का उत्कृष्ट मेल हैं।

संगोष्ठी के अंत में समापन वक्तव्य देते हुए प्रख्यात कवि, कथाकार और ख्यातिप्राप्त गीतकार एवं गोपाल छोटराय के पुत्र श्री देवदास छोटराय ने अपने पिता के जीवन एवं साहित्य का अन्यतम वर्णन प्रस्तुत किया। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रफुल्ल कुमार महांति ने की। अपने अध्यक्षयीय वक्तव्य में मोहंती ने छोटराय की विलक्षण नाटकीय भाषा का विश्लेषण प्रस्तुत किया। बनोज त्रिपाठी ने सबका धन्यवाद दिया।

साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष रमाकांत रथ, कथाकार विभूति पटनायक, धीरा बिस्वाल, अध्यापक विश्वरंजन, राजेंद्र किशोर पंडा और कई अन्य लेखक इस अवसर पर उपस्थित थे।

गौतम बुद्ध पर संगोष्ठी

20-21 सितंबर 2017, गुंटूर

जे.के.सी. कॉलेज, गुंटूर के सहयोग में दो-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 20-21 सितंबर 2017 को जे.के.सी. कॉलेज सभागार रिंग रोड, गुंटूर में किया गया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने कार्यक्रम के प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने समारोह की अध्यक्षता की और आरंभिक भाषण दिया। आंध्रप्रदेश विधानसभा के उपसभापति श्री मंदाली बुद्ध प्रसाद इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त, अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. पापिनेनी शिवशंकर ने बीज भाषण दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री कुर्रा जितेंद्र बाबू ने की और बोर्रा गोवर्धन तथा रायादुर्गम विजयलक्ष्मी ने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. आर. चंद्रशेखर रेड्डी ने की। इस सत्र में वाई. प्रशांति और श्री इमानी शिवांगीरेड्डी ने आलेख पढ़े। संध्या में कविसंधि कार्यक्रम के तहत श्री बांदला माधव राव ने अपनी कविताएँ पढ़ीं। दूसरे दिन तीसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. वाविलाला सुब्बाराव ने की और प्रो. चल्लापल्ली स्वरूपरानी तथा श्री जी.वी. सुब्रह्मण्यम ने आलेख पढ़े। डॉ. वाई. मल्लिकार्जुनराव ने चौथे सत्र की अध्यक्षता की और डॉ. नल्लापानेनी विजयलक्ष्मी तथा डॉ. वेदपल्ली श्रीनिवास ने आलेख प्रस्तुत किए। पाँचवां सत्र डॉ. नुताक्की सतीश और श्री लियाकत अली बोधी ने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. कोलाकालुरी इनोक थे। उन्होंने सिद्धार्थ से बुद्ध की महान यात्रा के पीछे के कारणों पर व्याख्या की। श्री पेनुगोंडा लक्ष्मीनारायण ने अपने सिंहावलोकन में संगोष्ठी के श्रेष्ठ आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. पापीनेनी शिवशंकर ने सत्र की अध्यक्षता की और संगोष्ठी को सफल बताया।

तमिल काव्य और छंद पर संगोष्ठी

4-5 अगस्त, 2017, पुदुच्चेरी

पुदुच्चेरी तमिल संगम के तत्वावधान में 4-5 अक्तूबर 2017 को तमिल संगम, पुदुच्चेरी में 'तमिल काव्य और छंद' पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी, चेन्नै के प्रभारी अधिकारी श्री ए.एस. इलंगोवन ने स्वागत भाषण दिया। साहित्य अकादेमी के तमिल परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नाचिमुथु ने अपने अध्यक्षयीय उद्बोधन में काव्य और छंद के प्रमुख लक्षणों के बारे में बताया।

आरंभिक व्याख्यान देते हुए डॉ. आर. समबथ

साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. आर. संबथ ने बताया कि कविता साहित्य की सर्वश्रेष्ठ विधा है। पुदुच्चेरी तमिल संगम के अध्यक्ष श्री वी. मुत्थु ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। मद्रास विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. पोरको ने आरंभिक भाषण दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. वाई. मनिकंदन ने की जिन्होंने तमिल छंद में विदेशियों के योगदान पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री ज्ञानसुंदरम ने कहा कि 'उलुराई' और 'इरायची' काव्यात्मक सुंदरता है जो तमिल काव्य को समृद्ध करती हैं। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. कारलोस तमिष़्वन ने की। श्री जवाहर, जयललिता और श्री राजरतिनम ने अपने आलेख पढ़े। तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री विजय वेणुगोपाल ने की। इस सत्र में श्री एन. मनोहरन, सुश्री ए. मोहना और श्री कंदासामी ने आलेख पाठ किए।

चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. इंद्र मनुएल ने की। उन्होंने तमिल काव्य में 'मेयप्पादु' पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री तिरुज्ञानसंबंधम और श्री आर. जयराम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पाँचवें सत्र की अध्यक्षता श्री के. पंजागम ने की, जिन्होंने महिला कवयित्रियों और काव्य पर शोध प्रस्तुत किया। डॉ. आर. कामरासु ने गायन की मौखिक परंपरा और काव्यशास्त्र पर आलेख पढ़ा। साहित्य अकादेमी के तमिल परामर्श मंडल के सदस्य श्री सुंदर मुरुगन ने समापन सत्र में स्वागत भाषण दिया। श्री सीनू मोहनदास ने इस सत्र की अध्यक्षता की। प्रख्यात बाल लेखक और कवि श्री एम.एल. थंगप्पा ने समापन भाषण दिया। पुदुच्चेरी तमिल संगम के उपाध्यक्ष श्री पी. ए. तिरुज्ञानसंबंधम ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'युग का साहित्यशास्त्र' पर संगोष्ठी

13-14 अक्तूबर 2017, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी और गुजराती साहित्य परिषद् ने संयुक्त रूप से 'युग का साहित्यशास्त्र' पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 13-14 अक्तूबर 2017 को अहमदाबाद में किया। गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक श्री सितांशु यशश्चंद्र और प्रख्यात गुजराती कवि और आलोचक प्रो. चंद्रकांत टोपीवाला ने अपने आरंभिक भाषण में कहा कि युग-वार गुजराती साहित्य के काव्य पर चर्चा गुजराती साहित्य और आलोचना की परंपरा को समझाने में सहायक होगी। प्रथम सत्र में श्री अभय दोशी और श्री हासु याज्ञिक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र में आधुनिक युग, सुधारक युग और पंडित युग पर तीन आलेख प्रस्तुत किए गए। तीसरे सत्र में आलेख गाँधी युग पर आधारित थे, सुश्री सेजल शाह ने गांधी युग और आधुनिक युग पर आलेख प्रस्तुत किए। अंतिम सत्र में श्री परेश नायक ने आधुनिकता-आदियुग पर और सुश्री उषा उपाध्याय ने अधुनिकता पर आलेख पढ़ा। श्री हेमंत दवे ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। गुजराती साहित्य परिषद् के सचिव श्री प्रफुल्ल रावल ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

बोडो साहित्य में पश्च-आधुनिक प्रवृत्तियों पर संगोष्ठी

5 नवंबर 2017, असम

बोडो विभाग अध्यापक संघ, बासुगाँव कॉलेज के साथ ''बोडो साहित्य में पश्च-आधुनिक प्रवृत्तियों'' पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 5 नवंबर 2017 को बासुगांव कॉलेज, असम में किया गया।

बाएँ-दाएँ : सर्वश्री प्रेमानंद मशाहारी, अनिल बोरो, रानेन च. मुसाहारी तथा भूपेन नार्ज़री

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बोडो लेखक और बोडो विभाग अध्यापक संघ के अध्यक्ष श्री तुलन मशाहारी ने की। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक प्रेमानंद मशाहारी ने सभी का स्वागत करते हुए आरंभिक भाषण दिया। प्रख्यात बोडो कवि और साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत अनिल बोरो मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। गुवाहाटी विश्वविद्यालय के बोडो विभाग प्रमुख भूपेन नार्ज़री ने भी कार्यक्रम में सम्मानीय अतिथि के रूप में भाग लिया। अंजलि दैमारी ने बीज-भाषण दिया जबकि रानेन च. मशाहारी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. अनिल बोरो ने की। इस सत्र में अदराम बसुमतारी, नरेश्वर नारज़ारी, रीता बोरो और सुनील फूकन बसुमतारी ने आलेख पढ़े।

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र नरेश्वर नारज़ारी की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें इंदिरा बोरो, निजवम नार्ज़री, प्रमतेश बसुमतारी और रनेन मशाहारी ने आलेख पढ़े।

संगोष्ठी : समर सेन जन्मशतवार्षिकी

6-7 नवंबर 2017, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने प्रख्यात कवि एवं पत्रकार समर सेन की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 6-7 नवंबर 2017 को साहित्य अकादेमी सभागार, कोलकाता में एक संगोष्ठी का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में बाङ्ला परामर्श के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने आरंभिक वक्तव्य दिया। प्रो. स्वप्न चक्रवर्ती ने बीज वक्तव्य तथा प्रो. अमियदेव ने इस सत्र की अध्यक्षता की। कार्यक्रम के आरंभ में श्री गौतम पॉल ने स्वागत भाषण देते हुए संक्षेप में 'द फ्रंटियर' के प्रतिष्ठित संपादक समर सेन के जीवन और कार्य के बारे में बताया।

बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने समर सेन की पृष्ठभूमि की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया, साथ ही संगोष्ठी की रूपरेखा के बारे में बताया। राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता के भूतपूर्व महानिदेशक तथा सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. स्वप्न चक्रवर्ती ने समर सेन के साथ अपने व्यक्तिगत अनुभव को साझा किया। उन्होंने श्रोताओं को बताया कि आपातकाल के समय कैसे समर सेन संपादन किया करते थे।

प्रथम सत्र समर सेन की कविता पर केंद्रित था। इस सत्र के वक्ता देवव्रत पंडा तथा जया मित्र थे और

अध्यक्षता की थी सौरिन भट्टाचार्य ने। द्वितीय सत्र में हिमवंत बंद्योपाध्याय तथा सुतपा सेनगुप्ता ने समर सेन की उत्तर आधुनिक कविताओं के बारे में उल्लेख किया। इस सत्र की अध्यक्षता सव्यसाची देव ने की। तृतीय सत्र के वक्ता आशीष कुमार लाहिड़ी तथा तरुण गांगुली थे और अध्यक्षता 'द फ्रंटियर' के संपादक तिमिर बसु ने की। यह सत्र 'एक संपादक के रूप में समर सेन का जीवन और कार्य' विषय पर केंद्रित था। चतुर्थ सत्र में कौशिक गुहा, अरुण सोम तथा पुलक चंदा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता कौशिक गुहा ने की। इस सत्र में अरुण सोम और कौशिक गुहा ने समर सेन के अनुवाद कार्य पर विस्तार से चर्चा की। पुलक चंद ने समर सेन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकृति के प्रभाव को उजागर किया। पाँचवे सत्र में अनिल आचार्य और रतन खासनवीस ने अपने आलेख प्रस्तुत किए और अध्यक्षता की दीपेंदु चक्रवर्ती ने। दोनों वक्ताओं ने 'समर सेन का जीवन एक संपादक के रूप में' विषय पर अपना वक्तव्य दिया।

बाएँ-दाएँ : स्वप्न चक्रवर्ती, अमिय देव तथा रामकुमार मुखोपाध्याय

संगोष्ठी : इस्माईल मेरठी जन्मशतवार्षिकी

11 नवंबर 2017, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 11 नवंबर 2017 को अकादेमी सभाकक्ष, नई दिल्ली में उर्दू के लब्धप्रतिष्ठ कवि इस्माईल मेरठी की जन्मशतावार्षिकी के अवसर पर एकदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए उर्दू के विख्यात समालोचक, विद्वान एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. गोपी चंद नारंग ने कहा कि इस्माईल मेरठी की गणना उर्दू के संस्थापकों में होती है। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों एवं विद्वानों का स्वागत किया तथा इस्माईल मेरठी की संक्षिप्त जीवनी प्रस्तुत की।

साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया तथा इस्माईल मेरठी की शायरी और व्यक्तित्व पर रोशनी डाली। बीज वक्तव्य देते हुए उर्दू के प्रसिद्ध समालोचक एवं विद्वान श्री हक़्क़ानी अल क़ासमी ने इस्माईल मेरठी की शायरी और उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया।

संगोष्ठी के पहले सत्र की अध्यक्षता प्रो. शाफ़े क़िदवई ने की। इस सत्र में नंदकिशोर विक्रम, फ़े.सीन.एजाज़ और रियाज़ अहमद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय एवं अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. शहज़ाद अंजुम ने की तथा फ़ारूक़ अर्गली, जमील अख़्तर एवं दानिश इलाहाबादी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी : उपेंद्रनाथ झा 'व्यास' जन्मशतवार्षिकी

12-13 नवंबर 2017, पटना

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं चेतना समिति, पटना के संयुक्त तत्त्वाधान में मैथिली के मूर्धन्य साहित्यकार उपेंद्रनाथ झा 'व्यास' के जन्मशती संगोष्ठी का दो दिवसीय आयोजन 12-13 नवंबर 2017 को किया गया। आरंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने उपस्थित अतिथियों, साहित्यकारों और श्रोतागणों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों का संक्षेप में ब्योरा प्रस्तुत किया। तदुपरांत इस जन्मशती संगोष्ठी का उद्घाटन वरेण्य साहित्यकार एवं भाषाविद् पं. गोविंद झा के कर-कमलों द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में पं. गोविंद झा ने उपेंद्रनाथ झा 'व्यास' को मैथिली के सर्वकालिक महान रचनाकारों में गणना करते हुए कहा कि मैथिली साहित्य में श्री व्यास का अवदान स्तुत्य है।

संगोष्ठी का विषय- प्रवर्तन साहित्य अकादेमी मैथिली भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. वीणा ठाकुर ने किया। प्रो. ठाकुर ने व्यास जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। प्रतिष्ठित मैथिली साहित्यकार प्रो. देवेंद्र झा ने बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए व्यास जी को विराट व्यक्तित्व का लेखक बताया तथा उनकी कई साहित्यिक कृतियों-अनुवादों पर अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि, चर्चित मैथिली लेखक और उपेंद्रनाथ झा 'व्यास' के सुपुत्र प्रो. शैलेंद्र कुमार झा ने व्यास जी के व्यक्तित्व से संबंधित कई प्रसंगों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की।

बाएँ से दाएँ : प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, प्रो. वीणा ठाकुर एवं प्रो. शैलेंद्र कुमार झा

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि मैंने सीधे-सीधे तौर पर उपेंद्रनाथ झा 'व्यास' को तो नहीं पढ़ा है किंतु उनके ऊपर लिखे को जितना कुछ पढ़ा है उसमें उन्हें सर्वकालिक महानों की श्रेणी में पाया है। उद्घाटन सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन चेतना समिति के अध्यक्ष विवेकानंद झा ने प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र डॉ. वासुकीनाथ झा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. सत्येंद्र कुमार झा, प्रो. शिवप्रसाद यादव एवं डॉ. पंकज पराशर ने व्यास जी पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी का द्वितीय सत्र डॉ. वीणा कर्ण की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. मुरलीधर झा और प्रो. अशोक अविचल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। आयोजन के दूसरे दिन संगोष्ठी के तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री विवेकानंद ठाकुर ने की। सत्र में डॉ. अजित मिश्र, डॉ. मंज़र सुलेमान और श्री अजित आज़ाद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र में डॉ. नरेश मोहन झा और डॉ. इंदिरा झा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' ने की।

'बाल साहित्य के विकास' पर संगोष्ठी-सह-पठन सत्र

15-16 नवंबर 2017, विजयवाड़ा

बाल साहित्य पुरस्कार प्रस्तुतिकरण समारोह के दूसरे दिन, साहित्य अकादेमी ने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन हॉल, एलुरू रोड, गवर्नर पेट, विजयवाड़ा में ''बाल साहित्य के विकास'' पर संगोष्ठी-सह-पठन सत्र का आयोजन किया। संगोष्ठी के प्रतिभागियों और उपस्थितजनों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा ''बाल साहित्य पृथ्वी पर प्रत्येक सभ्यता का आवश्यक अंग रहा है''। उन्होंने आगे बताया कि ज्ञान संवर्धन हेतु बाल साहित्य को बड़ा साधन माना गया है।

तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि वर्तमान समय के बाल साहित्य लेखकों को वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी बदलावों के साथ स्वयं को अद्यतन रखना होगा। उन्होंने कहा बाल साहित्य सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है और बच्चों में पढ़ने की आदत का विकास होना ही चाहिए। सम्मानीय अतिथि और प्रख्यात तेलुगु लेखक जोनालगदा राजगोपाल राव किन्ही कारणों से कार्यक्रम में भाग नहीं ले पाए और साहित्य अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेनुमोहन भान ने उनका संदेश पढ़ा। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि बाल साहित्य का विकास विश्व की साहित्यिक विरासत में मौखिक परंपरा द्वारा हुआ। उन्होंने बल दिया कि स्मार्ट फ़ोन की आदि वर्तमान पीढ़ी बाल लेखकों के लिए एक बड़ी चुनौती है और इसीलिए लेखकों को बदलती अभिरुचियों के साथ समगति से चलना होगा। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की समापन वक्तव्य के साथ सत्र समाप्त हुआ। उद्घाटन समारोह के बाद काव्यपाठ सत्र हुआ जिसमें श्री पी. मोहन (तेलुगु), श्री एम. मुरुगेश (तमिल), श्री अनो ब्रह्मा (बोडो), श्री कौशलेंद्र पांडे (हिंदी), श्री उदय कुमार शर्मा (असमिया), श्री अबा गोविंद महाजन (मराठी) एवं डॉ. फूलचंद झा प्रवीण (मैथिली) ने अपनी-अपनी भाषाओं में काव्यपाठ किया। सत्र की अध्यक्षता प्रो. एन. गोपी ने की। उन्होंने अपनी-अपनी भाषाओं में प्रयास करने हेतु कवियों की प्रशंसा की। इसके बाद साहित्य अकादेमी की उपसचिव रेनु मोहन भान ने प्रतिभागियों व श्रोताओं का स्वागत किया और सत्र के अध्यक्ष व प्रतिभागियों को आमंत्रित किया। इस सत्र की अध्यक्षा थी जानी-मानी तेलुगु बाल साहित्य लेखक श्रीमती एम. कृष्ण कुमारी। आकाशवाणी, विजयवाड़ा के सेवानिवृत्त निदेशक श्री तपन बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), डी. रामकृष्ण (संस्कृत), श्री दत्ता नाईक (कोंकणी) और जोधाचंद्र सनासम (मणिपुरी) ने इस सत्र में अपने लेखन के अनुभव और दृष्टिकोण व्यक्त किए। श्रीमती एम. कृष्णकुमारी ने कहा कि, ''तेलुगु बाल साहित्य की लोकप्रियता की यात्रा इतनी सहज नहीं है।'' श्री तपन बंद्योपाध्याय ने कहा कि वर्तमान के लेखक और कवि नए-नए लेखन का सृजन कर रहे हैं ताकि युवा साहित्य की ओर आकर्षित हों। कोंकणी लेखक श्री दत्ता नाईक ने कहा कि कोंकणी में बाल साहित्य का निर्माण इस प्रकार होना चाहिए जिससे बच्चे अपनी संस्कृतियों की ज़रूरी बातों, मूल्यों व दृष्टिकोणों को जान सकें। डी. रामकृष्ण ने बाल साहित्य को समृद्ध करने के लिए संस्कृत लेखकों की प्रशंसा की। श्री के. श्रीकुमार ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की। प्रख्यात विद्वान यथा श्री पी. रामकृष्ण (तेलुगु), अरविंद चोकड़ी (कन्नड), बुलाकी शर्मा (राजस्थानी) तथा शालू कौर (पंजाबी) ने अपनी-अपनी भाषाओं में बाल साहित्य के विकास पर अपने विचार रखे। तेलुगु विद्वान श्री पी. रामकृष्ण ने तेलुगु में बाल साहित्य के उन्नयन से संबंधित सूचनाएँ उपलब्ध करवाईं। कन्नड

लेखक अरविंद चोकड़ी ने कहा कि, ''बाल साहित्य के लेखकों के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण स्थिति है। बालकों तक पहुँचने के लिए हमें एक नया दृष्टिकोण अपनाना होगा। पंजाबी लेखिका सुश्री शालू कौर ने बच्चों के समक्ष प्रस्तुत चुनौतियों और बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु अपनाए जाने वाले संभावित उपायों पर बात की। कहानी वाचन पर केंद्रित तृतीय सत्र की अध्यक्षता मिनी श्रीनिवासन ने की। श्री एम. हरिकिशन (तेलुगु), एम. कलाईवासन (तमिऴ), ईश्वर परमार (गुजराती) और प्रियेश दीक्षित (हिंदी) ने अपनी-अपनी भाषाओं में बच्चों से जुड़ी कहानियाँ दिखाईं। अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात तेलुगु कवि के. शिवरेड्डी ने की। श्री बेलगाम भीमेश्वर राव (तेलुगु), एच.एस. बायकोड (कन्नड), श्रीधरन उन्नी (मलयाळम्), हून्दराज बलवाणी (सिंधी), असद रज़ा (उर्दू), संदीप सूफ़ी (डोगरी), भूपेंद्र अधिकारी (नेपाली), सुबोध हांसदा (संताली), सुनामणि राउत (ओड़िया) ने अपनी-अपनी भाषाओं में अपनी कविताएँ सुनाई जिनका हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद भी सुनाया गया।

संगोष्ठी : भारत का आदिवासी साहित्य : स्वरूप एवं परंपरा

25-26 नवंबर 2017, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने 'भारत का आदिवासी साहित्य : स्वरूप एवं परंपरा' विषय पर 25-26 नवंबर 2017 को अपने सभागार में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने विद्वानों, प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि आदिवासी समाज में साहित्य के विकास और विभिन्न कलात्मक रूपों के आविर्भाव का और तथाकथित मुख्यधारा वाले समाज में साहित्य और कला की स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। लेकिन आदिवासी साहित्य परंपरा मुख्यतः वाचिक रही है।

भारतीय लोक साहित्य और आदिवासी साहित्य के विद्वान प्रो. कपिल तिवारी ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन वक्तव्य देते हुए कहा कि आदिवासी साहित्य अपनी लिपि खोकर धीरे-धीरे विलुप्त हो रहा है और अपनी पहचान खो रहा है। शिल्प और लोक-परंपराओं को संरक्षित किया जा सकता है लेकिन शब्द परंपराओं को संरक्षित नहीं किया जा सकता। प्रगतिशील साहित्य के लिए इसका सामना करना एक बड़ी चुनौती है। इस संगोष्ठी में बीज वक्तव्य दिया प्रमोद मुंघाते ने। उन्होंने आदिवासी समाज के समक्ष विभिन्न चुनौतियों पर बात की।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता कर्नाटक के प्रख्यात विद्वान प्रो. एच.सी. बोरलिंगैया ने की तथा पूर्वोत्तर के युवा सर्वश्री विद्वान उज्ज्वल पावगाम, सुखविलास वर्मा और बिश्वेश्वर बसुमतारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. केसरी लाल वर्मा, सदस्य, हिंदी परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने की। श्री विनायक तुमराम, सदस्य, मराठी परामर्श मंडल ने 'महाराष्ट्र में आदिवासी आंदोलन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। झारखंड के प्रसिद्ध विद्वान श्री अशोक कुमार ने प्रगतिशील जनजातीय परंपरा के बारे में बताया।

तृतीय सत्र आदिवासी साहित्य की काव्य शैली के बारे में था, जिसकी अध्यक्षता श्री विनायक तुमराम ने की। श्री नरेंद्र देववर्मा (कोकबरॉक), डॉ. स्ट्रीमलेट डखार (खासी), श्री वसंत कनाके (कोलामी), श्रीमती उषा किरण आत्राम (गोंडी), श्रीमती पुष्पा गवित (भीली) तथा श्री वीरा राठौड़ (गोरमाती) ने पारंपरिक आदिवासी रूप में अपनी कविताओं का पाठ किया और उसका हिंदी/अंग्रेज़ी में अनुवाद भी सुनाया।

दूसरे दिन चतुर्थ सत्र में श्री चंद्रकांत मुरासिंह ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की तथा श्री सुरेश साल्वी ने राजस्थान क्षेत्र में आदिवासी संस्कृति पर चर्चा की। डॉ. महेंद्र मिश्र ने आदिवासी समाज के लिए ज़मीन के महत्त्व को स्पष्ट किया। डॉ. महेंद्र मिश्र ने पाँचवे सत्र की अध्यक्षता की तथा डॉ. केसरी लाल वर्मा, श्री शक्ति शिवरामकृष्ण तथा श्री ए. चेल्लापेरुमल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। छठे सत्र में 'कर्नाटक की आदिवासी कथाएँ' विषय पर प्रो. एच. सी. बोरलिंगैया ने अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा इस सत्र की अध्यक्षता श्री शक्ति शिवरामकृष्ण ने की। संगोष्ठी के सातवें और अंतिम सत्र में श्री हीरा मोई (चकमा), श्री संतोष पिचा (पावरा) तथा श्री रामगोपाल भिलावेकर (कोरकु) ने अपनी मातृभाषा में कविताओं का पाठ किया तथा उसका अनुवाद हिंदी/अंग्रेज़ी में प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी : सागर साहित्य : कच्छ से कोंकण तक

2-3 दिसंबर 2017, भुज

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने विवेकानंद शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, मांडवी, बलवंत पारेख केंद्र, वडोदरा, सरोजा बहन जे. वैष्ण व स्मारक ट्रस्ट ऑफ़ अंजार, डॉ. जयंत खत्री स्मारक साहित्य सभा और संस्मूर्ति ऑफ़ भुज और भोजय सर्वोदय ट्रस्ट के सहयोग से 2-3 दिसंबर 2017 को 'सागर साहित्य : कच्छ से कोंकण तक' विषयक एक द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की और संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी ने बीज वक्तव्य दिया।

बाएँ से दाएँ : सर्वश्री हेमंत सामंत, पांडुरंग फलदेसाई, मोहन गेहाणी तथा श्रीमती आद्या सक्सेना

गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. सीतांशु यशश्चंद्र ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि गुजरात के सबसे बड़े राज्य कच्छ में इस आयोजन का होना बेहद ख़ुशी का विषय है। डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी ने संस्कृत साहित्य में समुद्र चित्रण के बारे में बताते हुए कहा कि समुद्र की गहराई और उसकी व्यापकता की कोई तुलना नहीं हो सकती, इसी कारण समुद्र को किसी भी जाति या धर्म के दायरे में सीमित नहीं किया जा सकता। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि समुद्र दुनिया की सभी भाषाओं के साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। श्री गोवर्धन पटेल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात सिंधी लेखक श्री मोहन गेहानी ने की और डॉ. आद्या सक्सेना, सुश्री चेलसा पिंटो (कोंकणी) तथा श्री हेमंत सामंत (मराठी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. शिरीष पांचाल ने की। इस सत्र का विषय था—'सागर साहित्य : कीर्ति मीमांसा'। इस सत्र में श्री श्री धीरेंद्र मेहता (गुजराती) तथा विलास नायक (मराठी) ने चयनित कला साहित्य पर अपने विचार क्रमशः गुजराती और मराठी में प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र का विषय 'पश्चिमी भारतीय साहित्य में वाचिक एवं लिखित सागर साहित्य का प्रमुख स्वर' था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. आद्या सक्सेना ने की और पांडुरंग फला देसाई (कोंकणी), चंद्रकांत मेहेर (मराठी) तथा जेठो लालवाणी (सिंधी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। कीर्ति खत्री, संपादक, कच्छमित्र दैनिक ने अगले सत्र की अध्यक्षता की जिसका विषय था 'तटीय संस्कृति जैसा मैंने समझा'।

इस सत्र में श्री रमणीक सोमेश्वर, सदस्य, गुजराती परामर्श मंडल ने अपने विचार साझा किए। सुप्रसिद्ध गुजराती लेखक श्री वीणेश अंताणी ने सत्र की अध्यक्षता की जो पूर्व सत्र का शेष भाग था। प्रो. आद्या सक्सेना और डॉ. दर्शना बेन ढोलकिया ने इस सत्र में अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रो. शिरीष पांचाल ने समापन वक्तव्य दिया।

संगोष्ठी : सुनाराम सोरेन जन्मशतवार्षिकी

3 दिसंबर 2017, बारिपदा

साहित्य अकादेमी तथा एम.पी.सी. कॉलेज, बारिपदा के संयुक्त तत्त्वावधान में सुनाराम सोरेन के जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 3 दिसंबर 2017 को कॉलेज के कॉन्फ्रेंस हॉल में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

बाएँ से दाएँ : सर्वश्री गंगाधर हांसदा, ठाकुर दास सोरेन, कृतिबास साहु तथा संगेल सिंह सोरेन

सुनाराम सोरेन के छोटे भाई श्री ठाकुर दास सोरेन ने इस संगोष्ठी का उद्घाटन किया। साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री ठाकुर दास सोरेन ने कहा कि सुनाराम सोरेन ने मयूरभंज के साथ-साथ ओड़िशा के आदिवासियों के विकास के लिए विशेष योगदान दिया है। उन्होंने संताली भाषा और साहित्य के उत्थान हेतु अपने आप को समर्पित कर दिया था।

साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने बीज वक्तव्य दिया और कहा कि सुनाराम सोरेन ने न केवल मयूरभंज अपितु पूरे ओड़िशा के आदिवासियों के उत्थान के लिए काम किया। सुनाराम सोरेन के पुत्र सेंगल सिंह सोरेन इस संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि थे। एम.पी.सी. कॉलेज, बारिपदा के प्राचार्य डॉ. कृतिवास साहू ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए सुनाराम सोरेन के राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों को संक्षेप में बताया। एम.पी.एस. कॉलेज, बारिपदा के इतिहास विभाग की एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. रायमणि मरांडी ने विद्वानों और श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात संताली कवि श्री रूपचंद हांसदा ने की तथा सर्वश्री पूर्णचंद्र हेम्ब्रम, लक्ष्मण मरांडी तथा दाशरथि सोरेन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात संताली उपन्यासकार श्री चैतन्य प्रसाद माझी ने की तथा सर्वश्री शोभानाथ बेसरा, रामदास मुर्मु और बुधराम मरांडी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

लोकसाहित्य पर संगोष्ठी

4-5 दिसंबर 2017, जम्मू

जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी के सहयोग से लोकसाहित्य पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन के.एल. सहगल हॉल, जम्मू में 4-5 दिसंबर 2017 को किया गया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादमी के उपसचिव डॉ. एस. राजमोहन ने प्रतिभागियों व श्रोताओं का स्वागत किया। जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादेमी के सचिव डॉ. अज़ीज़ हाजिनी, जो विशिष्ट अतिथि थे, ने अकादेमी का धन्यवाद करते हुए विषय पर प्रकाश डाला। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि अग्र और निरर्थक वैश्वीकरण द्वारा प्रारंभ देसी परंपराओं पर हमला सुनिश्चित करता है कि लोग ज्ञान की देशज व्यवस्था पर बहुत कम ध्यान देते हैं। अपने बीज भाषण में प्रख्यात डोगरी लेखक और नाटककार श्री मोहन सिंह ने कहा कि लोकसाहित्य, व्यक्तियों और संसार की अभिव्यक्ति है। ये अभिव्यक्तियाँ लोककथाओं, लोकगीतों और लोककला रूपों में प्रकट होती है। उन्होंने कहा कि हमें ध्यान रखना चाहिए किसी समुदाय के लोकसाहित्य की हानि उसके इतिहास और सांस्कृतिक जड़ों की हानि है। अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के उत्तर क्षेत्रीय मंडल के संयोजक डॉ. मोहम्मद जमां अज़ुर्दाह ने कहा कि भारत में लोक-परंपरा में निहित प्रज्ञता का खज़ाना है। उन्होंने साहित्य अकादेमी और जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा का धन्यवाद संगोष्ठी आयोजन के लिए लिया।

''संस्कृति के संरक्षण में लोकगीतों की भूमिका'' को समर्पित प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने की। दो प्रमुख विद्वान डॉ. मीनाक्षी फेथ पॉल और डॉ. विद्या विंदु सिंह ने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने कहा कि लोकगीत केवल गाँवों में ही नहीं होते बल्कि हमारे जन्म से लेकर अंत तक शादी-ब्याह, रीति-रिवाज़ों और हमारे दैनिक जीवन में हैं। आगे उन्होंने कहा कि लोकगीत 16 संस्कारों, सामाजिक अधिकारों और सामाजिक जीवन के सभी पक्षों को जीवित रखते हैं। डॉ. मीनाक्षी ने बताया कि लोकगीत भारत की सभी संस्कृतियों का अनिवार्य अंग हैं। उन्होंने कहा कि लोकगीत याद की जानेवाली कहानियाँ नहीं बल्कि जीवंत अनुभव है। डॉ. विद्या विंदु सिंह ने अपने विचार रखते हुए बताया कि लोकगीत और भारतीय सांस्कृतिक परंपरा आपस में बंधे हैं। लोकगीत ऊर्जा देते हैं और प्रत्येक अवसर के अनुसार उत्साह प्रदान करते हैं।

दूसरे सत्र—''लोककथाएँ और आधुनिक रूपांतरण'' की अध्यक्षता प्रो. ललित मंगोत्रा ने की। तीन जाने-माने विद्वानों डॉ. जोगिंदर सिंह कैरों, डॉ. गजादन चरण और श्री रहमान अब्बास ने अपने आलेख पढ़े। अपने भाषण में प्रो. ललित मंगोत्रा ने बताया कि लोककथाएँ जीवन के वास्तविक अनुभवों से निकलती हैं। ये कल्पनात्मक नहीं होतीं। ये लोगों के अर्धचेतन मस्तिष्क में रहती हैं और प्राचीन समय की किवदंतियों का रूपांतरण और कुछ नहीं बल्कि वर्तमान समय में उनका पुनःवर्णन है। डॉ. जोगिंदर सिंह कैरों ने कहा कि लोककथाएँ कभी नहीं मरतीं ये शाश्वत हैं। उन्होंने याद किया कि किस प्रकार बाईबल की कहानियाँ सदियों से सुनाई जा रही हैं और प्रत्येक समुदाय व अवसर-अनुसार सुनाई जाती रहेंगी। डॉ. गजादन चरण ने कहा कि राजस्थान का अधिकतर लोकसाहित्य अलिखित है, लोगों की नज़रों से छुपा हुआ है। फिर भी अन्य समुदायों की लोककथाओं और लोकसाहित्य की तरह सबके जीवन का हिस्सा है। श्री रहमान अब्बास ने प्रश्न किया क्या कहानियाँ, लोककथाओं से भिन्न हैं? उन्होंने यह भी कहा ''लोककथाएँ अनवरत परिवर्तित होती रहती हैं और इसी तरह उनका रूपांतरण भी किया जाता है। उनका कोई एक लेखक नहीं होता बल्कि प्रत्येक पीढ़ी अपने अनुभवों से उनमें कुछ-न-कुछ जोड़ती चली जाती है।

तीसरे सत्र—''लोकगीत और सृजन मिथक'' की अध्यक्षता प्रो. मोहम्मद जमां अज़ुर्दाह ने की। इस सत्र में खालिद हुसैन और शाद ने आलेख पढ़े। ''लोकसाहित्य—इतिहास और कथावाचन का एक स्रोत'' विषयक चौथे सत्र में प्रो. हरिदत्त शर्मा अध्यक्ष थे। श्री ध्यान सिंह, प्रो. महेश शर्मा, श्री जगदीश पीयूष और श्री फ़ारूख़ फयाज़ ने आलेख प्रस्तुत किए।

प्रभाकर माचवे जन्मशतवार्षिकी : संगोष्ठी

6 दिसंबर 2017, नई दिल्ली

प्रभाकर माचवे की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर साहित्य अकादेमी के सभाकक्ष में एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 6 दिसंबर 2017 को किया गया। डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने अतिथियों तथा श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि प्रभाकर माचवे एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक संस्थान थे।

साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक सूर्य प्रसाद दीक्षित ने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि माचवे जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात कवि एवं लेखक डॉ. रामदरश मिश्र थे। उन्होंने प्रभाकर माचवे से जुड़े अपने आत्मीय अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि प्रभाकर माचवे एक प्रयोगवादी रचनाकार थे। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि प्रभाकर माचवे की सुपुत्री चेतना कोहली थीं। उन्होंने माचवे जी पर संगोष्ठी आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने पिता के रूप में माचवे जी के सादगीपूर्ण सरल जीवन के बारे में अपने संस्मरण सुनाए। उन्होंने कहा कि उनका मूल मंत्र था—ज्ञान बाँटना। वे ज्ञान अर्जन और ज्ञान बाँटने में विश्वास करते थे।

बीज वक्तव्य देते हुए प्रख्यात आलोचक एवं विद्वान प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने कहा कि माचवे जी स्पष्टवादी थे। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि माचवे जी ने शिष्य परंपरा नहीं बनाई, एक निस्संगता का भाव प्रभाकर माचवे में भी दिखाई पड़ता है। उन्होंने लगातार लिखा।

'प्रभाकर माचवे का कवि व्यक्तित्व' विषयक प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कवि, अनुवादक और पत्रकार श्री विष्णु खरे ने की। श्री प्रयाग शुक्ल और श्री चंद्रकांत पाटिल ने इस सत्र में आलेख-पाठ किया।

द्वितीय सत्र का विषय था—'गद्यकार के रूप में प्रभाकर माचवे'। इस सत्र में आलेख-पाठ किया श्री राजेंद्र उपाध्याय, डॉ. आरसु और श्री भारत भारद्वाज ने। गंगाप्रसाद विमल ने इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि माचवे जी सूचनाओं और सृजनात्मकता के भंडार थे। कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादेमी के संपादक अनुपम तिवारी ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

संगोष्ठी : सांस्कृतिक संवेदना एवं सर्जनात्मकता : भारतीय साहित्य की उभरती प्रवृत्तियाँ

7-9 दिसंबर 2017, वर्धा

साहित्य अकादेमी तथा महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 7 से 9 दिसंबर 2017 तक 'सांस्कृतिक संवेदना एवं सर्जनात्मकता : भारतीय साहित्य की उभरती प्रवृतियाँ' विषय पर एक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन वर्धा में किया गया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं प्रख्यात अनुवादक प्रो. जी. गोपीनाथन थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कुलपति

बाएँ से दाएँ : प्रो. गिरीश्वर मिश्र, डॉ. अशोक कुमार त्रिपाठी, प्रो. हरमीत सिंह बेदी, प्रो. रामजी तिवारी तथा डॉ. के.के. सिंह

प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। उद्घाटन वक्तव्य प्रो. रामजी तिवारी ने दिया। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में प्रति-कुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता डॉ. प्रीति सागर उपस्थित थे। कार्यक्रम का स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक श्री अजय कुमार शर्मा ने दिया। संचालन तथा संयोजक साहित्य विभाग के अध्यक्ष डॉ. कृष्ण कुमार सिंह ने किया। वि.वि. की ओर से प्रति-कुलपति, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने स्वागत वक्तव्य दिया। अगला सत्र डॉ. रणजीत साहा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ जिसमें, प्रो. दिलीप कुमार मेधी (असमिया) एवं प्रो. कृपाशंकर चौबे (बाङ्ला) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के दूसरे दिन (8 दिसंबर) का पहला सत्र डॉ. देवराज की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में वक्ता के रूप में ओड़िया के लेखक तथा अनुवादक तथा वि.वि. के पूर्व कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, तेलुगु भाषा की लेखिका श्रीमती सी. कामेश्वरी, वि.वि. के कोलकाता क्षेत्रीय केंद्र के प्रभारी, वरिष्ठ पत्रकार डॉ. कृपाशंकर चौबे मंचासीन थे। सत्र का संचालन साहित्य विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर रामानुज अस्थाना ने किया।

दूसरे दिन का दूसरा सत्र प्रो. हरमहेंद्र सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। जिसमें डॉ. के.एम. मालती, डॉ. आनंद वर्धन शर्मा और डॉ. गुरनाम कौर बेदी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के तीसरे एवं अंतिम दिन के पहले सत्र की अध्यक्षता प्रो. रामजी तिवारी ने की और प्रो. तंकमणि अम्मा (मलयाळम्) तथा डॉ. दामोदर खड़से (मराठी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र में पंजाबी साहित्यकार प्रो. हर महेंद्र सिंह बेदी, प्रो. रामजी तिवारी, साहित्य विभाग के अध्यक्ष तथा संगोष्ठी संयोजक डॉ. के. के. सिंह भी उपस्थित थे। समापन सत्र का संचालन साहित्य विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर तथा संगोष्ठी के सह संयोजक डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी ने किया।

एम. गोपालकृष्ण अडिग पर जन्मशती संगोष्ठी

6-7 जनवरी 2018, बेंगळूरु

मोगेरी गोपालकृष्ण अडिग अथवा जिन्हें कन्नड साहित्य जगत में अडिग के नाम से जाना जाता है, 20वीं सदी के महान कन्नड कवियों में से एक हैं। कन्नड कविता में वो एक क्रांति और ऊर्जा लेकर आए। उन्हें श्रद्धांजलि देने हेतु दो दिवसयी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि अडिग ऐसे कवि थे जिनके लिए उनका जीवन और काव्य अलग-अलग नहीं था। बेंगळूरु सेंट्रल विश्वविद्यालय व कुलपति प्रो. एस. जाफेट ने कहा कि साहित्य अकादेमी द्वारा अडिग पर संगोष्ठी का आयोजन हर्ष का विषय है।

बाएँ-दाएँ : श्री एस.पी. महालिंगेश्वर, प्रो. एस. जाफेट, डॉ. चंद्रशेखर कंबार, डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम, डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम तथा डॉ. के. श्रीनिवासराव

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात तमिल कवि डॉ. सिर्पी बाल सुब्रह्मण्यम ने कहा कि अडिग न तो वामपंथी थे न दक्षिणपंथी। कन्नड आलोचक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य ने बताया कि आज के संदर्भ में अडिग की कविता अधिक प्रासंगिक है। प्रख्यात कन्नड लेखक और ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अडिग को एक संत कवि बताया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कवि और नाटककार डॉ. एच.एस. शिवप्रकाश ने की। डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय, जाने-माने मराठी कवि गोविंद काजरेकर और विख्यात मलयाली कवि प्रो. के.जी. शंकर पिल्लै ने आलेख पढ़े।

दूसरा सत्र डॉ. सिद्धलिंग पटनशेट्टी की अध्यक्षता में हुआ। प्रो. ओ.एल. नागभूषण स्वामी और श्री एस. दिवाकर ने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. एच.एस. राघवेंद्र राव की अध्यक्षता में तीसरा सत्र आरंभ हुआ। इस सत्र में प्रो. यू.एच. गणेश, प्रो. सी. नागन्ना और सुश्री कृष्णा मानवेल्ली ने अपने आलेख पढ़े।

चौथे सत्र में डॉ. जी.एस. सिद्धलिंग की अध्यक्षता में, प्रसिद्ध आलोचक श्री एस.आर. विजयशंकर और श्रीमती तारिणी सुब्बादायिनी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पाँचवें सत्र में प्रख्यात कवि और आलोचक डॉ. एच. एस. वेंकटेशमूर्ति ने अध्यक्षता की तथा डॉ. बसवराज दोनुर और डॉ. वेंकटेशमूर्ति ने आलेख पढ़े। साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त कन्नड लेखक डॉ. टी.पी. अशोक ने छठे सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. एम.एस. आशा देवी और प्रो. एच. दंडप्पा ने अपने आलेख पढ़े। संगोष्ठी के समापन सत्र में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त श्री गिरीश करनाड अध्यक्ष रहे। अपने समापन भाषण में उन्होंने कहा कि अडिग की कविता बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसमें मिट्टी की खुशबू है। इसके बाद साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित और गिरीश करनाड द्वारा निर्देशित अडिग पर वृत्तचित्र दिखाई गई।

सिंधी साहित्य में कलात्मक अभिव्यक्ति पर संगोष्ठी

24-25 जनवरी 2018, मुंबई

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने सिंधी साहित्य में कलात्मक अभिव्यक्ति पर संगोष्ठी का आयोजन, कार्यालय के सभागार में 24-25 जनवरी 2018 को किया। आरंभ में, कृष्णा किम्बाहुने ने प्रतिभागियों व श्रोताओं का स्वागत किया। अपने उद्घाटन संबोधन में वासदेव मोही ने सिंधी साहित्य में ग़ज़ल पर बात की। लक्ष्मण दुबे, अर्जन हासिद, ढोलन

संगोष्ठी के सत्र का दृश्य

राही ने अपनी ग़ज़लों में रूमानियत का वर्णन किया। जबकि प्रेम प्रकाश, नामदेव ताराचंदाणी, नंद जवेरी जैसे समकालिकों ने सिंधी साहित्य में कविता को जीवंत किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता नामदेव ताराचंदाणी ने की जबकि गोवर्धन शर्मा 'घायल', हुंदराज बलवानी और मोहन गेहाणी ने अर्जन हासिद, तारा मीरचंदानी और कला प्रकाश के लेखन में कलात्मक अभिव्यक्ति पर समीक्षा की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता मोहन गेहाणी ने की। कलाधर मुतवा ने लखमी खिलानी के लेखन पर पुनरावलोकन किया। जया जादवानी ने वासदेव मोही के लेखन का पुनर्विवेचन किया जो कि भविष्यवादी हैं परन्तु फिर भी मानवी मूल्यों को सहेजे हैं। रश्मी रमानी ने प्रेम प्रकाश के साहित्य का मूल्यांकन किया।

संगोष्ठी के तृतीय सत्र की अध्यक्षता जेठो लालवानी ने की जिसमें रश्मी रमानी और विनोद असुदानी ने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे दिन के चौथे सत्र में हरीश करमचंदानी, नामदेव ताराचंदाणी और कमला गोकलानी के आलेख शामिल थे। इस सत्र के अध्यक्ष रहे—गोवर्धन शर्मा 'घायल'। संगोष्ठी का पाँचवां सत्र कमला गोकलानी की अध्यक्षता में हुआ। नामदेव ताराचंदाणी ने हीरो सेखवाणी के लेखन पर आलेख पढ़ा। खीमण मिलानी ने लक्ष्मण दुबे के काव्यात्मक पक्षों पर प्रकाश डाला।

छठा और अंतिम सत्र हुंदराज बलवानी की अध्यक्षता में हुआ संध्या कुंदनानी ने गोपी कमला की ग़ज़लों की समीक्षा की। विम्मी सदारंगानी ने नामदेव ताराचंदाणी के लेखन में कलात्मक अभिव्यक्ति पर विश्लेषण किया। जबकि लक्ष्मण दुबे ने नंद झवेरी के लेखन पर अपने विचार प्रकट किए। प्रेम प्रकाश ने समापन टिप्पणी देते हुए सभी प्रतिभागी विद्वानों के प्रति आभार प्रकट किया और अपने आलेख में कलात्मक अभिव्यक्ति की सभी विधाएँ शामिल करने के लिए धन्यवाद दिया। कृष्णा किम्बाहुने ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

विज्ञान, भाषा और नवचेतना पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

2 फ़रवरी 2018, तिरूर

साहित्य अकादेमी और थुन्चन मेमोरियल ट्रस्ट, तिरूर ने संयुक्त रूप से 2 फ़रवरी 2018 को ''विज्ञान, भाषा और नवचेतना'' पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव बेंगळूरु श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने सबका स्वागत किया। सुविख्यात मलयाळम् लेखक तथा अकादेमी पुरस्कार विजेता श्री सी. राधकृष्णन ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। कोची विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री बाबू जोसफ़ ने सत्र का उद्घाटन किया। श्री के.पी. रामानुनी ने सभी का स्वागत किया। श्री सेतुरमन, आई.पी.एस. ने आलेख प्रस्तुत करते हुए बताया कि मातृभाषा में पढ़ाई करने वाले छात्र अंग्रेज़ी माध्यम वाले छात्रों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

कन्नड भाषा के श्री शशिकुमार ने विस्तार से वैज्ञानिक क्षेत्र, विशेषकर संप्रेषण की विभिन्न समस्याओं के बारे में बताया। दूसरा सत्र विज्ञान और नवचेतना के बारे में था। ट्रस्ट के सदस्य डॉ. के. मुरलीधर ने वक्ताओं व आगंतुकों का स्वागत किया। ओड़िशा के श्री जतिन कुमार नाईक ने व्याख्या की कि किस प्रकार साहित्य से विज्ञान जुड़ गया। डॉ. एम.आर. राघवन ने बताया कि किस प्रकार एक से दूसरी पीढ़ी को स्थानांतरित होते हुए ज्ञान विरूपित हो जाता है। ''विज्ञान, बौद्धिक संवाद, नवचेतना : समन्वय'' सत्र में श्री के.एस. वेंकटचलम ने आंगतुकों का स्वागत किया।

परिसंवाद : गोविंद पै के साहित्य में सार्वभौमिकता

19 मई 2017, कसरगोड

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए डॉ. एम. वीरप्पा मोइली

साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय ने राष्ट्रकवि गोविंद पै स्मृति न्यास के साथ एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन 19 मई 2017 को कसरगोड में किया। परिसंवाद का विषय था—'गोविंद पै के साहित्य में सार्वभौमिकता'।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया।

प्रख्यात लेखक और न्यास के अध्यक्ष डॉ. एम. वीरप्पा मोइली ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और गोविंद पै के दृष्टिकोण पर बात की।

प्रख्यात विद्वान डॉ. विवेक राय ने अपने बीज वक्तव्य में गोविंद पै की रचनाओं में सार्वभौमिकता के साथ ही उनके सृजनात्मक पक्षों पर व्याख्यान दिया। प्रख्यात कन्नड आलोचक श्री गिरड्डी गोविंद राजा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में गोविंद पै के लेखन की आज के समय में प्रासंगिकता और महत्त्व पर प्रकाश डाला। प्रख्यात लेखक श्री डी.के. चावटा मुख्य अतिथि थे।

अंत में श्री चंद्रशेखर केडल्या ने गोविंद पै की कुछ कविताओं का पाठ किया। प्रथम विचार सत्र में दो प्रख्यात विद्वानों सर्वश्री सत्यनारायण मल्लिपटन और शिवाजी जोयस ने क्रमशः 'गोविंद पै के काव्य में सार्वभौमिकता' तथा 'गोविंद पै की बहुभाषी विशेषज्ञता' पर व्याख्यान दिए। द्वितीय सत्र में दो प्रख्यात विद्वानों सर्वश्री एन. दामोदर शेट्टी तथा बी. राजशेखरप्पा ने क्रमशः 'गोविंद पै के नाटकों में सार्वभौमिकता' और 'गोविंद पै के शोध' पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रख्यात कन्नड कवि श्री रामानंद बनारी ने समापन व्याख्यान दिया। श्री व्यास के. कमलाक्ष ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

परिसंवाद : समकालीन मणिपुरी साहित्य में देशप्रेम

9 जून 2017, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी के कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय ने पैट्रियाटिक राइटर्स फ़ोरम, मणिपुर, इंफ़ाल के संयुक्त तत्त्वावधान में एक परिसंवाद 'समकालीन मणिपुरी साहित्य में देशप्रेम' विषय पर 9 जून 2017 को मणिपुर प्रेस क्लब, इंफ़ाल

आरंभिक व्याख्यान देते हुए श्री रघु लेइसंगथेम

में आयोजित किया। साहित्य अकादेमी के कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के प्रभारी श्री गौतम पॉल ने अतिथियों का स्वागत किया और मौजूदा समाज में इस विषय की प्रासंगिकता पर संक्षेप में बताया। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने 'समकालीन मणिपुरी साहित्य में देशप्रेम' विषय पर इस परिसंवाद के आयोजन की महत्ता पर प्रकाश डाला। पैट्रियाटिक राइटर्स फ़ोरम, मणिपुर के अध्यक्ष रघु लेइसंगथेम ने साहित्य अकादेमी को इस परिसंवाद आयोजन के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि इससे पैट्रियाटिक राइटर्स फ़ोरम, को सम्मान और मान्यता भी प्राप्त हुई है। पैट्रियाटिक राइटर्स फ़ोरम के महासचिव राकेश नावरेम ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रथम विचार सत्र की अध्यक्षता पे. इबोयाइमा शर्मा ने की जबकि तीन युवा साहित्यकारों अथोकम उमावती, सोइबम प्रेमिला देवी तथा हाओबिजम निर्मला देवी ने अपने आलेख क्रमशः 'समकालीन मणिपुरी उपन्यास में देशप्रेम', 'समकालीन मणिपुरी कहानी में देशप्रेम' और 'समकालीन मणिपुरी कविता में देशप्रेम' विषय पर प्रस्तुत किए। अध्यक्षीय वक्तव्य में इबोयाइमा शर्मा ने देशप्रेम की अवधारणा पर विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पे. अरिबम कुमार शर्मा ने की तथा तीन युवा साहित्यकारों एल. ओकेंद्रो सिंह, खे. गीतारानी देवी और कुमारी थोंगब्रम नर्मदा ने अपने आलेख क्रमशः 'समकालीन मणिपुरी नाटक में देशप्रेम', 'समकालीन मणिपुरी कविता में देशप्रेम' तथा 'समकालीन मणिपुरी कविता में देशप्रेम' विषय पर प्रस्तुत किए।

परिसंवाद : बीसवीं सदी के असमिया उपन्यास : दंडीनाथ कलिता के साधना के विशेष संदर्भ में

10 जून 2017, तेजपुर, असम

साहित्य अकादेमी के कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दंडीनाथ कलिता स्मृति न्यास के संयुक्त तत्त्वावधान में 'बीसवीं सदी के असमिया उपन्यास : दंडीनाथ कलिता के साधना के विशेष संदर्भ में' विषय पर एक परिसंवाद आयोजित किया गया। यह परिसंवाद 10 जून 2017 को तेजपुर, असम में हुआ। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। तेजपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. मदन शर्मा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने बीज भाषण देते हुए इस बात को रेखांकित किया कि प्राचीन भारतीय साहित्य से संबद्ध धारावाहिक उपन्यासों में मनुष्य-मन का सूक्ष्म मूल्यांकन दर्ज है जिससे उपन्यास का केंद्र निर्मित होता है। उन्होंने कहा कि यह प्रक्रिया पश्चिम से हमारे साहित्य में आई है। उन्होंने दंडीनाथ कलिता के उपन्यास साधना का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया और इसकी विशेषताओं को रेखांकित किया। साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका कर्बी डेका हाज़रिका ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की भाषाओं और साहित्य के विकास के लिए की जा रही विभिन्न गतिविधियों की चर्चा की। उन्होंने दंडीनाथ कलिता स्मृति न्यास को साहित्य अकादेमी के साथ ऐसे बहुचर्चित लेखक पर इस कार्यक्रम को करने के लिए धन्यवाद दिया। उद्घाटन सत्र में माधुरी कलिता

चौधुरी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रथम विचार सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक एवं विद्वान सुनील दत्ता ने की। जमुना शर्मा चौधुरी, नमिता डेका, अरिंदम बरकतकी इस सत्र में प्रतिभागी थे। उन्होंने 20वीं सदी के असमिया उपन्यासों पर विभिन्न कोणों से अपने विचार प्रकट किए और स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले के समय के महत्त्वपूर्ण उपन्यास साधना के विभिन्न अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। परागचंद्र भट्टाचार्य द्वारा समापन वक्तव्य दिया गया। सतीशचंद्र भट्टाचार्य ने कार्यक्रम का संचालन किया। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए सुनील दत्ता ने उपन्यास के कई महत्त्वपूर्ण बिंदुओं की ओर इशारा किया। उन्होंने गीता उपाध्याय और मौसुमी कंदली को अपने अनुभव और विचार व्यक्त करने के लिए धन्यवाद दिया।

बोडो कविता में संस्कृति और प्रकृति पर परिसंवाद

12 जून 2017, उदलगुड़ी

उदलगुड़ी कॉलेज के बोडो विभाग के सहयोग से 12 जून 2017 को उदलगुड़ी कॉलेज में ''बोडो कविता में संस्कृति और प्रकृति'' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद में असम के विभिन्न स्थानों से कई प्रख्यात व्यक्तियों सहित साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता नवीन मल्ल बोरो ने प्रतिभागिता की। उदलगुड़ी कॉलेज के प्राचार्य ल्यूक दैमारी ने सत्र की अध्यक्षता की। देवकांत रामचियारी ने बीज भाषण दिया। उद्घाटन सत्र के बाद प्रथम तकनीकी सत्र में नायलो जालो उज़ीर, निरॉन ब्रह्मा और श्रीमती रविरूप ब्रह्मा ने आलेख प्रस्तुत किए। एल.ओ.के. डी. कॉलेज के वरिष्ठ प्रोफ़सर तूलन मशाहारी ने इस सत्र की अध्यक्षता की। उदलगुड़ी कॉलेज के नरेश्वर नार्ज़री ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की तथा चित्तरंजन मशाहारी और मानेश्वर गोयारी ने इस सत्र में आलेख प्रस्तुत किए।

'गुजराती कविता में प्रकृति' पर परिसंवाद

22 जुलाई 2017, वल्लभ विद्यानगर

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर गुजरात के गुजराती विभाग के सहयोग से क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा ''गुजराती कविता में प्रकृति : रोमानी, आधुनिक और परिवेशी'' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 22 जुलाई 2017 को विश्वविद्यालय में किया गया। यह परिसंवाद पाँच सत्रों में विभाजित था जिसमें आलेख प्रस्तुति, व्याख्यान, काव्यपाठ और संगीत संग काव्यगायन शामिल थे। परिसंवाद में कई विभिन्न विषय थे जैसे—प्रकृति और काव्य : भारतीय और विश्व काव्य के संदर्भ में, मध्ययुगीन गुजराती कविता, आधुनिक और पश्च-आधुनिक कविता, रोमानी कविता, गांधी की कविता एक युग और पश्च गाँधी एक युग, गुजराती लोक साहित्य में परिवेश कविता आदि शामिल रहे। विशिष्ट गुजराती लेखक श्री यग्नेश दवे ने आरंभिक भाषण दिया। गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक श्री सितांशु यशश्चंद्र ने प्रकृति की कुछ पश्चिमी कविताएँ गाईं और श्री निखिल खरोद ने प्रकृति संबंधी गीत गाया। श्री योगेश जोशी ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें श्री अभय दोशी और श्री राजेश पंडया ने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र के अंत में अजय तलपड़ा ने दयाराम का एक गीत गाया श्री राजेश पंडया ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में श्री समीर भट्ट और श्री योगेश जोशी ने अपने आलेख पढ़े। पारुल देसाई, परेश नायक और विक्रम चौधरी ने गांधी युग संबंधी प्रकृति पर व्याख्यान दिया।

हरिचरण बंद्योपाध्याय पर परिसंवाद

26 जुलाई 2017, कोलकाता

साहित्य अकादेमी सभागार, कोलकाता में 26 जुलाई 2017 को हरिचरण बंद्योपाध्याय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में श्री गौतम पॉल ने स्वागत भाषण दिया और बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक प्रख्यात बाङ्ला लेखक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय अध्यक्ष थे। उद्घाटन सत्र में प्रख्यात विद्वेता पवित्र सरकार ने भी भाग लिया। पहला अकादेमिक सत्र प्रसिद्ध भाषाविदों, वैयाकरणिकों और विद्वानों ने भाग लिया। श्री अमल पाल और श्री सुभाष भट्टाचार्य ने हरिचरण बंद्योपाध्याय की साहित्यिक उपलब्धियों पर बात की। दूसरे सत्र में श्री देवांगन बसु और प्रो. ज्योत्स्ना चट्टोपाध्याय ने हरिचरण बंद्योपाध्याय के जीवन एवं कृतित्व पर आलेख पढ़े।

बाएँ-दाएँ : डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय तथा श्री पवित्र सरकार

उर्दू उपन्यास पर परिसंवाद

29 जुलाई 2017, बेंगळूरु

महफिले–निशा बेंगळूरु के तत्वावधान में ''अस्तरे हाज़िर में उर्दू उपन्यास का बदलता मंज़रनामा'' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 29 जुलाई 2017 को गवर्मेन्ट साईंस कॉलेज, बेंगळूरु में किया गया। श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने अतिथियों का स्वागत किया। महफ़िले–निशा की अध्यक्ष श्रीमती शाईस्ता यूसुफ ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने अध्यक्षीय भाषण भी दिया। उर्दू विद्वान प्रो. शाफ़े किदवई ने बीजभाषण दिया। श्री अज़ीजुल्ला बेग मुख्य अतिथि थे। उद्घाटन सत्र के पश्चात्, प्रथम सत्र की अध्यक्षता उर्दू उपन्यासकार प्रो. अब्दुस्समद ने की, जबकि सैयद खालिद कादरी, डॉ. ज़ुबैदा बेगम और डॉ. इकबालुन्निसा ने आलेख पढ़े। दूसरे सत्र की अध्यक्षता आकाशवाणी, बेंगळूरु के पूर्व निदेशक मिलनसार अज़हर अहमद ने की। इस सत्र में अफ़साना खातून और डॉ. एन.एम. सईद ने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. मेहनूर ज़मानी ने कार्यक्रम का संचालन किया और डॉ. फज़ीह सुल्ताना ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

असमिया साहित्य में महिला सशक्तीकरण का प्रतिबिंब पर परिसंवाद

6 अगस्त 2017, गुवाहाटी

जोनाकी बात के सहयोग से ''महिला लेखन के संदर्भ में असमिया साहित्य में महिला सशक्तीकरण का प्रतिबिंब'' परिसंवाद का आयोजन 6 अगस्त 2017 को गुवाहाटी में किया गया। कार्यक्रम में असमिया साहित्य और महिलाओं के अध्ययन क्षेत्रों से विशेषज्ञों और कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और असमिया साहित्य के संदर्भ में महिला

सशक्तीकरण के विभिन्न पक्षों पर चर्चा की। आरंभ में, जोनकी बात के संपादक जूनू बोरा ने एकत्रित आगंतुकों का स्वागत किया और माधुरी कलिता चौधरी ने एक कविता गाई। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् की सदस्या अरूपा बरुआ की अध्यक्षता में उद्घाटन सत्र आरंभ हुआ। श्री गौतम पॉल ने प्रतिनिधियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। प्रख्यात असमिया लेखक और आलोचक गोविंद प्रसाद शर्मा ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। प्रसिद्ध असमिया लेखक प्रो. तिलोत्तमा मिश्रा ने आरंभिक भाषण दिया। विशिष्ट अतिथि के रूप में अंजली शर्मा ने असमिया भाषा की पूर्व-आधुनिक महिला लेखकों का संदर्भ दिया।

अध्यक्षता करते हुए अरुपा बरुआ ने परिसंवाद के बारे में बताया और विशिष्ट अतिथियों और परिसंवाद के स्रोत व्यक्तियों का धन्यवाद दिया। जूनू बोरा ने औपचारिक रूप से धन्यवाद प्रकट किया। परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता तिलोत्तमा मिश्रा ने की तथा अनुराधा शर्मा, अंजू बरकातकी और अरूपा पी. कलीता ने आलेख प्रस्तुत किए। परिसंवाद के दूसरे सत्र में प्रोफ़ेसर और लेखक दिलीप बोरा अध्यक्ष थे और बिरिंची दास, जूनू बोरा और दिलीप बोरा ने आलेख पढ़े।

सा. विश्वनाथन (सावी) शतवार्षिकी परिसंवाद

11 अगस्त 2017, चेन्नै

चेन्नई स्थित उप-क्षेत्रीय कार्यालय में धर्ममूर्तिराव बहादुर कलावाला चुनन चेट्टी हिन्दू कॉलेज, पट्टभिराम के सहयोग से सा. विश्वनाथन (सावी) के स्मरणोत्सव के रूप में 11 अगस्त 2017 को कॉलेज परिसर में परिसंवाद का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी, चेन्नै के प्रभारी अधिकारी श्री ए.एस. इलांगोवन ने प्रोफ़ेसरों, युवा शोधार्थियों और साहित्यकारों का स्वागत किया।

साहित्य अकादेमी के तमिल परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नाचिमुत्थु ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की और बताया कि यद्यपि सावी को हास्य का लेखक माना जाता है तथापि उन्होंने कई उपन्यास और यात्रा-वृत्तांत भी लिखे हैं। दिनमणि के संपादक के. वैद्यनाथन ने बीज भाषण दिया।

डी.आर.बी.सी.सी.सी. कॉलेज के श्री एम. वेंकटेशपेरूमल, सुश्री वी. लक्ष्मी और श्री एन. राजेंद्र नायडू ने सभी का अभिवादन किया तथा सावी पर परिसंवाद हेतु उनके कॉलेज को चुनने के लिए साहित्य अकादेमी का धन्यवाद किया। सावी की पुत्री श्रीमती जयंती विश्वनाथन उद्घाटन सत्र में विशिष्ट अतिथि थीं। उन्होंने बताया कि एक पिता और गुरु के रूप में सावी ने कठिन परिस्थितियों में भी परिवार का मार्गदर्शन किया। डी.आर.बी. सी.सी.सी. हिंदू कॉलेज की तमिल विभाग प्रमुख सुश्री एस.एम. संगवाई ने धन्यवाद दिया।

प्रसिद्ध कहानी लेखक श्रीमती एस. शिवशंकरी ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की और सावी की सृजनात्मक प्रतिभा पर आलेख प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी तमिल परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. सी. सेतुपथि ने सावी के कार्यों पर आलेख पढ़ा। श्री एन. रविप्रकाश ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए ''सावी के परिहास'' पर बात की। श्री रानी मैन्थन ने सावी के उच्च व्यक्तित्व का वर्णन किया।

समापन सत्र के दौरान, कुछ छात्रों को साहित्य अकादेमी के बारे में और परिसंवाद पर अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए बुलाया गया। साहित्य अकादेमी के तमिल परामर्श मंडल के सदस्य और प्रख्यात पत्रकार श्री मालन, वैज्ञानिक और लेखक श्री नेल्लई सु.मुथु, लेखक श्री बी. वीरमणि और अन्य गणमान्यों ने परिसंवाद में हिस्सा लिया।

ईश्वर पेटलीकर पर परिसंवाद

12 अगस्त 2017, आनंद

प्रसिद्ध गुजराती साहित्यकार और पत्रकार ईश्वर पेटलीकर की जन्मशती पर साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई और एन.एस. पटेल आर्ट्स कॉलेज, आनंद, गुजरात ने संयुक्त रूप से एक परिसंवाद ''ईश्वर पेटलीकर : समाज संलग्न साहित्यकार-पत्रकार'' का आयोजन 12 अगस्त 2017 को श्री रविशंकर महाराज सभागार, एन.एस. पटेल कॉलेज, आनंद में किया।

उद्घाटन सत्र का संचालन सुविख्यात गुजराती आलोचक डॉ. शिरीष पांचाल ने किया। एन.एस. कॉलेज के गुजराती विभाग के प्रमुख श्री प्रशांत पटेल ने परिचय वक्तव्य दिया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मोहन पटेल ने पुस्तक भेंट करके अतिथियों का स्वागत किया। गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सितांशु यशश्चंद्र ने गणमान्यों का स्वागत किया। गुजरात के वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रकाश एन. शाह ने आरंभिक भाषण दिया। उन्होंने अतीत और वर्तमान के संबंध में पेटलीकर के साहित्य और पत्रकारित का मूल्यांकन किया। उन्होंने सूचित किया कि पेटलीकर ग्रामीण जीवन के प्रेक्षक थे उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से अपने समय में उस पर गहरा प्रभाव छोड़ा।

डॉ. मानसिंह चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रख्यात गुजराती लेखक व आलोचक श्री रमन सोनी ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की और हसित मेहता तथा श्री चंदूभाई महेरिया ने अपने आलेख पढ़े। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री प्रकाश शाह ने की जिसमें, श्री रमन सोनी और श्री समीर भट्ट ने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में श्री शिरीष पांचाल ने कहा कि पाठक के विचारों में प्रत्येक महान लेखन शाश्वत है और इसीलिए हम अपने प्रिय ईश्वर पेटलीकर को याद कर रहे हैं।

राजस्थानी में दलित लेखन पर परिसंवाद

12 अगस्त 2017, उदयपुर

सुखाड़िया विश्वविद्यालय के गोल्डन जुबली सभागार में 12 अगस्त 2017 को ''राजस्थानी में दलित लेखन'' पर एक दिवसीय परिसंवाद आयोजित किया गया। साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) श्री अनुपम तिवारी ने अतिथियों का स्वागत किया और कार्यक्रम की अवधारणा का परिचय दिया। राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. अर्जुन देव चारण ने उद्घाटन सत्र संचालित किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. चारण ने कहा कि जब भी समाज में किसी का शोषण होता है तो उस ओर कलम के माध्यम से समाज का ध्यानाकर्षिण करना चाहिए। सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. किशोरी लाल रागर ने प्राचीन समय से लेकर अब तक के दलित साहित्य पर विचार रखे।

सत्र का संचालन युगधारा संस्थान के संस्थापक व साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता डॉ. ज्योतिपुंज ने किया। प्रथम सत्र में डॉ. सुरेश साल्वी ने ''राजस्थानी दलित कहानियों'' पर अपने विचार रखे। दूसरा आलेख शिव बोधी द्वारा ''विचार रे भूम मथाई दलित कहानी'' पर पढ़ा गया। दूसरे सत्र की अध्यक्षता सुखाड़िया विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुरेश साल्वी ने की। श्री बी.एल. पारस ने ''राजस्थान काव्य माहे दलित चेतना'' पर आलेख पढ़ा।

अंतिम सत्र में वरिष्ठ साहित्यकार हरदन हर्षा मुख्य अतिथि थे। उन्होंने बताया आज दलित विचारों और लेखन को अधिक प्रासंगिक बनाना होगा। सत्र की अध्यक्षता श्री रामदयाल मेहरा ने और संचालन डॉ. कुंजन आचार्य ने किया।

राजस्थानी में महिला लेखन पर परिसंवाद

13 अगस्त 2017, उदयपुर

सुखाड़िया विश्वविद्यालय के गोल्डन जुबली सभागार में 13 अगस्त 2017 को ''राजस्थानी में महिला लेखन'' पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में श्री प्रकाश अमरावत मुख्य अतिथि थे।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अर्जुन देव चारण ने कहा कि महिला एक मार्गदर्शक है। रीना मीनारिया और डॉ. अनुश्री राठौड़ ने अपने आलेख पढ़े। डॉ. मीता शर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजस्थानी महिलाओं का लेखन केवल महिलाओं तक ही सीमित नहीं है। पुरुष लेखन भी संवेदशीलता के साथ अपनी समस्याएँ अभिव्यक्ति कर रहे हैं। मोनिका गौड़ ने बताया कि जब हम महिला लेखन की बात करते हैं तो मीराबाई का नाम पूरे भारतीय साहित्य में महान आदर के साथ लिया जाता है परंतु उसके बाद एक प्रश्नचिह्न लग जाता है।

अगले सत्र के अध्यक्ष के तौर पर डॉ. धनंजय अमरावत ने बताया कि स्वतंत्रता के बाद राजस्थानी महिला लेखन ने 'पवांदे' को भर दिया है और उनके साहित्य में एक सार्थक बदलाव आया है। डॉ. शंकुतला सरूपरिया ने कहा कि राजस्थानी महिला असंगति लेखन से परिपूर्ण है। वरिष्ठ लेखिका डॉ. शारदा कृष्णा ने भी राजस्थानी महिला लेखन की क्षमताओं और सीमाओं पर अपने विचार रखे। श्री अनुपम तिवारी ने धन्यवाद दिया।

डोगरी ग़ज़ल पर परिसंवाद

27 अगस्त 2017, जम्मू

डोगरी संस्था, जम्मू के सहयोग से डोगरी ग़ज़ल पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन 27 अगस्त 2017 को डोगरी भवन में किया गया। साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मंगोत्रा ने डोगरी कवियों, आलोचकों, विद्वानों और डोगरी प्रेमियों को संबोधित करते हुए कहा कि ग़ज़ल का न केवल एक विशिष्ट रूप होता है बल्कि इसमें विषयों की विविधता भी होती है। अपने बीज भाषण में प्रसिद्ध आलोचक डॉ. वीणा गुप्ता ने बताया कि भारतीय साहित्य में ग़ज़ल सर्वाधिक सफल शैली है। डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने आमंत्रितों का स्वागत किया। डोगरी संस्था के अध्यक्ष श्री छत्रपाल ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की और इसका संचालन सुशील बेगाना ने किया। डॉ. संदीप दुबे, श्री सुशील बेगाना और कर्नल राज मनावरी ने आलेख पढ़े। प्रमुख कवि ज्ञानेश्वर ने आलेख-पठन सत्र की अध्यक्षता की डॉ. चंचल भसीन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बाएँ-दाएँ : प्रो. ललित मंगोत्रा, डॉ. डी.के. देवेश, डॉ. वीणा गुप्ता तथा श्री छत्रपाल

भारतीय लोककथाएँ : विषय और शैलियाँ विषय पर परिसंवाद

30 अगस्त 2017, मल्लपुरम

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र का दृश्य

परिसंवाद का आरंभ उद्घाटन सत्र से हुआ। साहित्य अकादेमी, बेंगळुरु के प्रतिनिधि एल. सुरेश कुमार ने आमंत्रित अतिथियों व श्रोताओं का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अनिल वालथोल ने परिसंवाद के बारे मे बताया। इसके बाद कालीकट विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. मुहम्मद बशीर ने अध्यक्षीय संबोधन किया। परिसंवाद का उद्घाटन मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य श्री के.पी. रामनुनी ने किया। कालीकट विश्वविद्यालय स्कूल ऑफ़ फोकलोर स्टडीज़ के प्रभावी प्रमुख के.एम. अनिल ने परिसंवाद के विषय पर चर्चा की। इसी स्कूल के पूर्व प्रमुख श्री राघवन पायन्नाड ने बीज भाषण दिया।

स्कूल ऑफ़ फोकलोक स्टडीज़ के शोधार्थी शमसीना वी.टी. ने कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन दिया। परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता केरला स्टडीज़ और मलयालम विभाग के संकाय शिनीमोल के. उमर थारम्मल ने की। उन्होंने ''अदर पेराडिग्म इन द स्टोरीज़ ऑन सेठी हाजी'' पर आलेख प्रस्तुत किया। दूसरा आलेख जीशा सी.के. ने प्रस्तुत किया। परिसंवाद के दूसरे सत्र की अध्यक्षता सिनेश वेलिकुनी ने की। सुनील निजालियथ, एन. मनोहरन और बी.एस. शिवकुमार ने आलेख प्रस्तुत किए। तीसरे सत्र में आर.वी.ए. दिवाकरन और एच.के. संतोष ने अपने आलेख प्रस्तुत किए परिसंवाद के अंत में छात्रों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, तत्पश्चात धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

समकालीन मणिपुरी साहित्य में मणिपुरी संस्कृति की प्रतिछाया पर परिसंवाद

2 सितंबर 2017, मणिपुर

मणिपुर यूनिवर्सिटी ऑफ़ कल्चर, पैलेस कंपाउंड, इंफ़ाल के सहयोग से 'समकालीन मणिपुरी साहित्य में मणिपुरी संस्कृति प्रतिछाया' पर एक परिसंवाद का आयोजन 2 सितंबर 2017 को गवर्मेंट डाँस कॉलेज, पैलेस कंपाउंड, इंफ़ाल में किया गया। श्री गौतम पॉल ने आगंतुकों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने आरंभिक व्याख्यान दिया। मणिपुरी यूनिवर्सिटी ऑफ़ कल्चर के रजिस्ट्रार डॉ. एल. जायॅचंद्र सिंह ने मणिपुरी साहित्य पर मणिपुरी संस्कृति के विभिन्न संवेगों पर संक्षिप्त में बात की।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता एल. जॉयचंद्र ने की और तीन वक्ताओं डॉ. डब्ल्यू. एंजेला देवी, डॉ. पी. जेम्स, डॉ. रूहीचंद ने विषय से संबंधित अपने आलेख प्रस्तुत किए। परिसंवाद के दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री .के. राधाकुमार ने की और वक्ताओं श्री ए. ऋषिकेश, श्रीमती सुरेखा लांगजैम और श्रीमती विमला देवी ने आलेख पढ़े। मणिपुर यूनिवर्सिटी ऑफ़ कल्चर के संकाय सदस्य डॉ. रूहीचंद ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

पूर्व और उत्तर-पूर्व क्षेत्रों का लोकसाहित्य : निरंतरता, भिन्नता और विलयन परिसंवाद

4 सितंबर 2017, देवघर

रमा देवी बजला महिला विश्वविद्यालय, देवघर के सहयोग से 'पूर्व और उत्तर-पूर्व क्षेत्रों का लोकसाहित्य : निरंतरता, भिन्नता और विलयन' पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन 4 सितंबर 2017 को रमा देवी बजला विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। सिदो कान्हू मुर्मु विश्वविद्यालय, दुमका के कुलपति प्रो. मनोरंजन प्रसाद सिन्हा ने दीप प्रज्ज्वलित करके उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की सदस्या एवं कार्यक्रम की समंवयक डॉ. रीता रॉय ने लोक साहित्य पर आरंभिक टिप्पणी प्रस्तुत की। अंग्रेज़ी विभाग के प्रमुख व उपकुलपति प्रो. शिवाशीष बिस्वास ने बीज भाषण दिया, जिसमें उन्होंने साहित्य में अस्थाई सत्ता समीकरण पर चर्चा की। प्रथम सत्र के अध्यक्ष रहे बांकुरा विश्वविद्यालय पश्चिम बंगाल के प्रो. गौतम बुद्ध सूराल। इस सत्र में डॉ. चंदम देव और डॉ. श्रावणी बिस्वास ने अपने आलेख पढ़े। दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. शिवाशीष ने की जिसमें अरनब भट्टाचार्य, डॉ. संदीप मंडल और प्रो. गौतम बुद्ध सुराल ने आलेख पढ़े। ''सिदो कान्हू मुर्मु'' विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के डॉ. राजीव कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

परिसंवाद का उद्घाटन सत्र

समकालीन मैथिली उपन्यास पर परिसंवाद

10 सितंबर 2017, राँची

झारखंड मिथिला मंच के तत्वावधान में चिंतन सभागार, अशोक नगर, राँची में 10 सितंबर 2017 को एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन राँची विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पांडे ने किया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि जीवन की परेशानियों को सुलझाने में साहित्य की बड़ी भूमिका है। डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, विशेष कार्याधिकारी, साहित्य अकादेमी ने सभी का स्वागत करते हुए मैथिली के उन्नयन में अकादेमी के प्रयासों पर चर्चा की। कामेश्वर सिंह दरभंगा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. चंद्रकांत शुक्ल ने सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. अशोक अविचल ने बीज वक्तव्य दिया। झारखंड मिथिला मंच के सचिव श्री संतोष झा ने धन्यवाद प्रकट किया। परिसंवाद की अध्यक्षता प्रसिद्ध मैथिली लेखक प्रो. विद्यानाथ झा 'विदित' ने की। डॉ. दमन कुमार झा ने 'समकालीन मैथिली उपन्यास में स्त्री विमर्श' पर आलेख पढ़ा।

श्री रौशन यादव ने 'मैथिली उपन्यास में समसामयिक प्रश्न' और श्री सियाराम झा सरस ने 'समकालीन मैथिली उपन्यास में चित्रित आज का समाज' विषय पर आलेख पढ़ा।

सिंधी महिला लेखकों के समकालीन साहित्य पर परिसंवाद

10 सितंबर 2017, अहमदाबाद

रंगकर्म थिएटर के संयुक्त तत्वावधान में 'सिंधी महिला लेखकों के समकालीन साहित्य' विषय पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन 10 सितंबर 2017 को स्वामी लीला शाह सेवा ट्रस्ट, कुबेर नगर, अहमदाबाद में किया गया। प्रारंभ में, रंगकर्म थिएटर के श्री जगदीश शहदादपुरी ने श्रोताओं एवं अतिथि लेखकों का स्वागत किया और सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश से बीज भाषण हेतु अनुरोध किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुश्री सुनीता मोहनानी ने की। इस सत्र में सुश्री रोशनी रोहरा, सुश्री दीपा वाधवानी, सुश्री धनलक्ष्मी वातनानी और सुश्री पुष्पा सागर ने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र में सुश्री मीना शहदादपुरी ने 'पाहिनजी गल्हा में' जया जादवानी की एक पुस्तक पर अपने विचार रखे। सुश्री हीना अगनानी ने पोपटी हीरानंदानी के लेखन की समीक्षा की।

सत्र की तीसरी वक्ता सुश्री दया लालचंदानी ने रश्मि रमानी की पुस्तक 'कड़ाही-कड़ाही' पर बात की जबकि सुश्री आशा जगेशा ने महिलाओं द्वारा साहित्य की विविध शैलियों पर आलोचनात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की।

दूसरे सत्र में सभी प्रतिभागी महिला लेखकों ने अपने लेखन के विविध रूप प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रेम प्रकाश ने की।

मणिशंकर रत्नाजी भट्ट 'कांत' पर परिसंवाद

16 सितंबर 2017, अहमदाबाद

'कांत' के जन्मशती वर्ष के उपलक्ष्य में गुजराती साहित्य परिषद् के सहयोग से मणिशंकर रत्नाजी भट्ट 'कांत' पर परिसंवाद का आयोजन 16 सितंबर 2017 को अहमदाबाद में किया गया।

उद्घाटन सत्र में परिषद् की सुश्री उषा उपाध्याय ने कहा कि यद्यपि 'कांत' ने पश्चिम का साहित्य ज़्यादा पढ़ा फिर भी उनका लेखन संस्कृत से ज़्यादा प्रभावित था तथा इस संदर्भ में, परिषद् के अध्यक्ष श्री चंद्रकांत टोपीवाला ने टिप्पणी की कि खंडकाव्य 'कांत' के शोध का परिणाम था। गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. सितांशु यशश्चंद्र ने बताया 'कांत' की एक अलग शैली थी जो उन्हें दूसरे कवियों से विशिष्ट बनाती है।

उद्घाटन सत्र के बाद परिषद् के श्री प्रफुल्ल रावल ने कहा कि वो स्वीडनबर्ग की पुस्तकों से प्रेरित थे जिस कारण उन्होंने स्वेच्छा से ईसाई धर्म को चुना। अन्य प्रतिभागियों—सर्वश्री राजेश पंडया, जयदेव शुक्ल, विजय पंडया, शिरीष पांचाल ने 'कांत' के खंडकाव्य का वर्णन किया। दूसरे सत्र में सतीश व्यास, रमेश शाह, मनसुख सल्ला, निव्या पटेल ने विशिष्ट नाटकों की चर्चा के साथ-साथ उन पर ग्रीक नाटकों के प्रभावों का भी बयान किया।

परिसंवाद के अंत में योगेश जोशी ने प्रत्येक वक्ता द्वारा प्रस्तुत आलेखों पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री प्रफुल्ल रावल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

महाराष्ट्र में उर्दू साहित्य की वर्तमान स्थिति पर परिसंवाद

16 सितंबर 2017, पुणे

दक्कन मुस्लिम इंस्टीट्यूट के साथ मिलकर 16 सितंबर 2017 को हाई टेक हॉल आजम परिसर, पुणे में 'महाराष्ट्र में उर्दू साहित्य की वर्तमान स्थिति' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता दक्कन इंस्टीट्यूट, पुणे की अध्यक्ष और प्रख्यात उर्दू लेखिका श्रीमती आबिदा इनामदार ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री शमीम तारिक ने कहा कि हमें महान उर्दू लेखकों द्वारा किए गए शोध कार्यों को आगे ले जाना होगा। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबाहुने ने आंगतुकों का स्वागत किया। श्रीमती आबिदा इनामदार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में डिजीटलाईजेशन द्वारा उर्दू साहित्य व भाषा के प्रसार पर महत्त्व दिया। डॉ. सईद याहया नशीत ने बीज भाषण दिया। परिसंवाद का प्रथम सत्र सलीम शाहजाद की अध्यक्षता में हुआ। इस सत्र में ख्वाजा गुलामुसैयद्दीन ने आलेख पढ़ा। श्री शमीम तारीक की अध्यक्षता में दूसरे सत्र में श्री सलीम शहज़ाद, नज़ीर फतेहपुरी, अब्दुला इम्तियाज़ और माजिद काज़ी ने आलेख पढ़े। कार्यक्रम में पुणे के बहुत से उर्दू प्रेमियों ने भाग लिया।

महर्षि देवेंद्रनाथ टैगोर पर परिसंवाद

20 सितंबर 2017, कोलकाता

साहित्य अकादेमी सभागार, कोलकाता में 20 सितंबर 2017 को महर्षि देवेंद्रनाथ टैगोर पर एक परिसंवाद आयोजित किया गया। प्रख्यात विद्वान सब्यसाची भट्टाचार्य ने इसका उद्घाटन किया और गौतम पॉल ने स्वागत भाषण दिया। देवेंद्रनाथ टैगोर (15 मई 1817-जनवरी 1905) एक हिंदू दार्शनिक और धार्मिक सुधारक थे। वह ब्रह्म समाज में सक्रिय थे जिसका उद्देश्य हिंदू धर्म और जीवन-पद्धति में सुधार लाना था। प्रख्यात विद्धेता श्री स्वप्न बसु ने बीज भाषण दिया और बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने अध्यक्षता की।

प्रथम सत्र में श्री अनिरुद्ध रक्षित और रामानुज मुखोपाध्याय ने आलेख प्रस्तुत किए, गौतम नियोगी सत्राध्यक्ष थे। सत्र का मुख्य केंद्र महर्षि देवेंद्रनाथ टैगोर द्वारा अपनाए गए धर्म एवं दर्शन पर था।

दूसरे सत्र में अमिताव खास्तगीर अध्यक्ष थे और देवाशीष रॉय ने संगीत एवं साहित्य के क्षेत्र में देवेंद्रनाथ टैगोर की रचनाओं पर व्याख्यान-प्रस्तुति के साथ-साथ उनके गीत भी गाए।

राहुल सांकृत्यायन पर परिसंवाद

21 सितंबर 2017, नई दिल्ली

नई दिल्ली में 21 सितंबर 2017 को राहुल सांकृत्यायन के योगदानों पर एक परिसंवाद का आयोजन साहित्य द्वारा किया गया। सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और उनकी बहुमुखी प्रतिभा के बारे में बात की। इस अवसर पर प्रख्यात आलोचक और लेखक डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि राहुल सांकृत्यायन की जीवन-यात्रा और उनकी संपूर्ण कृतियाँ नए भारत की खोज हैं। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया जहाँ उन्होंने राहुल सांकृत्यायन की भाषा से

संबंधित अवधारणाओं और लोकभाषाओं के प्रति उनके लगाव पर चर्चा की। डॉ. गरिमा श्रीवास्तव, डॉ. अवनिजेश अवस्थी और डॉ. रमण सिन्हा ने अपने आलेख पढ़े। कार्यक्रम का संचालन श्री अनुपम तिवारी ने किया।

बोडो लघुकथा और नाटक में आधुनिक प्रवृतियाँ

25 सितंबर 2017, लांघिन, असम

करबी एंगलोंग डिस्ट्रिक बोडो साहित्य सभा के साथ मिलकर साहित्य अकादेमी ने 25 सितंबर 2017 को आरंभिक कॉलेज असम में परिसंवाद 'बोडो लघुकथा और नाटक में आधुनिक प्रवृत्तियाँ' का आयोजन किया। बोडो समुदाय के बुद्धिजीवियों प्रख्यात लेखकों के साथ कार्यक्रम संचालित हुआ।

परिसंवाद के सत्र का दृश्य

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेमानंद मशाहारी ने आरंभिक भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी भाषा में साहित्य की आलोचना के महत्त्व पर बल दिया। सत्र की अध्यक्षता करबी एंगलोंग डिस्ट्रिक बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री संतराम बसुमतारी ने की।

सत्र का उद्घाटन लांघिन कॉलेज के प्राचार्य प्रभारी डॉ. दालसिंग बसुमतारी ने किया और अध्यक्षता साहित्य अकादेमी पुरस्कृत व प्रसिद्ध बोडो कवि श्री अरबिंदो उजीर ने की। सर्वश्री लांगकेस्वर हाइनारी, प्रमतेश बसुमतारी और रितुराज बसुमतारी ने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता बोडो साहित्य सभा के पूर्व उपाध्यक्ष श्री बीरेश्वर बसुमतारी ने की। श्री अजीत बसुमतारी और श्री मोगेश नरज़ा बोरो ने आलेख प्रस्तुत किए। करबी एंगलोंग डिस्ट्रिक बोडो साहित्य सभा के सचिव श्री खगेन गोयारी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

हिंदी नवजागरण और शिवपूजन सहाय पर परिसंवाद

26 सितंबर 2017, नई दिल्ली

श्री शिवपूजन सहाय की 125वीं जन्मशती के अवसर पर 26 सितंबर 2017 को नई दिल्ली में 'हिंदी नवजागरण और शिवपूजन सहाय' पर एक परिसंवाद आयोजित किया गया। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया तथा संक्षेप में शिवपूजन सहाय के जीवन और कृतित्व पर चर्चा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक डॉ. मंगलमूर्ति ने की। उन्होंने कहा कि शिवपूजन सहाय को याद करना, हिंदी नवजागरण लाने वाले सभी महत्त्वपूर्ण हिंदी लेखकों को याद करना है। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता और संप्रेषण विश्वविद्यालय के कुलपति अच्युतानंद मिश्र संगोष्ठी के मुख्य अतिथि थे। डॉ. राजीव रंजन गिरि, डॉ. कुमुद शर्मा और श्री भारत भारद्वाज ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। साहित्य अकादेमी के संपादक श्री अनुपम तिवारी ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

मराठी उपन्यास पर परिसंवाद

28 सितंबर 2017, कलंब

दन्यदेव मोहेकर कॉलेज, कलंब के सहयोग से अकादेमी ने 28 सितंबर 2017 को अथ्थे कॉलेज, कलंब में एक परिसंवाद का आयोजन किया। आरंभ में कृष्णा किम्बाहुने ने अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। दन्यदेव मोहेकर कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अशोक मोहेकर ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। प्रख्यात मराठी आलोचक डॉ. एकनाथ पगार ने बीज भाषण दिया। प्रख्यात मराठी लेखक व आलोचक डॉ. अशोक चौसलकर ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

परिसंवाद का प्रथम सत्र 'वर्तमान मराठी उपन्यास : स्रोत और प्रभाव' की अध्यक्षता डॉ. रनधीर शिंदे ने की और डॉ. केशव देशमुख, श्री राजा होलकुंडे और श्री प्रशांत धांडे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजशेखर शिंदे और चर्चा का विषय था 'वर्तमान मराठी उपन्यास में साहित्यिक संस्कृति।' इस सत्र में श्री बालाजी सुतार, डॉ. दत्तात्रेय घोलप और डॉ. महेश खरात ने अपने विचार साझा किए। कॉलेज के श्री केदार कलावाने ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

कोंकणी में विनोदपूर्ण साहित्य पर परिसंवाद

28 सितंबर 2017, गोवा

साहित्य अकादेमी और गोवा विश्वविद्यालय के कोंकणी विभाग ने संयुक्त रूप से गोवा विश्वविद्यालय, पणजी में 28 सितंबर 2017 को कोंकणी में विनोदपूर्ण साहित्य के निरूपण पर एक परिसंवाद आयोजित किया। गोवा विश्वविद्यालय के कुलपति श्री वरूण साहनी ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। जानेमाने कोंकणी आलोचक श्री उल्हास पाई रायकर ने बीज भाषण दिया। कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तानाजी हलर्नाकर ने आरंभिक व्याख्यान किया। प्रथम सत्र 'कोंकणी के विनोदपूर्ण साहित्य में गंभीरता' की अध्यक्षता प्रसिद्ध कोंकणी कवि और नाटककार श्री पुंडलिक नाईक ने की। श्री गजानन जोग और श्री सखाराम बोरकर ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। 'कोंकणी साहित्य में हास्य का योगदान' विषयक द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री के.एम. सुखतानकर ने की और श्री ज़िलू गांवकर एवं सुश्री गोदालुप डियास ने आलेख पढ़े। श्री पुंडलिक नाईक ने अंतिम सत्र की अध्यक्षता की, जिसका विषय था 'कोंकणी में हास्यपूर्ण नाटकों में ग़ैर हास्य।' जबकि सुश्री राजश्री शैल और सुश्री कोज़मा फर्नांडिस ने अपने आलेख पढ़े। अंत में कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य श्री प्रकाश पर्येकर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

समकालीन भारतीय नाटक का अनुवाद पर परिसंवाद

30 सितंबर 2017, शिलांग

नार्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग के अंग्रेज़ी विभाग के सहयोग से अकादेमी ने 'समकालीन भारतीय नाटक का अनुवाद' पर एक परिसंवाद का आयोजन 30 सितंबर 2017 को यूनिवर्सिटी के परिसर में किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य प्रो. इस्थर सियामी ने प्रतिभागियों व श्रोताओं का स्वागत

किया। आरंभिक वक्तव्य में विभाग की प्रो. माला रंगनाथन ने उपमहाद्वीप में विविध संस्कृतियों में फैले अनुवाद के प्रयोगों और नाटक के अनुवाद में इस ओर किए जा रहे प्रयासों पर बात की। प्रसिद्ध विद्वान श्री देवाशीष मजूमदार ने क्षेत्रीय भाषाओं में नाट्य कला के अनुवाद पर बात करते हुए बताया कि एक साहित्यिक शैली के रूप में नाट्य कला को वह ख्याति नहीं प्राप्त हुई जिसका यह हक़दार है। अपने बीज भाषण में प्रख्यात कन्नड नाट्यकार और विद्वान प्रो. एच.एस. शिवप्रकाश ने कहा कि यह परिसंवाद भारत में अपनी तरह का पहला है और पूरे थिएटर समुदाय को इस आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी का धन्यवाद करना चाहिए। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एस. राजमोहन ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रथम सत्र 'समकालीन नाटक का अंग्रेज़ी में अनुवाद' की अध्यक्षता श्री दिलीप कुमार बसु ने की। इस सत्र में डॉ. स्वराजबीर, डॉ. मंगई, डॉ. ज्योतिर्मय पुरोधिनी और श्री चंद्रदासन ने अपने-अपने आलेख पढ़े। दूसरा सत्र 'समकालीन नाटकों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद' की अध्यक्षता प्रो. एच.एस. शिवप्रकाश ने की। तीन प्रसिद्ध विद्वानों श्री चंद्रकांत पाटिल, श्री डी. श्रीनिवास और सुश्री मैत्रेयी करनूर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पैनल चर्चा का संयोजन डॉ. आत्मजीत ने किया। सात विद्वानों श्री चंद्रकांत पाटिल, प्रो. ईस्थर सियामी, श्री वाई. सदानंद सिंह, श्री चंद्रदासन, सुश्री मैत्रेयी करनूर, प्रो. माला रंगनाथन और डॉ. ज्योतिर्मय पुरोधिनी ने 'समकालीन भारतीय नाटक का अनुवाद और प्रकाशन : चुनौतियाँ और अवसर' से संबंधित विभिन्न पक्षों पर चर्चा की। डॉ. एस. राजमोहन ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

मराठी साहित्य पर भक्ति परंपरा का प्रभाव पर परिसंवाद

11 अक्तूबर 2017, बुलढाना

मॉडल डिग्री कॉलेज, बुलढाना के तत्वावधान में 'मराठी साहित्य पर भक्ति संप्रदाय का प्रभाव' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 11 अक्तूबर 2017 को डिग्री कॉलेज, बुलढाना में किया गया। विशिष्ट मराठी साहित्यकार श्री बसंत अबाजी दहाके ने परिसंवाद का उद्घाटन किया और प्रसिद्ध मराठी कहानी लेखक श्री सदानंद देशमुख ने बीज भाषण दिया। प्रख्यात मराठी आलोचक श्री सतीश बडावे ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की और श्री रविंद्र इंगले चावरेकर ने आलेख पढ़ा। श्री मनोज तायड़े ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की और विद्यासागर पंतगनकर ने आलेख प्रस्तुत किया। मॉडल डिग्री कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री गोविंद गायकी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रपंचिकरण नेपथ्यम–वर्तमान कवित्वम पर परिसंवाद

29 अक्तूबर 2017, गुंटूर

गुंटूर ज़िला रचयितला संघ के सहयोग से 29 अक्तूबर 2017 को ज़िला परिषद् मीटिंग हॉल, गुंटूर में प्रपंचिकरण नेपथ्यम–वर्तमान कवित्वम पर परिसंवाद आयोजित किया गया।

गणमान्यों और अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने बताया कि साहित्य अकादेमी अपनी शुरुआत से ही भारतीय साहित्य को समृद्ध करने का अथक प्रयास कर रही है। तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने बताया कि वैश्वीकरण पूरे विश्व में असमानताएँ पैदा कर रहा है क्योंकि तकनीकी प्रसार

के कारण विश्व एक भूगोलीय गाँव बन गया है। ज़िला रचयितला संघ के अध्यक्ष वेंकट सुबैया ने कहा कि उनकी संस्था पूरे ज़िले में ऐसे कई कार्यक्रम कर रही है जिनका उल्लेख भारतीय साहित्य में होना चाहिए। तेलुगु साहित्य के सरंक्षक और उद्योगपति श्री बोम्मीडाला कृष्णमूर्ति, जो मुख्य अतिथि थे, ने लेखक संघ से अधिकाधिक साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन का अनुरोध किया। ताकि हमारे जीवन पर वैश्वीकरण के प्रभावों का मूल्यांकन हो सके।

इंडियन प्रोगेसिव राइटर्स एसोसिएशन के राष्ट्रीय सचिव और तेलुगु भाषा आलोचक श्री पेनुगोंडा लक्ष्मी नारायण ने बीज भाषण देते हुए बताया कि वैश्वीकरण एक आम कारण पर आम प्रतिक्रिया को रोकने का औजार है। उन्होंने विस्तार से वैश्वीकरण के लाभ एवं हानियों पर प्रकाश डाला।

प्रथम सत्र, जिसकी अध्यक्षता श्री कोंदरेड्डी वेंकटेश्वर रेड्डी ने की, श्री बी. ललितानंद और श्री वी. नागराज्या लक्ष्मी ने आलेख पढ़े। दूसरे सत्र की अध्यक्ष थीं, कवयित्री श्रीमती सी. भवानी देवी जबकि पुतला हेमलता और चलपका प्रकाश ने आलेख पढ़े।

समापन सत्र की अध्यक्षता की डॉ. एन. गोपी ने और अकादेमी के पुरस्कृत कवि पापीनेनी शिवशंकर ने समापन भाषण दिया। इसके बाद कथासंधि कार्यक्रम में श्रीमती वादरेवु वीर लक्ष्मी देवी, डॉ. एन. गोपी, पापिनेनी शिवशंकर और अन्य लेखकों ने एक-दूसरे से संवाद किया।

श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रारंभ में कथालेखक का स्वागत करते हुए परिचय श्रोताओं से करवाया और अंत में लेखक का और गुंटूर के अन्य सभी महत्त्वपूर्ण लेखकों का धन्यवाद दिया।

मणिपुरी वाचिक काव्य : प्रदर्शन और सौंदर्यपरकता

4 नवंबर 2017, काबूगंज, असम

मणिपुरी विभाग, जनता कॉलेज, काबूगंज, असम के सहयोग से 4 नवंबर 2017 को 'मणिपुरी वाचिक काव्य : प्रदर्शन और सौंदर्यपरकता' पर परिसंवाद का आयोजन जनता कॉलेज, काबूगंज, असम में किया गया। उद्घाटन सत्र में गौतम पॉल ने स्वागत भाषण दिया। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक एच. बिहारी सिंह ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया और ऐसे परिसंवादों के आयोजन की ज़रूरत पर बल दिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. एम. बाबाटोन सिंह, सेवानिवृत प्रोफ़ेसर ने मणिपुरी वाचिक काव्य और आधुनिक मणिपुरी साहित्य के महत्त्व पर अपने विचार साझा किए।

जनता कॉलेज के प्राचार्य (प्रभारी) प्रो. सुभाष चंद्रनाथ ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। मणिपुरी विभाग की प्रमुख डॉ. उषा रानी शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एच. बिहारी सिंह ने की। इस अवसर पर तीन प्रसिद्ध कवि—एन. विद्यासागर सिंह, एल. निपामचा सिंह और एच. अनीता सिंह भी उपस्थित थे। सत्र के पश्चात् एक संवादमूलक सत्र हुआ जिसमें सेवानिवृत्त पुस्तकालयाध्यक्ष एल. मंगलेंबा सिंह ने विषय पर प्रश्न किए और उपस्थित विद्वानों ने उन पर प्रतिक्रिया दी।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता एम. बाबाटोन सिंह ने तीन प्रख्यात विद्वानों और कवियों—उषा रानी शर्मा, सी.एच. मणिकुमार सिंह और ओ.एल. सिंह के साथ की।

परिसंवाद : भारतीय नेपाली साहित्य में मिथक

5 नवंबर 2017, खरसाङ

साहित्य अकादेमी द्वारा गोर्खा जन पुस्तकालय, खरसाङ (प. बंगाल) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय नेपाली साहित्य में मिथक' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 5 नवंबर 2017 को खरसाङ में किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन नेपाली साहित्य परिषद्, गांतोक के अध्यक्ष श्री रुद्र पौड्याल ने किया। सत्र की अध्यक्षता गोर्खा जन पुस्तकालय के सभापति श्री रबीनकुमार प्रधान ने की।

कार्यक्रम के आरंभ में, साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए उपस्थित श्रोताओं को साहित्य अकादेमी की गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताया। आरंभिक वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के नेपाली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने भारतीय नेपाली साहित्य में मिथक पर संक्षिप्त चर्चा की। अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री रबीनकुमार प्रधान ने इस आयोजन के लिए अकादेमी का साधुवाद दिया।

परिसंवाद के विचार सत्र की अध्यक्षता सुपरिचित नेपाली आलोचक डॉ. जस योंजन 'प्यासी' ने की। इस सत्र में डॉ. कविता लामा ने 'भारतीय परंपरा में मिथक', उदय थुलुङ ने 'भारतीय नेपाली कथा साहित्य में मिथक' तथा डॉ. जयकुमार गुरुङ ने 'भारतीय नेपाली काव्य में मिथक' विषयक अपने आलेखों का पाठ किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. प्यासी ने कहा कि आज प्रस्तुत आलेख एक सर्वेक्षण मात्र है और इस विषय पर और भी विस्तृत अध्ययन और विचार-विमर्श की आवश्यकता है।

कार्यक्रम का संचालन श्री विनोद रसायली ने किया, जबकि औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन गोर्खा जन पुस्तकालय के महासचिव श्री प्रकाश प्रधान द्वारा किया गया।

कुट्टीपुष़ा कृष्णपिल्लै पर परिसंवाद

7 नवंबर 2017, अलुवा

साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय केंद्र बेंगळूरु द्वारा 7 नवंबर 2017 को अलुवा में कुट्टीपुष़ा कृष्ण पिल्लै पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने उद्घाटन भाषण दिया। डॉ. सुनील पी. इलायीदम ने के.पी. अप्पन के कुट्टीपुष़ा की आँखों पर विचार का संदर्भ देते हुए भाषण की शुरुआत की।

दोपहर के सत्र की अध्यक्षता कैप्टन के.एस. नारायणन ने की, जिसे बाद में सुश्री सोनिया ने आगे बढ़ाया। अगले सत्र का संचालन श्री एम.एस. पॉल ने 'कुट्टीपुष़ायुदे विमर्शगल-ओरू वायाना' पर केंद्रित करते हुए एक आलोचक के रूप में लेखक की भूमिका की मर्यादाओं का उल्लेख किया।

अगले सत्र 'कुट्टीपुष़ायीले युक्तिवधि' को डॉ. वी.पी. मारकोस ने आगे बढ़ाया। समापन सत्र का संचालन मलयालम विभाग प्रमुख डॉ. म्यूज़ मैरी जार्ज ने किया। बाद में डॉ. मिनी एलिस ने मुख्य अतिथि श्री एम.के. सानू का स्वागत एक हाइकू कविता से किया।

साहित्य मंच : जगदीशचंद्र माथुर जन्मशतवार्षिकी

17 नवंबर 2017, नई दिल्ली

कार्यक्रम का दृश्य

जगदीशचंद्र माथुर जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 17 नवंबर 2017 को साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन 'अभिरंग' नाट्य संस्था, हिंदू कॉलेज के साथ किया गया। सुप्रसिद्ध नाटककार डॉ. दया प्रकाश सिन्हा मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि जगदीशचंद्र माथुर के नाटक इस अर्थ में विशिष्ट हैं कि वे श्रेष्ठ साहित्य होने के साथ ही रंगमंच की दृष्टि से भी खरे हैं। आगे उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के बाद हिंदी के पहले बड़े नाटककार जगदीशचंद्र माथुर अग्रगामी नाटककार थे। इससे पहले हिंदू कॉलेज की प्राचार्य डॉ. अंजू श्रीवास्तव ने अतिथियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी की तरफ़ से संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने अतिथियों का परिचय दिया। बीज वक्तव्य प्रसिद्ध नाटककार डॉ. नरेंद्र मोहन ने दिया। उन्होंने कहा कि जगदीशचंद्र माथुर स्वतंत्र भारत के महत्त्वपूर्ण बड़े नाटककार ही नहीं महत्त्वपूर्ण रंगकर्मी भी थे। उन्होंने हिंदी नाटक के लिए समर्थ नाटक लिखे। संगोष्ठी में लेखक-नाटककार डॉ. प्रताप सहगल ने अपने आलेख में कहा कि ग्रीक और भारतीय नाट्य परंपराओं के साथ जगदीशचंद्र माथुर ने भारत की लोक नाट्य परंपराओं से प्रभाव ग्रहण कर अपने नाटक लिखे। उन्होंने जगदीशचंद्र माथुर के प्रसिद्ध नाटक 'शारदीया' का उल्लेख कर कहा कि वहाँ आए गीत और बिंब वस्तुतः लोक से आए हैं जिसकी गहरी समझ माथुर ने अर्जित की थी। आयोजन में जगदीशचंद्र माथुर के पुत्र श्री ललित माथुर ने कहा कि जगदीशचंद्र माथुर ने हिंदू कॉलेज के अध्यापक रहे रंग विद्वान श्री दशरथ ओझा के साथ मिलकर 'प्राचीन भाषा नाटक' नामक ग्रंथ लिखा था जो इस विषय का मानक ग्रंथ माना जाता है। आयोजन की अध्यक्षता कर रहे प्रसिद्ध लेखक और राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार से सम्मानित श्री शरद दत्त ने जगदीशचंद्र माथुर के साथ अपने विभिन्न संस्मरण सुनाए। संयोजन कर रहे 'अभिरंग' के परामर्शदाता पल्लव ने सभी का आभार व्यक्त किया।

परिसंवाद : डोगरी साहित्य में लोक साहित्य की प्रतिध्वनि

26 नवंबर 2017, जम्मू

जम्मू में के.एल. सहगल हाल में 26 नवंबर 2017 को 'डोगरी साहित्य में लोक साहित्य की प्रतिध्वनि' पर परिसंवाद आयोजित किया गया। अपने तरह के पहले परिसंवाद का उद्घाटन मूर्धन्य लेखक और विद्वान पद्मश्री प्रो. वेद कुमारी घई ने किया। बीज भाषण देते हुए श्री दर्शन दर्शी ने डोगरी लोक कथाओं से डोगरी साहित्य के विकास पर बात की। डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मंगोत्रा ने अपने आरंभिक भाषण में कहा कि लोक साहित्य, जिससे हम बचपन में रूबरू होते हैं, प्रत्येक व्यक्ति के मनोविज्ञान को प्रभावित करता है।

आलेख पठन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी लेखक प्रो. वीणा गुप्ता द्वारा की गई जिसमें श्री अभिषेक भारती, डॉ. बंसी लाल और डॉ. शीतल शर्मा ने आलेख पढ़े।

परिसंवाद : संताली एकल नाटक

2 दिसंबर 2017, रायरंगपुर

साहित्य अकादेमी द्वारा 2 दिसंबर 2017 को 'संताली एकल नाटक' पर रायरंगपुर, ओड़िशा में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत सुप्रसिद्ध नाटककार श्री भोगला सोरेन ने किया जबकि साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने आरंभिक वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने श्रोताओं का औपचारिक स्वागत किया। भोगला सोरेन ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में संताली नाटक और एकल नाटक का संक्षिप्त इतिहास बताया। सुप्रसिद्ध संताली नाटककार एवं अभिनेता जीतराय हांसदा ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि वर्तमान समाज में एकल नाटक एक ज़रूरत है। सत्र की अध्यक्षता रायरंगपुर ऑटोनोमस कॉलेज, रायरंगपुर के प्राचार्य कुबेर कुमार महंत ने की। इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात संताली नाटककार खेरवाल सोरेन थे। रायरंगपुर ऑटोनोमस कॉलेज, रायरंगपुर के अंग्रेज़ी के प्रवक्ता सुनील कुमार जेना ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

परिसंवाद के विचार सत्र की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध संताली नाटककार और साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त लेखक श्री जमादार किस्कू ने की तथा संताली एकल नाटक के विभिन्न पहलुओं पर श्री दुर्गा प्रसाद हेंब्रम, श्री सरोज कुमार सोरेन एवं श्री रघुनाथ मरांडी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

कोंकणी में यात्रावृत्तांत पर परिसंवाद

15 दिसंबर 2017, गोआ

फादर एग्नेल कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड कॉमर्स के सहयोग से कोंकणी में यात्रावृत्तांत पर एक परिसंवाद का आयोजन रीट्रीट हॉल, पणजी, गोआ में 15 दिसंबर 2017 को किया गया। कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तानाजी हलर्नाकर ने परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। श्री कृष्णा किम्बाहुने ने लेखक–प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। फ़ादर एग्लेन कॉलेज की कोंकणी विभाग प्रमुख डॉ. राजश्री शैल ने आरंभिक वक्तव्य दिया। डॉ. हलर्णकर ने साहित्य अकादेमी द्वारा कोंकणी में प्रकाशित पुस्तकों और आयोजित कार्यक्रमों का विवरण दिया।

डॉ. किरन बुडकुले ने परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता की जिसमें डॉ. संगीता देसाई और श्री हनुमंत चोपड़ेकर ने आलेख पढ़े। अगले दो सत्रों में सुश्री युगा अदरकर, सुश्री हर्षा शेटये, श्री प्रसाद पागी और सुश्री माया खरांगटे ने यात्रा और लेखन के अपने अनुभव साझा किए। कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. प्रकाश पेरिनकर ने दूसरे सत्र और श्री दिलीप बोरकर ने तीसरे सत्र की अध्यक्षता की।

ओड़िशा का साहित्य और जनजातीय भाषा पर परिसंवाद

5 जनवरी 2018, संबलपुर, ओड़िशा

डिस्ट्रिक काउंसिल ऑफ़ कल्चर, संबलपुर के तत्वावधान में 'ओड़िशा का साहित्य और जनजातीय भाषा' पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन 5 जनवरी 2018 को संबलपुर में संबलपुर लोक महोत्सव 2018 के अवसर पर किया गया। उद्घाटन सत्र में गौतम पॉल ने सभी का स्वागत किया। प्रख्यात विद्वान श्री राजेंद्र पाधी ने बताया

कि ओड़िशा का जनजातीय साहित्य एक सागर की भाँति हैं। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए संबलपुर विश्वविद्यालय के ओड़िया विभाग के प्रोफ़ेसर कृष्ण चंद्र प्रधान ने कहा कि जिन भाषाओं की अपनी लिपि नहीं है उन्हें कम महत्त्व देने का कोई अर्थ नहीं है। संबलपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. ध्रुवराज नायक ने बताया कि जनजातीय साहित्य वेद की तरह वाचिक रूप में आरंभ हुआ। लोक उत्सव के संयोजक एवं प्रख्यात लोक साहित्यकार डॉ. द्वारिकानाथ नायक ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रथम सत्र में संबलपुर विश्वविद्यालय के सेवानिवृत प्रोफ़ेसर कुमुद रंजन पाणिगृही ने अध्यक्षता की और परमानंद पटेल, रघुनाथ रथ, परमेश्वर मुंड ने जनजातीय भाषा और साहित्य पर आलेख पढ़े।

दाएँ से बाएँ : सर्वश्री गौतम पॉल, कृष्ण चंद्र प्रधान, ध्रुवराज नायक, राजेंद्र पाधी तथा विभूति भूषण मिश्र

आधुनिक मराठी साहित्य पर लोक–साहित्य का प्रभाव

22 जनवरी 2018, अमरावती

संत गाडगेबाबा अमरावती विश्वविद्यालय के सहयोग से 22 जनवरी 2018 को अमरावती में परिसंवाद 'आधुनिक मराठी साहित्य पर लोक-साहित्य का प्रभाव' का आयोजन किया गया। संत गाडगेबाबा अमरावती विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. मुरलीधर चंदेकर ने परिसंवाद का उद्घाटन किया और जाने-माने आलोचक प्रो. विश्वनाथ शिंदे ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

प्रारंभ में, श्री कृष्णा किम्बाहुने ने अतिथियों और श्रोताओं का स्वागत किया। संत गाडगेबाबा अमरावती विश्वविद्यालय के मराठी विभाग प्रमुख डॉ. मनोज तायड़े ने आरंभिक भाषण दिया। प्रो. चंदेकर ने कहा कि लोक साहित्य हमारी सांस्कृतिक विरासत रही है और यह हमारे समाज को मानवी मूल्य याद कराता रहा है। प्रो. शिंदे ने कहा कि लोक साहित्य एक प्रदर्शन है। एक जीवंत संवाद है कहने वाले और सुनने वाले के मध्य। अगले दो सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः प्रख्यात विद्धेता प्रो. मधुकर वाकोडे और डॉ. शशीकांत सावंत ने की। इसमें श्री डी.जी. काले, डी रनधीर शिंदे, प्रो. प्रकाश खांदगे, श्री रफीक सूरज और श्री गणेश चंदन शिवे उपस्थित रहे।

परिसंवाद : मैथिली एवं बाङ्ला: परस्पर संबंध

23 मार्च 2018, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा 23 मार्च 2018 को कोलकाता स्थित क्षेत्रीय कार्यालय सभागार में 'मैथिली एवं बाङ्ला : परस्पर संबंध' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय प्रभारी। डॉ. मिहिर कुमार साहु ने अपने स्वागत भाषण में मिथिला तथा बंगाल एवं मैथिली और बाङ्ला भाषा-साहित्य के पारस्परिक संबंध और सौहार्द की चर्चा करते हुए इस परिसंवाद के आयोजन की महत्ता और प्रासंगिकता को भी उजागर किया।

साहित्य अकादेमी के मैथिली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. प्रेम मोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि बंगाल और मिथिला के अंतर्संबंध प्राचीन काल से ही अत्यंत आत्मीय रहे हैं। बीज भाषण देते हुए वरिष्ठ साहित्यकार और मैथिली दैनिक 'मिथिला समाद' के पूर्व संपादक श्री ताराकांत झा ने मैथिली एवं बाङ्ला के परस्पर संबंध पर विस्तार से चर्चा की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार एवं 'कर्णामृत' पत्रिका के संपादक श्री राजनंदन लाल दास ने की। उन्होंने अपने वक्तव्य में मध्ययुग एवं आधुनिक काल के बंगाल-मिथिला मैत्री के उदाहरण प्रस्तुत किए। परिसंवाद के विचार सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. महेंद्र हजारी ने की, जिसमें सर्वश्री रामलोचन ठाकुर, नवीन चौधरी एवं चंदन कुमार झा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पॉल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अखिल भारतीय 'हो' लेखक सम्मिलन

22 अप्रैल 2017, क्योंझर

साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता ने अखिल भारतीय हो लेखक संघ, भुवनेश्वर के साथ मिलकर 22 अप्रैल 2017 को टाउन हॉल, क्योंझर, ओड़िशा में अखिल भारतीय 'हो' लेखक सम्मिलन का आयोजन किया। सम्मिलन का उद्घाटन करते हुए सुविख्यात विद्वान डॉ. बिंबधर बहेड़ा ने अन्य संस्कृतियों के साथ जनजातीय संस्कृति की समानताओं पर बात की। उन्होंने कहा सभी संस्कृतियाँ मानती हैं कि प्रकृति भगवान है। उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर की एक कविता का उद्धरण दिया। आरंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अतिथियों का स्वागत किया और उन्हें अकादेमी द्वारा जनजातीय व्यक्तियों, भाषा और साहित्य पर केंद्रित अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया।

साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हंसदा ने बीज भाषण दिया। उन्होंने 'हो' समाज के लोगों, इनकी जनसंख्या, साक्षरता, भाषा, संस्कृति और साहित्य के बारे में बताया। अकादेमी से भाषा सम्मान पुरस्कार प्राप्त और विशिष्ट लेखक डॉ. विनोद कुमार नायक ने एक सुंदर 'हो' स्वागत गीत के साथ भाषण की शुरुआत की। उन्होंने अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों पर हर्ष व्यक्त किया। श्री जीवन सिंह ने सभी का धन्यवाद दिया।

पहला सत्र कहानी पाठन को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता श्री जीवन सिंह मुनदईया ने की। श्री दिवाकर रॉय, श्री तरणीसेन बारी, श्रीमती जगमोहिनी कालुंदिया और श्री पाइकराय चंपिया ने 'हो' भाषा में अपनी कहानियाँ पढ़ीं। ये सभी कहानियाँ उन परेशानियों पर आधारित थीं, जिनसे जनजातीय लोग स्वयं को सुसंस्कृत लोगों के सामने सिद्ध करने के लिए दोचार होते हैं।

दूसरा सत्र एक आलेख पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता श्री रवींद्रनाथ कालुंदिया ने की। यह सत्र 'हो' समाज की विभिन्न चुनौतियों पर आधारित था। श्री बुधन सिंह हेसा, श्री जयपाल सिंह नाईक और रामराई मुंदईया ने साहित्य, समाज और धर्म के क्षेत्र में चुनौतियों पर बात की।

श्री प्रफुल्ल चंद सिंह 'तियू' की अध्यक्षता में तीसरे सत्र में काव्य-पाठ हुआ जिसमें श्री कांदेराम सिंह मेलगंधी, श्री जामिनीकांत तिरिया, श्री नंदूराम बुलियुलि और श्रीमती दुलीमनी सिदु ने अपनी कविताएँ पढ़ीं।

कुई लेखन सम्मिलन

10 जून 2017, फूलबनी

ओड़िशा के कुई जनजातीय लेखकों के साथ एक जनजातीय लेखन सम्मिलन का आयोजन 10 जून 2017 को फूलबनी, कंधमाल ओड़िशा में किया गया। इसका उद्घाटन कुई साहित्य का अतीत व भविष्य लिखने वाले प्रो. तीर्थ जानी ने किया। उन्होंने बताया कि ब्रिटिश लेखकों ने महत्त्वपूर्ण कुई व्याकरण पुस्तकें यथा डब्ल्यू. विनफिल्ड ने ''ए ग्रेमर ऑफ़ द कुई लैंग्वेज'' वर्ष 1924 में लिखी जिसे एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल ने प्रकाशित किया। एल्फ्रेड जेम्स ओलेनबैच ने कुई व्याकरण पर एक पुस्तक लिखी। आरंभ में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक श्री ज्योतिकृष्ण वर्मा ने सभी का स्वागत किया और विस्तार से कुई लेखक सम्मिलन के उद्देश्य के बारे में बताया। अपने बीज भाषण में कुई भाषा साहित्य समिति, ओड़िशा के महासचिव डॉ. नीरद चंद्र कँहर ने कहा कि हम कुई शब्दकोश व्याकरण की पुस्तकें, अनूदित पुस्तकें, चित्रिय पुस्तकें, सरल कुई शिक्षण पुस्तकें आदि प्रकाशित कर चुके हैं। संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने बताया कि ओड़िशा में कंध जनजाति सबसे बड़ी है। परंतु भाषा और साहित्य में संताली आगे है। कंध/कुई के लोग पीछे हैं।

''कुई समाज पर विभिन्न चुनौतियाँ'' विषयक प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री दीनबंधु कँहर ने की जो कंधमाल ज़िले के फिरंगिया ज़िले से हैं। श्री कृष्ण चंद्र कँहर ने कुई लिपि पर भाषण दिया। कुई समाज सेवा समिति, फुलबनी के अध्यक्ष श्री गोविंद चंद्र घातक ने ''कुई समज पर विभिन्न चुनौतियाँ'' विषय पर भाषण दिया। श्री नरोत्तम प्रधान ने कहा कि जनजातीय धर्म की अपनी एक प्रथा, रीति और परंपरा है। अंत में, कुई लिपि के आविष्कारक और प्रमुख कुई लेखक दीनबंधु कँहर ने विस्तार से कुई लिपि के बारे में बताया। दूसरा सत्र कहानी-पाठ पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता श्री गणपति मलिक ने की। इस सत्र में भी मानसिंह मलिक, श्री ईश्वर मयंक और श्री दनारा प्रधान ने कहानियाँ पढ़ीं। श्री गणपति मल्लिक ने भी एक छोटी कहानी पढ़ी। कविता पाठ के तीसरा सत्र की अध्यक्षता श्री भीमसेन प्रधान ने की, जिसमें त्रिनाथ प्रधान, कांबू मांझी, प्रदीप कँहर, कृष्णचंद्र प्रधान विश्वंभर प्रधान, दयानिधि मल्लिक और भीमसेन प्रधान ने कविताएँ पढ़ीं।

बोडो लेखक सम्मिलन

5-6 अगस्त 2017, रंगिया, असम

बोडो साहित्य सभा के साथ मिलकर 5-6 अगस्त 2017 को रंगिया कॉलेज सभागार में दूसरे बोडो लेखक उत्सव का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री तरेन बोरो ने की, जबकि साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। असम के पूर्व मंत्री थानेश्वर बोरो ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के सदस्य प्रेमानंद मुसाहारी ने उद्घाटन भाषण दिया। उद्घाटन सत्र में तीन पुस्तकें दो बाङ्ला से और एक मलयाळम् से बोडो में अनूदित, लोकार्पित की गईं। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में बोडो साहित्य के प्रसार हेतु बोडो लेखकों की प्रशंसा की और याद दिलाया कि गुरुदेव कालीचरण ब्रह्म (ब्रह्म धर्म के संस्थापक) ने बोडो साहित्य व संस्कृत

के विकास हेतु प्रयास किया। बोडो परामर्श मंडल के संयोजक प्रेमानंद मसाहारी ने आरंभिक भाषण दिया। बोडो साहित्य के महासचिव श्री प्रशांत बोरो ने बीज भाषण दिया। श्री थानेश्वर बोरो ने विश्वविद्यालयों सहित विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में बोडो भाषा की शिक्षा के स्तर पर बात की। साहित्य अकादेमी के कोलकाता कार्यालय-प्रभारी श्री गौतम पॉल ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

बोडो साहित्य सभा के उपाध्यक्ष दीपक कुमार बसुमतारी ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। रमा बसुमतारी, सरत बोरो, बुद्धेश्वर बोरो, एस. शीला बसुमतारी और जाहरलाल बसुमतारी ने इस सत्र में अपनी कविताएँ पढ़ीं। जनिल कुमार ब्रह्मा ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की। तिरेन बर', उत्तरा बिस्वमुथियारी और रानिश संगरंग रामचियारी ने इस सत्र में अपनी रचनाएँ पढ़ीं। जनता कॉलेज, कोकराझार के प्राचार्य सुबुंग बसुमतारी तीसरे सत्र के अध्यक्ष रहे। रूपाली स्वर्गियारी, अंजली प्रभा दैमारी, भौमिक च. बर' और राहेल मशाहारी ने इस सत्र में स्रोत व्यक्तियों के रूप में भाग लिया। चौथे सत्र का आयोजन गुवाहाटी विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर अनिल बर' की अध्यक्षता में किया गया। श्री अनिल ने बोडो के लोक साहित्य के संरक्षण और प्रलेखन के संबंध में व्याख्यान दिया। फूकन बसुमतारी, अलींद्र ब्रह्म और दाईमालु ब्रह्म ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। समापन सत्र दक्षेश्वर डेका की अध्यक्षता में हुआ और असम के अध्यक्ष तरेन बोरो ने समापन भाषण दिया। फूकन बसुमतारी ने बोडो साहित्य सभा, साहित्य अकादेमी और रंगिया कॉलेज की ओर से सभी का धन्यवाद किया।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन

7-8 सितंबर 2017, राँची

झारखंड भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा, राँची के सहयोग से 'अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन' का आयोजन प्रथम आदिवासी लेखिका एलिस एक्का की जन्मशती के उपलक्ष्य में 7-8 सितंबर 2017 को किया गया।

डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अपने भाषण में बताया कि साहित्य अकादेमी जनजातीय भाषाओं और साहित्य पर पाँच दर्ज़न पुस्तकें प्रकाशित कर चुकी है। झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखाड़ा से श्रीमती वंदना टेटे ने एलिस एक्का के जीवन एवं कृतियों पर बात की।

प्रख्यात जनजातीय लेखक, नाटककार और आलोचक डॉ. स्ट्रीमलेट डखार ने बीज भाषण दिया। श्रीमती रोज़ केरकेटा ने अपने उद्घाटन भाषण में एलिस एक्का के साहित्यिक प्रयासों पर चर्चा की। एक्का के परिवार से एलिस पूरती ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

बाएँ से दाएँ : डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, श्रीमती रोज़ केरकेट्टा, डॉ. स्ट्रीमलेट डखार तथा श्रीमती वंदना टेटे

पहले सत्र में वरिष्ठ आलोचक डॉ. दमयंती बेसरा के साथ सुश्री अल्मा ग्रेस बारला, श्रीमती ज्योति लकड़ा ने अपने विचार रखे। इसका संचालन लेखक और कार्यकर्ता सुश्री दीपा मिंज ने किया। दूसरा सत्र ''वाचिकता और आदिवासी महिला सृजन परंपरा'', ''आदिवासी स्त्री कविताओं में इंडिजनिटी'' पर था। सत्र में दक्षिण से श्रीमती के. वासमल्ली, त्रिपुरा से सुश्री मिलन रानी जमातिया और छत्तीसगढ़ से श्रीमती कुसुम माधुरी टोप्पो ने संबोधित किया। सत्र की अध्यक्षता

श्रीमती वंदना टेटे ने की। अपने वक्तव्य में उन्होंने वाचिक साहित्य की भूमिका के प्रश्न पर चर्चा की। श्रीमती वासमल्ली ने अपने अनुभवों के वर्णन द्वारा टोडा समुदाय में महिलाओं के जीवन संघर्ष प्रस्तुत किए। सुश्री मिलन रानी जमातिया ने कहा महिलाएँ सूक्तियों की जननी हैं। उन्होंने पीढ़ियों से लोकगीतों और लोककथाओं को संरक्षित किया है।

तीसरा सत्र ''आदिवासी स्त्री कविताओं में इनडिजनिटी'' पर केंद्रित था। त्रिपुरा के श्रीमती क्रेरी मॉग चौधरी, कर्नाटक श्रीमती के एस. रत्नम्मा और दिल्ली से डॉ. आईवी ईमोजिन हांसदा ने जनजातीय महिला कविता पर अपने विचार प्रस्तुत किए। युवा आलोचक डॉ. मैरी हांसदा ने सत्र की अध्यक्षता की।

चौथा सत्र ''कविता पाठ'' का था। कर्नाटक की श्रीमती इंदुमति लमानी, गुजरात की सुश्री सोनल राठवा, झारखंड से श्रीमती सरोज केरकेटा, श्रीमती सुषमा असुर, श्रीमती प्यारी टूटी और सुश्री दमयंती सिकु, त्रिपुरा से श्रीमती क्रैरी मॉग चौधरी छत्तीसगढ़ से श्रीमती विश्वासी इक्का और दिल्ली से सुश्री उज्ज्वला ज्योति तिग्गा ने हिंदी और अपनी मातृभाषाओं में कविताएँ पढ़ीं।

पाँचवां सत्र ''आदिवासी महिला कथाकारों की दुनिया'' को समर्पित था। इसका संचालन श्रीमती ज्योति लकड़ा ने किया। श्रीमती सावित्री बराईक ने किया और डॉ. जोराम यालाम नाबाम ने उक्त विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

''समकालीन आदिवासी महिला लेखन और इसकी चुनौतियाँ'' छठे सत्र का विषय था। इसकी अध्यक्षता राँची की जनजातीय लेखक श्रीमती शांति खालखो ने की और कलिम्पोंग से डॉ. शोभा लिंबू और दिल्ली से डॉ. हीरा मीणा ने इस सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ संताली लेखक और सिदो कान्हू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. प्रमोदिनी हांसदा ने की। सत्र का संचालन श्रीमती शांति सावैयां ने किया और *जोहार दिसुम* ख़बर के संपादक श्री अश्विनी कुमार पंकज ने धन्यवाद दिया।

युवा सिंधी लेखक सम्मिलन

5-6 नवंबर 2017, आदिपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ सिंधोलॉजी के संयुक्त तत्वावधान में 5-6 नवंबर 2017 को इंस्टीट्यूट के ईश्वरी जीवट बक्षाणी हॉल में दो दिवसीय युवा सिंधी लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। प्रख्यात सिंधी लेखक श्री लक्ष्मी खिलाणी ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव डॉ. कृष्णा किंबाहुने ने लेखकों, अतिथियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। लक्ष्मी खीलाणी ने कहा कि साहित्य अकादेमी ने पिछले पाँच वर्षों में बहुत से कार्यक्रम आयोजित किए हैं जिसकी सराहना की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि युवा लेखकों को, जहाँ वे रह रहे हैं, उस समय की रफ़्तार और मुद्दों को समझने की कोशिश करनी चाहिए और उस समय की चुनौतियों को स्वीकार करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि भौतिक समृद्धि की अपेक्षा ज़्यादा ख़ुशी और संतुष्टि सृजनात्मक लेखन से प्राप्त होती है। डॉ. हूंदराज बलवाणी, सदस्य, सिंधी परामर्श मंडल ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि युवाओं को साहित्य के महत्त्व और उसकी गंभीरता की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। यद्यपि हम तकनीकी अभ्युत्थान के समय में जी रहे हैं। कला और साहित्य संस्कृति का निर्माण करते हैं। साहित्य संस्कृति का प्रतिबिंब नहीं है।

इस सम्मिलन के मुख्य अतिथि श्री सतीश रोहरा थे। उन्होंने साहित्य अकादेमी को नियमित रूप से कार्यक्रम करने के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि युवाओं को अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भाषा के अनूदित साहित्य को पढ़ना कभी बंद नहीं करना चाहिए। उन्होंने यह भी जोड़ा कि सृजनात्मक लेखन में अनुभव, कल्पना, शैली और प्रयोग भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण होते हैं। श्री साहिब बिजाणी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्रीमती चंपा चेतणाणी ने की। यह सत्र कहानी-पाठ का था। श्रीमती संगीता खिलवाणी, श्रीमती कोमल दयालाणी, श्रीमती गीता गोकलाणी ने अपनी-अपनी कहानियों का पाठ किया। श्री मनोज चावला ने अर्जन हासिद की कहानी तथा श्री जयेश शर्मा ने कैलाश शादाब की पुस्तकों पर अपने विचार व्यक्त किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री जयेश शर्मा ने की। श्रीमती सुनीता मोहनाणी, श्रीमती रोशनी रोहरा, श्रीमती निशा चावला ने इस सत्र में अपनी कहानियों का पाठ किया, इसके अतिरिक्त श्रीमती संगीता खिलाणी ने लक्ष्मण दुबे की, श्री कोमल चाँदणाणी ने हरि हिमथाणी की पुस्तकों पर अपने विचार साझा किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता मुकेश तिलोकाणी ने की। इस सत्र में नयना रावलाणी ने अपनी कहानी का पाठ किया तथा श्री महेश खिलवाणी ने अपने नाटक का पाठ किया। सुश्री गीता गोकलाणी ने हरि हिमथाणी की, श्री कोमल दयालाणी ने श्रीमती जया जादवाणी तथा सुनीता मोहनाणी ने श्रीमती गुनो सामताणी की पुस्तकों पर अपने विचार साझा किए।

चतुर्थ सत्र 6 नवंबर 2017 को पूर्वाह्न 9 बजे से प्रारंभ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता श्रीमती कोमल चाँदाणी ने की। श्री मनोज चावला, श्रीमती भारती सदारंगाणी, श्री मुकेश तिलोकाणी ने इस सत्र में अपनी कविताओं का पाठ किया तथा हर्ष मूलचंदाणी, सीमा भंभाणी, राजेश मूलचंदाणी ने सिंधी को छोड़कर अन्य भाषाओं की अपनी प्रिय पुस्तकों पर अपने विचार साझा किए।

श्रीमती गीता गोकलाणी ने पाँचवें सत्र की अध्यक्षता की। श्री जयेश शर्मा, श्रीमती भाविशा सदारंगाणी, श्रीमती हर्ष मूलचंदाणी ने अपनी कविताओं का पाठ किया तथा श्री मुकेश तिलोकाणी, श्रीमती रोशनी रोहरा, श्रीमती निशा चावला ने दूसरी भाषाओं की अपनी प्रिय पुस्तकों के बारे में विचार व्यक्त किए।

श्रीमती कोमल दयालाणी ने अंतिम सत्र की अध्यक्षता की। श्रीमती सीमा भंभाणी, श्री राजेश मूलचंदाणी, सुश्री कोमल चाँदणाणी ने इस सत्र में अपनी कविताओं का पाठ किया तथा श्रीमती नयना रावलाणी, श्री महेश खिलवाणी और श्रीमती चंपा चेताणी ने दूसरी भाषा के अपने प्रिय साहित्य के बारे में बात की।

कवि सम्मिलन

9 नवंबर 2017, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने भारत में चिली दूतावास के तत्वावधान में 9 नवंबर 2017 को एक कवि सम्मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें, प्रख्यात चिली कवि रॉल जूरिता और भारत के पाँच विशिष्ट कवियों ने भाग लिया। श्रीमती रेणु मोहन भान ने अतिथि कवियों का स्वागत किया और कविता के प्रोन्नयत हेतु साहित्य अकादेमी के प्रयासों के बारे में बताया। उन्होंने पुष्प और पुस्तक देकर चिली राजदूत महामहिम श्री आंद्रे और श्री जूरिता का

स्वागत किया। उन्होंने स्पानी भाषा में छंद पढ़े और अंतर्राष्ट्रीय रूप से प्रख्यात भारतीय कवि केकी एन. दारूवाला ने उसका अंग्रेज़ी अनुवाद किया। कई पुरस्कार प्राप्त जुरीता ने कहा ''यदि कविता समाप्त होती है तो स्वप्न ख़त्म हो जाता है।'' उन्होंने कई भारतीय कवियों की भी प्रशंसा की। जब उन्होंने ''द सी'' के अंश पढ़े तो उनकी आवाज़ सभागार में गूँज रही थी। भारत में चिली के राजदूत श्री एंड्रेंस बार्ब गोन्जालेज़ ने श्रोताओं को संबोधित किया और कवि को एक प्रतिभाशाली जीवंत कवि बताया। केकी एन. दारूवाला ने लोर्का कविताएँ बड़े धीरे-धीरे पढ़ीं। उन्होंने गाईड और सोनेट भी पढ़ी। उन्होंने अपनी सुपरिचित कविता जेरूसलेम भी पढ़ी। अपनी कविताओं के द्वारा उन्होंने शांति का आह्वान किया। हिंदी कवि केदारनाथ सिंह ने पठन सत्र आरंभ किया। उनके द्वारा पढ़ी गई प्रिय कविता ''बनारस'' की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। कवि के अनुसार ''बनारस शहर आधा जगा, आधा सोया है। प्रो. के. सच्चिदानंदन, जिनका मलयाळम् में 24 कविताओं का संगह है और जिन्होंने कई अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लिया है, ने कविता ''बारबेरियन्स'' पढ़ी। यह कविता वर्तमान समाज के घटनाक्रम पर है। पर्यावरणीय मुद्दे पर उन्होंने ''दे वे टू हैवन'' पढ़ी कवि के मुताबिक स्वर्ग कुछ नहीं वह जीवन जो हम जी रहे हैं परंतु फिर भी जीने से डरते हैं। एन ओल्ड पोएट्स सुसाईड नोट एक संवेदी कविता है जिसमें कवि कहता है ''जब विश्व बदले मुझे बुलाना।'' हिंदी की सुविख्यात कवयित्री अनामिका ने कविता ''सेल्फी'' पढ़ी जिसे मालाश्री लाल ने अनुवादित किया। इस कविता में आधुनिक भारत का सेल्फी के प्रति अत्याधिक प्रेम का वर्णन है। उन्होंने एक और संवेदनशील कविता ''राबिया फक़ीर ख़ोली नं. 6।'' उनकी कविता ''साल्ट'' सुदीप सेन द्वारा अनूदित एक सार्थक कविता है। प्रसिद्ध बाङ्ला कवि सुबोध सरकार जो, पश्चिम बंगाल कविता अकादेमी के अध्यक्ष भी हैं, उन्होंने ''एक्ज़ाईल, मदर्स ऑफ़ मणिपुर, आफ्टर मलिका डाईड' और ''इन माई बास्टर्ड इंग्लिश'' पढ़ी। मदर्स ऑफ़ मणिपुर एक सशक्त कविता पुरुषों की निर्दयता अथवा असम राइफल्स के विरोध में थी। कविता के माध्यम से कवि ने बड़े चौंकानेवाले खुलासे किए। जुरीता और भारतीय कवियों के कविता-पाठ सत्र के साथ भाषा की दीवारें टूटी हैं। सभी कवि भिन्न भाषाओं में लिखते हैं, परंतु कविता सभी सीमाओं को पार कर लेती है। अपने खराब स्वास्थ्य के बाद भी रॉल जुरीता ने भारत आकर श्रेष्ठ छंद सुनाए। श्रीमती रेणु मोहन भान ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

पूर्वोत्तरी एवं दक्षिणी लेखिका सम्मिलन

16-17 मार्च 2018, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने सेंट्रल कॉलेज के सीनेट हॉल में पूर्वोत्तरी एवं दक्षिणी लेखिका सम्मिलन का आयोजन 16-17 मार्च 2018 को किया।

कार्यक्रम का प्रारंभ साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव के स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने कहा कि अकादेमी आदिवासी एवं लोक साहित्य के साथ-साथ सभी भारतीय साहित्य को बढ़ावा देती है और यह एक अद्वितीय सम्मिलन है क्योंकि इसमें दो क्षेत्रों की लेखिकाएँ अपनी साहित्यिक रचनाओं के पारस्परिक आदान-प्रदान के लिए एकत्रित हुई हैं। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य अकादेमी हमेशा महिला लेखन को प्रोत्साहित करती रही है।

साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सिद्धलिंगय्या ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि भारतीय भाषाओं में एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए यह भी टिप्पणी की कि स्कूल के विद्यार्थी भी शेक्सपीयर और वर्ड्सवर्थ के नाम से तो अवगत हैं, लेकिन तेलुगु, तमिऴ

या अन्य भारतीय भाषाओं के महत्त्वपूर्ण लेखकों के बारे में नहीं सुना है। इस समस्या का निदान इस तरह के कार्यक्रमों द्वारा किया जा सकता है।

प्रख्यात कन्नड लेखक एवं अध्येता श्रीमती कमला हंपाना ने इस सम्मिलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि भारत भौगोलिक और भाषिक दृष्टि से एक विशाल देश है और कोई भी देश इतना बहुभाषी नहीं हो सकता है। भारतीय साहित्य अलग-अलग भाषाओं में लिखा गया है।

प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखिका श्रीमती अनिता नायर ने बीज भाषण देते हुए कहा कि स्त्री, गाय, नदी, मन संदर्भ साहित्य में बार-बार आता है। मनुष्य और धर्म भी विशेष रूप से दर्शाए जाते हैं। श्रीमती अनिता नायर ने कुछ कवयित्रियों की ऐसी कविताओं का उल्लेख किया जो आज भी लेखकों के प्रेरणा के स्रोत हैं।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि नारीवाद सिर्फ़ महिलाओं तक ही सीमित नहीं है, पुरुष भी नारीवादी हो सकता है। इसके बाद उन्होंने कहा कि नारी उनके साहित्य के केंद्र में है। आम तौर पर उनके उपन्यास की मुख्य पात्र माँ है। अकेले ही वह पूरे समुदाय को साथ ले जाने की ताक़त रखती है।

उद्घाटन सत्र बहुभाषी कविता-पाठ का था। नौ कवयित्रियों ने अपनी कविताओं का पाठ अपनी मूल भाषा में अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ सुनाया। नीलिमा ठाकुरिया हक (असमिया), अंजलि बसुमतारी (बोडो), एच.एल. पुष्पा (कन्नड), विजयलक्ष्मी (मलयाळम्), कोङ्जाम सरिता सिन्हा (मणिपुरी), ऋजु देवी (नेपाली), मंजुला देवी (तमिऴ), सुजाता पटवारी (तेलुगु) तथा रेवती पूवैथाह (कोडावा) कविता-पाठ में शामिल थीं।

प्रथम सत्र आलेख-पाठ का था जिसका विषय था—'नारी काव्य : वर्तमान भारतीय संदर्भ'। इस सत्र की अध्यक्षता कन्नड की प्रख्यात लेखिका श्रीमती प्रमिला माधव ने की। श्रीमती मैनी महंता (कन्नड) ने कहा कि कविता स्वयं की अभिव्यक्ति है। श्रीमती प्रमिला माधव (कन्नड) ने अक्क महादेवी की परंपरा पर बात की श्रीमती वाहेङ्बम कुमारी चानू (मणिपुरी) ने कहा कि कवयित्रियों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए दृढ़संकल्प होना चाहिए। तेलुगु की लेखिका श्रीमती के. सुनीता रानी ने कहा कि हमारी चिंता समाज के लिए होनी चाहिए।

द्वितीय सत्र बहुभाषी कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कन्नड लेखिका श्रीमती वसुंधरा भूपति ने की। इस सत्र में सात कवयित्रियों तूलिका चेतिया येन (असमिया), रश्मि चौधुरी (बोडो), सरिता मोहन वर्मा (मलयाळम्), निङ्थोजम सोमोला देवी (मणिपुरी), बीनाश्री खारेल (नेपाली), कनिमोझि जी. (तमिळ) तथा हिमाजा (तेलुगु) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। वसुंधरा भूपति ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि इन सभी कविताओं में एक चीज़ मिलती जुलती है, वह है मानवता और भावात्मक संवेदनशीलता। उन्होंने कन्नड भाषा में बुद्ध पर कविता का पाठ किया।

17 मार्च 2018 को तृतीय सत्र कहानी-पाठ का था जिसकी अध्यक्षता श्रीमती मणिकुंतला भट्टाचार्य ने की। लेखिका जयश्री बर' (बोडो), नेमिचंद्र (कन्नड), एस. सितारा (मलयाळम्), नीरू शर्मा पराजुली (नेपाली), कलई सेल्वी (तमिळ) तथा पी. सत्यवती (तेलुगु) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

चतुर्थ सत्र बहुभाषी कविता पाठ का था जिसकी अध्यक्षता मलयाळम् की प्रख्यात लेखिका श्रीमती सावित्री राजीवन ने की। इस सत्र में अनुपमा बसुमतारी (असमिया), धनश्री सोरगियारी (बोडो), अनसूया कांबले (कन्नड), बिरला सिंह (मणिपुरी), कुट्टी रेवती (तमिळ), रेणुका अयोला (तेलुगु) तथा मल्लिका शेट्टी (तुलु) ने अपनी कविताओं का पाठ किया, साथ ही मल्लिका शेट्टी ने अपनी गीतात्मक रचना के द्वारा श्रोताओं से सराहना प्राप्त की। कन्नड कवि तथा साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सिद्धलिंगय्या ने कहा कि यह कवयित्रियों

का अद्‌भुत सम्मिलन है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक कविता एक देववाणी तथा भारतीय संस्कृति को बहुमत से प्रतिबिंबित करने की तरह है।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने इस लेखिका सम्मिलन को सफल बनाने के लिए अकादेमी के अध्यक्ष, सचिव तथा रचनाकारों एवं श्रोताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

पूर्वोत्तर और दक्षिणी लेखक सम्मिलन

30-31 मार्च 2018, विशाखापट्टनम

साहित्य अकादेमी ने 30-31 मार्च 2018 को विशाखापट्टनम पब्लिक लाइब्रेरी, द्वारका नगर में पूर्वोत्तर और दक्षिणी लेखक सम्मिलन का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत वक्तव्य में सांस्कृतिक मुख्यधारा में पूर्वोत्तर के लेखकों और कवियों को आत्मसात करने के महत्त्व को रेखांकित किया।

प्रख्यात तेलुगु लेखक डॉ. कालीपट्टनम रामाराव ने अपने उद्‌घाटन व्याख्यान में कहा कि लेखन का उद्देश्य विचारों को साझा करना होता है।

प्रख्यात असमिया लेखक डॉ. लक्ष्मीनंदन बोरा ने सत्र की अध्यक्षता की तथा उन्होंने भारतीय अंग्रेज़ी लेखन पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि भारतीय लेखकों विभिन्न भाषाओं में लिखने की प्राकृतिक प्रतिभा है। विशिष्ट अतिथि पी. आदेश्वर राव ने अपनी अकादमिक तथा आलूरी बैरागी के कार्यों की अनुवाद गतिविधियों जैसे—'द ब्रोकन मिरर', 'वॉयस फ्रॉम द एम्पटी बेल' (अंग्रेज़ी में) तथा 'प्रेम कवितालु' (तेलुगु में) तथा 'कामायनी' के हिंदी से तेलुगु अनुवाद के बारे में विचार साझा किए।

उद्‌घाटन सत्र के पश्चात् बहुभाषी कविता-पाठ का सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता श्री के. शिवारेड्डी ने की। बिपुल सहमिया (असमिया) ऋतुराज बसुमतारी (बोडो), बी.आर. लक्ष्मण राव (कन्नड), वी. मधुसूदन नायर (मलयाळम्), टी. नेत्रजीत सिंह (मणिपुरी), अबीर खालिंग (नेपाली), अज़हागिरया पेरिवत (तमिऴ), असलम हसन (उर्दू) तथा के. संजीव राव (तेलुगु) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

भोजनोपरांत, प्रथम सत्र का विषय था—'मेरा साहित्य, मेरा संसार'। श्री एस. एम. इक़बाल ने इस सत्र की अध्यक्षता की तथा अरिंदम बरकतकी (असमिया), जी. विजय कुमार शर्मा (मणिपुरी), सु. वेणुगोपाल (तमिऴ) तथा राम तीर्थ (तेलुगु) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता जानेमाने तेलुगु लेखक तथा अकादेमी अनुवाद पुरस्कार विजेता एल.आर. स्वामी ने की। जीवन

बाएँ-दाएँ : डॉ. के. श्रीनिवासराव, प्रो. पी. अदेश्वर राव, डॉ. कालिपटनम रामा राव, डॉ. लक्ष्मी नंदन बोरा तथा श्री के. शिव रेड्डी

नाराह (असमिया), यू.के. बसुमतारी (बोडो), सी. रावुन्नी (मलयाळम्), लेनिन खुमनचा (मणिपुरी), सुभाष सोतंग (नेपाली), बी. मीनाक्षी सुंदरम (तमिऴ), पी. रामकृष्ण तथा एस. स्वामीनाइडु (तेलुगु) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

कार्यक्रम के दूसरे दिन वासिरेड्डी नवीन ने कहानी-पाठ केंद्रित तृतीय सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य वासिरेड्डी नवीन ने अन्नाकारेनीना तथा कालीपट्टनम रामाराव के कार्यों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि वर्तमान जीवन अधिक जटिल हो गया है तथा लेखकों को समाज में होने वाले बदलावों के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है। बोंती सेनचोवा (असमिया), एस. दिवाकर, (कन्नड), पी. राधाकृष्णन (मलयाळम्), हेइसम बुदिचंद्र सिंह (मणिपुरी), हरीश मोक्तान (नेपाली), सुब्रभारती मणियन (तमिऴ), चिंताकिंदी श्रीनिवास राव (तेलुगु) ने अपनी कहानियों के अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए।

सत्र के अंत में वासिरेड्डी नवीन ने समापन वक्तव्य देते हुए कहा कि अंतर भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद बहुत आवश्यक है। इस संदर्भ में अनुवादक कल्लूरी श्यामला ने कहा कि अनुवादकों की सूची तैयार की जानी चाहिए तथा हमें भारतीय भाषाओं में अनुवाद पर ध्यान देना चाहिए।

चतुर्थ एवं अंतिम सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक एस. सिद्धलिंगय्या ने की। कुशल दत्त (असमिया), सोपना बगलारू (बोडो), एच.एन. आरती (कन्नड), एल.आर. स्वामी, आर. श्रीलता वर्मा (मलयाळम्), इमोजेत निंगोड्बम (मणिपुरी), जोगेंद्र दरनाल (नेपाली), तेनमोझी दास (तमिऴ) तथा बालासुधाकर मौली (तेलुगु) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

पूर्वोत्तरी : साहित्योत्सव

21-23 अप्रैल 2017, गुवाहाटी

असम साहित्य सभा और नॉर्थ-ईस्ट फ़ाउंडेशन गुवाहाटी के संयुक्त सहयोग में उत्तर-पूर्वी साहित्योत्सव का आयोजन 21-23 अप्रैल 2017 को एन.ई.डी.एफ़. आई कंवेशन हॉल, दिसपुर, गुवाहाटी, असम में किया गया। असम साहित्य सभा और नॉर्थ ईस्ट फ़ाउंडेशन की ओर से अवनी मोहन सहारिया, चंदन सरमा, मेमा और पूर्णिमा बोंगजुंग ने अतिथियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। श्री रतन थियाम ने अपने भाषण में कहा कि वह साहित्योत्सव ने जो देश के विभिन्न भागों के लोगों के मध्य समझ और संप्रेषण को बढ़ाने में मदद की है उससे और साहित्य अकादेमी से जुड़ने पर वह स्वयं को सम्मानित महसूस करते हैं। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने ''उत्सव'' शब्द का प्रयोग करते हुए बताया कि देश की संस्कृतियों व भाषाओं के साथ हमें सावधानी बरतनी चाहिए। उन्होंने यह उत्सव उत्तर-पूर्व में आयोजित किए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की और माना कि साहित्य अकादेमी को लेखकों, पुस्तक प्रकाशन और प्रकाशकों से जुड़ी समस्याओं को महत्त्व देना चाहिए। डॉ. ध्रुवज्योति बोरा ने ''आज के वैश्वीकृत जगत में साहित्य का भविष्य'' विषय चुना और सभी प्रमुख लेखकों को प्रणाम किया। साथ ही उन्हें इस आयोजन का हिस्सा बनाए जाने पर आभार व्यक्त किया। प्रसिद्ध मराठी लेखक डॉ. भालचंद्र नेमाड़े ने भारत की विविधताओं पर दृष्टिकोण पर बात की। उसके बाद, असम साहित्य सभा के महासचिव डॉ. परमानंद राजबंशी ने धन्यवाद प्रकट किया। प्रथम सत्र ''मातृभाषा की आवश्यकता'' की अध्यक्षता डॉ. भालचंद्र नेमाड़े ने की। डॉ. ध्रुवज्योति बोरा मोगाली गणेश, शफ़ी शौक और मालचंद्र तिवारी इस सत्र के प्रतिभागी थे। दूसरे सत्र का विषय था ''उपन्यासों का भविष्य''

जिसकी अध्यक्षता येशे दोरजी थोंगची ने की। संगीता बहादुर, मोहन कुमार, विश्राम गुप्ते और संतोष के. त्रिपाठी इस सत्र के वक्ता थे। पूर्वोत्तरी का तीसरा सत्र कहानी-पाठ था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात तमिल लेखक और कार्यकर्त्ता पी. शिवकामी ने की। झुमुर पांडे ने अपनी बाङ्ला कहानी ''चेलेता अमर रूपांतर'' पढ़ी और इसका हिंदी रूपांतरण 'दिव्यांक' भी पढ़ा। दूसरे वक्ता हिंदी लेखक श्री दयानंद पांडे ने अपनी कहानी 'स्वप्नों का सिनेमा' पढ़ी। श्री मोगाली गणेश (कन्नड लेखक) ने अपनी लघुकथा का अंग्रेज़ी रूपांतर 'वन डे एट द लॉज' पढ़ी। चौथे पाठक कोंकणी लेखक श्री नरेश चंद्र नाईक ने अपनी कहानी का अनुदित रूपांतर 'गार्डन ऑफ़ औरा' पढ़ी और अंत में मणिपुरी लेखक एच. बुधिचंद्र ने अपनी कहानी 'बियांड द बॉटम' का अंग्रेज़ी अनुवाद पढ़ा। पूर्वोत्तरी का चौथा सत्र था—कवि-अनुवादक। इसमें प्रख्यात हिंदी लेखक डॉ. अरुण कमल ने अपनी हिंदी में लिखी कविताएँ प्रस्तुत कीं जिन्हें तभी अनुदित कर करबी डेका हज़ारिका और अनुपम कुमार ने पढ़ा। पाँचवां सत्र कवि सम्मिलन था जहाँ भारत के विभिन्न भागों से दस कवियों को अपनी कविता प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध बाङ्ला लेखक और कवि सुबोध सरकार ने की। जिन कवियों ने काव्यपाठ किया, वो हैं करबी डेका हाज़रिका (असमिया), दिलीप दास (बाङ्ला), शांति बसुमतारी (बोडो), विजया ठाकुर (डोगरी), अनंत मिश्रा (हिंदी), टीका भाई (नेपाली), भारती सदरंगानी (सिंधी), सलमा (तमिऴ), याकूब (तेलुगु) और अजय पांडे (उर्दू)। उन्होंने मूल भाषाओं में लिखित अपनी कविताओं के साथ-साथ उनके अनूदित रूपांतरण भी पढ़े। छठे सत्र का विषय ''अनुवाद : संस्कृतियों का एकीकरण'' था, जिसकी अध्यक्षता एच.एस. शिवप्रकाश ने की। प्रतिभागी थे—प्रदीप आचार्य, शुभ्रो बंद्योपाध्याय, संतोष एलेक्स, विनीत शुक्ला और मालचंद तिवारी। सातवें सत्र में ''लेखन : शौक या व्यवसाय'' पर चर्चा हुई। एस्थर डेविड ने इसकी अध्यक्षता की और इस सत्र के वक्ता थे—एन. किरन कुमार, हरि भटनागर, छाया महाजन, देवीप्रिया और विक्रम संपत। आठवाँ सत्र कहानी-पाठ था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. नागेन सईकिया ने की। प्रतिभागी थे—मणिका देवी (असमिया), पन्ना त्रिवेदी (गुजराती), सिमरन धालीवान (पंजाब) और कुप्पीली पदमा (तेलुगु)। नौवां और अंतिम सत्र था—कवि सम्मिलन, जिसमें शफ़ी शौक ने अध्यक्षता की। प्रतिभागी थे—विजय शंकर बर्मन (असमिया), रत्नेश्वर बसुमतारी (बोडो), अग्निशेखर (हिंदी), हारिस राशीद (कश्मीरी), अरुणाभ सौरभ (मैथिली), एन. विद्यासागर सिंह (मणिपुरी), चंद्रभूषण झा (संस्कृत) मानसिंह माझी (संताली), अझगियासिंगर (तमिऴ) और वासिफ यार (उर्दू)।

नामदेव उत्सव

9-10 मई 2017, मुंबई

महान संत नामदेव पर नामदेव उत्सव का आयोजन 9-10 मई 2017 को मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय, दादर, मुंबई के सुरेंद्र गावस्कर हॉल में आयोजित किया गया, जिसमें भारत के विभिन्न भागों से विद्वानों और विचारकों को संत नामदेव के धार्मिक आंदोलन पर विचार व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया गया। आरंभ में कृष्णा किम्बाहुने ने आमंत्रित अतिथि लेखकों का स्वागत किया। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पूरे भारत में संत उत्सव मनाने की अनिवार्यता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि संत नामदेव और संत ज्ञानेश्वर ने महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के विकास में अग्रणी भूमिका निभाई है।

मराठी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. भालचंद्र नेमाड़े ने आरंभिक भाषण में बताया कि संत नामदेव आधुनिक भारत में संत कवियों के पथ प्रदर्शक रहे। उन्होंने नाथ संप्रदाय की परंपरा आधुनिक युग तक पहुँचाई, इस तरह संस्कृति ओर मूल्यों को जीवित रखने में मदद की। प्रसिद्ध पंजाबी साहित्यकार श्री मनजीत सिंह ने बीज भाषण दिया। उन्होंने राष्ट्रीय एकता में संत नामदेव की सीख को एक मील का पत्थर बताया। प्रथम सत्र ''संत नामदेव के युग में सामाजिक यथार्थ और भक्ति परंपरा'' पर था, जिसकी अध्यक्षता त्रिभुवननाथ राय ने की। इस सत्र में रोहिणी मोकाशी पुनेकर और एकनाथ पागर ने आलेख पढ़े।

दूसरा सत्र ''संत नामदेव और उनके समकालीन संत कवियों'' पर था इस सत्र के अध्यक्ष प्रो. भालचंद्र नेमाड़े थे और गोविंद भालेराव (मराठी), रंजु बाला (पंजाबी), राजेश पंड्या (गुजराती) तथा त्रिभुवननाथ राय (हिंदी) ने आलेख पढ़े।

तीसरे सत्र में पंजाब के विद्वानों को आमंत्रित किया गया था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. रवैल सिंह ने की। यह सत्र गुरु ग्रंथ साहिब और संत नामदेव को समर्पित था।

यह उत्सव 10 मई 2017 तक चला। चौथा सत्र ''हिंदी कविता में संत नामदेव'' को समर्पित था। रामजी तिवारी ने सत्र की अध्यक्षता की, जबकि उदयप्रताप सिंह और करुणाशंकर उपाध्याय ने आलेख प्रस्तुत किए।

पाँचवें सत्र की अध्यक्षता रोहिणी मोकाशी पुमेकर ने की। यह सत्र ''संत नामदेव की कविता : आध्यात्मिक, भक्तिपरक अथवा दर्शन'' पर था। विलास खोले और विद्यासागर पंतगकर ने अपने आलेख पढ़े।

छठे और अंतिम सत्र के अध्यक्ष थे वसंत पाटेकर तथा अरुणा धेरे ने ''संत नामदेव के काव्य के विविध रूपों की महत्ता'' पर विचार व्यक्त किए। उत्सव का अंतिम सत्र संत नामदेव के प्रति श्रद्धाजलि माना जा सकता है, जिसमें एच.बी.पी. भारतबुवा महाराज नसीराबादकर और उनके समूह ने कीर्तन के माध्यम से संत नामदेव को नमन किया। प्रो. भालचंद्र नेमाड़े ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

आविष्कार : असमिया गीत साहित्य की स्वर्णिम यात्रा

9 जून 2017, नगाँव, असम

साहित्य अकादेमी ने सांस्कृतिक गोष्ठी कल्लोल के साथ मिलकर 'असमिया गीत साहित्य की स्वर्णिम यात्रा' पर आविष्कार कार्यक्रम का आयोजन नगाँव, असम में 9 जून 2017 को किया। साहित्य अकादेमी की ओर से डॉ. मिहिर कुमार साहू ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया। प्रो. करबी डेका हाज़रिका ने कार्यक्रम का संचालन किया। उन्होंने संगीत में भक्ति और मानवी जीवन पर संगीतात्मकता के प्रभाव पर बात की। शंकर देव पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि वो किस प्रकार ब्रजभाषा (उत्तर भारतीय भाषा) में गीतों और नाटकों की रचना करते थे। माधवदेव पर बोलते हुए उन्होंने बताया कि वो गुरु से ज़्यादा कवि थे और न केवल उनके गीत बल्कि नामघोष को भी गीत की तरह गा सकते हैं। अनिरुद्धदेव का संगीत भी गाया। लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ के आने के बाद बहुत से गीत लिखे गए, जिन्हें 'बैजी गीत' और 'डाकुवाल गीत' समूहों में बांटा जा सकता है। अंबिकागिरि राय चौधरी के 'अजी बंदूकीचोंदे' से लेकर मित्रदेव महंत के ''चिर स्नेही मोर भाक्षा जननी'' तक एक पूर्ण यात्रा पूरी

हुई। उसके बाद कमलानंद भट्टाचार्य से ज्योति प्रसाद अग्रवाल से पार्वती प्रसाद बरुआ, रूद्र बरुआ, केशव महंत, निर्मल प्रभा बरदलै, नवकांत बरुआ और अंततः डॉ. भूपेन हाज़रिका की रचनाएँ आईं।

श्रद्धांजलि : अशोक मित्रन

23 जून 2017, चेन्नै

साहित्य अकादेमी के उपकार्यालय चेन्नै में कहानीकार अशोक मित्रन के निधन पर शोक सभा का आयोजन 23 जून 2017 को किया गया। ए.एस. इलंगोवन, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी ने अशोक मित्रन को अपना मित्र, दार्शनिक एवं समय-समय पर साहित्य अकादेमी को समुचित दिशा निर्देश देने वाला बताया। ए.एस. इलांगोवन ने कहा कि अशोक मित्रन जी तमिळ एवं अन्य भारतीय भाषाओं के बीच अकादेमी के लिए सेतु का काम करते थे। वे अकादेमी पुरस्कार प्राप्त बहुभाषाविद् तथा अनुवादक थे। एस.ए. कंदास्वामी, साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त साहित्यकार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने अशोक मित्रन के लेखन की प्रशंसा के साथ ही उनके व्यक्तित्व और कलाकार रूप की विशेषताओं को रेखांकित किया। उनके उपन्यासों में जैसे *यानवीर, अप्पावीन सेनीयर, अथाकचदु* में चेन्नै एवं तमिलनाडु के मध्यवर्गीय जीवन के विभिन्न चित्र उकेरे गए हैं। अमशान कुमार ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उनके लेखन में मानवीय दृष्टिकोण है और उन्होंने तमिळ कथाओं को अंतराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाया है।

अमशान कुमार ने कहा कि अशोक मित्रन काफ़ी सहयोगी स्वभाव के थे, ख़ासकर तब जब उन पर वृत्तचित्र बनाया जा रहा था। अळगीया सिंगर ने कहा कि उनकी लघु कहानियों जैसे—'रिक्शा', 'विमोचनम' और 'अर्था' में उनकी बातचीत, बैठकें, मित्रता, प्रशासनिक भावनाएँ आदि प्रदर्शित होती हैं। आत्मसुख एवं ज्ञान के लिए अशोक मित्रन को और अधिक पढ़ने की ज़रूरत है। अशोक मित्रन पर बने वृत्तचित्र दिखाया। श्रीमती अशोक मित्रन और उनके पुत्र श्री रामकृष्णन और श्री रवि मुथुकुमारन भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने एक पति के रूप में और एक पिता के रूप में अपने अनुभव साझा किए।

ग्रामालोक : कन्नड में बाल साहित्य

28 जून 2017, श्रीवारा

साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय ने ज्ञान गंगोत्री शिक्षण संस्था के साथ 'ग्रामालोक' कार्यक्रम 'कन्नड में बाल साहित्य' विषय पर 28 जून 2017 को श्रीवारा ग्राम में आयोजित किया। मांटेसरी स्कूल की प्रधानाचार्या सुश्री मानवी ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया।

प्रख्यात बाल साहित्यकार श्री चंद्रकांत कारदल्ली ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने बच्चों के आरंभिक जीवन में ही उच्च जीवन मूल्यों को स्थापित करने पर बल दिया। उन्होंने भविष्य की पीढ़ियों के लिए पुस्तकालय बनवाने के लिए ग्राम के प्रतिष्ठित अधिकारियों और लोगों से अपील की। प्रख्यात शिक्षाशास्त्री नीलकांतप्पा मुख्य अतिथि थे और उन्होंने ग्राम स्तर पर शिक्षा में सुधार के बिंदुओं पर प्रकाश डाला। सत्र की अध्यक्षता गुरुनाथ रेड्डी ने की। सारजशकर हरलीनाथ और के. शिवलिंगप्पा हांदिहालू ने क्रमशः 'आधुनिक

समय में बाल साहित्य' तथा 'बाल साहित्य का अनुवाद' विषय पर वक्तव्य दिए। समापन सत्र में प्रख्यात लेखक चिदानंद सालि ने समापन वक्तव्य दिया। श्री वेंकोबा कोटनेकल मुख्य अतिथि थे। श्रीमती विजयलक्ष्मी ने सत्र की अध्यक्षता थी। श्री सालि ने अभिभावकों से अनुरोध किया कि वे बच्चों को अपने अनुभवों को साझा करने का अवसर अवश्य प्रदान करें।

सी. नारायण रेड्डी को श्रद्धांजलि

12 जुलाई 2017, हैदराबाद

प्रख्यात तेलुगु कवि सी. नारायण रेड्डी की श्रद्धांजलि सभा का आयोजन 12 जुलाई 2017 को हैदराबाद में किया गया। आरंभिक वक्तव्य में एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रख्यात साहित्यकार के निधन पर दुख व्यक्त किया और तेलुगु साहित्य के क्षेत्र में उनकी महान उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

साहित्य अकादेमी की तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने कवि को कवियों-लेखकों नंदिनी सिद्ध रेड्डी, एस.वी. सत्यनारायण, सी. मृणालिनी, अम्मांगी वेणुगोपाल, श्रीला वेराज्जू, देवीप्रिया, मामिदी हरिकृष्ण, देशपति श्रीनिवास, तिरूमाला श्रीनिवासाचार्य, आर. वासुनंदन और पथिपका मोहन ने सी. नारायण रेड्डी को श्रद्ध ांजलि दी। जबकि कुछ वक्ताओं ने कवि के साथ अपने व्यक्तिगत संबंधों से जुड़ी यादें साझा की, तो कुछ ने एक मनुष्य और एक कवि के रूप में कवि की बहुमुखी प्रकृति पर बात की। जिस दृढ़ता के साथ नारायण रेड्डी उच्च पदों पर रहे और उन्हें संभाला, इस पर भी कुछ लेखकों ने चर्चा की। कुछ वक्ताओं ने नारायण रेड्डी द्वारा उभरते कवियों को कविता लिखने हेतु प्रोत्साहित व आग्रह करने के तथ्य पर भी बात की। एस.पी. महालिंगेश्वर और डॉ. एन. गोपी ने समापन वक्तव्य दिया।

अखिल भारतीय संताली काव्य उत्सव

11-12 अगस्त 2017, आंध्रप्रदेश

विशाखापटनम, आंध्रप्रदेश में 11-12 अगस्त 2017 को एक अखिल भारतीय संताली काव्य उत्सव का आयोजन किया गया। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक रूप से आगंतुकों का स्वागत किया और अकादेमी द्वारा संताली व अन्य जनजातीय भाषाओं के प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयासों पर बात की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अर्जुन चरण हेंब्रह्म ने संताली कविता की यात्रा पर प्रकाश डाला। श्री मदन मोहन सोरेन ने बीज भाषण दिया, जबकि साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उद्घाटन सत्र में श्री रघुनाथ हेंब्रह्म, श्रीमती जोबा मुर्मु, श्री आदित्य मांडी और श्री रामचंद्र टुडु ने अपनी कविताएँ गाईं। डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम का संचालन किया और औपचारिक रूप से धन्यवाद प्रकट किया। दो काव्य-पाठ सत्र भी हुए, जिसमें महिलाओं और युवा कवियों को कविता पाठ के लिए आमंत्रित किया गया। विशिष्ट संताली कवि और आलोचक डॉ. दमयंती बेसरा की अध्यक्षता में, श्रीमती शोभा हांसदा, श्रीमती मैना टुडु, श्रीमती सुमित्रा मरांडी, श्रीमती यशोदा मुर्मु, सुश्री सोनाली हांसदा और श्रीमती सुशीला मारडी ने अपनी कविताएँ पढ़ीं। युवा कवियों के कविता सत्र की अध्यक्षता श्री परिमल हांसदा ने की, जिसमें सर्वश्री दुर्गाचरण मुर्मु, हजाम बास्के, मिथुन टुडु और अनिल माझी ने कविताएँ पढ़ीं।

राजभाषा सप्ताह

14-21 सितंबर 2017, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 14 से 21 सितंबर 2017 तक नई दिल्ली में आयोजित राजभाषा सप्ताह में प्रख्यात लेखक और भाषाविद् श्री प्रेमलाल शर्मा को सप्ताह के उद्घाटन हेतु आमंत्रित किया गया। अपने भाषण में भारतीय भाषाओं के लिए रोष प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाएँ रोज़गार देने में असफल रही हैं। उन्होंने कर्मचारी चयन आयोग और लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं की उपेक्षा के कारण भुगत रहे छात्रों की वकालत की। प्रेमलाल जी का मानना है कि हम धारा 343 के भरोसे नहीं रह सकते। हमें संयुक्त प्रयासों से हिंदी और भारतीय भाषाओं को आगे लाने की ज़रूरत है। उन्होंने भारतीय भाषाओं के उन्नयन हेतु साहित्य अकादेमी के प्रयासों की प्रशंसा की। सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पुस्तक भेंट करके प्रेमपाल जी का स्वागत किया। सचिव ने कहा कि सरकारी कर्मचारियों को अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन देवेंद्र कुमार देवेश ने किया। अंत में उपसचिव रेणु मोहन भान ने मुख्य अतिथि तथा स्टाफ़ कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

15 दिसंबर 2017 को बाल भारती स्कूल, नोएडा के चौथी कक्षा के छात्रों ने अकादेमी के पुस्तकालय का दौरा किया और हिंदी भाषा और साहित्य कार्यशाला में भाग लिया। डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश और श्री अनुपम तिवारी ने बच्चों को संबोधित किया और हिंदी के विकास और भाषा के विभिन्न लेखकों के बारे में बताया तथा बच्चों के प्रश्नों के उत्तर दिए। प्रसिद्ध हिंदी कवि रामधारी सिंह दिनकर पर एक फ़िल्म भी बच्चों को दिखाई गई।

राजभाषा सप्ताह के दौरान पाँच प्रतियोगिताएँ—यूनीकोड टाईपिंग, श्रुतलेख, आशुभाषण, अनुवाद और निबंध लेखन का आयोजन किया गया। आशुभाषण प्रतियोगिता के निर्णायक संस्कृति मंत्रालय के निदेशक श्री वेद प्रकाश गौड़ थे। 20 सितंबर 2017 को एक हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें स्टाफ के 30 सदस्यों ने भाग लिया। एयर इंडिया के सेवानिवृत उप महाप्रबंधक डॉ. आर.पी. जोशी को विशेषज्ञ के तौर पर आमंत्रित किया गया था।

राजभाषा सप्ताह का समापन 21 सितंबर 2017 को किया गया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी और प्रसिद्ध डोगरी कवयित्री श्रीमती पद्मा सचदेव उपस्थित थे। बाङ्ला कवि सुबोध सरकार भी इस अवसर पर उपस्थित थे। श्रीमती पद्मा सचदेव ने प्रतियोगिता विजेताओं को पुरस्कार दिए। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी की राजभाष पत्रिका 'आलोक' का विमोचन किया गया। स्वागत भाषण में सचिव ने कहा कि एक दिन देश को हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकारना पड़ेगा। अध्यक्ष, प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा ''अंग्रेज़ी भारत में व्यवसाय की भाषा के रूप में विकसित हुई। अब हमें हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करना चाहिए।'' श्री अनुपम तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

राजभाषा मंच

15 सितंबर 2017, नई दिल्ली

हिंदी सप्ताह (14 से 21 सितंबर 2017) के दौरान साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित डॉ. रामनिरंजन परिमलेंदु की पुस्तक ''देवनागरी लिपि आंदोलन का इतिहास'' का विमोचन आई.सी.एस.एस.आर. के अध्यक्ष और प्रख्यात भाषा

विज्ञानी, समाजशास्त्री, विचारक डॉ. बी.बी. कुमार द्वारा किया गया। सत्र के आरंभ में डॉ. परिमलेंदु ने अपनी पुस्तक का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि ''यह पुस्तक मेरे जीवन की उपलब्धि है। मैंने 30-35 वर्ष के परिश्रम के बाद इसे लिखा है।'' अपने संक्षिप्त भाषण में उन्होंने देवनागरी लिपि आंदोलन पर काफ़ी जानकारी दी। डॉ. बी.बी कुमार ने बताया कि देवनागरी लिपि से उनका गहरा संबंध है। किसी भी लिपि से दूर रहना अर्थात् उसके समृद्ध साहित्य से दूर रहना है। देवनागरी सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपियों में से एक है। उन्होंने आगे बताया कि देवनागरी लिपि ब्राह्मी लिपि से संबंधित है। चीन एवं जापान का प्राचीन साहित्य ब्राह्मी में है। अंत में डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने धन्यवाद ज्ञापन देते हुए कहा कि देवनागरी कश्मीर से कन्याकुमारी तक का साहित्य समझने में सहायक हो सकती है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

इज़राइल में भारतोत्सव

5-10 नवंबर 2017, तेलअवीव और येरुशलम

भारतीय स्वतंत्रता की 70वीं वर्षगाँठ और भारत व इज़राइल के मध्य राजनयिक संबंधों की 25वीं वर्षगाँठ के अवसर पर इज़राइल में आयोजित भारत उत्सव में प्रतिभागिता के लिए भारतीय लेखकों का एक प्रतिनिधिमंडल इज़राइल भेजा गया, जिसमें श्रीमती एस्थर डेविड, प्रो. जतिंद्र नायक, श्रीमती शीला रोहेकर, श्री पॉल जक़ारिया, प्रो. मार्गरेट जमा और डॉ. के. श्रीनिवासराव शामिल थे।

5 नवंबर 2017 को तेलअवीव हवाई अड्डे पर हिब्रू राइटर्स एसोसिएशन के निदेशक श्री मीर कूजियल और भारतीय दूतावास के कर्मचारी ने प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया। 5 नवंबर को ही आयोजित रात्रिभोज में इज़राइली लेखकों ने भारतीय साहित्यिक प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों के साथ संवाद किया। अगले दिन प्रतिनिधिमंडल ने इज़राइल के राष्ट्रीय कवि हायिम नाहमैन बियालिक का घर देखा जिन्होंने हिब्रू भाषा के पुररुद्धार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहाँ प्रतिनिधिमंडल को इज़राइल के महान उपन्यासकार ए.बी. येहोशना से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। हिब्रू राइटर्स एसोसिएशन के परिसर में हुई बैठक में इज़राइल में भारत के राजदूत श्री पवन कपूर ने प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया और आशा जताई कि इससे भारत एवं इज़राइल के रिश्ते मज़बूत होंगे। अपनी प्रस्तुति देते हुए भारतीय लेखकों ने भारत के साथ यहूदियों के निकट संबंधों पर चर्चा की और यह भी बताया कि किस प्रकार इज़राइल भारत का स्वागत स्नेह एवं आदर के साथ करता है। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने दोनों देशों के लेखकों को इकट्ठा एक मंच पर लाने के लिए इज़राइली मेजबानों और इज़राइल में भारतीय दूतावास के कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। अगले दिन भारतीय प्रतिनिधिमंडल येरुसलम गया, जहाँ उन्होंने हॉलोकास्ट संग्रहालय देखा। बाद में, उन्होंने इज़राइली विदेश कार्यालय के कर्मचारियों, श्री यूसूफ लेवी, प्रमुख, अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध ओर श्री यारोन मीर, प्रमुख, दक्षिण-पूर्व एशिया और इज़राइली लेखकों के साथ वार्ता की। 8 नवंबर 2017 को हिब्रू राइटर्स एसोसिएशन के कार्यालय में, भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों को अपनी कृतियों एवं साहित्यिक कार्यक्रमों के बारे में बात करने के लिए आमंत्रित किया गया। बैठक में उपस्थित इज़राइली लेखकों ने अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम का संयोजन कवि, संपादक और साहित्यिक व्याख्याता सुश्री हवा निहासकोहेन ने किया। शाम को कई प्रसिद्ध इज़राइली लेखकों को हिब्रू राइटर्स एसोसिएशन के कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया जहाँ भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने कुछ इज़राइली शोधार्थियों, लेखकों और

डिप्टी चीफ ऑफ़ मिशन डॉ. अंजू कुमार से रात्रिभोज पर भेंट की। 10 नवंबर को हिब्रू राइटर्स एसोसिएशन के कार्यालय-धारकों ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का विदाई समारोह आयोजित किया।

युवा लेखकों के लिए दो दिवसीय कार्यशाला

5-6 दिसंबर 2017, चेन्नै

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै तथा तमिलनाडु मुक्त विश्वविद्यालय, चेन्नै के संयुक्त तत्त्वावधान में युवा लेखकों के लिए दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 5-6 दिसंबर 2017 को विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। इस कार्यशाला में तमिलनाडु के अनेक क्षेत्रों से लगभग 30 युवा लेखकों ने सहभागिता की। डॉ. आर. कामरासु, प्रख्यात लेखक तथा विद्वान के साथ प्रो. भारती बालन ने कार्यशाला का संयोजन किया। श्री ए.एस. इलांगोवन, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नै ने काव्यात्मक न्याय और काव्यात्मक अनुज्ञप्ति के सिद्धांत को समझाया तथा लेखकों को वास्तविकता को अपनाने और कलात्मक क्षमताओं को आदर्श साहित्यिक रूप में बदलने की सलाह दी। डॉ. एम. भास्करन, कुलपति, टी.एन.ओ.यू. ने बताया कि यह कार्यशाला कथा लेखकों को उत्कृष्ट कला और शिल्प को निखारकर सफल कथाकार बनने में मददगार साबित होगी। डॉ. वी. इराईयान, आई.ए.एस. ने विशिष्ट व्याख्यान देते हुए कहा कि युवा लेखक को अपने पेशे और जीवन को प्रदीप्त करने के लिए दृढ़ता की बहुत आवश्यकता होती है।

डॉ. आर. कामरासु ने साहित्य अकादेमी के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह कार्यशाला लेखन में यथार्थवाद को प्रोत्साहित करेगी तथा मानवतावादी चेतना विकसित करेगी। डॉ. विजयन, कुल सचिव, टी.एन. ओ. यू. ने जयकांतन को उद्धृत कर उपन्यास लेखन के लक्ष्य के बारे में बताया। साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत श्री सा. कंदासामी, वरिष्ठ लेखक श्री एस. रामकृष्णन, कथा विशेषज्ञ तथा मीडियाकर्मी मालन, पत्रकार एवं संपादकीय विशेषज्ञ श्री वेंकटेश तथा प्रख्यात विद्वान प्रोफ़ेसर के. नाचिमुथु ने वक्तव्य दिए, युवा लेखकों के साथ बातचीत की तथा अपने कुशल प्रशिक्षण से उनकी प्रतिभा को आकार दिया।

वीरापांडियन, अधिरमन, जयप्रकाश, कन्निकोविल राजा, मानुषी, गुणसुंदरी, मारिया लीमा, सी.आर. मंजुला, तमिष़मति, गिरिता, अनिता परमशिवम जैसे युवा लेखकों ने सक्रिय रूप से कार्यशाला में सहभागिता की और कथा लेखन और प्रकाशन में अपने अनुभव को साझा किया।

संगोष्ठी और कार्यशाला

27-28 मार्च 2018, हरियाणा

अमिटी यूनिवर्सिटी, हरियाणा के सहयोग से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला का आयोजन 27-28 मार्च 2018 को अमिटी यूनिवर्सिटी परिसर, हरियाणा में किया गया, जिसका विषय था ''विरासत भाषाओं और संस्कृति का पुनरुद्धार एन.ई.आर. के विशेष संदर्भ सहित।'' जिन वक्ताओं ने संगोष्ठी में आलेख पढ़े, वो थे प्रो. के.वी. सुब्बाराव,

श्री मैरबा तखलमबम, प्रो. मधुमिता बरबोरा, प्रो. सबरी मित्र, डॉ. तारिक ख़ान, डॉ. श्रीपर्णादास, डॉ. वरुण बक्शी, डॉ. सुजय सरकार, श्री लाडली मुखोपाध्याय, सुश्री स्वाति चक्रवर्ती, डॉ. ईशा जैंती, प्रो. उदय नारायण सिंह, डॉ. काकोली दे, डॉ. राजर्षि सिंह, डॉ. सुनील कुमार मिश्र लेपचा। सत्र की अध्यक्षता प्रो. शैलेंद्र कुमार सिंह, डॉ. एच. के. झा, प्रो. राजीव मिश्र, प्रो. किरन देवेंद्र और प्रो. इशा जयंती ने की। अमिटी स्कूल ऑफ़ लैंग्वेज के डॉ. शुभ्र पारूई ने धन्यवाद दिया। अमिटी यूनिवर्सिटी, हरियाणा के कुलपति प्रो. पी.बी. शर्मा और निदेशक प्रो. संजय के. झा भी संगोष्ठी का हिस्सा थे।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर परिसंवाद एवं कवयित्री सम्मिलन

8 मार्च 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च 2018 को नई दिल्ली में परिसंवाद एवं कवयित्री सम्मिलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात हिंदी लेखिका डॉ. नासिरा शर्मा ने दिया। उन्होंने कहा कि महिला लेखन केवल महिलाओं द्वारा न हो बल्कि उसमें सभी की भागीदारी होनी चाहिए। हमें नई पीढ़ी तक जो भी विचार पहुँचाने हैं उनमें एक संतुलन और संजीदगी होनी चाहिए। हमें ऐसे साहित्य की रचना करनी होगी जिसमें केवल 'स्त्री-विमर्श' के नाम पर पैदा किए जा रहे संघर्ष ही शामिल न हों बल्कि जीवन के सभी संघर्ष शामिल हों।

बीज वक्तव्य देते हुए प्रख्यात कन्नड लेखिका प्रो. कृष्णा मनवल्ली ने भूमंडलीकरण में महिलाओं की स्थिति पर अपने विचार रखे। इससे पहले साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी द्वारा महिला लेखन के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि महिलाएँ घर के साथ-साथ देश की भी रीढ़ हैं अतः उनका हर स्तर पर सम्मान किया जाना आवश्यक है। स्थितियाँ बदली ज़रूर हैं, किंतु अभी और भी आगे जाना है।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात गुजराती लेखिका श्रीमती वर्षा अडालजा ने की और अरूपा पतंगिया कलिता (असमिया), साम्राज्ञी बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), कुमुद शर्मा (हिंदी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अपराह्न के सत्र में श्रीमती के. आर. मीरा की अध्यक्षता में हेमा नायक (कोंकणी), गायत्रीबाला पंडा (ओड़िया), प्रतिभा (पंजाबी) एवं सिंधु मिश्रा (सिंधी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इसके बाद श्रीमती ममता कालिया की अध्यक्षता में काव्य-पाठ सत्र आयोजित हुआ, जिसमें धीर्ज्यू ज्योति बसुमतारी (बोडो), उषा किरण 'किरण' (डोगरी), नीतू (अंग्रेज़ी), रुख़साना जबीं (कश्मीरी), रानी झा (मैथिली), लिंथोई निङ्थेउजम (मणिपुरी), सुमति लांडे (मराठी), सुभद्रा बोम्ज़ोन (नेपाली), शारदा कृष्णा (राजस्थानी), रीता त्रिवेदी (संस्कृत), सुमित्रा सोरेन (संताली), शक्ति ज्योति (तमिऴ), मंदारपु हेमावती (तेलुगु) तथा शहनाज़ नबी (उर्दू) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

साहित्य अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणु मोहन भान ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

स्थापना दिवस व्याख्यान

12 मार्च 2018, नई दिल्ली

डॉ. कर्ण सिंह द्वारा स्थापना दिवस व्याख्यान

साहित्य अकादेमी के 64वें स्थापना दिवस पर अपना व्याख्यान देते हुए प्रसिद्ध शिक्षाविद्, लेखक, विचारक एवं राजनीतिज्ञ डॉ. कर्ण सिंह ने कहा कि ये दुनिया ज्ञान, कर्म, सहजीवन और आत्म योग से बची रह पाएगी। उन्होंने 'ज्ञान के चार स्तंभ' विषयक अपने व्याख्यान में कहा कि ज्ञान यानी शिक्षा व्यवस्था, जो कि हमारी परंपरा में संवाद के आधार पर स्थापित थी, आज संवादहीन हो गई है। उन्होंने वेद, उपनिषद्, गीता, बौद्ध एवं जैन ग्रंथों के उदाहरण देकर बताया कि हमारी शिक्षा हमेशा से संवाद की बुनियाद पर केंद्रित रही है। लेकिन इधर यह परंपरा ख़त्म-सी होती जा रही है और यह पूरी तरह से अंक पाने या खास तरह की नौकरियाँ पाने का साधनमात्र बनकर रह गई हैं। ज्ञान के दूसरे स्तंभ यानी कर्मयोग के बारे में स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि हमारा काम के प्रति एक सार्थक नज़रिया होना चाहिए; तथा हमें किसी भी काम को छोटा नहीं समझना चाहिए। हर काम अपनी जगह सार्थक और आवश्यक है। ज्ञान के तीसरे स्तंभ के रूप में उन्होंने सहजीवन को रेखांकित किया। उन्होंने भारत की वैविध्यपूर्ण सभ्यता-संस्कृति को संदर्भित करते हुए कहा कि यही भारत की पहचान और ताक़त है। उन्होंने सहजीवन के लिए पाँच प्रमुख मूल्यों पर बात की—पारिवारिक, सामाजिक, अंतर्फलकीय, पारिस्थितिकीय एवं भूमंडलीय। ज्ञान के चौथे स्तंभ के रूप में उन्होंने आत्मयोग की चर्चा करते हुए कहा कि स्वयं पर विश्वास विकास का प्रमुख चरण है और सभी महत्त्वपूर्ण धर्मों में इस पर व्यापक विमर्श हुआ है। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने श्रोताओं की जिज्ञासाओं के समुचित समाधान भी प्रस्तुत किए। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि 'सेकुलर' शब्द को अनेक तरह से परिभाषित किया गया है, लेकिन भारतीय दर्शन की परंपरा में इसकी परिभाषा 'सर्वधर्मसमभाव' ही है। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए डॉ. कर्ण सिंह का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया तथा साहित्य अकादेमी की गतिविधियों एवं उपलब्धियों को रेखांकित किया। साहित्य अकादेमी को लेखकों का घर बताते हुए उन्होंने कहा कि लेखकों के व्यापक एवं सशक्त सहयोग के कारण ही अकादेमी निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

मेरे लिए स्वतंत्रता का अर्थ पर परिसंवाद

15 अगस्त 2017, नई दिल्ली

भारतीय स्वतंत्रता की 70वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में साहित्य अकादेमी ने कार्यक्रम 'मेरे लिए स्वतंत्रता का अर्थ' का आयोजन 15 अगस्त 2017 को अकादेमी परिसर, नई दिल्ली में किया। प्रसिद्ध विद्वान एवं लेखक चित्रा मुद्गल, अभय कुमार दुबे, अनंत विजय, असगर वजाहत, गीतांजलि श्री, केकी एन. दारूवाला, लीलाधर मंडलोई, मालन

दाएँ से बाएँ : असगर वजाहत, के. श्रीनिवासराव, चित्रा मुद्गल, गीतांजलि श्री तथा केकी एन. दारूवाला

वी. नारायणन, नलिनी, प्रयाग शुक्ल, शरण कुमार लिंबाले और शिवराज सिंह बेचैन ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और अपने अमूल्य विचार साझा किए।

सभी प्रतिभागियों ने डॉ. चंद्रकांत देवताले, प्रख्यात हिंदी कवि जिनका 14 अगस्त 2014 को निधन हुआ, के सम्मान में एक मिनट का मौन रखा। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि स्वतंत्रता का विचार एक लंबे समय से अस्तित्व में है। अभय कुमार दुबे ने बताया कि स्वतंत्रता का अर्थ है विचारों की स्वतंत्रता। अनंत विजय ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अपने विचार रखे साथ ही यह भी बताया कि हमारे राजनीतिक परिदृश्य में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से संबंधित समस्याओं पर अध्ययन नहीं हुआ है। असगर वजाहत ने ज़ोर दिया कि लेखकों को अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। गीतांजलि श्री ने बताया कि श्वास स्वतंत्रता है और यह स्वतंत्रता हमारा अधिकार है। जीवन का अभिन्न अंग है। समकालीन परिप्रेक्ष्य में बदलते गतिविज्ञान ने एक आलोचनात्मक स्थिति का निर्माण किया है कि हम स्वतंत्रता के बारे में सोचें। केकी एन. दारूवाला ने कहा कि स्वतंत्रता तार्किक स्थान व तार्किक समाज में जन्म ले रही है। हमें बहुत सहिष्णु बनने की ज़रूरत है। हमारे चारों ओर तार्किकता होनी चाहिए। लीलाधर मंडलोई ने देसी तरीक़ों के द्वारा स्वतंत्रता शिक्षण की प्रक्रिया पर बल दिया। उन्होंने आगे कहा कि भूख, ग़रीबी, असाक्षरता और असमानता से स्वतंत्र होने की ज़रूरत है। मालन वी. नारायणन ने कहा कि स्वतंत्रता के कई चेहरे हैं और प्रत्येक व्यक्ति के लिए इसका अलग मायना है। स्वतंत्रता अर्थात् एक व्यक्ति जो नहीं करना चाहता, उसे वही करने के लिए प्रयत्न करना होगा। प्रयाग शुक्ल ने कहा कि प्रकृति स्वयं ही सही स्वतंत्रता सिखाती है और जिन लोगों के पास सार्म्थय है उन्हीं से स्वतंत्रता को खतरा भी है। शरण कुमार लिंबाले ने कहा कि जीवन को समान स्तर से जीना स्वतंत्रता है। भाईचारा भी स्वतंत्रता का ही एक रूप है। शेरोज सिंह बेचैन ने माना कि सभी समुदायों के लिए सार्वभौमिक स्वतंत्रता महत्त्वपूर्ण है और हाशिए पर रह रहे लोगों की सामाजिक दशाओं पर बात करते हुए विकसित भारत के सृजन हेतु डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर के योगदान की चर्चा की।

श्रीमती चित्रा मुद्गल ने विभिन्न वक्ताओं द्वारा व्यक्त विचारों का सार प्रस्तुत किया और कहा कि समकालीन

परिदृश्य में स्वतंत्रता के प्रति असंतोष पैदा हुआ है। स्वतंत्रता का अर्थ चेतना के अनवरत विकसित रूप में रहना और दूसरों के विचारों का सम्मान करना है। इसके बाद एक संक्षिप्त संवादमूलक सत्र हुआ।

परिसंवाद : भारतीय साहित्य में योग

20 जून 2017, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 'भारतीय साहित्य में योग' विषयक राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन 20 जून 2017 को किया गया। परिसंवाद में भारतीय सभ्यता और साहित्य में योग दर्शन की 3000 ईसा पूर्व से उपस्थित परंपरा को रेखांकित किया गया। उद्घाटन व्याख्यान प्रख्यात लेखक एवं विद्वान प्रो. कपिल कपूर ने दिया। उन्होंने भारतीय परंपरा में योग के अर्थ में आए विभिन्न बदलावों को रेखांकित करते हुए कहा कि योग हमारे अहंकार विवेक तथा बुद्धि को परिमार्जित करता है और सभी तरह के बंधनों से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। उन्होंने योग की आधुनिक परिभाषा को भी व्याख्यायित किया। उन्होंने इस गहन विषय पर परिसंवाद आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद देते हुए कहा कि योग की महत्ता ने ही उसे अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान किया है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि उपयुक्त योग शिक्षा के लिए एक विशेष गुरु का होना ज़रूरी है। उन्होंने संत साहित्य में योग की प्रतिष्ठा बढ़ाने और उसका उपहास उड़ाए जाने के कई उदाहरण प्रस्तुत किए जो कि मुख्यत रत्नाकर, कबीर और दादू आदि के दोहों में नज़र आते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि संत साहित्य में योग की जगह भक्ति योग की महत्ता को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। उद्घाटन सत्र के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि भारत में योग की एक लंबी परंपरा है और उसका व्यापक असर हमारे सामान्य जनजीवन पर देखा जा सकता है। उन्होंने योग की विभिन्न शाखाओं की चर्चा करते हुए कहा कि सभी भारतीय भाषाओं में योग पर गंभीर और सामान्य दोनों तरह की जानकारी उपलब्ध है। अकादेमी ने इस परिसंवाद में योग के विभिन्न पक्षों पर अपनी बात रखने के लिए पूरे देश से विभिन्न भाषाओं के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया था, जिससे योग पर संपूर्ण भारतीय दृष्टिकोण को एक मंच प्रदान किया जा सके।

बाएँ-दाएँ : डॉ. के. श्रीनिवासराव, प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी तथा प्रो. कपिल कपूर

प्रथम सत्र में डॉ. विष्णुदत्त राकेश ने 'वैष्णव साहित्य में योग' विषय पर, श्री जे. श्रीनिवासमूर्ति ने 'संस्कृत काव्य एवं काव्यशास्त्र में योग' विषय पर, श्री वीरसागर जैन ने 'जैन एवं बौद्ध साहित्य में योग' विषय पर तथा श्री विजयपाल शास्त्री ने 'गोरखनाथ

के साहित्य में योग' विषय पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। 'संस्कृत काव्यशास्त्र में योग' के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए *मृच्छकटिकम्, बुद्धचरित, वाल्मीकि रामायण* के उदाहरण देते हुए योग की चर्चा की। श्री वीरसागर जैन ने 'श्रमण परंपरा में योग' विषय की जानकारी देते हुए जैन धर्म में योग की विभिन्न श्रेणियों की जानकारी दी और इसके मूल में ध्यान की प्राथमिकता को बताया।

द्वितीय सत्र में प्रो. एच.एस. शिवप्रकाश ने 'दक्षिण भारतीय साहित्य में योग' विषय पर, डॉ. जवाहर बक्षी ने 'पश्चिमी भारतीय साहित्य में योग' विषय पर, डॉ. जी.बी. हरीश ने 'तांत्रिक साहित्य में योग' विषय पर तथा 'डॉ. जगन्नाथ दास ने पूर्वी भारतीय साहित्य में योग' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

प्रकृति और साहित्य के मध्य अंतर्संबंध पर परिसंवाद

19 सितंबर 2017, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 19 सितंबर 2017 को नई दिल्ली में प्रकृति और साहित्य के मध्य अंतर्संबंध पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणु मोहन भान ने प्रतिभागियों व श्रोताओं का स्वागत किया। प्रख्यात हिंदी-मलयाळम्-संस्कृत विद्वान डॉ. सुधांशु चतुर्वेदी ने आरंभिक भाषण दिया। प्रख्यात लोक-कला विशेषज्ञ और विद्वान डॉ. विद्याबिंदु सिंह ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि भारतीय लोक साहित्य प्रकृति के बिना अधूरा है। उन्होंने अवधी से कई उदाहरण दिए जो कि प्रकृति और साहित्य के मध्य संबंध को पुष्ट करती है। वक्ता थे डॉ. पूरन चंद टंडन, श्रीमती दीप्ति त्रिपाठी, प्रो. सादिक और डॉ. अशोक कुमार ज्योति। डॉ. पूरन चंद टंडन ने हिंदी साहित्य में प्रकृति के विविध पक्षों पर बात की तो दीप्ति त्रिपाठी ने संस्कृत साहित्य पर चर्चा की सादिक ने उर्दू तो अशोक कुमार ज्योति ने सामाजिक सरोकारों के संबंध में प्रकृति के चित्रण की बात कही। प्रख्यात संस्कृत लेखक और विद्वान डॉ. रमाकांत शुक्ल कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने प्रकृति और स्वास्थ्य के संबंध पर चर्चा की। साहित्य अकादेमी के संपादक श्री अनुपम तिवारी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

वर्ष 2017-2018 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूची

अस्मिता

बाङ्ला लेखिकाएँ
24 अप्रैल 2017, कोलकाता

मणिपुरी लेखिकाएँ
27 अप्रैल 2017, इंफ़ाल

बोडो लेखिकाएँ
29 अप्रैल 2017, गुवाहाटी

ओड़िया लेखिकाएँ
14 मई 2017, भुवनेश्वर

असमिया लेखिकाएँ
7 अगस्त 2017, डिब्रूगढ़

कश्मीरी लेखिकाएँ
16 अक्तूबर 2017, अनंतनाग, जम्मू-कश्मीर

कश्मीरी लेखिकाएँ
2 नवंबर 2017, गुलमर्ग, जम्मू-कश्मीर

उर्दू लेखिकाएँ
17 नवंबर 2017, दिल्ली

विभिन्न भारतीय भाषाओं की लेखिकाएँ
10 जनवरी 2018, दिल्ली

आविष्कार

बनमाली महाराना तथा उनकी मंडली
14 मई 2017, पारादिप

सांस्कृतिक गोष्ठी कल्लोल
9 जून 2017, नगाँव

ब्रजमोहन एवं उनकी मंडली द्वारा दीनू भाई पंत के गीतों की प्रस्तुति
18 जून 2017, जम्मू

भूपेन हाज़रिका सेंटर के साथ गल्प नाट
8 अगस्त 2017, डिब्रूगढ़

अखिल भारतीय लेखक उत्सव में कविता-पाठ कार्यक्रम
23-24 दिसंबर 2017, चंडीगढ़

सम्मान

भाषा सम्मान
25 अप्रैल 2017, विजयवाड़ा
14 सितंबर 2017, मंगलौर
4 अक्तूबर 2017, पुणे
31 जनवरी 2018, दिल्ली

बाल साहित्य पुरस्कार
14 नवंबर 2017, विजयवाड़ा

युवा पुरस्कार
22 दिसंबर 2017, चंडीगढ़

अनुवाद पुरस्कार
28 दिसंबर 2017, अगरतला

साहित्य अकादेमी पुरस्कार
12 फ़रवरी 2018, दिल्ली

बाल साहिती

प्रख्यात बाल लेखकों के साथ समकालीन बाल साहित्य पर चर्चा
21 नवंबर 2017, दिल्ली

बाल साहित्य की वर्तमान चुनौतियाँ
13 जनवरी 2018, दिल्ली

भाषांतर अनुभव

बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम : मूल कविताओं के साथ विभिन्न भाषाओं में अनुवाद प्रस्तुति
11-12 मई 2017, भुवनेश्वर

पुस्तक चर्चा

चूड़ामणि पर लिखित विनिबंध पर के.ए. सच्चिदानंदन
24 अप्रैल 2017, चेन्नै

'एन एंथोलॉजी ऑफ़ इंडियन फ़ैंटेसी राइटिंग' पर मालाश्री लाल, कविता शर्मा, शमित बसु तथा दीपा अग्रवाल
01 मई 2017, दिल्ली

कोंगुवेलिर पर लिखित विनिबंध पर डॉ.एम.आर. अरासु
29 मई 2017, चेन्नै

द्रौपतियिन कथै पर श्री तिरुप्पुर कृष्णन
15 जून 2017, चेन्नै

सिरूवर कथै कलंजियम (बालकहानी संकलन) पर श्रीमती इदैइमरुथुर की. मंजुला
29 जून 2017, चेन्नै

आसीरवातातिन वन्नम (अकादेमी द्वारा पुरस्कृत असमिया उपन्यास का तमिऴ् अनुवाद) पर श्री सा. कंदासामी
6 जुलाई 2017, चेन्नै

कादिथा इलाक्कियम पत्र-संचयन पर डॉ. राम गुरुनाथन
13 जुलाई 2017, चेन्नै

थेरनथेदुथा संग इलाक्किया पादलगळ (संगम साहित्य से चयनित गीतों का संकलन) पर श्री बी. वीरमणि
20 जुलाई 2017, चेन्नै

भारतीय बाल साहित्य पर डॉ. प्रकाश मनु
24 अगस्त 2017, दिल्ली

मिथलाक लोक कथा संचय पर नरेश मोहन झा
2 सिंतबर 2017, सहरसा

थनिनायग अडिगलारिन तमिषि़यल पंगलिप्पु पर प्रो. एम. मुथुवेल
21 सिंतबर 2017, चेन्नै

के. अय्यप्प पणिक्कर : सिलेक्टिड एसेज़ तथा नटबर सामंतराय : ए रीडर पर के. सच्चिदानंदन, सुमन्यु सत्पथी, अनिमेष महापात्र एवं मालाश्री लाल
26 सितंबर 2017, दिल्ली

तेलुनगु नावलगळ सिरूकथैगळ (अकादेमी द्वारा पुरस्कृत तेलुगु पुस्तक का तमिऴ् अनुवाद) पर एम. संपत कुमार
26 अक्तूबर 2017, चेन्नै

साहित्य सिद्धांत विमर्श पर प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी
30 अक्तूबर 2017, दिल्ली

एन. सुब्बु रेड्डीयाररिम पनमुगम पर डॉ.एन. अवदैयप्पन
22 नवंबर 2017, चेन्नै

तमिषि़ग यप्पु मराबुप्पवलरगलिन पथ्थगुप्पु पर एस.एम. संगवै
21 दिसंबर 2017, चेन्नै

पहाड़ गाथा पर श्री प्रदीप पंत तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना रचना संचयन पर श्री विनोद तिवारी
8 जनवरी 2018, दिल्ली

कविता में दिल्ली पर श्री रामदरश मिश्र तथा पीतांबरदत्त बड़थ्वाल रचना संचयन पर श्री योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण'
12 जनवरी 2018, दिल्ली

वड्डराथनै कथै उलगम (कन्नड कहानियों का तमिऴ् अनुवाद)
29 जनवरी 2018, चेन्नै

पनमुग नोक्किल अयोतिदास पंडितर पर श्री पुलावर वी. प्रभाकरन
15 मार्च 2018, चेन्नै

सृजनात्मक लेखन कार्यशालाएँ

युवा सृजनात्मक लेखन
24-25 अप्रैल 2017, गोवा

क़िस्सा-ओ-क़लम : बोलती क़लम; बच्चों के लिए कार्यशाला
22-26 मई 2017, दिल्ली

किस प्रकार से बच्चों में बढ़ने की आदतें बढ़ाएँ
21-22 जून 2017, राजसमंद

कविता लेखन
14-16 नवंबर 2017, मधुबनी, बिहार

संस्कृत नाट्य लेखन कार्यशाला
26-28 नवंबर 2017, उज्जैन, मध्य प्रदेश

युवा लेखकों के लिए
5-6 दिसंबर 2017, चेन्नै

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

ब्राज़ील में आयोजित होने वाले भारतीय उत्सव में भाग लेने हेतु भारतीय लेखकों का प्रतिनिधिमंडल
4-10 सितंबर 2017

भारतीय उत्सव के अंतर्गत थाइलैंड में आयोजित 'दक्षिण-पूर्वी एशियाई भाषाओं पर संस्कृत और पाली का प्रभाव' विषयक संगोष्ठी में भाग लेने हेतु भारतीय लेखक प्रतिनिधिमंडल
23-27 सितंबर 2017

भारतीय लेखकों का प्रतिनिधिमंडल भारत की 70वीं स्वतंत्रता वर्षगाँठ उत्सव के अंतर्गत आयोजित संस्कृत गोल-मेज़ सम्मेलन में भाग लेने हेतु स्पेन गया
17-21 अक्तूबर 2017

भारतीय लेखकों का प्रतिनिधिमंडल भारतीय उत्सव के अंतर्गत भारतीय स्वतंत्रता की 70वीं वर्षगाँठ के अवसर पर इज़राइल गया
5-10 नवंबर 2017

रूसी लेखकों के प्रतिनिधिमंडल का भारत दौरा
30 जनवरी-11 फ़रवरी 2018

इज़राइली लेखकों के प्रतिनिधिमंडल का भारत दौरा
12-18 फ़रवरी-2018

वृत्तचित्र प्रदर्शन

तकषी शिवशंकर पिल्लै
15 जून 2017, चेन्नै

अशोकमित्रन
23 जून 2017, चेन्नै

इंदिरा गोस्वामी
6 जुलाई 2017, चेन्नै

डी. जयकांतन
13 जुलाई 2017, चेन्नै

इंदिरा पार्थसारथी
20 जुलाई 2017, चेन्नै

महाश्वेता देवी
8 मार्च 2018, बेंगळूरु

साहित्योत्सव
(12-19 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली)

साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी 2017 का उद्घाटन
12 फ़रवरी 2018, रवींद्र भवन परिसर, दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुरस्कार अर्पण
12 फ़रवरी 2018, कमानी सभागार, दिल्ली

लेखक सम्मिलन
13 फ़रवरी 2018, रवींद्र भवन परिसर, दिल्ली

भारतीय इज़राइली लेखक सम्मेलन
13 फ़रवरी 2018, अकादेमी सभागार, दिल्ली

एस.एल. भैरप्पा द्वारा संवत्सर व्याख्यान
13 फ़रवरी 2018, रवींद्र भवन परिसर, दिल्ली

वाचिक एवं जनजातीय साहित्य पर संगोष्ठी तथा आदिवासी कवि सम्मेलन
13-14 फ़रवरी 2018, रवींद्र भवन परिसर, दिल्ली

मीडिया और साहित्य पर परिसंवाद
14 फ़रवरी 2018, रवींद्र भवन परिसर, दिल्ली

आमने-सामने (वर्ष 2017 के चुनिंदा साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेताओं से बातचीत)
14 फ़रवरी 2018, रवींद्र भवन परिसर, दिल्ली

युवा साहिती : नई फ़सल
15 फ़रवरी 2018, रवींद्र भवन परिसर, दिल्ली

'भारत की स्वाधीनता के 70 वर्ष : साहित्य में चित्रण' विषयक त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
15-17 फ़रवरी 2018, अकादेमी सभागार, दिल्ली

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्वी और उत्तरी लेखक सम्मिलन
16 फ़रवरी 2018, रवींद्र भवन परिसर, दिल्ली

परिसंवाद : अनुवाद पुनर्कथन के रूप में
16 फ़रवरी 2018, रवींद्र भवन परिसर, दिल्ली

आओ कहानी बुनें (बच्चों के लिए कविता-कहानी लेखन प्रतियोगिता)
17 फ़रवरी 2018, रवींद्र भवन परिसर, दिल्ली

परिसंवाद : भारतीय साहित्य में प्रकाशकों की भूमिका
17 फ़रवरी 2018, रवींद्र भवन परिसर, दिल्ली

स्थापना दिवस

डॉ. कर्ण सिंह (प्रख्यात विद्वान एवं लेखक)
12 मार्च 2018, नई दिल्ली

इरोड तमिलनबन, कुषा, काथिरेसन तथा गौरी किरूबानंदन
12 मार्च 2018, चेन्नै

एच.एस. वेंकटेश मूर्ति (प्रख्यात कन्नड लेखक)
12 मार्च 2018, बेंगळूरु

पी.टी. नरसिम्हाचार पर वृत्तचित्र प्रदर्शन
12 मार्च 2018, बेंगळूरु

रामदास भटकल (मराठी विद्वान)
12 मार्च 2018, मुंबई

ग्रामालोक

मैथिली कवियों के साथ ग्राम बिस्फी, ज़िला मधुबनी, बिहार में आयोजित
27 मई 2017

संताली कवियों के साथ ग्राम नुवागाँव, ज़िला मयूरभंज, ओड़िशा में आयोजित
28 मई 2017

पंजाबी कवियों के साथ ग्राम समलसर, मोगा, पंजाब में आयोजित
30 मई 2017

डोगरी कवियों के साथ ग्राम रायपुर, ज़िला जम्मू, जम्मू-कश्मीर में आयोजित
16 जून 2017

मैथिली कवियों के साथ मैथिली साहित्य शोध संस्थान, धर्मपुर के सहयोग से ग्राम धर्मपुर, ज़िला दरभंगा, बिहार में आयोजित
24 जून 2017

संताली कवियों के साथ जाहेर थान कमिटी, जमशेदपुर के सहयोग से ग्राम ढालभूमगढ़, झारखंड में आयोजित
25 जून 2017

बाल साहित्य पर ज्ञानगंगोत्री एजुकेशन ट्रस्ट, श्रीवारा ग्राम के सहयोग से विद्यावाहिनी वस्ती शाले, श्रीवाड़ा ग्राम, मनवी तालुक, रायचूर ज़िला, कर्नाटक में आयोजित
28 जून 2017

श्री कमलेश्वर देव कला साहित्य संस्कृति परिषद् के सहयोग से ग्राम चारीचाक, ज़िला परिकुद, ओड़िशा में आयोजित
01 जुलाई 2017

ग्राम हैदरगढ़ बाराबंकी, उत्तर प्रदेश
03 जुलाई 2017

सिरोई सिर्जना, कांग्लातोंगबी के सहयोग से ग्राम कांग्लातोंगबी, ज़िला इंफ़ाल पश्चिम, मणिपुर में आयोजित
09 जुलाई 2017

ग्राम कंझारी, जालोन, उत्तर प्रदेश में आयोजित
19 जुलाई 2017

ग्राम जगमामापुर, जालोन, उत्तर प्रदेश में आयोजित
20 जुलाई 2017

भारतीय गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल के सहयोग से बहौर कम्यून, पांडिचेरी में आयोजित
24 जुलाई 2017

ग्राम गढ़ी, ज़िला उधमपुर, जम्मू-कश्मीर में मेरी मित्र मंडली के सहयोग आयोजित
28 जुलाई 2017

ग्राम बाबइ, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में उर्दू कविता-पाठ आयोजित
29 जुलाई 2017

प्रतिष्ठान महाविद्यालय के सहयोग से ग्राम एवं तहसील पैठान, ज़िला औरंगाबाद में आयोजित
30 जुलाई 2017

ग्राम महिषी, सहरसा, बिहार में मैथिली कवियों के साथ आयोजित
30 जुलाई 2017

ग्राम बारोमाइ, मयूरभंज, ओड़िशा में आयोजित
30 जुलाई 2017

पर्यावरण, अभिलेखों तथा कन्नड लोककला के प्रथम श्रेणी सरकारी कॉलेज के सहयोग से ग्राम डोड्डाबल्लापुर, बेंगळूरु ग्राम्य ज़िला में आयोजित
5 अगस्त 2017

ग्राम शाहपुर, ज़िला बुरहानपुर, मध्य प्रदेश में आयोजित
5 अगस्त 2017

श्री बी.के. पटेल आर्ट्स एंड श्रीमती एल.एम. पटेल कॉमर्स कॉलेज के सहयोग से ग्राम सवली, ज़िला वड़ोदरा में आयोजित
10 अग्रस्त 2017

ग्राम पेदाप्रोलु, ज़िला कृष्णा, आंध्र प्रदेश में बिहु गीत तथा असमिया नृत्य का प्रदर्शन
14 अगस्त 2017

मराठवाड़ा साहित्य परिषद् के सहयोग से ग्राम खुल्ताबाद, ज़िला औरंगाबाद, महाराष्ट्र में आयोजित
24 अगस्त 2017

ग्राम मल्लय्यानापुरा, ज़िला चमराजनगर, कर्नाटक, कथे केलु मागु-कथे हेलु मागु (कन्नड में बाल साहित्य)
14 सितंबर 2017

राष्ट्रीय महिला काव्य मंच के सहयोग से ग्राम राह सोल्युट, ज़िला राजौरी, जम्मू-कश्मीर में डोगरी कवि सम्मिलन आयोजित
23 सितंबर 2017

अज्जामपुरा जी. सूरी प्रतिष्ठान ट्रस्ट के सहयोग से ग्राम कलसपुर, चिक्कामंगलूर तालुका, कर्नाटक में आयोजित
3 अक्तूबर 2017

ग्राम मुंदूर, पालक्काड ज़िला, केरल युवाप्रभात वयनसाला, मुंदूर में आयोजित
29 अक्तूबर 2017

ग्राम बैदा, शेरघाटी, गया, बिहार में आयोजित
5 नवंबर 2017

ग्राम करेली, ज़िला नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश में आयोजित
26 नवंबर 2017

ग्राम तरसत्तरी, गोवा में आयोजित
10 दिसंबर 2017

माप्पिलाप्पत्तु, केरल में साहित्य और लोक परंपरा पर आयोजन
5 जनवरी 2018

मैथिली कवियों के साथ ग्राम मानाराय टोल, ज़िला समस्तीपुर, बिहार में आयोजित
7 जनवरी 2018

कथासंधि

प्रख्यात ओड़िया कथाकार डॉ. देवराज लेंका
8 अप्रैल 2017, भुवनेश्वर, ओड़िशा

प्रख्यात हिंदी लेखिका श्रीमती कुसुम अंसल
20 अप्रैल 2017, दिल्ली

प्रख्यात मराठी लेखक श्री कृष्णात खोट
23 अप्रैल 2017, मुंबई

प्रख्यात मणिपुरी लेखक श्री एम. राजेन सिंह
21 मई 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

प्रतिष्ठित हिंदी और मराठी लेखिका श्रीमती मालती जोशी
10 जून 2017, दिल्ली

प्रख्यात बाङ्ला लेखक डॉ. भागीरथ मिश्र
27 जून 2017, कोलकाता

जानेमाने मराठी लेखक श्री आशाराम लोमटे
7 जुलाई 2017, ठाणे (पश्चिम), महाराष्ट्र,

प्रख्यात असमिया लेखक डॉ. फूल गोस्वामी
6 अगस्त 2017, गुवाहाटी

प्रख्यात सिंधी लेखिका सुश्री जया जादवाणी
20 अगस्त 2017, नागपुर, महाराष्ट्र

प्रख्यात उर्दू लेखक श्री अहमद रशीद
13 अक्तूबर 2017, दिल्ली

जानेमाने तेलुगु लेखिका डॉ. वादरेवु वीरलक्ष्मी देवी
29 अक्तूबर 2017, गुंटूर, आंध्र प्रदेश

प्रख्यात कश्मीरी लेखक डॉ. मोहम्मद शफ़ी ज़राल
2 नवंबर 2017, गुलमर्ग, जम्मू-कश्मीर

लब्धप्रतिष्ठ नेपाली लेखक श्री एडोन रिंगोंग
4 नवंबर 2017, कालेबुंग, पश्चिम बंगाल

लब्धप्रतिष्ठ डोगरी लेखिका डॉ. शशि पठानिया
25 नवंबर 2017, उधमपुर, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात संताली लेखक श्री गोविंद चंद्र माझी
3 दिसंबर 2017, मयूरभंज, ओड़िशा

लब्धप्रतिष्ठ बोडो लेखक डॉ. गोविंद बसुमतारी
17 मार्च 2018, कोकराझार, असम

कवि-अनुवादक

प्रख्यात हिंदी लेखक अरुण कमल एवं विख्यात असमिया अनुवादक समीर तांती
22 अप्रैल 2017, दिसपुर, असम

विख्यात पंजाबी लेखक डॉ. मनमोहन एवं सुपरिचित अनुवादिका सुश्री निरुपमा दत्त
24 सितंबर 2017, चंडीगढ़

कविसंधि

प्रख्यात असमिया कवि श्री ज्ञान पुजारी
28 अप्रैल 2017, गुवाहाटी, असम

प्रख्यात मणिपुरी कवि श्री ख. राजेन सिंह
20 मई 2017, इंफ़ाल, मणिपुरी

प्रख्यात बाङ्ला कवि डॉ. शंभुनाथ चट्टोपाध्याय
30 जून 2017, कोलकाता

प्रख्यात तेलुगु कवि डॉ. वी.आर. विद्यार्थी
2 जुलाई 2017, हनमागोंदा, तेलंगाना

प्रख्यात तेलुगु कवयित्री सुश्री अनिशेट्टी राजिता
2 जुलाई 2017, हनमागोंदा, तेलंगाना

प्रख्यात तेलुगु कवि डॉ. कोटला वेंकेटेश्वर रेड्डी
9 जुलाई 2017, महबूबनगर, तेलंगाना

प्रख्यात बोडो कवि श्री गोपीनाथ ब्रह्म
29 जुलाई 2017, दोइमुख, अरुणाचल प्रदेश

प्रख्यात मलयाळम् कवि डॉ. बालाचंद्रन चुल्लिक्कड
30 जुलाई 2017, बेंगळूरु

प्रख्यात तेलुगु कवि डॉ. नंदिनी सिद्ध रेड्डी
30 जुलाई 2017, हैदराबाद

प्रख्यात तेलुगु कवि डॉ. सीताराम
30 जुलाई 2017, हैदराबाद

प्रतिष्ठित हिंदी कवि प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण
4 अगस्त 2017, दिल्ली

प्रतिष्ठित तेलुगु कवि डॉ. ई. सुब्बा राव
8 अगस्त 5 2017, विज़ाग, आंध्र प्रदेश

प्रतिष्ठित तेलुगु कवि श्री अरुण बबानी
27 अगस्त 2017, पुणे

प्रख्यात तेलुगु कवि श्री आशाराजु
28 अगस्त 2017, हैदराबाद, तेलंगाना

प्रख्यात ओड़िया कवि डॉ. नित्यानंद नायक
28 अगस्त 2017, भुवनेश्वर, ओड़िशा

प्रख्यात तेलुगु कवि श्री सुदामा (ए. वेंकट राव)
29 अगस्त 2017, हैदराबाद, तेलंगाना

प्रख्यात तेलुगु कवि श्री बी. माधव राव
20 सिंतबर 2017, गुंटूर, आंध्र प्रदेश

प्रख्यात उर्दू कवि प्रो. रत्न लाल हंगलू
29 सितंबर 2017, इलाहाबाद

प्रख्यात कश्मीरी कवि श्री जी.एन. गौहर
7 अक्तूबर 2017, चरारे शरीफ़, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात कश्मीरी कवि श्री अली सइदा
16 अक्तूबर 2017, अनंतनाग, जम्मू-कश्मीर

प्रतिष्ठित कश्मीरी कवि श्री मोहम्मद शाहबाज़ राजोरवी
4 नवंबर 2017, राजौरी, जम्मू-कश्मीर

प्रतिष्ठित नेपाली कवि श्री केवल चंद्र लामा
5 नवंबर 2017, खरसाङ, पश्चिम बंगाल

प्रतिष्ठित डोगरी कवि श्री विजय वर्मा
26 नवंबर 2017, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

भाषा सम्मेलन

तीवा भाषा सम्मेलन
22-23 सितंबर 2017, तेज़पुर, असम

कोशली-संबलपुरी भाषा सम्मेलन
2-3 दिसंबर 2017, भुवनेश्वर, ओड़िशा

साहित्य मंच

आधुनिक भारत तथा दक्षिण एशियाई लेखन पर महाकाव्यों का प्रभाव
3 अप्रैल 2017, दिल्ली

गौतम बुद्ध और ओड़िया साहित्य
9 अप्रैल 2017, भुवनेश्वर

साहित्य मंच
13 अप्रैल 2017, दिल्ली

अंग्रेज़ी में भारतीय लेखन : नई विधाएँ, नए चलन
13 अप्रैल 2017, दिल्ली

स्वच्छता पखवाड़ा और साहित्यिक कार्यक्रम
17-30 अप्रैल 2017, बेंगळूरु

विश्व पुस्तक दिवस
23 अप्रैल 2017, बेंगळूरु

विश्व पुस्तक दिवस
23 अप्रैल 2017, सालेम

जानेमाने कोंकणी लेखक
23 अप्रैल 2017, गोवा

जानेमाने संस्कृत लेखक
24 अप्रैल 2017, दिल्ली

स्वच्छता पखवाड़ा-अतिथि व्याख्यान
25 अप्रैल 2017, चेन्नै

एक शाम समालोचक के साथ
26 अप्रैल 2017, इंफ़ाल

कामाक्षीप्रसाद चट्टोपाध्याय
27 अप्रैल 2017, कोलकाता

दातु के मलयाळम् अनुवाद का विमोचन
29 अप्रैल 2017, बेंगळूरु

कन्नड साहित्य तथा ई-प्रकाशन की संभावनाएँ
4 मई 2017, बेंगळूरु

ए हंड्रेड डिफ्रेंट लैम्पस : रवींद्रनाथ टैगोर द पोलिमाथ
8 मई 2017, दिल्ली

जानेवाले हिंदी कवि एवं नाटककार डॉ. नरेंद्र मोहन ने अपने लघु नाटक अंबर हब्शी का पाठ किया
12 मई 2017, दिल्ली

गाँधी और ओड़िया साहित्य
14 मई 2017, भुवनेश्वर

प्रतिष्ठित कश्मीरी लेखक
17 मई 2017, दिल्ली

मणिपुरी में अनूदित हिंदी उपन्यासों का मूल्यांकन
20 मई 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

मणिपुरी गीतात्मक साहित्य
21 मई 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

पथपातु तथा बाल कहानियाँ
30 मई 2017, मालाप्पुरम, केरल

थिक्कोदियन का मलयाळम् साहित्य और नाटक को योगदान
6 जून 2017, कालीकट, केरल

बिरिंची कुमार बरुआ का जीवन और कार्य
9 जून 2017, नगाँव, असम

मणिपुरी साहित्य में लोक साहित्य
10 जून 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

एच. कान्हाइलाल सिंह का मणिपुरी नाट्य साहित्य को योगदान
10 जून 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

प्रभात बर' के साथ
11 जून 2017, गुवाहाटी

द प्लेस ऑफ़ वीमेन इन मिथ एंड लेजेंड
12 जून 2017, नमबोल, मणिपुर

माधवराव सप्रे रचना संचयन पुस्तक का विमोचन
19 जून 2017, दिल्ली

योग दिवस
20 जून 2017, कोलकाता

बाङ्ला एवं असमिया कविता तथा तुलनात्मक विमर्श
21 जून 2017, गुवाहाटी, असम

योग दिवस
21 जून 2017, चेन्नै

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2017, बेंगळूरु

साहित्य मंच
23 जून 2017, दिल्ली

अशोकमित्रन को श्रद्धांजलि
23 जून 2017, चेन्नै

साहित्य मंच : जदुमणि महापात्र
30 जून 2017, नयागढ़, ओड़िशा

साहित्य मंच : गोदाबरीश महापात्र
30 जून 2017, बालुगाँव, गोलाघाट, असम

साहित्य मंच : ज़िकिर ज़ारी तथा अज़ान पीर
8 जुलाई 2017, बालीघाट, गोलाघाट, असम

साहित्य मंच : कवियरंगु
12 जुलाई 2017, कालीकट, केरल

साहित्य मंच : प्रख्यात तेलुगु लेखक डॉ. सी. नारायण रेड्डी को श्रद्धांजलि
12 जुलाई 2017, हैदराबाद

प्रतिष्ठित कोंकणी लेखक
16 जुलाई 2017, पोंडा, गोवा

साहित्य मंच : सार्वभौमिकता-तेलुगु कविता
17 जुलाई 2017, तिरुपति

प्रतिष्ठित कश्मीरी लेखक
19 जुलाई 2017, डोडा, जम्मू-कश्मीर

पंडित ओइनम बोगेश्वर सिंह के जीवन और कृतित्व पर साहित्य मंच
21 जुलाई 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

समकालीन मणिपुरी साहित्य पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव पर साहित्य मंच
21 जुलाई 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

'पोस्ट वार मणिपुरी ड्रैमेटिक लिटरेचर' पर साहित्य मंच
22 जुलाई 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

साहित्य मंच
27 जुलाई 2017, दिल्ली

तेलुगु कवि कुंदुर्थी
31 जुलाई 2017, गुंटूर, आंध्र प्रदेश

अब्दुल रहमान, इंक़लाब तथा ना. कामरासन के योगदान पर केंद्रित
3 अगस्त 2017, चेन्नै

आधुनिक मलयालाकवितायिल संस्कारिक बहुतवम
9 अगस्त 2017, मुवाट्टुपुषा, केरल

कनाडा की कवयित्री सुश्री अदीना करासिक
9 अगस्त 2017, दिल्ली

नाटकों में नारीवादी दृष्टि
16 अगस्त 2017, कोयंबटूर, तमिलनाडु

तमिल एवं हिंदी साहित्य की समकालीन प्रवृत्तियाँ
16 अगस्त 2017, कोयबंटूर, तमिलनाडु

मलयाळम् उपन्यास तथा पी. केशव देव कृत ओदायिळ निन्नु
17 अगस्त 2017, कोषिकोडे, केरल

साहित्य लोक
17 अगस्त 2017, करकला

साहित्य मंच
17 अगस्त 2017, दिल्ली

आर.पी. सेतुपिल्लै पर केंद्रित
18 अगस्त 2017, पापनासम, तमिलनाडु

स्वच्छता पखवाड़ा
18 सिंतबर 2017, कोलकाता

सिंधी लेखक
20 अगस्त 2017, नागपुर, महाराष्ट्र

सिंधी लेखक
27 अगस्त, पुणे

हिजाम गुनो का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
3 सितंबर 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

विज्ञान और साहित्य
3 सितंबर 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

समकालीन मणिपुरी साहित्य में लाई हराओबा का योगदान
4 सितंबर 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

तेलुगु साहित्य में अग्रेरियन उपन्यास
4 सितंबर 2917, तिरुपति

साहित्य मंच
7 सितंबर 2017, कुंदापुर, कर्नाटक

तेलुगु में ऐतिहासिक महाकाव्य (प्राचीन एवं आधुनिक)
10 सितंबर 2017, कडपा, आंध्र प्रदेश

साहित्य मंच
13 सितंबर 2017, कच्छ, गुजरात

तेलुगु मुक्त छंद में प्रयोग
15 सितंबर 2017, नांद्याल, आंध्र प्रदेश

तेलुगु साहित्य के विकास में मुस्लिम लेखकों का योगदान
16 सितंबर 2017, कुरनूल, आंध्र प्रदेश

भारतीय महाकाव्य
19 सितंबर 2017, मदुरनतकम, तमिलनाडु

प्रकृति और साहित्य : अंतःसंबध (स्वच्छता पखवाड़ा) पर अतिथि व्याख्यान
20 सितंबर 2017, चेन्नै

पर्यावरण और साहित्य के मध्य अंतःसंबध
21 सितंबर 2017, कोलकाता

खवाजा अहमद फ़ारूक़ी की जन्मशतवार्षिकी
22 सितंबर 2017, दिल्ली

नवला रचयितरूलु अभ्युदय ध्रुकपदम
22 सितंबर 2017, कुरनूल, आंध्र प्रदेश

साहित्य : एक अंतःसंबध
26 सितंबर 2017, बेंगळूरु

जीवन बनाम लेखन
4 अक्तूबर 2017, मालाप्पुरम, केरल

टी. उबेद के काव्य में समन्वयात्मक संस्कृति
6 अक्तूबर 2017, कालीकट, केरल

सिंधी लेखक
6 अक्तूबर 2017, भोपाल, मध्य प्रदेश

कश्मीरी लेखक
7 अक्तूबर 2017, चरारे शरीफ़, जम्मू-कश्मीर

साहित्य मंच
12 अक्तूबर 2017, दिल्ली

125वीं जन्मशती : पं. विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक
14 अक्तूबर 2017, कानपुर, उत्तर प्रदेश

कश्मीरी लेखक
16 अक्तूबर 2017, अनंतनाग, जम्मू-कश्मीर

मलयाळम् कहानी का क्रमिक विकास
20 अक्तूबर 2017, त्रिवेंद्रम, केरल

सिनेमा और साहित्य कवि सम्मेलन
22 अक्तूबर 2017, काकचिंग, मणिपुर

एम. गोपालकृष्ण अय्यर
23 अक्तूबर 2017, चेन्नै

महिलाओं के विशेष संदर्भ में तेलुगु समाज और साहित्य पर बोलशेविक क्रांति का प्रभाव
31 अक्तूबर 2017, वारंगल, तेलंगाना

कश्मीरी लेखक
2 नवंबर 2017, गुलमर्ग, जम्मू-कश्मीर

आधुनिक बाङ्ला कहानी की खोज
3 नवंबर 2017, सिलचर, असम

सतर्कता जागरूकता व्याख्यान
3 नवंबर 2017, चेन्नै

सतर्कता सप्ताह पर व्याख्यान
30 अक्तूबर 3 नवंबर 2017, बेंगळूरु

हेमंत कुमार महांति के साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह
3 नवंबर 2017, कोलकाता

कश्मीरी लेखक
4 नवंबर 2017, राजौरी, जम्मू-कश्मीर

राउल जुरिता के साथ कवि सम्मेलन
9 नवंबर 2017, दिल्ली

सों. मुरूगप्पा पर केंद्रित
11 नवंबर 2017, करैकुडी, तमिलनाडु

साहित्य मंच
15 नवंबर 2017, मुंबई

पुस्तक विमोचन : लालन शाह फ़क़ीर के गीत
16 नवंबर 2017, कोलकाता

जगदीश चंद्र माथुर पर केंद्रित
17 नवंबर 2017, दिल्ली

आधुनिक तमिल कविता
30 नवंबर 2017, त्रिची, तमिलनाडु

कन्नड कवि
12 दिसंबर 2017, बेंगळूरु

साहित्य मंच
17 दिसंबर 2017, मुंबई

साहित्य मंच
22 दिसंबर 2017, दिल्ली

हसनूल जमाल तथा बधारुल मुनीर
28 दिसंबर 2017, कोनदोत्ती, केरल

रायलसीमा के साहित्य के 25 वर्ष तथा सार्वभौमिकता
28 दिसंबर 2017, अनंतपुर, आंध्र प्रदेश

तेलुगु के चुनिंदा महाकाव्य/लंबी कविताएँ
29 दिसंबर 2017, कल्याणदुर्ग, आंध्र प्रदेश

खोङजम प्रभा तथा मणिपुरी लिटरेचर
30 दिसंबर 2017, अगरतला

मणिपुरी साहित्य के सौ वर्ष
31 दिसंबर 2017, अगरतला

व्यावसायिक शिल्प को परिलक्षित करती तेलुगु कहानियाँ
27 जनवरी 2018, हिंदुपुरामु, आंध्र प्रदेश

अरिज्ञार अन्ना का पुस्तक विमोचन
8 फ़रवरी 2018, चेन्नै

कन्नड कथासाहित्य, कविता, समालोचना तथा वतर्मान परिदृश्य
17 फ़रवरी 2018, अरासिकेरे, कर्नाटक

बोडो कहानी-पाठ
18 फ़रवरी 2018, बीटीएडी, असम

साहित्य मंच
28 फ़रवरी 2018, चेन्नै

प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. एच.एस. वेंकटेशमूर्ति ने पी. टी. नरसिम्हाचार कृत कन्नड कालजयी कृति मालेदेगुला पर अपने विचार व्यक्त किए
12 मार्च 2018, बेंगळूरु

सुविख्यात तमिळ लेखकों ने भारतीय साहित्य के विकास पर अपने विचार व्यक्त किए
12 मार्च 2018, चेन्नै

विश्व कविता दिवस के अवसर पर कवि सम्मेलन
21 मार्च 2018, चेन्नै

लोक : विविध स्वर

लोक : विविध स्वर; एमएमडीएमसी के साथ
27 अप्रैल 2017, इंफ़ाल

लोक : विविध स्वर; श्री बादल सिकदर तथा उनकी मंडली द्वारा मोगुआ तमसा की प्रस्तुति
11 मई 2017; भुवनेश्वर

लोक : विविध स्वर
9 जून 2017, आइज़ोल, मिज़ोराम

लोक : विविध स्वर; असम के बिहु गीतों और नृत्य की प्रस्तुति
13 अगस्त 2017, विजयवाड़ा

लोक : विविध स्वर; सृजन उत्सव
5-6 नवंबर 2017, पुरुलिया

लोक : विविध स्वर; बाहुवा नृत्य प्रस्तुति तथा इस नृत्य शैली पर एक विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान
12 नवंबर 2017, शिवसागर, असम

लोक : विविध स्वर; मछली पकड़ने पर उत्तर बंगाल जनजातीय नृत्य प्रस्तुति
28 जनवरी 2018, हावड़ा, पश्चिम बंगाल

लोक : विविध स्वर; पारंपरिक फुगद्दो लोक नृत्य तथा उससे संबंधित गीतों की प्रस्तुति तथा इस शैली पर एक विद्वत्तापूर्ण व्याख्यात
4 मार्च 2018, कोचीन

लोक : विविध स्वर; अप्पागेरे तिम्मराजु तथा उनकी मंडली द्वारा कर्नाटक के महिला लोक गीतों की प्रस्तुति
16 मार्च 2018, बेंगळूरु

लोक : विविध स्वर; बोडो लोकगीत तथा नृत्य प्रस्तुति
20 मार्च 2018, धूपधारा, असम

लोक : विविध स्वर
22 मार्च 2018, दिल्ली

लेखक से भेंट

प्रख्यात ओड़िया लेखिका श्रीमती प्रतिभा सत्पथी
9 अप्रैल 2017, भुवनेश्वर, ओड़िशा

प्रख्यात नेपाली लेखक डॉ. जीवन नामदुंग
29 अप्रैल 2017, दार्जीलिङ, पश्चिम बंगाल

प्रख्यात मैथिली लेखिका डॉ. शेफालिका वर्मा
4 मई 2017, दिल्ली

प्रख्यात कन्नड कवि डॉ. चेन्नावीरा कानवी
18 जून 2017, धारवाड़, कनार्टक

प्रख्यात कोंकणी लेखक श्री एन. शिवदास
29 जून 2017, गोवा

प्रख्यात उर्दू लेखक श्री ज्ञान सिंह शातिर
4 जुलाई 2017, दिल्ली

प्रख्यात तमिल लेखक श्री पूमणि
5 अगस्त 2017, चेन्नै

प्रख्यात बाङ्ला लेखक श्री शरत कुमार मुखोपाध्याय
23 अगस्त 2017, कोलकाता

प्रख्यात मणिपुरी लेखक डॉ. एन. कालीमोहन सिंह
2 सितंबर 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

प्रख्यात सिंधी विद्वान डॉ. जेठो लालवाणी
10 सितंबर 2017, अहमदाबाद

प्रख्यात सिंधी लेखक श्री मोहन गेहाणी
6 अक्तूबर 2017, भोपाल, मध्य प्रदेश

प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. ना. मोगासाले
27 अक्तूबर 2017, मंगलौर, कर्नाटक

प्रख्यात राजस्थानी लेखक डॉ. मधु आचार्य 'आशावादी'
28 अक्तूबर 2017, कोलकाता

प्रख्यात असमिया लेखक श्री इमरान शाह
12 नवंबर 2017, शिवसागर, असम

प्रख्यात गुजराती लेखक श्री नरोत्तम पालन
25 फ़रवरी 2018, जूनागढ़, गुजरात

मुलाक़ात

युवा हिंदी लेखक
25 अप्रैल 2017, नई दिल्ली

युवा मणिपुरी लेखक
26 अप्रैल 2017, इंफ़ाल

युवा असमिया लेखक
7 जुलाई 2017, जोरहाट, असम

युवा लेखकों से मुलाक़ात
20 मार्च 2018, बिकाली

बहुभाषी सम्मेलन

साहित्यिक उत्सव
28-29 सितंबर 2017, सिंगरौली, मध्य प्रदेश

साहित्यिक उत्सव
24-25 नवंबर 2017, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

एक दिवसीय अखिल भारतीय कवि सम्मेलन
19 मार्च 2018, कोकराझार

बहुभाषी कवि सम्मेलन
21 फ़रवरी 2018, दिल्ली

नारी चेतना

मणिपुरी लेखिकाएँ
26 अप्रैल 2017, इंफ़ाल

असमिया कथासाहित्य में महिलाएँ
27 अप्रैल 2017, गौरीपुर

ओड़िया लेखिकाएँ
26 अगस्त 2017, भुवनेश्वर

कश्मीरी लेखिकाएँ
16 अक्तूबर 2017, अनंतनाग, जम्मू-कश्मीर

नेपाली लेखिकाएँ
5 नवंबर 2017, खरसाङ, पश्चिम बंगाल

विभिन्न भारतीय भाषाओं की लेखिकाएँ
13 नवंबर 2017, दिल्ली

बोरोमा कॉलेज में नारी चेतना कार्यक्रम आयोजित
17 फ़रवरी 2017, बोरोमा

अंतरर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर
8 मार्च 2018, बेंगळूरु

नारी चेतना
8 मार्च 2018, मुंबई

नारी चेतना
8 मार्च 2018 कोलकाता

नारी चेतना
8 मार्च 2018, चेन्नै

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह

नवंबर 14-21 : अकादेमी ने दिल्ली तथा बेंगळूरु, कोलकाता, मुंबई तथा चेन्नै स्थित अपने उप-कार्यालय में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह 2017 का आयोजन किया तथा इसके अतिरिक्त मंगलौर, कर्नाटक तथा तंजाउर तमिलनाडु में पुस्तक प्रदर्शनियों के साथ-साथ साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया।

मंगलौर, कर्नाटक

15 : सेंट एलौसिअस कॉलेज, मंगलौर में विख्यात कन्नड लेखकों के साथ कवि सम्मेलन।

16 : सेंट एलौसिअस कॉलेज, मंगलौर में साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन, जिसमें प्रख्यात कन्नड नाटककारों ने अपने लघु नाटकों का पाठ किया।

17 : सेंट एलौसिअस कॉलेज, मंगलौर में जानेमाने कन्नड लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम।

18 : बाल साहिती : सेंट एलौसिअस कॉलेज, मंगलौर में बाल कविता-पाठ कार्यक्रम।

19 : सेंट एलौसिअस कॉलेज, मंगलौर में ''पुस्तक संस्कृति : एक परिचर्चा'' कार्यक्रम आयोजित।

20 : सेंट एलौसिअस कॉलेज, मंगलौर में समापन कार्यक्रम।

तंजाउर, तमिलनाडु

14 से 21 नवंबर 2017 को तंजाउर में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह आयोजित। प्रख्यात लेखकों पर वृत्तचित्रों का प्रदर्शन किया गया।

डी. जयकांतन पर वृत्तचित्र
15 नवंबर 2017, तंजाउर

तकाषि शिवशंकर पिल्लै पर वृत्तचित्र
16 नवंबर 2017, तंजाउर

नील पद्मनाभन पर वृत्तचित्र
17 नवंबर 2017, तंजाउर

वाईक्कोम मुहम्मद बशीर पर वृत्तचित्र
18 नवंबर 2017, तंजाउर

कुवेम्पु पर वृत्तचित्र
19 नवंबर 2017, तंजाउर

नारी चेतना : कलैइसेल्वी, लक्ष्मी, मानुषी तथा रेवती
20 नवंबर 2017, तंजाउर

पूर्वोत्तर एवं क्षेत्रीय सम्मेलन

पूर्वोत्तरी : साहित्योत्सव
21-23 अप्रैल 2017, दिसपुर, असम

उत्तर-पूर्व एवं उत्तरी लेखक सम्मेलन
13-14 मई 2017, दरभंगा, बिहार

पूर्वोत्तरी साहित्यिक उत्सव
22-24 मई 2017, गुवाहाटी, असम

पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी लेखक सम्मेलन
13-14 अगस्त 2017, विजयवाड़ा

पूर्वोत्तर साहित्यिक उत्सव
11 नवंबर 2017, गुवाहाटी, असम

पूर्वोत्तर एवं दक्षिणी लेखक सम्मेलन
19 नवंबर 2017, लक्ष्यद्वीप

पूर्वोत्तरी : पूर्वोत्तर तथा उत्तरी भारतीय भाषाओं के लेखकों के साथ
22 नवंबर 2017, दिल्ली

पूर्वोत्तरी एवं दक्षिणी लेखक सम्मेलन
7-8 दिसंबर 2017, कोचि, केरल

कवि सम्मेलन (पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी कवि सम्मेलन)
8 जनवरी 2018, विजयवाड़ा

पूर्वोत्तरी : पूर्वोत्तर लेखक सम्मेलन
9 जनवरी 2018, कोचि, केरल

पूर्वोत्तरी : पूर्वोत्तरी तथा उत्तरी लेखकों का बहुभाषी रचना-पाठ
9 जनवरी 2018, दिल्ली

पूर्वोत्तर देशज साहित्यिक उत्सव
10-11 जनवरी 2018, अगरतला, त्रिपुरा

पूर्वोत्तर तथा उत्तरी लेखक सम्मेलन
16 फ़रवरी 2018, अगरतला, त्रिपुरा

पूर्वोत्तर तक दक्षिणी महिला लेखक सम्मेलन
16-17 मार्च 2018, बेंगळूरु

सृजन : उत्तर पूर्वी भारतीय भाषाओं के अंतर्गत विरासत भाषाओं और संस्कृति के पुररुद्धार पर विमर्श सह-कार्यशाला
27-28 मार्च 2018, गुड़गाँव, हरियाणा

पूर्वोत्तर तथा पश्चिमी लेखक सम्मेलन
29-30 मार्च 2018, मुंबई

पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी लेखक सम्मेलन
30-31 मार्च 2018, विशाखापट्टनम

व्यक्ति और कृति

प्रख्यात कलाकार सुश्री बेनु मिश्र
28 अप्रैल 2017, गुवाहाटी

प्रतिष्ठित प्रकाशक श्री सांवर अग्रवाल
30 अप्रैल 2017, दार्जीलिङ

एन. राजमोहन सिंह
12 जून 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

प्रख्यात विद्वान प्रो. प्रदीप भट्टाचार्य ने जैमिनीय महाभारत पर व्याख्यान दिया
8 अगस्त 2017, दिल्ली

जामिया मिलिया इस्लामिया के पूर्व कुलपति प्रो. सैय्यद शाहिद मेहदी
13 अक्तूबर 2017, दिल्ली

प्रवासी मंच

कनाडा की विख्यात हिंदी लेखिका सुश्री स्नेह ठाकुर
5 मई 2017, दिल्ली

राजभाषा आयोजन

राजभाषा सप्ताह
14-21 सितंबर 2017, दिल्ली

राजभाषा मंच
15 सितंबर 2017, दिल्ली

राजभाषा हिंदी दिवस समारोह
18 सितंबर 2017, बेंगळूरु

राजभाषा हिंदी दिवस समारोह
18 सितंबर 2017, मुंबई

राजभाषा हिंदी दिवस समारोह
18 सितंबर 2018, चेन्नै

राजभाषा हिंदी दिवस समारोह
20 सितंबर 2017, कोलकाता

संगोष्ठियाँ

भारतीय साहित्य तथा सामाजिक विकास : सिद्धांत, व्यवहार तथा सांप्रदायिक प्रभाव
5-7 अप्रैल 2017, शिमला, हिमाचल प्रदेश

सर सैय्यद अहमद ख़ान : जीवन और कृतित्व
14-15 अप्रैल 2017, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

संताली उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ
23-24 अप्रैल 2017, जमशेदपुर, झारखंड

पं. ब्रजबिहारी शर्मा जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
25 अप्रैल 2017, इंफ़ाल

भारतीय नेपाली भाषा का मानकीकरण
29-30 अप्रैल 2017, दार्जीलिङ

संत नामदेव
9-10 मई 2017, मुंबई

भाषा, साहित्य एवं लिंग विषयक संगोष्ठी
18-19 मई 2017, दिल्ली

समकालीन मणिपुरी कविता और उसका परिप्रेक्ष्य
18-19 मई 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

आर.के. सूरजबरसना जन्मशतवार्षिकी
11 जून 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

दीनू भाई पंत जन्मशतवार्षिकी
17-18 जून 2017, जम्मू

गजानन माधव मुक्तिबोध जन्मशतवार्षिकी
27-28 जून 2017, राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़

सीमांत का प्रतिनिधित्व : पूर्वी भारतीय भाषाओं के पाठ तथा परंपराएँ
29-30 जून 2017, गुवाहाटी, असम

श्री रामानुजाचार्य की 1000वीं जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर श्री रामानुजदर्शन : आधुनिक युग में उनका संदर्भ
7-8 जुलाई 2017, तिरुपति

नारायण गंगोपाध्याय जन्मशतवार्षिकी
13-14 जुलाई 2017, कोलकाता

पश्चिम तथा पूर्वोत्तर की भारतीय भाषाओं में लोक साहित्य
14-15 जुलाई 2017, पणजी, गोवा

आधुनिक कन्नड साहित्य में विचारों के पथ तथा विद्यालय
17-18 जुलाई 2017, हारूगेरी, कर्नाटक

राजकुमार सनाहल सिंह
23 जुलाई 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

मलयाळम् फ़िल्मों के साहित्यिक अनुकूलन के सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य
9-10 अगस्त 2017, मालाप्पुरम, केरल

इंशाअल्लाह ख़ान 'इंशा' की 200वीं पुण्यतिथि पर संगोष्ठी
18 अगस्त 2017, हैदराबाद

त्रिलोचन जन्मशतवार्षिकी
21-22 अगस्त 2017, दिल्ली

डोगरी कहानियों पर संगोष्ठी
25-26 अगस्त 2017, जम्मू

ब्रजकिशोर ढल की जन्मशतवार्षिकी
27 अगस्त 2017, ढेंकानाल, ओड़िशा

तेलुगु भाषा और साहित्य को आकाशवाणी का योगदान
28-29 अगस्त 2017, हैदराबाद, तेलंगाना

आधुनिक मैथिली साहित्य के शिल्पी
2-3 सितंबर 2017, सहरसा, बिहार

एम.के. इंदिरा की जन्मशतवार्षिकी
9 सितंबर 2017, तीर्थहल्ली, कर्नाटक

गोपाल छोटराय की जन्मशतवार्षिकी
17 सितंबर 2017, भुवनेश्वर

पूर्वी भारतीय साहित्य में विस्थापन की भावना
18-19 सितंबर 2017, भुवनेश्वर, ओड़िशा

गौतम बुद्ध : तेलुगु साहित्य और संस्कृति में प्रतिबिंब
20-21 सितंबर 2017, गुंटूर, आंध्र प्रदेश

थाइलैंड में आयोजित भारत उत्सव के अंतर्गत दक्षिण पूर्व एशियाई भाषाओं पर संस्कृत और पाली का प्रभाव
23-27 सितंबर 2017, थाइलैंड

बोडो कहानी और नाटक में आधुनिक प्रवृत्तियाँ
25 सितंबर 2017, करबी एंग्लोंग, असम

अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर समकालीन भारतीय नाटक का अनुवाद
30 सितंबर 2017, शिलांग, मेघालय

तमिल काव्यशास्त्र
4-5 अक्तूबर 2017, पुदुचेरी

युग का साहित्य शास्त्र
14-15 अक्तूबर 2017, अहमदाबाद

एन. खेलचंद्र सिंह की जन्मशतवार्षिकी
23-24 अक्तूबर 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

पंजाबी प्रवासी साहित्य की बदलती पद्धतियाँ
26-27 अक्तूबर 2017, चंडीगढ़

मध्यकालीन वैष्णव साहित्य
26-27 अक्तूबर 2017, दिल्ली

बोडो साहित्य में उत्तर-आधुनिक प्रवृत्तियाँ
5 नवंबर 2017, असम

समर सेन
6-7 नवंबर 2017, कोलकाता

इस्माईल मेरठी की 100वीं पुण्यतिथि पर संगोष्ठी
11 नवंबर 2017, दिल्ली

उपेंद्रनाथ झा 'व्यास' की जन्मशतवार्षिकी
12-13 नवंबर 2017, पटना, बिहार

कर्तार सिंह दुग्गल की जन्मशतवार्षिकी
13-14 नवंबर 2017, दिल्ली

बाल साहित्य का क्रमिक विकास
15-16 नवंबर 2017, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

सागर साहित्य : कच्छ से कोंकण तक
2-3 दिसंबर 2017, भुज, गुजरात

सुनाराम सोरेन की जन्मशतवार्षिकी
3 दिसंबर 2017, मयूरभंज, ओड़िशा

लोकसाहित्य पर संगोष्ठी
4-5 दिसंबर 2017, जम्मू

प्रभाकर माचवे की जन्मशवार्षिकी
6 दिसंबर 2017, दिल्ली

सांस्कृतिक संवेदना तथा सृजनात्मकता : भारतीय साहित्य में उभरती प्रवृत्तियाँ
7-9 दिसंबर 2017, वर्धा महाराष्ट्र

खासी लिखित साहित्य के 175 वर्ष
14-15 दिसंबर 2017, शिलाँग, मेघालय

थोकचम सोनमणि सिंह की जन्मशतवार्षिकी
31 दिसंबर 2017, अगरतला

एम. गोपालकृष्ण अडिग की जन्मशतवार्षिकी
6-7 जनवरी 2018, बेंगळूरु

सिंधी साहित्य में कलात्मक अभिव्यक्ति
24-25 जनवरी 2018, मुंबई

विज्ञान, भाषा और पुनर्जागरण
2 फ़रवरी 2018, तिरुर, केरल

भारत की स्वतंत्रता के 70 वर्ष : साहित्यिक चित्रण का आयोजन
15-17 फ़रवरी 2018, दिल्ली

पाइते तथा उनकी भाषाएँ
17 मार्च 2018, आइज़ोल, मिज़ोराम

परिसंवाद

अलिखित भाषाओं की यात्रा
5 अप्रैल 2017, दिल्ली

गौतम बुद्ध और ओड़िया साहित्य
9 अप्रैल 2017, भुवनेश्वर, ओड़िशा

पर्यावरण, स्वच्छता तथा साहित्य
26 अप्रैल 2017, दिल्ली

उत्तर बंगाल की बोडो (मेचेस) के लोक साहित्य का संगरक्षण एवं अभिलेखन
22 अप्रैल 2017, अलीपुरद्वार, पश्चिम बंगाल

जन्मशतवार्षिकी : वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य
22 अप्रैल 2017, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में हुए चंपारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर 'भारतीय साहित्य में सत्याग्रह' विषय पर संगोष्ठी
27 अप्रैल 2017, दिल्ली

पश्चिमी क्षेत्रीय भाषाओं में समकालीन नाटक
4 मई 2017, मुंबई

मीर सोनउल्लाह क्रीरी
14 मई 2017, क्रीरी, जम्मू कश्मीर

गोविंद पै कृत साहित्य में सार्वभौमिकता
19 मई 2017, कसरगौड़, केरल

एम.एम.टी. गणपति शास्त्री
25 मई 2017, इरनाकुलम, केरल

समकालीन मणिपुरी साहित्य में देशभक्ति
9 जून 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

20वीं सदी के असमिया उपन्यास
10 जून 2017, तेज़पुर, असम

पश्चिमी भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य की प्रकृति
11 जून 2017, वड़ोदरा, गुजरात

भारतीय नेपाली साहित्य पर शहरीकरण का प्रभाव
11 जून 2017, शिलाँग, मेघालय

बोडो काव्य की प्रकृति तथा संस्कृति
12 जून 2017, उदालगुड़ी, असम

उत्तरी क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्यिक पत्रकारिता
17 जून 2017, इंदौर, मध्य प्रदेश

भारतीय साहित्य में योग
20 जून 2017, दिल्ली

कला और कविता : अंतर-संबंध
30 जून 2017, नैनीताल, उत्तराखंड

तेलंगाना का समकालीन तेलुगु कथासाहित्य
2 जुलाई 2017, तेलंगाना

वल्सा साहित्यम
9 जून 2017, मबूबनगर, तेलंगाना

मोइनकुट्टी वैद्यर
18 जून 2017, मल्लपुरम, केरल

तेलंगाना के साहित्यिक दिग्गज
30 जून 2017, हैदराबाद

निशात किश्तवारी पर परिसंवाद
20 जुलाई 2017, किश्तवार, जम्मू कश्मीर

गुजराती कविता में प्रकृति का चित्रण : रूमानी, आधुनिक तथा पर्यावरण
22 जुलाई 2017, वल्लभ विद्यानगर, गुजरात

छंद-पाठ की परंपरा
25 जुलाई 2017, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

हरिचरण बंद्योपाध्याय
26 जुलाई 2017, कोलकाता

उर्दू उपन्यासों की बदलती प्रवृत्तियाँ
29 जुलाई 2017, बेंगळूरु

बोडो लेखन
29-30 जुलाई 2017, दोइमुख, अरुणाचल प्रदेश

महिला लेखन के विशेष संदर्भ के साथ असमिया साहित्य में महिला सशक्तीकरण का प्रतिबिंब
6 अगस्त 2017, गुवाहाटी, असम

विशाखा जिला कथा साहित्यम
8 अगस्त 2017, विज़ाग, आंध्र प्रदेश

सा. विश्वनाथन (सावि)
11 अगस्त 2017, चेन्नै, तमिलनाडु

राजस्थानी दलित लेखन
12 अगस्त 2017, उदयपुर, राजस्थान

ईश्वर पेटलिकर
12 अगस्त 2017, आणंद, गुजरात

एस.आर. एक्कुंदी का काव्य
13 अगस्त 2017, रायचुरु, कर्नाटक

राजस्थानी महिला लेखन
13 अगस्त 2017, उदयपुर, राजस्थान

भारत की स्वतंत्रता के 70 वर्ष के अवसर पर 'मेरे लिए स्वतंत्रता का अर्थ'
15 अगस्त 2017, दिल्ली

जन्मशतवार्षिकी : ना. वनममलै
22 अगस्त 2017, पलयमकोट्टै, तमिलनाडु

डोगरी ग़ज़ल
27 अगस्त 2017, जम्मू

भारतीय लोक आख्यान : विषय और शैलियाँ
30 अगस्त 2017, मल्लपुरम, केरल

समकालीन मणिपुरी साहित्य पर मणिपुरी संस्कृति का प्रतिबिंब
2 सितंबर 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

पूर्व तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों का लोक साहित्य : निरंतरता, विचलन तथा विलय
4 सितंबर 2017, देवघर, झारखंड

सिंधी लेखिकाओं का समकालीन साहित्य
10 सितंबर 2017, अहमदाबाद, गुजरात

समकालीन मैथिली उपन्यास की प्रवृत्तियाँ
10 सितंबर 2017, राँची, झारखंड

महाराष्ट्र में उर्दू अदब की मौजूदा सूरत-एहाल
16 सितंबर 2017, पुणे, महाराष्ट्र

मणिशंकर रतनजी भट्ट 'कांत'
16 सितंबर 2017, अहमदाबाद

प्रकृति और साहित्य के मध्य अंतर-संबंध
19 सितंबर 2017, दिल्ली

महार्षि देवेंद्रनाथ टैगौर
20 सितंबर 2017, कोलकाता

जन्मशतवार्षिकी : राहुल सांकृत्यायन
21 सितंबर 2017, दिल्ली

साहित्य और मीडिया
23 सितंबर 2017, उड़पी, कर्नाटक

बोडो कहानी और नाटक में आधुनिक प्रवृत्तियाँ
25 सितंबर 2017, कर्बी, अंगलांग, असम

जन्मशतवार्षिकी : हिंदी नवजागरण और शिवपूजन सहाय
26 सितंबर 2017, दिल्ली

कोंगु क्षेत्र का आधुनिक साहित्य सृजन
26 सितंबर 2017, कोयंबटूर, तमिलनाडु

आजाचि मराठी कादंबरी
28 सितंबर 2017, उस्मानाबाद, महाराष्ट्र

विनोदी कोंकणी साहित्य : एक चिकित्सक अभ्यास
28 सितंबर 2017, गोवा

विशुद्ध तमिल आंदोलन तथा विशुद्ध तमिल साहित्य
11 अक्तूबर 2017, इरोड, तमिलनाडु

मराठी साहित्य पर भक्ति संप्रदाय का प्रभाव
11 अक्तूबर 2017, बुलदाना, महाराष्ट्र

युग का साहित्यशास्त्र
13-14 अक्तूबर 2017, अहमदाबाद

पंजाबी मीडिया की भाषा : विचारधारा एवं बनावट
14 अक्तूबर 2017, जालंधर, पंजाब

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में समकालीन तेलुगु कविता
29 अक्तूबर 2017, गुंटूर, आंध्र प्रदेश

भारतीय साहित्य में राष्ट्रीय एकता
31 अक्तूबर 2017, दिल्ली

लेखन की उपसंस्कृतियाँ : ओ.वी. विजयन की कला और विचार
2 नवंबर 2017, मालाप्पुरम, केरल

मणिपुरी साहित्य में यात्रा संस्मरण
3 नवंबर 2017, सिलचर, असम

भारतीय नेपाली साहित्य में महिला नाट्यकारों का योगदान
4 नवंबर 2017, कालेबुङ, पश्चिम बंगाल

भारतीय नेपाली साहित्य में मिथक
5 नवंबर 2017, खरसाङ, पश्चिम बंगाल

कुट्टिपुष्पा कृष्ण पिल्लै
7 नवंबर 2017, अलुवा, केरल

वी.जी. भट का साहित्यिक योगदान
12 नवंबर 2017, होन्नावर, कर्नाटक

मणिपुरी साहित्य की वर्तमान प्रवृत्तियाँ
12 नवंबर 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

के.पी. नारायण पिशारोतो का संस्कृत तथा भारतीय रंगमंच परंपरा को योगदान
17 नवंबर 2017, कालडी, केरल

तिरूलोगा सीताराम
18 नवंबर 2017, त्रिची, तमिलनाडु

आधुनिक तमिल साहित्य में हाशिए का लेखन
24 नवंबर 2017, विल्लुपुरम, तमिलनाडु

समकालीन डोगरी साहित्य में लोक साहित्य की प्रतिध्वनियाँ
26 नवंबर 2017, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

तेलुगु-कन्नड शैव साहित्यम : सामाजिक परिप्रेक्ष्य
27 नवंबर 2017, बेंगळूरु

सिंधी लेखिकाओं का समकालीन साहित्य
28 नवंबर 2017, आदिपुर, गुजरात

जन्मशतवार्षिकी : एम.पी. सनकुन्नी नायर
29 नवंबर 2017, कालीकट, केरल

समकालीन संताली एकांकी
2 दिसंबर 2017, रायरंगपुर, ओड़िशा

गुजरात का सागर साहित्य
4 दिसंबर 2017, कच्छ, गुजरात

टी.एन. गोपीनाथन नायर का लेखन
14 दिसंबर 2017, एडापल, केरल

कोंकणी में यात्रा-साहित्य
15 दिसंबर 2017, गोवा

संस्कृत और आदिवासी संस्कृति
16 दिसंबर 2017, भुवनेश्वर

लोकसाहित्य पर परिसंवाद
4 जनवरी 2018, कोयंबटूर, तमिलनाडु

कारिसल साहित्य
6 जनवरी 2018, सत्तुर, तमिलनाडु

समकालीन मराठी साहित्य पर लोक साहित्य का प्रभाव
22 जनवरी 2018, अमरावती, महराष्ट्र

साहित्यिक समालोचना
23 जनवरी-2018, कोट्टयम, केरल

दिनेश चंद्र सेन की 150वीं जयंती
30 जनवरी 2018, मालदा, पश्चिम बंगाल

शिवराम कारंथ : जीवन और कृतित्व
3 फ़रवरी 2018, मूदुबिद्रे, कर्नाटक

जन्मशतवार्षिकी : विनय घोष
6 फ़रवरी 2018, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर वर्तमान में स्त्री स्वातंत्र्य की चुनौतियाँ
8 मार्च 2018, दिल्ली

बोडो लोकगीत एवं नृत्य
20 मार्च 2018, असम

मैथिली एवं बाङ्ला : परस्पर संबंध
23 मार्च 2018, कोलकाता

मेरे झरोखे से

सुपरिचित बोडो लेखक डॉ. अनिल बोरो द्वारा प्रख्यात बोडो कवि श्री अरबिंद उजीर के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
29 अप्रैल 2017, गुवाहाटी

श्री नईम कौसर द्वारा प्रख्यात उर्दू कवि श्री निदा फाज़ली के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
29 अप्रैल 2017, भोपाल

प्रख्यात संस्कृत लेखक डॉ. कमलेश दत्त त्रिपाटी द्वारा प्रख्यात संस्कृत लेखक डॉ. श्रीनिवास रथ के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
27 मई 2017, उज्जैन, मध्यप्रदेश

प्रख्यात बाङ्ला लेखक डॉ. सुधीर दत्त द्वारा प्रख्यात बाङ्ला कवयित्री डॉ. गीता चट्टोपाध्याय के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
30 मई 2017, कोलकाता

प्रख्यात संस्कृत विद्वान डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा प्रख्यात संस्कृत लेखक डॉ. बच्चुलाल अवस्थी के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
27 जून 2017, उज्जैन, मध्य प्रदेश

सुपरिचित असमिया लेखक डॉ. कमालुद्दीन अहमद द्वारा प्रख्यात असमिया लेखक डॉ. हीरेंद्रनाथ दत्त के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
9 जुलाई 2017, गुवाहाटी, असम

सुपरिचित कश्मीरी लेखक श्री बशीर भद्रवाही द्वारा डॉ. वफ़ा भद्रवाही के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
18 जुलाई 2017, किश्तवार, जम्मू-कश्मीर

विख्यात मणिपुरी लेखक डॉ. के. शांतिबाला देवी द्वारा डॉ. अरबम मेमचोबी देवी के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
22 जुलाई 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

सुपरिचित डोगरी लेखक डॉ. मोहन सिंह द्वारा प्रख्यात डोगरी कवि वेदपाल सिंह के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
26 अगस्त 2017, जम्मू

प्रख्यात हिंदी लेखक डॉ. प्रयाग शुक्ल द्वारा प्रतिष्ठित हिंदी लेखक महेंद्र भल्ला के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
11 सितंबर 2017, दिल्ली

विख्यात सिंधी लेखिका सुश्री सीमा गुरनानी द्वारा प्रख्यात सिंधी लेखक श्री लखमी खिलाणी के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
6 नवंबर 2017, आदिपुर, गुजरात

विख्यात डोगरी लेखक श्री सुशील बेगाना द्वारा प्रख्यात डोगरी लेखक श्री सुरेंद्र सिंह मन्हास के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
25 नवंबर 2017, उधमपुर, जम्मू-कश्मीर

अनुवाद कार्यशालाएँ

महिला लेखन पर अनुवाद कार्यशाला
30 जून-2 जुलाई 2017, जयपुर

ओड़िया-राजस्थानी अनुवाद कार्यशाला
14-16 जुलाई 2017, जोधपुर, राजस्थान

ताइ-फाके-असमिया अनुवाद कार्यशाला
7-9 अगस्त 2017, डिब्रूगढ़, असम

क्षेत्रीय भाषाओं की चुनिंदा कविताओं का गुजराती अनुवाद
14-15 सितंबर 2017, भुज

अंग्रेज़ी-पंजाबी अनुवाद कार्यशाला
22-24 सितंबर 2017, चंडीगढ़

डोगरी एवं कश्मीरी से मणिपुरी अनुवाद कार्यशाला
27-29 अक्तूबर 2017, श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर

मलयाळम्-कश्मीरी अनुवाद कार्यशाला
11-13 दिसंबर 2017, कोचि, केरल

वाचिक और जनजातीय साहित्य कार्यक्रम

जनजातीय (हो) लेखक सम्मिलन
22 अप्रैल 2017, क्योंझार

जनजातीय (कुइ) लेखक सम्मिलन
10 जून 2017, कंधमाल, ओड़िशा

अखिल भारतीय संताली काव्योत्सव
11-12 अगस्त 2017, विशाखापत्तनम

अखिल भारतीय आदिवासी महिला लेखक सम्मिलन
7-8 सितंबर 2017, राँची, झारखंड

कार्बी की भाषिकी पृष्ठभूमि तथा वाचिक साहित्य पर संगोष्ठी
23-24 सितंबर 2017, डिफू, असम

गुजराती एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य गोष्ठी
8 अक्तूबर 2017, अहमदाबाद

मणिपुरी वाचिक कविता : प्रस्तुति तथा सौंदर्यपरकता पर परिसंवाद
4 नवंबर 2017, सिलचर, मणिपुर

जनजातीय और दलित साहित्य के विकास में लघु पत्रिकाओं के योगदान पर संगोष्ठी
25-26 नवंबर 2017, दिल्ली

भारत में जनजातीय साहित्य : प्रकृति और परंपराएँ पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
25-26 नवंबर 2017, मुंबई

ओड़िशा की जनजातीय भाषा और साहित्य पर परिसंवाद
5 जनवरी 2018, संबलपुर, ओड़िशा

जनजातीय और वाचिक साहित्य : वर्तमान परिदृश्य
23-23 फ़रवरी 2018, दिल्ली

साहित्य मंच : प्रख्यात मराठी लेखक डॉ. रामदास भटकल ने समकालीन पठन-संस्कृति पर व्याख्यान दिया
12 मार्च 2018, मुंबई

लेखक सम्मिलन

दलित लेखक सम्मिलन
14 अप्रैल 2017, नई दिल्ली

उर्दू कवि सम्मिलन
29 अप्रैल 2017, भोपाल

कवि सम्मिलन
13 मई 2017, चेन्नै

युवा लेखक सम्मिलन
27-28 मई 2017, मुंबई

लेखक सम्मिलन
3-4 अगस्त 2017, शिलाँग, मेघालय

द्विदिवसीय बोडो उत्सव
5-6 अगस्त 2017, रंगिया

कार्बी तथा क्षेत्र की अन्य भाषाओं का कवि सम्मेलन
23-24 सिंतबर 2017, डिफू, असम

कवि सम्मिलन
22 अक्तूबर 2017, काकचिंग, मणिपुर

पूर्वी क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन
24-25 अक्तूबर 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

कवि सम्मिलन (शरद रंग उत्सव)
27 अक्तूबर 2017, उदयपुर

सिंधी युवा लेखक सम्मिलन
5-6 नवंबर 2017, आदिपुर

कवि सम्मिलन (हिंदी कवि सम्मिलन)
24 नवंबर 2017, दिल्ली

अखिल भारतीय युवा लेखक उत्सव
23-24 दिसंबर 2017, चंडीगढ़

युवा मिज़ो कवियों का द्विदिवसीय दूसरा काव्योत्सव
18-19 जनवरी 2018, आइज़ोल

लेखक सम्मिलन : एक अंतराफलकः रूस और बंगाल
3 फ़रवरी 2018, कोलकाता

बोडो कवि सम्मिलन
19 फ़रवरी 2018 असम

कविता उत्सव : 2018
22-23 फ़रवरी 2018, शांतिनिकेतन, कोलकाता

युवा बोडो लेखक उत्सव
18 मार्च 2018, कोकराझार

अखिल भारतीय कवि सम्मिलन
15-16 मार्च 2018, आइज़ोल, मिज़ोराम

कवि सम्मिलन
8 मार्च 2018, दिल्ली

अखिल भारतीय काव्योत्सव
21 मार्च 2018, दिल्ली

अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन
24-25 मार्च 2018, कोहिमा, नागालैंड

युवा साहिती

युवा साहिती : युवा ओड़िया लेखक
7 अप्रैल 2017, भुवनेश्वर, ओड़िशा

युवा साहिती : विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखक
30 अगस्त 2017, दिल्ली

युवा साहिती : युवा संस्कृत लेखक
23 अक्तूबर 2017, दिल्ली

युवा साहिती : युवा लेखकों द्वारा बहुभाषी कविता-पाठ
20 नवंबर 2017, दिल्ली

युवा साहिती : विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखक
11 जनवरी 2018

2017-2018 में आयोजित शासकीय निकाय, भाषा परामर्श मंडलों एवं क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें

कार्यकारी मंडल की बैठकें

तिथि	स्थान
21 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली
22 जून 2017	गुवाहाटी
21 दिसंबर 2017	नई दिल्ली
22 मार्च 2018	नई दिल्ली

सामान्य परिषद् की बैठकें

तिथि	स्थान
22 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली
22 जून 2017	गुवाहाटी
20 दिसंबर 2017	नई दिल्ली
12 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली

वित्त समिति की बैठकें

तिथि	स्थान
13 जून 2017	नई दिल्ली
19 दिसंबर 2017	नई दिल्ली

क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें (2017-2018)

उत्तरी क्षेत्रीय मंडल	18 मई 2017	नई दिल्ली
पूर्वी क्षेत्रीय मंडल	6 मई 2017	कोलकाता
पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल	9 मई 2017	मुंबई
दक्षिणी क्षेत्रीय मंडल	15 अप्रैल 2017	हैदराबाद

परियोजना एवं योजनाएँ

अभिलेखागार परियोजना

साहित्य के क्षेत्र में अभिलेखन के महत्त्व और उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादेमी ने मार्च 1997 में भारतीय साहित्य के अभिलेखागार की एक परियोजना प्रारंभ की। जब अभिलेखागार पूरी तरह से बन जाएगा तो यह लेखकों और साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्र और संरक्षित करेगा, जैसे कि पांडुलिपियाँ, चित्र, ऑडियो रिकार्डिंग, वीडियो रिकॉर्डिंग और प्रतिकृतियाँ (शबीह) आदि। पूरे भारतवर्ष में संस्थाओं और व्यक्तियों के पास उपलब्ध वीडियो फ़िल्म एवं फ़ुटेज़, लेखकों की पांडुलिपियाँ, लेखकों के मध्य हुए रोचक पत्राचार एवं साक्षात्कार और पाठ के उपलब्ध ऑडियो रिकॉर्डिंग को इकट्ठा कर यह भारतीय साहित्य के संग्रहालय के लिए एक ठोस आधार तैयार करेगा। अभिलेखागार में कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण चित्रों को सीडी-रोम्स पर स्कैन करने और संरक्षित करने का कार्य शुरू कर दिया गया है। लगभग एक सौ चित्रों का चयन कर उन्हें पोर्टफ़ोलियो सीडी में संरक्षित किया गया है।

साहित्य अकादेमी ने फ़िल्मों और भारतीय लेखकों और उनके लेखन से संबंधित वीडियो रिकॉर्डिंग के अभिलेखागार की परियोजना पर कार्य प्रारंभ किया है। अकादेमी द्वारा महत्त्वपूर्ण लेखकों पर बनाई गई फ़िल्मों में उनके चित्रों, आवाज़ों, जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं, जिन्होंने उनके जीवन को बदल दिया, उनके विचारों और सृजनात्मक उपलब्धियों एवं समकालीन प्रतिक्रिया को अभिलेखित करने का प्रयास किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का बीज होगा, जो आम पाठकों के लिए आनंद का विषय होगा और साहित्यिक अनुसंधान-कर्ताओं और इतिहासकारों के लिए उपयोगी होगा। ये फ़िल्में उन निर्देशकों द्वारा निर्मित की गई हैं, जो अपनी तरह के सृजनात्मक कलाकार हैं। अकादेमी के द्वारा अब तक 124 लेखकों पर वीडियो फ़िल्में बनाई गई हैं। इनमें से कुछ फ़िल्मों की सीडी बिक्री के लिए भी उपलब्ध हैं।

अकादेमी से किए जानेवाले पत्राचार की समीक्षा की गई है तथा जवाहरलाल नेहरू, एस. राधाकृष्णन, कृष्ण कृपलानी, ज़ाकिर हुसैन, सी. राजगोपालचारी एवं अन्य प्रख्यात व्यक्तियों के पत्रों को लैमिनेट कराकर संरक्षण हेतु पुस्तक रूप में तैयार किया गया है। समस्त मास्टर बीटा फ़िल्मों के डिज़िटाइज़ेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। 2013 तक की ऑडियो टेप्स की प्रामाणिकता को जाँचने के उपरांत उनके क्रमांकन, शीर्षक एवं सूची बनाने का कार्य पूरा कर लिया गया है।

एक और महत्त्वपूर्ण कार्य के रूप में अकादेमी ने इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) के साथ अपने अभिलेखागार के ऑडियो/वीडियो और अन्य सामग्रियों के डिज़िटाइज़ेशन के लिए एक क़रार किया है। तदनुसार कार्य प्रगति पर है।

नेशनल बिब्लियोग्राफ़ी ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की कार्यकारी मंडल की 19 अगस्त 2002 को हुई बैठक में लिए गए निर्णय के अनुरूप, एन.बी. आई.एल. की दूसरी शृंखला में सन् 1954-2000 तक का काल खंड सम्मिलित है। यह पुस्तक विद्वानों, पुस्तकालय के पाठकों, प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं तथा उन व्यक्तियों के लिए कारगर सिद्ध होगी, जो पुस्तकों को संदर्भिका के रूप में देखने की रुचि रखते हैं।

इसकी दूसरी शृंखला में, 1 जनवरी 1954 से 31 दिसंबर 2000 तक के मध्य प्रकाशित साहित्यिक महत्त्व एवं साहित्य के क्षेत्र और अन्य विषयों में स्थायी मूल्यों को वहन करनेवाली पुस्तकें सम्मिलित हैं।

इस परियोजना के अंतर्गत 22 भारतीय भाषाओं की ग्रंथ-सूची का संकलन बनाने की योजना है। इस संदर्भ में 22 भाषाओं के विशेषज्ञों को अनुबंधित किया गया है। उक्त कार्य संकलन के विभिन्न स्तरों पर है।

अनुवाद केंद्र

चूँकि अनुवाद अकादेमी की गतिविधियों में से एक प्रमुख गतिविधि है, अकादेमी ने बेंगळूरु में अनुवाद केंद्र तथा कोलकाता में पूर्व क्षेत्र अनुवाद केंद्र स्थापित किए हैं। ये केंद्र उन क्षेत्रों की भाषाओं से अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं में अनूदित पुस्तकों की विशेष शृंखला का प्रकाशन करेंगे।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों में इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर का निर्माण भी है। यह अपनी तरह की पहली योजना है, जिसमें भारत की बाईस भाषाओं को शामिल किया गया है। अंग्रेज़ी में प्रस्तुत इस विश्वकोश से भारतीय साहित्य की अभिवृद्धि और विकास की व्यापक रूपरेखा सामने आई है। लेखकों, पुस्तकों और सामान्य विषयों पर लिखित प्रविष्टियों को संबद्ध परामर्श मंडलों द्वारा सुव्यवस्थित किया गया और एक संचालन समिति द्वारा अंतिम रूप दिया गया है। देश भर के सैकड़ों लेखकों ने विभिन्न विषयों पर प्रविष्टियाँ भेजी हैं। यह विश्वकोश, जिसे छह खंडों की परियोजना के रूप में नियोजित किया गया, प्रकाशित है। डिमाई क्वार्टो आकार के प्रत्येक खंड में लगभग 1000 पृष्ठ हैं।

इनसाइक्लोपीडिया के संशोधन का कार्य प्रो. के. अय्यप्प पणिक्कर के संपादन में शुरू किया गया था। वर्तमान में प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी इस परियोजना के प्रधान संपादक के रूप में संबद्ध हैं। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय खंडों के संशोधित संस्करण प्रकाशित किए जा चुके हैं। चतुर्थ खंड का कार्य साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता की देखरेख में हो रहा है।

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

अकादेमी की इस परियोजना का उद्देश्य है विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के अंतर्गत विभिन्न कालों में भारत में साहित्यिक गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना। प्रो. शिशिर कुमार दास द्वारा लिखित सन् 500 से 1300, 1800 से 1910 और सन् 1911 से 1956 तक के कालखंड को समेटनेवाले तीन खंडों का प्रकाशन हो चुका है।

द्विभाषी शब्दकोश परियोजना

सन् 2004 में साहित्य अकादेमी ने कई द्विभाषी शब्दकोशों का संकलन तैयार करने हेतु एक परियोजना का शुभारंभ किया। प्रथम चरण में बाङ्ला-असमिया, बाङ्ला-ओड़िया, बाङ्ला-मैथिली, बाङ्ला-मणिपुरी तथा बाङ्ला-संताली शब्दकोश लाने का निर्णय लिया गया। प्रत्येक शब्दकोश के लिए प्रख्यात विद्वानों, कोशकारों तथा विभिन्न भाषाओं के भाषा विशेषज्ञों का एक संपादन मंडल तैयार किया गया है। पांडुलिपि तैयार करने एवं आगामी प्रकाशन संबंधी दिशा निर्देश तथा उसकी निगरानी के लिए एक केंद्रीय संपादन मंडल का भी गठन किया गया।

यह पाया गया कि पूर्वोत्तर भारत की लगभग समस्त भाषाओं में अंग्रेज़ी की एकल तथा अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं के शब्दकोश तो कमोबेश उपलब्ध हैं, किंतु बाङ्ला-मणिपुरी अथवा मणिपुरी-असमिया आदि भाषाओं के शब्दकोश लगभग न के बराबर हैं। साहित्य अकादेमी पड़ोसी राज्यों के बीच आपसी संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ करने के प्रयासों के चलते साहित्यिक कृतियों का अनुवाद एक भाषा से अन्य भाषाओं में करवाकर, कर रही है। किंतु समुचित मात्रा में शब्दकोशों की अनुपलब्धता एक बाधा बन चुकी है तथा अनुवादकों के पास अनुवाद कार्य हेतु विश्वसनीय शब्दकोश नहीं हैं। इस परिस्थिति में साहित्य अकादेमी ने शब्दकोश निर्माण की परियोजना को प्रारंभ किया।

ये शब्दकोश औसत आकार के होंगे, जिनमें 40000-45000 शब्दों तथा वाक्यांशों की प्रविष्टि होगी। विवरण के अंतर्गत आई.पी.ए. (इंटरनेशनल फोनेटिक ऐसोसिएशन) के अंतर्गत उच्चारण चिह्न संस्कृत, अरबी आदि भाषा संबंधी स्रोत; शब्द-भेद, विस्तृत अर्थ (एक से अधिक, यदि आवश्यक हो तो) उदाहरण, व्युत्पत्ति आदि दिया जाना प्रस्तावित है। इस संपूर्ण परियोजना को प्रख्यात कोशकार प्रो. अशोक मुखोपाध्याय के संपादकीय निर्देशन में तैयार किया जा रहा है।

परियोजना के प्रथम द्विभाषी बाङ्ला-मैथिली शब्दकोश का 1 मई 2012 को लोकार्पण किया गया। बाङ्ला-संताली द्विभाषी शब्दकोश को 14 अगस्त 2012 को लोकार्पित किया गया। बाङ्ला-मणिपुरी शब्दकोश प्रकाशित हो चुका है तथा बाङ्ला-असमिया शब्दकोश इसी वर्ष प्रकाशित होने की संभावना है। बाङ्ला-नेपाली, संताली-ओड़िया, मैथिली-ओड़िया तथा मैथिली-असमिया द्विभाषी शब्दकोशों के संकलन का कार्य प्रगति पर है।

जनजातीय तथा वाचिक साहित्य केंद्र

भारत के व्यापक जनजातीय एवं वाचिक साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से साहित्य अकादेमी द्वारा दो केंद्रों की स्थापना की गई है, इंफ़ाल में उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र (NECOL) तथा नई दिल्ली में वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT)।

उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रकाशनों एवं रिकॉर्डिंग द्वारा पूर्वोत्तरी वाचिक भाषाओं के कार्यों एवं वहाँ के साहित्य को प्रोत्साहित करना है। यह केंद्र लोक उत्सव, आदिवासी भाषाओं में रचना पाठ, साहित्य मंच, संगोष्ठी, परिसंवाद, कार्यशालाओं आदि का आयोजन करता रहता है। यह केंद्र पूर्वोत्तरी वाचिक साहित्य को अन्य मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं में भी अनूदित करवाता है। यह केंद्र पूर्वोत्तरी जनजातीय भाषाओं को अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं से निरंतर कार्यक्रमों के आयोजनों द्वारा मिलाने का कार्य भी करता है। यहाँ से लेपचा, कॉकबरक, मिसिंग, बोंगचेर, गारो तथा मोग भाषाओं से अंग्रेज़ी में कई अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT) देशभर के वाचिक एवं जनजातीय साहित्य को संकलित,

संरक्षित और प्रोत्साहित करने का कार्य कार्यक्रमों एवं प्रकाशनों के माध्यम से करता है। यह केंद्र वाचिक साहित्य के डिज़िटल अभिलेख मंच 'स्वर सदन' के सृजन में भी सक्रियता से संलग्न है।

पुस्तकालय

साहित्य अकादेमी पुस्तकालय 24 भाषाओं की पुस्तकों में साहित्य, समालोचना, दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा उससे संबंधित विषयों की पुस्तकों के समृद्ध संग्रह के साथ अपनी तरह का अनूठा पुस्तकालय है। अकादेमी पुस्तकालय सक्रिय एवं प्रशंसक पाठकों (कुल 13597 पंजीकृत सदस्य) द्वारा दिल्ली में सर्वाधिक प्रयोग किया जाने वाला पुस्तकालय है। वर्ष 2017-2018 में पुस्तकालय के 378 नए सदस्य बने हैं तथा 1147 नई पुस्तकें पुस्तकालय हेतु ख़रीदी गईं। पुस्तकालय के प्रधान कार्यालय का कुल संग्रह 1,73,000 से भी अधिक है तथा अकादेमी के समस्त क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को मिलाकर 2.5 लाख (लगभग) के करीब कुल पुस्तकें हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए अकादेमी पुस्तकालय के वेब पेज को नया रूप दिया गया है। वेब ओपीएसी (WebOPAC) को अधिक यूज़र फ्रेंडली बनाने के लिए अनुकूलित किया गया है। पाठकों तथा स्टॉफ सदस्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिज़िटल लाइब्रेरी (साहित्य सागर) का भी निर्माण किया गया है। अब 24 भाषाओं की पुस्तकों की कैटलॉगिंग को पूर्ण रूप से कंप्यूटरीकृत किया जा चुका है तथा वेब ओपैक (WebOPAC) के माध्यम से अकादेमी की वेबसाइट www.sahitya-akademi-gov.in पर ऑनलाइन ढूँढ़ा जा सकता है। समस्त भाषाओं की पुस्तकों की ऑन-लाइन कैटलॉगिंग का काम किया जा चुका है। इन खंडों के ऑटोमेशन होने के साथ पुस्तकालय कम समय में ग्रंथ-सूची उपलब्ध करा सकता है। ''हूज़' हू ऑफ़ इंडियन राईटर्स'' जैसी महत्त्वपूर्ण परियोजना का कार्य पुस्तकालय स्टाफ़ द्वारा संपन्न किया जा चुका है तथा हमारी वेबसाइट www.sahitya-akademi-gov.in/sahitya-akadmi/SA Search system/sauses पर उपलब्ध है। 'क्रिटिकल इन्वेंट्री ऑफ़ नार्थ-ईस्टर्न ट्राइबल लिटरेचर' के द्वितीय खंड के संकलन का काम अभी चल रहा है, जिसे साहित्य अकादेमी द्वारा शीघ्र प्रकाशित किया जाएगा।

पुस्तकालय भारतीय साहित्य पर लिखित अंग्रेज़ी भाषा के आलेख, जो उसकी पत्रिका पर आधारित हैं, के क्रमांकन का कार्य भी करता है। यह डाटाबेस पुस्तकालय के पाठकों के लिए भी उपलब्ध है।

पुस्तकालय ने पाठकों के लाभ को ध्यान में रखते हुए अपनी नई सेवा को जारी रखा है, जिसमें समाचार-पत्र की कतरनों, पुस्तक समीक्षाओं तथा ज्वलंत मुद्दों को प्रदर्शित किया जाता है।

क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए प्रत्येक वर्ष नियमित रूप से पुस्तकों की ख़रीद की जाती है। क्षेत्रीय कार्यालयों कोलकाता, बेंगळूरु तथा मुंबई पुस्तकालयों ने अपने संग्रहण के रेट्रोकंवर्जन का कार्य शुरू कर दिया है। इन पुस्तकालयों के कैटलॉग सिंगल विंडो वेब ओपैक (WebOPAC) के माध्यम से प्राप्य हैं, जो यूनियन कैटलॉग के रूप में पुस्तकों की स्थानानुसार उपलब्धता की सूचना प्रदान करते हैं।

पुस्तक मेला एवं पुस्तक प्रदर्शनियों की सूची–आयोजन एवं सहभागिता : 2017-2018

प्रधान कार्यालय

क्र.स.	प्रदर्शनी का विवरण	तिथि
1.	अलवर, राजस्थान	15-19 अप्रैल 2017
2.	एक्सपो मार्ट, ग्रेटर नोएडा	17-20 अप्रैल 2017
3.	अमृतसर पुस्तक मेला	21-30 अप्रैल 2017
4.	लालन शाह फ़क़ीर पुस्तक विमोचन, नई दिल्ली	6 मई 2017
5.	दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, नई दिल्ली	17-19 मई 2017
6.	दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, नई दिल्ली	24-26 मई 2017
7.	डोगरी संगोष्ठी, जम्मू	17-18 जून 2017
8.	गजानन माधव मुक्तिबोध जन्मशतवार्षिकी, राजानंद गाँव	27-28 जून 2017
9.	फरीदाबाद पुस्तक मेला	27-30 जुलाई 2017
10.	उदयपुर में परिसंवाद	12-13 अगस्त 2017
11.	दिल्ली पुस्तक मेला	26 अगस्त-3 सितंबर 2017
12.	देहरादून पुस्तक मेला, नई दिल्ली	28 अगस्त-5 सितंबर 2017
13.	लखनऊ पुस्तक मेला	8-17 सितंबर 2017
14.	राँची पुस्तक मेला	8-17 सितंबर 2017
15.	वाराणसी पुस्तक मेला	9-17 सितंबर 2017
16.	नई दिल्ली पुस्तक प्रदर्शनी	9-17 सितंबर 2017
17.	जामिया मिल्लिया इस्लामिया कार्यक्रम	28-29 अक्तूबर 2017
18.	बाल रंगमंच उत्सव	3-7 नवंबर 2017
19.	पंजाबी साहित्य अकादेमी, लुधियाना	5-9 नवंबर 2017
20.	मैथिली संगोष्ठी, पटना	12-13 नवंबर 2017
21.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, नोएडा	14-19 नवंबर 2017
22.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, नई दिल्ली	14-20 नवंबर 2017
23.	साहित्य मंच, नई दिल्ली	17 नवंबर 2017
24.	इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद	21-15 नवंबर 2017
25.	पटना पुस्तक मेला	2-11 दिसंबर 2017
26.	एटा पुस्तक मेला	8-10 दिसंबर 2017

27.	आज़मगढ़ पुस्तक मेला	29 नवंबर-5 दिसंबर 2017
28.	जश्न-ए-रेख़्ता कार्यक्रम, नई दिल्ली	8-10 दिसंबर 2017
29.	ग़ालिब इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली	23-25 दिसंबर 2017
30.	मैथिली लेखक संघ कार्यक्रम, नई दिल्ली	24 दिसंबर 2017
31.	नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला	6-14 जनवरी 2018
32.	मेगा बुक फ़ेयर, नई दिल्ली	27 जनवरी-2 फ़रवरी 2018
33.	गया पुस्तक मेला	10-18 फ़रवरी 2018
34.	अंतरराष्ट्रीय कला उत्सव	4-18 फ़रवरी 2018
35.	पंचायत पुस्तक मेला, श्रीनगर	23-27 फ़रवरी 2018
36.	साहित्योत्सव, नई दिल्ली	12-17 फ़रवरी 2018
37.	थिएटर ओलंपियाड, नई दिल्ली	20 फ़रवरी-18 मार्च 2018
38.	आगरा पुस्तक मेला	10-18 मार्च 2018
29.	मैथिली साहित्योत्सव, नई दिल्ली	10-18 मार्च 2018

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

1.	धनबाद पुस्तक मेला 2017	2-9 अप्रैल 2017
2.	भुवनेश्वर पुस्तक मेला 2017	5-16 अप्रैल 2017
3.	नववर्ष पुस्तक मेला 2017	11-19 अप्रैल 2017
4.	8वाँ बराकपुर पुस्तक मेला	20 अप्रैल से 01 मई 2017
5.	असम साहित्य सभा पुस्तक प्रदर्शनी	21-23 अप्रैल 2017
6.	क्योंझर एवं जमशेदपुर पुस्तक प्रदर्शनी	22-24 अप्रैल 2017
7.	दार्जीलिङ पुस्तक प्रदर्शनी	29-30 अप्रैल 2017
8.	ओड़िया कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, भुवनेश्वर, ओड़िशा	11-14 मई 2017
9.	दरभंगा पुस्तक प्रदर्शनी	13-14 मई 2017
10.	फूलबनी जनजातीय पुस्तक प्रदर्शनी	10 जून 2017
11.	नेपाली पुस्तक प्रदर्शनी, शिलाँग	11 जून 2017
12.	गुवाहाटी पुस्तक प्रदर्शनी	22-24 जून 2017
13.	गुवाहाटी पुस्तक प्रदर्शनी, गौहाटी विश्वविद्यालय	29-30 जून 2017
14.	नारायण गंगोपाध्याय संगोष्ठी के साथ द्विदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, क्षे.का., कोलकाता	13-14 जुलाई 2017
15.	हरिचरण बंद्योपाध्याय परिसंवाद के साथ एक दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, क्षे.का. कोलकाता	26 जुलाई 2017

16.	भारतीय राष्ट्रीय प्रदर्शनी सह मेला 2017, गरिया, कोलकाता	17-20 अगस्त 2017
17.	रमेश झा महिला कॉलेज में मैथिली संगोष्ठी के साथ द्विदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, सहरसा	2-3 सितंबर 2017
18.	अखिल भारतीय जनजातीय महिला लेखक सम्मेलन के साथ द्विदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, राँची	7-8 सितंबर 2017
19.	मैथिली कार्यक्रम के साथ एक दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, राँची	10 सितंबर 2017
20.	गोपाल छोटराय पर संगोष्ठी के साथ एक दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी	17 सितंबर 2017
21.	पूर्वी भारतीय साहित्य में विस्थापन की भावना पर संगोष्ठी के साथ द्विदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, भुवनेश्वर	18-19 सितंबर 2017
22.	20वाँ कलिंग पुस्तक मेला 2017	27 अक्तूबर से 5 नवंबर 2017
23.	19वाँ पूर्वोत्तर पुस्तक मेला 2017	3-14 नवंबर 2017
24.	बराक पुस्तक मेला 2017	3-12 नवंबर 2017
25.	शिवसागर पुस्तक मेला 2017	4-14 नवंबर 2017
26.	समर सेन पर संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, क्षे.का. कोलकाता	6-7 नवंबर 2017
27.	7वाँ एकमरा पुस्तक मेला 2017	10-20 नवंबर 2017
28.	भुवनेश्वर पुस्तक मेला 2017	11-22 नवंबर 2017
29.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह पुस्तक प्रदर्शनी, क्षे.का. कोलकाता	14-20 नवंबर 2017
30.	जोरहाट पुस्तक मेला 2017	17-27 नवंबर 2017
31.	डिब्रूगढ़ पुस्तक मेला 2017	1-10 दिसंबर 2017
32.	18वाँ राजधानी पुस्तक मेला 2017	1-12 दिसंबर 2017
33.	संताली कार्यक्रमों के साथ द्विदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी रायरंगपुर तथा बारिपदा	2-3 दिसंबर 2017
34.	नगाँव पुस्तक मेला 2017	12-20 दिसंबर 2017
35.	बेहाला पुस्तक मेला 2017	15-24 दिसंबर 2017
36.	सिमुराली पुस्तक मेला 2017	24-30 दिसंबर 2017
37.	धुबरी पुस्तक मेला 2017	24-27 दिसंबर 2017
38.	31वाँ गुवाहाटी पुस्तक मेला 2017	22 दिसंबर 2017 से 2 जनवरी 2018
39.	चौथा न्यू टाउन बुक फ़ेयर 2018	4-14 जनवरी 2018
40.	खड़गपुर पुस्तक मेला 2018	6-14 जनवरी 2018
41.	हावड़ा ज़िला पुस्तक मेला 2018	8-14 जनवरी 2018
42.	लघु पत्रिका पुस्तक मेला तथा साहित्य उत्सव	11-15 जनवरी 2018
43.	दूसरा मिज़ो लोक उत्सव पुस्तक प्रदर्शनी	19-20 जनवरी 2018
44.	बीसवाँ संबलपुर पुस्तक मेला	15-24 जनवरी 2018
45.	11वाँ अखिल भारतीय उर्दू पुस्तक मेला 2018	20-28 जनवरी 2018
46.	आर.के. मिशन आश्रम में पुस्तक प्रदर्शनी	26-29 जनवरी 2018
47.	42वाँ कोलकाता पुस्तक मेला 2018	30 जनवरी से 11 फ़रवरी 2018

48.	राउरकेला पुस्तक मेला 2018	1-11 फ़रवरी 2018
49.	जलपाईगुड़ी पुस्तक मेला 2018	15-21 फ़रवरी 2018
50.	22वाँ दार्जीलिङ पुस्तक मेला 2018, पश्चिम बंगाल	1-4 मार्च 2018
51.	सिलिगुड़ी पुस्तक मेला 2018, सिलिगुड़ी, पश्चिम बंगाल	23 फ़रवरी से 4 मार्च 2018
52.	बोडोलैंड पुस्तक मेला 2018, कोकराझार, असम	16-20 मार्च 2018
53.	मैथिली परिसंवाद	23 मार्च 2018

उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

1.	त्रिसूर पुस्तक मेला	1-10 अप्रैल 2017
2.	पुस्तक प्रदर्शनी सह बिक्री तथा कवि सम्मेलन कार्यक्रम	13 मई 2017
3.	नेस्को (NESCO) पुस्तक मेला	22-26 जून 2017
4.	पाँच दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी	25-26 जून 2017
5.	नेयवेली पुस्तक मेला	30 जून से 9 जुलाई 2017
6.	होसूर पुस्तक मेला	30 जून से 10 जुलाई 2017
7.	वेल्लोर पुस्तक मेला	7-16 जुलाई 2017
8.	एयरयालूर पुस्तक मेला	14-23 जुलाई 2017
9.	तंजाउर पुस्तक मेला	14-23 जुलाई 2017
10.	कारूर पुस्तक मेला	21-30 जुलाई 2017
11.	कोयंबटूर पुस्तक मेला	21-30 जुलाई 2017
12.	चेन्नै पुस्तक मेला	21-31 जुलाई 2017
13.	इरोड पुस्तक मेला	4-15 अगस्त 2017
14.	सा. विश्वनाथन (सावी) की जन्मशतवार्षिकी कार्यक्रम में पुस्तक प्रदर्शनी सह बिक्री	11 अगस्त 2017
15.	तिरुवन्नामलै पुस्तक मेला	18-28 अगस्त 2017
16.	ना. वनामामलइ की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद में पुस्तक प्रदर्शनी सह बिक्री	24. अगस्त 2017
17.	मदुरै पुस्तक मेला	1-12 सितंबर 2017
18.	भारतीय महाकाव्यों पर आधारित साहित्य मंच कार्यक्रम में पुस्तक प्रदर्शनी सह बिक्री	19 सितंबर 2017
19.	डीआरबीसीसीसी हिंदू कॉलेज द्वारा आयोजित साहित्यिक कार्यक्रम में पुस्तक प्रदर्शनी सह बिक्री	2 सितंबर 2017
20.	चेन्नै पुस्तक मेला	29 सितंबर से 8 अक्तूबर 2017
21.	गुड़ियाथम पुस्तक मेला	24 सितंबर से 2 अक्तूबर 2017
22.	विल्लुप्पुरम पुस्तक मेला	25 सितंबर से 2 अक्तूबर 2017

23.	टूटीकोरिन पुस्तक मेला	2-11 अक्तूबर 2017
24.	तमिल काव्यशास्त्र तथा छंदशास्त्र पर द्विदिवसीय संगोष्ठी में पुस्तक प्रदर्शनी सह बिक्री	4-5 अक्तूबर 2017
25.	'विशुद्ध तमिल आंदोलन एवं विशुद्ध तमिल साहित्य पर परिसंवाद में पुस्तक प्रदर्शनी सह बिक्री	11 अक्तूबर 2017
26.	'एम. गोपालकृष्ण अय्यर' पर साहित्य मंच कार्यक्रम में पुस्तक प्रदर्शनी सह बिक्री	23 अक्तूबर 2017
27.	कुड्डालोर पुस्तक प्रदर्शनी	10-15 नवंबर 2017
28.	'राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह' के अंतर्गत पुस्तक प्रदर्शनी	14-20 नवंबर 2017
29.	पुस्तक प्रदर्शनी सह बिक्री तथा तिरूलोगा सीताराम की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद	18 नवंबर 2017
30.	कोट्टयम पुस्तक मेला	17-26 नवंबर 2017
31.	पुदुकोट्टै पुस्तक मेला	24 नवंबर से 3 दिसंबर 2017
32.	डिंडिगुल पुस्तक मेला	30 नवंबर से 10 दिसंबर 2017
33.	कोचि अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला	1-10 दिसंबर 2017
34.	चेन्नै पुस्तक मेला	10-22 जनवरी 2018
35.	तिरुप्पूर पुस्तक मेला	25 जनवरी से 4 फ़रवरी 2018
36.	थुनचन पुस्तक मेला	1-4 फ़रवरी 2018
37.	त्रिस्सूर पुस्तक मेला	1-10 फ़रवरी 2018
38.	तिरुनेलवेल पुस्तक मेला	3-11 फ़रवरी 2018
39.	करैकुडी पुस्तक मेला	9-18 फ़रवरी 2018
40.	पेरमबलूर पुस्तक मेला	16-26 फ़रवरी 2018
41.	मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित साहित्यिक कार्यक्रम में पुस्तक प्रदर्शनी सह बिक्री	23 फ़रवरी 2018
42.	कोच्चि अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला	1-11 मार्च 2018
43.	अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित नारी चेतना कार्यक्रम में पुस्तक प्रदर्शनी सह बिक्री	8 मार्च 2018
44.	स्थापना दिवस के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी सह बिक्री	12 मार्च 2018

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

1.	विश्व पुस्तक दिवस कार्यक्रम, बेंगळूरु	23 अप्रैल 2017
2.	साहित्य मंच, बेंगळूरु	29 अप्रैल 2017
3.	संगोष्ठी, तिरुपति	7-8 जुलाई 2017
4.	संगोष्ठी, हारागेरी	17-18 जुलाई 2017

5.	संगोष्ठी, बेंगळूरु	29 जुलाई 2017
6.	साहित्य मंच, बेंगळूरु	30 जुलाई 2017
7.	पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी लेखक सम्मेलन, विजयवाड़ा	13-14 अगस्त 2017
8.	संगोष्ठी, हैदराबाद	28-29 अगस्त 2017
9.	संगोष्ठी, गुंटूर	20-21 सितंबर 2017
10.	संगोष्ठी, उडूपी	23 सितंबर 2017
11.	मैसूर कार्यक्रम	23-24 सितंबर 2017
12.	परिसंवाद, होन्नावरा	12 नवंबर 2017
13.	बाल साहित्य पुरस्कार, विजयवाड़ा	14-16 नवंबर 2017
14.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, मंगलोर	14-20 नवंबर 2017
15.	साहित्य सम्मेलन, मैसूर	24-26 नवंबर 2017
16.	परिसंवाद, बेंगळूरु	27 नवंबर 2017
17.	तेलुगु सम्मेलन	15-19 दिसंबर 2017
18.	संगोष्ठी, बेंगळूरु	6-7 जनवरी 2018
19.	विजयवाड़ा पुस्तक उत्सव	1-12 जनवरी 2018
20.	साहित्य समब्रम, धारवाड़	19-21 जनवरी 2018
21.	संगोष्ठी, मूदिबीद्री	3 फ़रवरी 2018
22.	काक्किनाड पुस्तक उत्सव	10-18 फ़रवरी 2018
23.	संगोष्ठी, बेंगळूरु	16-17 मार्च 2018
24.	संगोष्ठी, विज़ाग	30-31 मार्च 2018
25.	वी.बी. एफ़.एस. द्वारा आयोजित विज़ाग पुस्तक मेला	1-11 दिसंबर 2017

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

1.	परिसंवाद, वड़ोदरा	9-11 जून 2017
2.	कार्यशाला, भावनगर	1-2 जुलाई 2017
3.	लेखक से भेंट, ठाणे	7 जुलाई 2017
4.	पूर्वोत्तर तथा पश्चिमी लेखक सम्मेलन, पणजी	14-15 जुलाई 2017
5.	परभानी	24-26 जुलाई 2017
6.	ग्रामालोक, परथान	28-30 जुलाई 2017
7.	खोपोली	2-3 अगस्त 2017
8.	अकोला	14-17 सितंबर 2017
9.	बालापुर	18-19 सितंबर 2017
10.	एसएनडीटी विश्वविद्यालय, मुंबई	26-27 सितंबर 2017
11.	सुंदरबाई हॉल, मुंबई	26-30 सितंबर 2017

12.	परिसंवाद, कलामब	28 सितंबर 2017
13.	गोवा विश्वविद्यालय	28-29 सितंबर 2017
14.	उस्मानाबाद	29 सितंबर 2017
15.	परिसंवाद, बुलधाना	11-13 अक्तूबर 2017
16.	अहमदाबाद	7-9 अक्तूबर 2017
17.	साहित्य सम्मेलन, रायगढ़	3-5 नवंबर 2017
18.	अंतरभारती, मुंबई	10 नवंबर 2017
19.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, कल्याण	14-20 नवंबर 2017
20.	ग्रंथ महोत्सव, मुंबई	17-18 नवंबर 2017
21.	साहित्य मंच, आदिपुर	28-29 नवंबर 2017
22.	संगोष्ठी, भुज	2-3 दिसंबर 2017
23.	दादर	19-20 दिसंबर 2017
24.	उर्दू किताब मेला, सोलापुर	23-31 दिसंबर 2017
25.	सिओन	23-24 दिसंबर 2017
26.	साहित्य सम्मेलन, अंबेजोगइ	24-25 दिसंबर 2017
27.	सतारा	5-8 जनवरी 2018
28.	परिसंवाद, अमरावती	22 जनवरी 2018
29.	अमरावती	23 जनवरी 2018
30.	चंदूर	24 जनवरी 2018
31.	हिंगोली	26-28 जनवरी 2018
32.	नांदेड़	29-30 जनवरी 2018
33.	राष्ट्रीय पुस्तक मेला, वर्धा	4-8 फ़रवरी 2018
34.	मुंबई	8-9 फ़रवरी 2018
35.	साहित्य सम्मेलन, वड़ोदरा	16-18 फ़रवरी 2018
36.	गेटवे साहित्य उत्सव, मुंबई	22-24 फ़रवरी 2018
37.	प्रभादेवी	27-28 फ़रवरी 2018

1 अप्रैल 2017 से 31 मार्च 2018 तक प्रकाशित पुस्तकें

असमिया

असमिया उपन्यासेर गतिप्रकृति
संपा. सैलेन भराली
पृ. 128; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-2815-3 (पुनर्मुद्रण)

बाणभट्टेर आत्मकथा
ले. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी
अनु. चक्रेश्वर भट्टाचार्य
पृ. 332; रु. 240/-
ISBN : 978-81-7201-830-6 (पुनर्मुद्रण)

ब्रह्मपुत्रेर आशे पाशे
ले. लील बहादुर छेत्री
अनु. अग्नि बहादुर छेत्री
पृ. 192; रु. 170/-
ISBN : 978-81-260-0476-8 (पुनर्मुद्रण)

आधुनिक असमिया साहित्याता
शंकरदेवर संग्रहन
संक. सत्यकाम बरठाकुर
पृ. 74; रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-5260-8

गोलपरिया लोकगीतर बिचार
संक. पदुमी गोगोई
पृ. 144; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-5275-2

ध्रुवपुत्र
ले. अमर मित्र, अनु. सत्येन चौधुरी
पृ. 624; रु. 440/-
ISBN: 978-81-260-5398-8

उजानी असमर जनागास्थिया साधुकथा
संक. चंद्र कमल चेतिया
पृ. 66; रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-5380-3

असोमिया कल्पविज्ञान गल्प संकलन
संक. शांतनु तमूली
पृ. 258; रु. 235/-
ISBN : 978-81-260-5397-1

युगोमिया विवेकानंद
ले. स्वामी लोकेश्वरानंद
अनु. गौतम काकती
पृ. 320; रु. 280/-
ISBN : 978-93-86771-13-1

राजतरंगिनी (ऐतिहासिक वृत्तांत)
ले. कल्हण
अनु. नभ कुमार हांदिक़
पृ. 560; रु.470/-
ISBN : 978-93-86771-66-7

दैपायन ह्रदेर परात
(पुरस्कृत बाङ्ला कविता-संग्रह)
ले. सुबोध सरकार
अनु. एम. कमालुद्दीन अहमद
पृ. 70; रु. 130/-
ISBN : 978-93-87567-43-6

रवींद्रनाथ टैगोर (विनिबंध)
ले. शिशिर कुमार घोष
अनु. पल्लवी डेका बुज़रबरुआ
पृ. 142; रु. 50/-
ISBN : 978-93-87567-46-7

बाङ्ला

भंग मूर्तिदेर माझे
ले. सलाम बिन रज़ाक
अनु. पुष्पितो मुखोपाध्याय
पृ. 162; रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-5157-1

रमेंद्रसुंदर त्रिवेदी : एक नतून अनुवाद
संपा. दिलीप कुमार सिन्हा
पृ. 100; रु. 140/-
ISBN : 978-93-86771-84-1

घर-बसात
ले. विश्वास पाटिल
अनु. निर्मलकांति भट्टाचार्जी
पृ. 444; रु. 270/-
ISBN : 978-81-260-5034-5

ज्ञानेश्वरी
ले. ज्ञानदेव
अनु. गिरीशचंद्र सेन
पृ. 686; रु. 280/-
ISBN : 978-81-260-0845-2 (पुनर्मुद्रण)

मैथिली साहित्येर इतिहास
ले. जयकांत मिश्र
अनु. उदय नारायण सिंह
पृ. 272; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-1510-8 (पुनर्मुद्रण)

बेला बये जाय
ले. इबोम्चा सिंह
अनु. दिलीप कुमार सिन्हा
पृ. 128; रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-4899-1

गुल्लिवरेर भ्रमण बृत्तांत
ले. जोनाथन स्विफ्ट
अनु. लीला मजुमदार
पृ. 354; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-2402-5 (पुनर्मुद्रण)

माइकेल मधुसूदन दत्त निर्वाचित रचना
सक. एवं संपा. शिशिर कुमार दास
पृ. 216; रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-2511-4

अवनिंद्रनाथ टैगोर (विनिबंध)
ले. अमितेंद्रनाथ टैगोर
पृ. 84; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0659-5 (पुनर्मुद्रण)

सतीनाथ भादुड़ी
ले. स्वास्ति मंडल
पृ. 92; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1533-7 (पुनर्मुद्रण)

शिवराम चक्रवर्ती
ले. सुरजीत दासगुप्ता
पृ. 105; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5343-8

एकलेर असमिया गल्प संकलन
संपा. नगेन शइकीया एवं देबलीना सेन
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 148; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3013-2 (पुनर्मुद्रण)

गोपाल हालदर (विनिबंध)
ले. अमिय रतन धर
पृ. 108; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5358-2

दिव्याभिसार
ले. दांते अलिघिएरी
अनु. श्यामलकुमार गंगोपाध्याय
पृ. 702; रु. 440/-
ISBN : 978-81-260-3018-7 (पुनर्मुद्रण)

तारतुफ्फ
ले. मोलियर
अनु. लोकेनाथ भट्टाचार्य
पृ. 80; रु. 105/-
ISBN : 978-81-260-2504-6 (पुनर्मुद्रण)

कबीर (विनिबंध)
ले. प्रभाकर माचवे
पृ. 56; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2650-0 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला-मैथिली शब्दकोश
संप. गोविंद झा, अरविंद कुमार एवं देवव्रत दासगुप्ता
पृ. 508; रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-3339-3 (पुनर्मुद्रण)

स्वामी विवेकानंद : श्रद्धा शतवर्षेर भावना
संपा. रामकुमार मुखोपाध्याय
पृ. 172; रु. 160/-
ISBN : 978-93-86771-01-8

अद्वैत मल्लबर्मन : सृष्टा ओ सृष्टि
संपा. मिलन कांति विश्वास
पृ. 107; रु. 110/-
ISBN : 978-93-86771-02-5

उनीस बीघा दुई कथा
ले. फ़कीरमोहन सेनापति
अनु. मैत्री शुक्ल
पृ. 128; रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-1753-9 (पुनर्मुद्रण)

समद ओ किन्नर
ले. फेडरिको मारसिया लोर्का
अनु. देवीप्रसाद बंद्योपाध्याय
पृ. 204; रु. 250/-
ISBN : 978-81-7201-258-8 (पुनर्मुद्रण)

नियति ओ देबजन
ले. होल्डरिन
अनु. आलोकरंजन दासगुप्ता
पृ. 122; रु. 160/-
ISBN : 978-81-7201-189-5 (पुनर्मुद्रण)

एइ समय ओ जीबनानंद
संक. एवं संपा. शंख घोष
पृ. 192; रु. 415/-
ISBN : 978-81-260-4224-1 (पुनर्मुद्रण)

भगवान बुद्ध
ले. धर्मानंद कोसाम्बी
अनु. चंद्रोदय भट्टाचार्य
पृ. 252; रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-2504-6 (पुनर्मुद्रण)

दुशो बछरेर बाङ्ला प्रबंध साहित्य (खंड-II)
संपा. आलोक राय, पवित्र सरकार एवं अभ्रघोष
पृ. 552; रु. 330/-
ISBN : 978-81-260-4513-6 (पुनर्मुद्रण)

मौन मुखर
ले. येशे दोरजे थोंगची
अनु. जीवन राय
पृ. 230; रु. 235/-
ISBN : 978-81-86771-20-9

माटिर गान
ले. कैलाश सी. बराल
अनु. शांतुन गंगोपाध्याय
पृ. 158; रु.150/-
ISBN : 978-81-86771-42-1

शुद्ध एइ अस्ट्रांगली दिए
ले. अमरकांत
अनु. संध्या चौधुरी
पृ. 790; रु. 720/-
ISBN : 978-93-87567-09-2

धूलमखा पायेर चाप ओ अन्यान्य कविता
ले. एवं अनु. रवींद्र सरकार
पृ. 76; रु. 100/-
ISBN : 978-93-86771-46-9

लक्ष्मीनाथ बेज़बरूआर निर्वाचित रचना
संक. एवं संपा. करबी डेका हाज़रिका
अनु. संपा. उषा रंजन भट्टाचार्जी
पृ. 240; रु. 250/-
ISBN : 978-93-87567-18-4

अपराध ओ शास्ति
ले. फ्योदोर दोस्तोएव्स्की
अनु. अरुण सोम
पृ. 656; रु. 270/-
ISBN : 978-81-260-2175-8 (पुनर्मुद्रण)

योगेश चंद्र राय विधानिधि (विनिबंध)
ले. अरबिंद चटर्जी
पृ. 136; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4894-6 (पुनर्मुद्रण)

बोडो

बोरो सुंगदो सोलोनी बवहाविथि दहार
संक. एवं संपा. स्वर्ण प्रभा चैनारी
पृ. 136; रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-4652-2 (पुनर्मुद्रण)

अबवंगलाओरिनि फाओ
ले. एम. मुकुंदन
अनु. गोपीनाथ ब्रह्म
पृ. 329; रु. 270/-
ISBN : 978-81-260-5162-5

कॉकबरक सुबुंग मेथाई अरो खोथाई
संक. एवं संपा. चंद्रकांत मुरासिंह
अनु. अनिल कुमार बोरो
पृ. 208; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4090-2 (पुनर्मुद्रण)

बुबलिखाओ फुथुआ अंग
ले. एन. गोपी
अनु. उत्तम चंद्र ब्रह्म
पृ. 104; रु. 145/-
ISBN : 978-81-260-4888-5 (पुनर्मुद्रण)

बुरलंगबूथूर सेर सेर
ले. लील बहादुर छेत्री
अनु. कामेश्वर बोरो
पृ. 212; रु. 265/-
ISBN : 978-81-260-2727-9 (पुनर्मुद्रण)

विग्रहमुगा
ले. प्रफुल्ल राय
अनु. नवीन ब्रह्म
पृ. 176; रु. 210/-
ISBN : 978-81-260-5364-3

गीतांजलि
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. सुरथ नार्ज़री
पृ. 180; रु. 340/-
ISBN : 978-81-260-3219-8 (पुनर्मुद्रण)

मणिमहेश
ले. उमाप्रसाद मुखोपाध्याय
अनु. गोविंदा बर'
पृ. 186; रु. 210/-
ISBN : 978-93-86771-10-0

बोरो थुंगलायाओ आइज़व
संपा. स्वर्ण प्रभा चैनारी
पृ. 120; रु. 190/-
ISBN : 978-93-86771-32-2

पद्मा दइमणि दिनगारी (बाङ्ला उपन्यास)
ले. माणिक बंद्योपाध्याय
अनु. गोविंद बसुमतारी
पृ. 160; रु. 170/-
ISBN : 978-93-87567-29-0

डोगरी

चोनवियां कोंकणी कहानियाँ
संपा. वीणा गुप्ता
पृ. 203; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5123-6

शक्ति शर्मा (विनिबंध)
ले. सत्यपाल श्रीवत्स
पृ. 104; रु. 50/-
ISBN : 978-93-87567-03-0

अंग्रेज़ी

बिभूतिभूषण रीडर
संक. एवं संपा. रुसति सेन
अनु. संपा. भास्वती चक्रवर्ती
पृ. 436; रु. 220/-
ISBN : 978-81-260-4735-2

ए रीडर ऑन अन्ना
चयन एवं संपा. रामा. गुरुनाथन
पृ. 338; रु. 255/-
ISBN : 978-93-86771-58-2

हंड्रेड-पैटल्ड लोटस
ले. गदियाराम रामकृष्ण शर्मा
अनु. एम. वी. चलपति राव
पृ. 352; रु. 275/-
ISBN : 978-93-86771-82

जीवन नराना दुरैक्कण्णन (विनिबंध)
ले. रामा. गुरुनाथन
अनु. एन. मुरुगियन
पृ. 160; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5267-7

नारायण सुर्वे (विनिबंध)
ले. प्राची गुर्जरपाध्ये
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5170-0

नेशनल बिब्लियोग्राफी ऑफ़ इंडियन लिटरेचर सेकेंड सीरीज़ (1954-2000)
प्रधान संपा. ज़ेड.ए. बर्नी
संक. मिताली चट्टर्जी
पृ. 416; रु. 700/-
ISBN : 978-81-260-5230-1

वी स्पीक इन चेंजिंग लैंग्वेजेज़
संपा. ई. वी. रामकृष्णन तथा अनुज मखीजा
पृ. 282; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-2673-9 (पुनर्मुद्रण)

नेटिविज़्म : ऐसेज़ इन क्रिटिसिज़्म
(संगोष्ठी के आलेखों का संकलन)
संपा. मकरंद परांजपे
पृ. 256; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-0168-2 (पुनर्मुद्रण)

मॉडर्निज़्म एंड टैगोर
ले. अबू सईद अय्यूब
ले. अमिताभ राय
पृ. 224; रु. 150/-
ISBN : 978-81-7201-851-1 (पुनर्मुद्रण)

मोइन एहसान जज़्बी (विनिबंध)
ले. मुश्ताक़ सदफ़
अनु. ए. नसीब ख़ान
पृ. 132; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5237-0

के. अय्यप्प पणिक्कर (चुनिंदा निबंध)
ले. के. अय्यप्प पणिक्कर
संपा. के. सच्चिदानंदन
पृ. 254; रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-4755-0

टेल्स ऑफ़ टुमौरो
संक. राना नायर
पृ. 264; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-2350-9

राभा फ़ोक टेल्स
संक. जयकांत शर्मा
पृ. 104; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-2950-1 (पुनर्मुद्रण)

हब्बा खातून (विनिबंध)
ले. एस. एल. साधु
पृ. 65; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1954-0 (पुनर्मुद्रण)

क्रिएटिव आस्पेक्ट्स ऑफ़ इंडियन इंग्लिश
(संगोष्ठी के आलेख)
संपा. शांतिनाथ के. देसाई
पृ. 174; रु. 150/-
ISBN : 978-81-7201-924-2 (पुनर्मुद्रण)

रिफ्लेक्शंस एंड वेरिएशंस ऑन द महाभारत
संपा. टीआरएस शर्मा
पृ. 390; रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-2671-5 (पुनर्मुद्रण)

द ब्लाइंड एली
ले. अखिल मोहन पटनायक
अनु. चंद्रमणि नारायणस्वामी
पृ. 174; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-1792-8 (पुनर्मुद्रण)

चतुरंग
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. अशोक मित्र
पृ. 92; रु. 100/-
ISBN : 978-81-720-400-1 (पुनर्मुद्रण)

अनरिटेन लैंग्वेजेज़ ऑफ़ इंडिया
ले. अन्विता अब्बी
पृ. 214; रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-5266-0

बलवंत सिंह सिलेक्टिड शॉर्ट स्टोरीज़
संक. एवं संपा. गोपीचंद नारंग
अनु. जय रतन
पृ. 306; रु. 200/-
ISBN: 978-81-7201-687-6

द महाभारत रीविज़िटेड
(संगोष्ठी के आलेख)
संपा. आर. एन. दाण्डेकर
पृ. 306; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-2872-6 (पुनर्मुद्रण)

अर्ली नॉवेल्स इन इंडिया
संपा. मीनाक्षी मुखर्जी
पृ. 278; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-1342-5 (पुनर्मुद्रण)

इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़ (1900-2000)
संपा. ई.वी. रामकृष्णन
पृ. 536; रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-1091-2 (पुनर्मुद्रण)

इंडियन पोएट्री मॉडर्निज़्म एंड आफ्टर
(संगोष्ठी के आलेख)
संपा. के. सच्चिदानंदन
पृ. 370; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-1092-9 (पुनर्मुद्रण)

द गोल्डन ट्रेज़री ऑफ़ इंडो-एंगलियन पोएट्री
संक. एवं संपा. विनायक कृष्ण गोकाक
पृ. 360; रु. 225/-
ISBN : 978-81-260-4645-4 (पुनर्मुद्रण)

अर्द्धनारीश्वर
ले. विष्णु प्रभाकर
अनु. श्रीकांत खरे
पृ. 512; रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-4565-5

अलै ओसै
ले. कल्कि
अनु. जी. एस. अय्यर
पृ. 564; रु. 650/-
ISBN : 978-81-260-5316-2 (पुनर्मुद्रण)

के.डी. सेठना (विनिबंध)
ले. पी. राजा
पृ. 88; रु. 50/-
ISBN : 978-81-5283-7 (पुनर्मुद्रण)

वाइल्ड बापू ऑफ़ गरबी (स्पानी उपन्यास)
ले. श्रीपाद नारायण पेंडसे
अनु. इआन रेसिदे
पृ. 124; रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-5320-9 (पुनर्मुद्रण)

भीमा भोई (विनिबंध)
ले. सीताकांत महापात्र
पृ. 92; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5326-1 (पुनर्मुद्रण)

गणेश चंद्र गोगोई
ले. आनंद बरमुदै
पृ. 68; रु. 50/-
ISBN : 978-93-87567-04-7

बाणभट्ट (विनिबंध)
ले. के. कृष्णमूर्ति
पृ. 100; रु. 50/-
ISBN : 978-81-7201-674-6 (पुनर्मुद्रण)

बसवेश्वर (विनिबंध)
ले. एच. तिप्पेरुद्रस्वामी
पृ. 68; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5327-8 (पुनर्मुद्रण)

तिरुवल्लुवर (विनिबंध)
ले. एस. महाराजन
पृ. 108; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5321-6 (पुनर्मुद्रण)

विद्यापति (विनिबंध)
ले. रमानाथ झा
पृ. 76; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5319-3 (पुनर्मुद्रण)

जयदेव (विनिबंध)
ले. सुनीति कुमार चटर्जी
पृ. 80; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0182-8

अश्वघोष (विनिबंध)
ले. रोमा चौधुरी
पृ. 56; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5328-5 (पुनर्मुद्रण)

चकबस्त (विनिबंध)
ले. सरस्वती सरन कैफ़
पृ. 116; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5325-4 (पुनर्मुद्रण)

शाह लतीफ़ (विनिबंध)
ले. कल्याण भूलचंद आडवाणी
पृ. 80; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5323-0 (पुनर्मुद्रण)

टॉल्सटॉय एंड इंडिया (रूसी गौरवग्रंथ)
ले. अलक्ज़ेंडर शिफ़मैन
अनु. ए.वी. इसौलोव
पृ. 132; रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5334-6

सुनीति कुमार चटर्जी (विनिबंध)
ले. सुकुमार सेन
पृ. 64; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5322-3 (पुनर्मुद्रण)

आनंदवर्द्धन (विनिबंध)
ले. के. कुंजुन्नी राजा
पृ. 88; रु. 50/-
ISBN : 978-81-7201-802-3 (पुनर्मुद्रण)

आगा शाहिद अली (विनिबंध)
ले. निशात ज़ैदी
पृ. 144; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4248-8 (पुनर्मुद्रण)

शीर्षेंदु मुखोपाध्याय : सेलेक्टेड शॉर्ट स्टोरीज़
बाङ्ला से अनु. सोमा ए. चटर्जी
पृ. 124; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4749-9 (पुनर्मुद्रण)

ट्रीज़ ऑफ़ कोचि एंड अदर पोएम्स
ले. के. जी. शंकर पिल्लै
अनु. विभिन्न अनुवादक
संपा. ई.वी. रामकृष्णन
पृ. 164; रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-4749-9

दातू
ले. एस.एल. भैरप्पा
अनु. प्रधान गुरुदत्त एवं
एल.वी. शांताकुमारी
पृ. 568; रु. 450/-
ISBN : 978-81-260-5388-9

कमला दास (विनिबंध)
ले. पी.पी. रवींद्रन
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5394-0

आई एम मैन : अश्वत्थामन
ले. प्रकाश डी. पडगाँवकर
अनु. एस. एस. कुलकर्णी एवं किरण बुडकुले
पृ. 74; रु. 70/-
ISBN : 978-93-86771-16-2

रवींद्रनाथ टैगोर : सेलेक्टेड ऐसेज़ ऑन एस्थेटिक्स
संपा. एवं अनु. अमिताभ चौधुरी
पृ. 296; रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-4568-6

व्हाट द सन सेड लास्ट एंड अदर पोएम्स
ले. इरोड तमिलनबन
अनु. के. एस. सुब्रह्मण्यन
पृ. 124; रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-4876-2 (पुनर्मुद्रण)

अमृतर संतान
ले. गोपीनाथ महांति
अनु. बिधुभूषण दास, प्रभात नलिनी दास तथा ऊपाली अपराजिता
पृ. 640; रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-4746-8

दक्षिणा (अंग्रेज़ी)
ए लिटरेरी डाइजेस्ट ऑफ़ साउथ इंडियन लैंग्वेजेज़
प्रधान संपा. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 368; रु. 215/-
ISBN : 978-81-260-5309-7

पुन-ते-पाप
ले. एवं अनु. जी.एन. गौहर
पृ. 300; रु. 225/-
ISBN: 978-81-260-5304-9

मिज़ो फ़ोकटेल्स
संक. आर. एल. थनमाविया एवं रूआलज़ाखूमी राल्टे
पृ. 175; रु. 210/-
ISBN : 978-81-260-5370-4

कौटल्याज़ अर्थशास्त्र
संपा. वी. एन. झा
पृ. 342; रु. 45/-
ISBN : 978-81-260-0772-1 (पुनर्मुद्रण)

कथ : स्टोरीज़ फ्रॉम कश्मीर
संपा. नीरजा मट्टु
पृ. 224; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-3059-0 (पुनर्मुद्रण)

मॉडर्न इंडियन ड्रामा
संपा. जी.पी. देशपांडे
पृ. 772; रु. 450/-
ISBN : 978-81-260-1875-8 (पुनर्मुद्रण)

नैरेटिव : ए सेमिनार
ले. अमिय देव
पृ. 356; रु. 250/-
ISBN : 978-81-7201-780-4 (पुनर्मुद्रण)

राजबंशी फ़ाके टेल्स एंड फ़ोक सांग्स
संक. एवं अनु. सुखबिलास बर्मा
पृ. 208; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5341-4

हूल (कथा भारती शृंखला)
ले. भालचंद्र नेमाड़े,
अनु. संतोष भूमकर
पृ. 232; रु. 250/-
ISBN: 978-81-260-4061-2

वेटिंग फॉर नीलकंठ एंड अदर स्टोरीज़
ले. मदनमोहन शर्मा, अनु. वंदना शर्मा
पृ. 88; रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-5381-0

द नेल एंड अंदर स्टोरीज़
ले. गौरहरि दास
अनु. मोना लिसा जेना
पृ. 208; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5384-1

नटबर सामंतराय ए रीडर
संपा. सुमन्यु सत्पथी एवं अनिमेष महापात्र
पृ. 256; रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-5340-7

एंथोलॉजी ऑफ़ मणिपुरी शॉर्ट स्टोरीज़
अनु. संपा. के. एम. सिंह
पृ. 156; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-5284-4

पद्म चरण पट्टनायक (विनिबंध)
ले. जगन्नाथ दास
पृ. 126; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5351-3

कर्ण'स मदर एंड द लास्ट स्लीप ऑफ़ कर्ण
ले. एन. इबोबी सिंह
अनु. अथोकपम तोमचोउ
पृ. 58; रु. 95/-
ISBN : 978-81-260-5303-2

ओरिजिन ऑफ़ लाइ एंड दियर लैंग्वेजेज़
संपा. लालछुआनमाविया सैलो एवं लालथाङफाला सैलो
पृ. 109; रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-5379-7

फ़ादर थॉमस स्टीफंस (विनिबंध)
ले. सेसिलिया कारवल्हो
पृ. 64; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5314-8

मुथालाज़वरगळ (विनिबंध)
ले. एम. पी. श्रीनिवासन
अनु. पद्मा श्रीनिवासन
पृ. 144; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5395-7

राजा बासुदेव सुधालदेव (विनिबंध)
ले. सुब्रत कुमार आचार्य
पृ. 109; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-36-0

चियारोसकुरो
ले. पुंडलीक एन. नाइक
अनु. श्रीनिवास कामत
पृ. 152; रु. 180/-
ISBN : 978-81-260-4623-2

नाइदर ए शैडो नॉर ए रिफ़्लेक्शन
ले. नसीम शाफ़ै
अनु. इंदु किलम
पृ. 116; रु. 130/-
ISBN : 978-93-86771-41-4

सुब्रह्मण्य भारती खंड-II (निबंध एवं कहानियाँ)
संपा. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 416; रु. 950/-
ISBN : 978-93-86771-08-7

द किंग विदाउट क्लॉथ्स
ले. नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती
अनु. सुकांत चौधुरी
पृ. 56; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3020-0 (पुनर्मुद्रण)

थ्री डेज़ एंड थ्री नाइट्स
ले. नरेंद्रनाथ मित्र
अनु. लीला राय
पृ. 280; रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-3203-7 (पुनर्मुद्रण)

कॉटेम्परेरी शॉर्ट स्टोरीज़ फ्रॉम मिज़ोराम
संपा. मारग्रेट च. ज़मा
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 288; रु. 250/-
ISBN : 978-93-86771-45-2

टी गार्डन लिटरेचर
संक. टेरेंस मुखिया
पृ. 120; रु. 130/-
ISBN : 978-93-86771-48-3

अमीर शाह क़ीरि (विनिबंध)
ले. फ़ारूक़ फ़याज़
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-09-4

एंथोलॉजी ऑफ़ मॉडर्न इंडियन पोएट्री इन सिंधी (1950-2010)
संपा. वासदेव मोही
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 268; रु. 200/-
ISBN : 978-93-86771-55-1

कॉटेम्परेरी इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़ इन इंग्लिश
संक. एवं परिचय शिव के. कुमार
पृ. VIII+242; 242; रु. 150/-
ISBN : 978-93-86771-65-0 (पुनर्मुद्रण)

बिनोदिनी
ले. रवींद्रनाथ टैगोर
अनु. कृष्ण कृपलानी
पृ. VIII+247; रु. 125/-
ISBN : 978-81-7201-403-1 (पुनर्मुद्रण)

गारो लिटरेचर
प्रलेखन एवं अनु. कैरोलीन मरक
पृ. VI+176; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-1372-9 (पुनर्मुद्रण)

अर्थ साँग्स
संपा. कैलाश सी. बराल
पृ. XX+172; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-1998-0 (पुनर्मुद्रण)

इन योअर ब्लूज्मिंग फ़्लावर गार्डन
ले. केतकी कुशारी डायसन
पृ. XIV+478; रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-0174-7 (पुनर्मुद्रण)

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन-इंग्लिश लिटरेचर
ले. एम.के. नायक
पृ. VI+320; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-1872-7

सओरा फ़ोक टेल्स एंड साँग्स
संपा. महेंद्र कुमार मिश्र
पृ. 192; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-2138-1 (पुनर्मुद्रण)

राजतरंगिनी
अनु. रंजीत सीताराम पंडित
पृ. XLIV+784; रु. 600/-
ISBN : 978-81-260-1236-6 (पुनर्मुद्रण)

द इंग्लिश राइटिंग्स ऑफ़ आर. एन. टैगोर
संपा. शिशिर कुमार दास
पृ. 780; रु. 675/-
ISBN : 978-81-7201-945-7 (पुनर्मुद्रण)

विश्वनाथ कर (विनिबंध)
ले. बिजय कुमार नंदा
पृ. 102; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-49-0

कॉस्मोपॉलिटन स्पेसेस इंडियन लिटरेचर एंड काउंटरप्वाइंट्स ऑफ़ मॉडर्निटी
संपा. मालाश्री लाल
पृ. 284; रु. 200/-
ISBN : 978-93-86771-61-2

एंथॉलोजी ऑफ़ हिंदी शॉर्ट स्टोरीज़
संक. भीष्म साहनी
अनु. जय रतन
पृ. 484; रु. 275/-
ISBN : 978-81-7201-527-5 (पुनर्मुद्रण)

मंटो माइ लव
संक. एवं अनु. हरीश नारंग
पृ. 258; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4752-9 (पुनर्मुद्रण)

द्रौपदी
ले. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद
अनु. के.वी. पूर्णेश्वर राव
पृ. 280; रु. 150/-
ISBN : 978-81-26-04257-9 (पुनर्मुद्रण)

डिस्कोर्स डैमोक्रेसी एंड डिफ़रेंस
संपा. एम.टी. अंसारी एवं दीप्ता अचार
पृ. 474; रु. 275/-
ISBN : 978-81-260-2846-7 (पुनर्मुद्रण)

जी.सी. थोंगब्रा
ले. एल. बीरेंद्रकुमार शर्मा
पृ. 118; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-44-5

एसेंट टू व्यास गुहा (संवत्सर व्याख्यान)
ले. एस. एल. भैरप्पा
पृ. 20; रु. 25/-
ISBN : 978-93-87567-41-2

द हिमालय ए कल्चरल पिलिग्रिमेज
ले. दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर
अनु. अशोक मेघाणी
पृ. 288; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4262-3 (पुनर्मुद्रण)

प्रभु वफ़ा (विनिबंध)
ले. मोहन गेहाणी
पृ. 72; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4917-2 (पुनर्मुद्रण)

विनोबा भावे (विनिबंध)
ले. पारस चोलकर
पृ. 108; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-81-0

पुरदाह एंड पोलीगैमी
ले. इक़बालून्निसा हुसैन
संपा. एवं परिचय : निशात ज़ैदी
पृ. 296; रु. 220/-
ISBN : 978-93-86771-86-5

ग्रैटिच्यूड फ़ॉर लिविंग (भारत की प्राचीन आदिवासी कविता में प्यार एवं प्रार्थना)
ले. सीताकांत महापात्र
पृ. 22; रु. 25/-
ISBN : 978-93-87567-48-1

साँग्स ऑफ़ पुरंदरदास
संक. एवं अनु. मयदूर रघुनंदन
पृ. 158; रु. 95/-
ISBN : 978-81-260-3134-4 (पुनर्मुद्रण)

डोगरी शॉर्ट स्टोरीज़ टुडे
संक. एवं संपा. ललित मंगोत्रा
अनु. सुमन के. शर्मा
पृ. 274; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4747-5 (पुनर्मुद्रण)

अमृतर संतान
ले. गोपीनाथ महांति
अनु. बिधुभूषण दास,
प्रभात नलिनी दास
एवं ऊपाली अपराजिता
पृ. 640; रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-4746-8 (पुनर्मुद्रण)

श्री रामायण दर्शनम
ले. के. वी. पुट्टप्पा 'कुवेम्पु'
अनु. शंकर मोकाशी पुणेकर
पृ. 684; रु. 560/-
ISBN : 978-81-260-1728-7 (पुनर्मुद्रण)

एम्परर-पोएट श्री कृष्णदेवराय'ज़ अमुक्तमलयाडा
ले. श्री कृष्णदेवराय
अनु. सी.वी. रामचंद्र राव
पृ. 344; रु. 230/-
ISBN : 978-81-260-3145-X (पुनर्मुद्रण)

माधवराम वाहेङ्बा (विनिबंध)
ले. थ. इबोहानबी सिंह
पृ. 68; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4738-3 (पुनर्मुद्रण)

वीमेन एंड दियर वर्ल्ड्स : लिटरेचर्स फ्रॉम ईस्टर्न इंडिया
संक. एवं संपा. शिंजिनी बंद्योपाध्याय
पृ. 156; रु. 200/-
ISBN : 978-93-87567-49-8

गुजराती

गजार
ले. इंदु जोशी
पृ. 84; रु.130/-
ISBN : 978-81-260-5278-3

स्वामी विवेकानंद
ले. निमाइ साधन बोस
अनु. हरेश ढोलकिया
पृ. 130; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5280-6

खोवायेला अर्थो
ले. निरंजन तस्नीम
अनु. मोहन दांडिकर
पृ. 196; रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-5331-5

रामधारी सिंह 'दिनकर' (विनिबंध)
ले. विजेंद्रनारायण सिंह
अनु. अख़्तरख़ान पठान
पृ. 132; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5348-3

दलपत्रम (विनिबंध)
ले. चंद्रकांत टोपीवाला
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN: 978-93-86771-50-6 (पुनर्मुद्रण)

गुरु गोबिंद सिंह
ले. महीप सिंह
अनु. आलोक गुप्ता एवं गार्गी शाह
पृ. 116; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-17-9

आधुनिक गुजराती कविता
(1950-2010)
संक. कमल वोरा एवं प्रवीण पंड्या
पृ. 252; रु. 175/-
ISBN : 978-93-86771-49

हिंदी

स्वतंत्रता के पश्चात् सिंधी नई कविता के संचयन
सं. प्रेम प्रकाश
पृ. 332; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5135-9

फुलवारी
ले. विजयदान देथा, अनु. कैलाश कबीर
पृ. 208; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-2049-2 (पुनर्मुद्रण)

अँधेरे में सुलगती वर्णमाला
ले. सुरजीत पातर, अनु. चमनलाल
पृ. 200; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-2859-7 (पुनर्मुद्रण)

कन्नड लोक कथाएँ
सं. सिम्पी लिंगन्ना एवं
जे.एस. परमाशिवैया
अनु. बी.आर. नारायण
पृ. 222; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-5259-2 (पुनर्मुद्रण)

अनुवाद के सिद्धांत
ले. रा. रामचंद्र रेड्डी
अनु. जे.एल. रेड्डी
पृ. 180; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-0511-6 (पुनर्मुद्रण)

वैक्कं मुहम्मद बशीर (वि.)
ले. एम.एन. कारश्शेरी
अनु. के. एम. मालती
पृ. 120; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5238-7 (पुनर्मुद्रण)

साहित्य सिद्धांत विमर्श (खंड-1)
चयन एवं सं. रीतारानी पालीवाल
पृ. 576; रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-5081-9

साहित्य सिद्धांत-विमर्श (खंड-2)
चयन एवं सं. रीतारानी पालीवाल
पृ. 608; रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-5082-6

भोजपुरी (सहभाषा शृंखला)
ले. नागेन्द्र प्रसाद सिंह
पृ. 112; रु. 80/-
ISBN : 978-81-260-5179-3

वह लंबी ख़ामोशी
ले. शशि देशपांडे, अनु. लक्ष्मीचंद जैन
पृ. 204; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-0642-7 (पुनर्मुद्रण)

कालाहांडी के वाचिक महाकाव्य
ले. महेंद्र कुमार मिश्र
अनु. दिनेश मालवीय
पृ. 468; रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-5176-2

लालन शाह फ़क़ीर के गीत
चयन, सं. एवं अनु. मुचकुंद दुबे
पृ. 376; रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-5273-8

मेरा नाम है (चार पुस्तकों की शृंखला)
ले. आबिद सुरती
पृ. 84; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-5077-2

सेनापति (विनिबंध)
ले. सूर्यप्रसाद दीक्षित
पृ. 118; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5265-3

गावैं कजरी मल्हार नइहरवाँ
सं. अर्जुनदास केसरी
पृ. 394; रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-5274-5

देवनागरी लिपि आंदोलन का इतिहास
ले. रामनिरंजन परिमलेंदु
पृ. 756; रु. 650/-
ISBN : 978-81-260-5289-9

पीतांबरदत्त बड़थ्वाल रचना-संचयन
सं. विष्णुदत्त राकेश
पृ. 424; रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-5279-0

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना रचना-संचयन
चयन एवं सं. रमेश ऋषिकल्प
पृ. 396; रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-5291-2

मीराबाई (विनिबंध)
ले. ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल
पृ. 120; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5058-1

शंकर शेष (विनिबंध)
ले. हेमंत कुकरेती
पृ. 136; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5296-7

महेंद्र मिसिर (विनिबंध)
ले. भगवती प्रसाद द्विवेदी
पृ. 136; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5295-0

मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी' (विनिबंध)
ले. बृजराज सिंह
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5276-9

अमरकथा
ले. गुलजार सिंह संधू
अनु. डी.आर. गोयल
पृष्ठ 112; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4764-2 (पुनर्मुद्रण)

निर्बुद्धि का राज काज
ले. गोपाल दास
पृष्ठ 96; रु. 30/-
ISBN : 978-81-7201-996-9 (पुनर्मुद्रण)

मनोहरश्याम जोशी (विनिबंध)
ले. कृष्णदत्त पालीवाल
पृष्ठ 158; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5329-2

जगन्नाथ दास रत्नाकर (विनिबंध)
ले. व्यासमणि त्रिपाठी
पृष्ठ 140; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5330-8

काँटा तथा अन्य कहानियाँ
ले. गौरहरि दास, अनु. एनी राय
पृष्ठ 176; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5337-7

कथेतर (संगोष्ठी आलेख)
सं. माधव हाडा
पृष्ठ 240; रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-5338-4

माधवराव सप्रे रचना-संचयन
चयन एवं सं. विजयदत्त श्रीधर
पृष्ठ 452; रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-5342-1

मीरा रचना-संचयन
चयन एवं सं. माधव हाडा
पृष्ठ 208; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5346-9

उँगलियों में परछाइयाँ (नवोदय योजना)
ले. संजीव कौशल
पृष्ठ 136; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-5345-2

बस्तर की हल्बी कहानियाँ और क़िस्से
चयन एवं सं. अजय कुमार सिंह
पृष्ठ 208; रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-5347-6

कार्बी कथाएँ
अनु. एवं सं. उदयभानु पांडेय
पृष्ठ 100; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-5354-4

संकेत
ले. सेतु, अनु. संतोष अलेक्स
पृष्ठ 232; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5356-5

बुंदेली (विनिबंध)
ले. आरती दूबे
पृष्ठ 158; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5357-5

ख़ज़ाने वाली चिड़िया
ले. प्रकाश मनु
पृष्ठ 144; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4763-5 (पुनर्मुद्रण)

ताश का देश
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. रणजीत कुमार साहा
पृष्ठ 64; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-0317-4 (पुनर्मुद्रण)

मंडन मिश्र (विनिबंध)
ले. उदयनाथ झा
पृष्ठ 148; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3364-5 (पुनर्मुद्रण)

अभिनवगुप्त (विनिबंध)
ले. जी.टी. देशपांडे
अनु. मिथिलेश चतुर्वेदी
पृष्ठ 168; रु. 50/-
ISBN : 978-81-7201-845-0 (पुनर्मुद्रण)

घनानंद (विनिबंध)
ले. लल्लन राय
पृष्ठ 108; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2605-0 (पुनर्मुद्रण)

जायसी (विनिबंध)
ले. परमानंद श्रीवास्तव
पृष्ठ 68; रु. 50/-
ISBN : 978-81-7201-401-8 (पुनर्मुद्रण)

सहजोबाई (विनिबंध)
ले. उषा लाल
पृष्ठ 80; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4006-3 (पुनर्मुद्रण)

सूरदास (विनिबंध)
ले. मैनेजर पांडेय
पृष्ठ 136; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2631-9 (पुनर्मुद्रण)

गोरखनाथ (विनिबंध)
ले. नगेंद्रनाथ उपाध्याय
पृष्ठ 68; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2042-3 (पुनर्मुद्रण)

अंतिम विदाई से तुरंत पहले (नवोदय योजना)
ले. प्रांजल धर
पृष्ठ 168; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4021-6 (पुनर्मुद्रण)

उठाईगीर
ले. लक्ष्मण गायकवाड़
अनु. सूर्यनारायण रणसुभे
पृष्ठ 172; रु. 150/-
ISBN : 978-81-7201-238-0 (पुनर्मुद्रण)

योगायोग
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. इलाचंद्र जोशी
पृष्ठ 232; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-0889-6 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद रचना-संचयन
सं. निर्मल वर्मा एवं कमल किशोर गोयनका
पृष्ठ 1052; रु. 550/-
ISBN : 978-81-7201-663-0 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्र रचना-संचयन
सं. असित कुमार बंद्योपाध्याय
पृष्ठ 860; रु. 550/-
ISBN : 978-81-7201-849-5 (पुनर्मुद्रण)

लघुकथा संग्रह
सं. जयमंत मिश्र, अनु. रेखा व्यास
पृष्ठ 152; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-1219-0 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ का बाल साहित्य
ले. लीला मजुमदार एवं क्षितिश राय
अनु. युगजीत नवलपुरी
पृष्ठ 162; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-0008-1 (पुनर्मुद्रण)

अली जावेद ज़ैदी (विनिबंध)
ले. एवं अनु. वज़ाहत हुसैन रिज़वी
पृ. 120; रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5382-7

अज्ञातवास की कविताएँ (नवोदय)
ले. अविनाश मिश्र
पृ. 100; रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-5350-6

भूकंप
ले. श्याम जयसिंहानी
अनु. हुंदराज बलवाणी
पृ. 86; रु. 140/-
ISBN: 978-81-260-5313-1

विष्णु प्रभाकर (विनिबंध)
ले. प्रकाश मनु
पृ. 144; रु. 50/-
ISBN : 978-80-260-5393-3

रज्जब
ले. नंद किशोर पांडेय
पृ. 112; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-539-6

निर्वाण
ले. मनमोहन
अनु. जितेंद्र कुमार सोनी
पृ. 316; रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-5378-0

अपभ्रंश (सहभाषा शृंखला)
ले. योगेंद्रनाथ शर्मा अरुण
पृ. 116; रु. 80/-
ISBN : 978-93-86771-18-6

जयंत खत्री की कहानियाँ
ले. जयंत खत्री, अनु. कमल मेहता
पृ. 564; रु. 500/-
ISBN : 978-93-86771-21-6

जीवन समरमम
ले. रावूरी भारद्वाज, अनु. एस. शेषरत्नम
पृ. 172; रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-4988-2

गोपालराम गहमरी (विनिबंध)
ले. संजय कृष्ण
पृ. 132; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-31-5

मौन होंठ मुखर हृदय
ले. येशे दोरजी थोंगची
अनु. दिनकर कुमार
पृ. 184; रु. 200/-
ISBN : 978-93-86771-39-1

लाला सीताराम भूप (विनिबंध)
ले. हेरंब चतुर्वेदी
पृ. 136 ; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-52-0

मार्कण्डेय (विनिबंध)
ले. अनुज
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-53-7

नागार्जुन (विनिबंध)
ले. खगेंद्र ठाकुर
पृ. 104; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-57-5

फणीश्वरनाथ रेणु (विनिबंध)
ले. सुरेंद्र चौधुरी
पृ. 106; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2632-6 (पुनर्मुद्रण)

जनता का आदमी
ले. चिनुआ अचेबे, अनु. हरीश नारंग
पृ. 156; रु. 100/-
ISBN : 978-81-7201-820-7 (पुनर्मुद्रण)

बुंदेली लोक कथाएँ
संक. एवं संपा. शरद सिंह
पृ. 262; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4304-0 (पुनर्मुद्रण)

श्रेष्ठ हिंदी गीत संचयन
संक. एवं संपा. कन्हैयालाल नंदन
पृ. 480; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-1211-4 (पुनर्मुद्रण)

सुभाषित संग्रह
संक. के.ए.एस. अय्यर
संपा. वी. राघवन
पृ. 192; रु. 100/-
ISBN : 978-81-7201-348-5 (पुनर्मुद्रण)

अनुभव
ले. दिव्येंदु पालित
अनु. सुशील गुप्ता
पृ. 124; रु. 80/-
ISBN : 978-81-260-1030-1 (पुनर्मुद्रण)

पतझड़ की आवाज़
ले. कुर्तुल-ऐन-हैदर
अनु. माज़दा असद
पृ. 244; रु.125/-
ISBN : 978-93-86771-63-6 (पुनर्मुद्रण)

सआदत हसन मंटो
ले. वारिस अल्वी
अनु. जानकी प्रसाद शर्मा
पृ. 80; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0134-7 (पुनर्मुद्रण)

रघुबीर सिंह
ले. अशोक कुमार सिंह
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1025-7 (पुनर्मुद्रण)

भिखारी ठाकुर
ले. तैय्यब हुसैन पीड़ित
पृ. 100; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2630-2 (पुनर्मुद्रण)

भूली यादें मधुपूर की
ले. शीलभद्र
अनु. नीता बनर्जी
पृ. 112; रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-2046-1 (पुनर्मुद्रण)

भूषण
ले. राजमल बोरा
पृ. 124; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1900-7 (पुनर्मुद्रण)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल
ले. रामचंद्र तिवारी
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2053-9 (पुनर्मुद्रण)

शानी
ले. जानकी प्रसाद शर्मा
पृ. 112; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2591-6 (पुनर्मुद्रण)

रामचंद्र शुक्ल संचयन
ले. नामवर सिंह
पृ. 176; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-2604-3 (पुनर्मुद्रण)

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी
ले. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0016-6 (पुनर्मुद्रण)

दुष्यंत कुमार
ले. विजय बहादुर सिंह
पृ. 104; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2633-3 (पुनर्मुद्रण)

दादु दयाल
ले. रामबक्ष
पृ. 80; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2602-9

परशुराम की चुनी हुई कहानियाँ
ले. राज शेखर बसु
अनु. प्रबोध कुमार मजुमदार
पृ. 140; रु. 100/-
ISBN : 978-81-7201-673-9

त्रिलोचन
ले. रेवती रमण
पृ. 140; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3188-7

वाल्मीकि
ले. आई. पांडुरंगराव
पृ. 100; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0171-2

मछुआरे
ले. तकष़ी शिवशंकर पिल्लै
अनु. भारती विद्यार्थी
पृ. 176; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-2609-8 (पुनर्मुद्रण)

होनहार बच्चे
ले. गंगाधर गाडगिल
अनु. माधवी देशपांडे
पृ. 40;
ISBN : 978-81-260-2594-7 (पुनर्मुद्रण)

सुनो अफ्रीका
ले. टिमोथी वांगुसा
अनु. दिविक रमेश
पृ. 84; रु. 80/-
ISBN : 978-81-260-2048-5 (पुनर्मुद्रण)

कोरियाई कविता यात्रा
अनु. दिविक रमेश
पृ. 204; रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-0698-4 (पुनर्मुद्रण)

श्रीनारायण चतुर्वेदी (विनिबंध)
ले. रामशंकर द्विवेदी
पृ. 140; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-72-8

नाटक जारी है
ले. सी. राधाकृष्णन
अनु. ए. अरविंदाक्षन
पृ. 392; रु. 390/-
ISBN : 978-93-86771-76-6

आठे जगार
संपा. हरिहर वैष्णव
पृ. 240; रु. 460/-
ISBN : 978-94-86771-73-5

रवींद्रनाथ की कहानियाँ-I
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. रामसिंह तोमर
पृ. 364; रु. 175/-
ISBN : 978-93-87567-06-1

तेलुगु की प्रतिनिधि कहानियाँ
संपा. एवं अनु. जे. एल. रेड्डी
पृ. 424; रु. 260/-
ISBN : 978-93-86771-96-4

कविता में दिल्ली
संक. एवं संपा. राधेश्याम तिवारी
पृ. 352; रु. 230/-
ISBN : 978-93-86771-99-5

हिंदी दलित साहित्य
ले. मोहन दास नैमिषराय
पृ. 358; रु. 170/-
ISBN : 978-93-86771-79-7 (पुनर्मुद्रण)

जिग़र मुरादाबादी (विनिबंध)
ले. जिआ-उ-द्दीन अंसारी
अनु. परमानंद पांचाल
पृ. 80; रु. 50/-
ISBN : 978-81-7201-147-5 (पुनर्मुद्रण)

समकालीन हिंदी आलोचना
संपा. परमानंद श्रीवास्तव
पृ. 492; रु. 225/-
ISBN : 978-93-86771-77-3 (पुनर्मुद्रण)

गढ़वाली लोगीत
संक. एवं संपा. गोविंद चातक
पृ. 456; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-1001-1 (पुनर्मुद्रण)

दक्षिण कामरूप की गाथा
ले. इंदिरा गोस्वामी
अनु. श्रवण कुमार
पृ. 272; रु. 150/-
ISBN : 978-93-86771-80-3 (पुनर्मुद्रण)

हरिवंशराय बच्चन रचना संचयन
सं. अजित कुमार
पृ. 544; रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-4767-3 (पुनर्मुद्रण)

सोने की चिड़िया
ले. ओम गोस्वामी
पृ. 184; रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-2734-7 (पुनर्मुद्रण)

बीसवीं सदी की हिंदी कथा-यात्रा (खंड-5)
संक. एवं संपा. कमलेश्वर
पृ. 444; रु. 260/-
ISBN : 978-81-260-5053-6

पूर्णाहुति तथा अन्य कहानियाँ
ले. पी. सुब्बा रमय्या
अनु. जे. एल. रेड्डी
पृ. 260; रु. 140/-
ISBN : 978-93-86771-97-1

मील पत्थर
ले. बंधु शर्मा, अनु. अरुणा शर्मा
पृ. 82; रु. 90/-
ISBN : 978-93-87567-05-4

जगद्गुरु आदि शंकराचार्य
ले. शशि तिवारी
पृ. 72; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5072-7

प्रतिनिधि हिंदी बाल नाटक
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 288; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4305-7

बाबरनामा
अनु. युगजीत नवलपुरी
पृ. 468; रु. 230/-
ISBN : 978-93-87567-13-9

जवाहरलाल नेहरू : एक जीवनी
ले. एस. गोपाल, अनु. प्रभाकर माचवे
पृ. 470; रु. 230/-
ISBN: 978-93-87567-12-2

सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन
संपा. कुमार विमल
पृ. 484; रु. 230/-
ISBN : 978-93-87567-15-3

अज्ञेय काव्य-स्तबक
संपा. विद्यानिवास मिश्र तथा
रमेश चंद्र शाह
पृ. 214; रु. 130/-
ISBN : 978-93-87567-14-6 (पुनर्मुद्रण)

अमृता प्रीतम (विनिबंध)
ले. सुतिंदर सिंह नूर
अनु. गुरचरण सिंह
पृ. 98; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3170-2 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद चुनिंदा कहानियाँ (भाग-1)
संक. अमृत राय
पृ. 96; रु. 100/-
ISBN : 978-81-7201-975-4 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद चुनिंदा कहानियाँ (भाग-2)
संक. अमृत राय
पृ. 98; रु. 100/-
ISBN : 978-81-7201-993-8 (पुनर्मुद्रण)

रामधारी सिंह दिनकर रचना संचयन
संपा. कुमार विमल
पृ. 560; रु. 300/-
ISBN : 978-93-86771-78-0 (पुनर्मुद्रण)

संवत्सर व्याख्यान -XVII
(साहित्य और चेतना)
ले. गोविंद चंद्र पांडे
पृ. 32; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1897-0 (पुनर्मुद्रण)

संवत्सर व्याख्यान-XIV
(साहित्य के कुछ अंतर्विषयक संदर्भ)
ले. कुँवरनारायण
पृ. 44; रु. 60/-
ISBN : 978-81-260-1693-8

ग़ालिब (विनिबंध)
ले. मो. मुजीब
अनु. रमेश गौड़
पृ. 98; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0424-9 (पुनर्मुद्रण)

कन्नड

आलेया मोरेथा
ले. कल्कि
अनु. शशिकला राजा
पृ. 704; रु. 420/-
ISBN : 978-260-5250-3

एच. एल. नागेगौड़ा (विनिबंध)
ले. कारिगौड़ा बीचनहल्ली
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5311-9

हा. मा. नायक (विनिबंध)
ले. जे. के. रमेश
पृ. 124; रु. 50/-
ISBN : 81-260-3042-9 (पुनर्मुद्रण)

टी. एस. वेंकान्नैया (विनिबंध)
ले. श्री रामेगौड़ा
पृ. 112; रु. 50/-
ISBN : 978-93-867-7105-6

कंपन मापकगले वंदने
ले. सी. राधाकृष्णन
अनु. ना. दामोदर शेट्टी
पृ. 572; रु. 410/-
ISBN : 978-93-87567-58-0

सातपत्र
ले. गदियाराम रामकृष्ण शर्मा
अनु. आर. शेष शास्त्री
पृ. 456; रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-5255-4

प्रेमचंद : कलम का सिपाही
ले. अमृत राय
अनु. तिप्पेस्वामी
पृ. 684; रु. 410/-
ISBN : 978-93-87567-42-9

कश्मीरी

मीर गुलाम रसूल नाज़्की (विनिबंध)
ले. अज़ीज़ हाजिनी
पृ. 106; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5231-8

वारिस शाह (विनिबंध)
ले. गुरचरण सिंह
अनु. अज़ीज़ हाजिनी
पृ. 112; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0455-3

ओडिपस
ले. सोफ़ोक्लीज़
अनु. नाजी मुनव्वर
पृ.; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-0694-6 (पुनर्मुद्रण)

शम्स फ़कीर (विनिबंध)
ले. शम्सुद्दीन अहमद
116; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1293-0 (पुनर्मुद्रण)

अब्दुल अहद ज़रगर (विनिबंध)
ले. ग़ुलाम मोहम्मद शाद
पृ. 98; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0176-7 (पुनर्मुद्रण)

मायनिस दून्स चो वोनी सबज़ार
ले. रस्किन बांड
अनु. बशर बशीर
पृ. 240; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5286-8

सैयद रसूल पोम्पूर (विनिबंध)
ले. रशीद शरशार
पृ. 116; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5264-6

गोरा
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. रतन लाल जौहर
पृ. 584; रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-5245-5

तस्रीम आसमान
ले. रिआज़-उल हसन
अनु. मोहम्मद अल्वी
पृ. 158; रु.110/-
ISBN : 978-81-260-5376-6

वथ ते बो
ले. मखमूर सईदी
अनु. अब्दुल अहद फ़रहाद
पृ. 214; रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5375-9

हिल्सा गादी हुंद माज़ी ते बे अफ़साने
संक. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दाह
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 144; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-5374-2

काशीनाथ भगवान (विनिबंध)
ले. औतर हुगामी
पृ. 80; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5372-3

गुलाम मोहिउद्दीन वफ़ा भदरवाही (विनिबंध)
ले. बशीर भदरवाही
पृ. 136; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5373-5

रवींद्रनाथ सुंद शुरे अदब (खंड-II)
संक. लीला मजुमदार एवं क्षितिज राय
अनु. पी. एन. कौल सायिल
पृ. 198; रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5377-3

जोमे सुबास मंज़ काशूर ज़बान ओ अदबुक तवारीख़
ले. मंसूर बानिहाली
पृ. 448; रु. 420/-
ISBN : 978-93-87567-32-0

मैथिली

आधुनिक भारतीय कविता संचयन : हिंदी
संक. एवं संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं रेवती रमण
अनु. वीणा ठाकुर
पृ. 248; रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5116-8

मैथिली प्रबंध-काव्यक उद्‌भव ओ विकास (संगोष्ठी के आलेख)
संपा. वीणा ठाकुर
पृ. 192; रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-5258-5

मिथलक लोककथा संचय
संक. एवं संपा. योगानंद झा
पृ. 410; रु. 450/-
ISBN : 978-81-260-5115-1

उमानाथ झा (विनिबंध)
ले. विजय मिश्र
पृ. 80; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5117-5

आधुनिक भारतीय कविता संचयन सिंधी
सक. एवं संपा. वासदेव मोही
अनु. फूलचंद्र झा 'प्रवीण'
पृ. 208; रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5043-7

पूर्वागमन (नवोदय)
ले. स्वाती शाकम्भरी
पृ. 196; रु. 160/-
ISBN: 978-81-260-5389-6

ब्रह्मपुत्रक लग पास
ले. लील बहादुर छेत्री
अनु. अशोक अविचल
पृ. 172; रु. 130/-
ISBN : 978-93-86771-07-0

असूर्यलोक
ले. भगवती कुमार शर्मा
अनु. शालिनी झा
पृ. 440; रु. 350/-
ISBN: 978-93-86771-40-7

मानव ज़मीन
ले. शीर्षेंदु मुखोपाध्याय
अनु. स्वर्णिमा झा
पृ. 800; रु. 600/-
ISBN : 978-93-86771-54-4

मैथिली साहित्य सर्जक प्रतिष्ठापक (संगोष्ठी के आलेख)
संपा. वीणा ठाकुर
पृ. 138; रु. 160/-
ISBN : 978-93-86771-74-2

आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास
ले. एवं अनु. देवकांत झा
पृ. 314; रु. 290/-
ISBN : 978-93-86771-70-4

आज़ादी
ले. चमन नाहल
अनु. रत्नेश्वर मिश्र
पृ. 296; रु. 260/-
ISBN : 978-93-86771-71-1

ईशनाथ झा रचना संचयन
संक. एवं संपा. अजीत मिश्र
पृ. 260; रु. 230/-
ISBN : 978-93-86771-14-8

विद्यापति गीत शती
संपा. उमानाथ झा
पृ. 122; रु. 220/-
ISBN : 978-81-7201-565-7 (पुनर्मुद्रण)

समकालीन मैथिली कविता
संपा. भीमनाथ झा एवं मोहन भारद्वाज
पृ. 116; रु. 80/-
ISBN: 978-81-260-2732-3 (पुनर्मुद्रण)

मैथिली कथा संग्रह
संपा. श्री जयधारी सिंह
पृ. 104; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2385-1 (पुनर्मुद्रण)

मैथिली लोकोक्ति संचय
संक. कमलकांत झा
पृ. 352; रु. 225/-
ISBN : 978-81-260-2558-9 (पुनर्मुद्रण)

मैथिली कथा शताब्दी संचय
संक. रामदेव झा एवं इंद्रकांत झा
पृ. 404; रु. 260/-
ISBN : 978-81-260-2898-6 (पुनर्मुद्रण)

विद्यापति गीत संचय
संपा. रामदेव झा एवं मोहन भारद्वाज
पृ. 372; रु. 220/-
ISBN : 978-81-260-0497-3 (पुनर्मुद्रण)

आधुनिक मैथिली नाटकक पुरोधा कविवर जीवन झा
संपा. वीणा ठाकुर
पृ. 192; रु. 200/-
ISBN : 978-93-86771-75-9

अमृतक संतान
(पुरस्कृत ओड़िया उपन्यास)
ले. गोपीनाथ मोहांती
अनु. रमाकांत राय 'रमा'
पृ. 568; रु. 390/-
ISBN : 978-93-87567-17-7

दक्षिण कामरूपक कथा
ले. इंदिरा गोस्वामी, अनु. आशा मिश्र
पृ. 320; रु. 280/-
ISBN : 978-93-87567-15-0

स्मरणगाथा
(पुरस्कृत आत्मकथात्मक मराठी उपन्यास)
ले. जी. एन. दांडेकर
अनु. शिखा गोयल
पृ. 456; रु. 370/-
ISBN : 978-93-87567-36-8

मलयाळम्

उन्नीकृष्णन पुथूर (विनिबंध)
ले. टी. बालाकृष्णन
पृ. 92; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-94-0

स्वाति तिरुनल (विनिबंध)
ले. के. ओमनकुट्टी
पृ. 88; रु. 50/-
ISBN: 978-93-86771-93-3

के. टी. मोहम्मद (विनिबंध)
ले. टी. एम. अब्राहम
पृ. 80; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-92-6

वाज़हवे
ले. गीता नागभूषण
अनु. सी. राघवन
पृ. 528; रु. 480/-
ISBN : 978-81-260-5287-5

आधुनिक मलयाला कविता
संक. डी. बेंजामिन
पृ. 215; रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-5288-2

कक्कनाडन (विनिबंध)
ले. किलिरूर राधाकृष्णन
पृ. 87; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5299-8

सी.वी. श्रीरामन (विनिबंध)
ले. वी.के. श्रीरामन
पृ. 97; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5308-7

श्रीरामकीर्ति महाकाव्यम
ले. सत्यव्रत शास्त्री
अनु. सी. राजेंद्रन
पृ. 312; रु. 345/-
ISBN : 978-81-260-5355-1

स्वदेशाभिमानी रामकृष्ण पिल्लै (विनिबंध)
ले. टी. वेणुगोपालन
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5349-0

कुंजुन्नी (विनिबंध)
ले. मलयथ अप्पुन्नी
पृ. 88; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-06-3

स्वप्न सारस्वत
ले. गोपालकृष्ण पै
अनु. के.वी. कुमारन
पृ. 488; रु. 340/-
ISBN : 978-93-86771-22-3

सुकुमार अष़ीकोडे (विनिबंध)
ले. सी. जे. राय
पृ. 92; रु. 50/-
ISBN : 978-93-87567-22-1

मणिपुरी

तमस
ले. भीष्म साहनी
अनु. आई. एस. काङ्जम
पृ. 242; रु. 280/-
ISBN : 978-81-260-0470-6 (पुनर्मुद्रण)

मणिपुरी वारिमाचा
संपा. अरिबम कुमार शर्मा
पृ. 186; रु. 230/-
ISBN : 978-81-7201-620-3 (पुनर्मुद्रण)

मणिपुरी खुन्नुंग एशी खोमजिङबा
संक. एवं संपा. एल. बीरेंद्र कुमार सिंह
पृ. 264; रु. 295/-
ISBN : 978-81-260-0843-8 (पुनर्मुद्रण)

लालहोउबा मणिपुरी अतेइ शेइरेंगशिंग
ले. काज़ी नज़रूल इस्लाम
अनु. ख. प्रकाश सिंह
पृ. 104; रु. 145/-
ISBN : 978-81-260-5249-3

मणिपुरी सेइरेंग
संक. एवं संपा. एलांगबम नीलकांत सिंह
पृ. 226; रु. 240/-
ISBN : 978-81-7201-888-7 (पुनर्मुद्रण)

लान आमसुङ लानमी
ले. अगम सिंह गिरि
अनु. दुर्गा शर्मा
पृ. 56; रु. 115/-
ISBN : 978-81-260-5365-0

मणिपुरी अंगका अमागी लीला
संक. एवं संपा. एम. प्रियव्रत सिंह
पृ. 268; रु. 335/-
ISBN : 978-93-86771-12-4

यारूइंगम
ले. बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य
अनु. एल. रघुमणि शर्मा
पृ. 304; रु. 260/-
ISBN : 978-81-260-3108-5 (पुनर्मुद्रण)

लदाखतागी तारकपा मामी
ले. भाबानी भट्टाचार्य
अनु. कुंजो सिंह
पृ. 396; रु. 340/-
ISBN : 978-81-260-5369-8

रवींद्र नाचोम, खंड-I
(कविताओं, गीतों और नाटकों का संकलन)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 326; रु. 230/-
ISBN : 978-81-260-1764-5 (पुनर्मुद्रण)

अंगोउबा चिठिखाओ
ले. मति नंदी
अनु. एन. विद्यासागर सिंह
पृ. 132; रु. 170/-
ISBN : 978-93-87567-11-5

मराठी

माटिचया मूर्ति
ले. रामवृक्ष बेनीपुरी
अनु. डी. बी. कर्णिक
पृ. 104; रु. 150/-
ISBN : 978-93-86771-85-8 (पुनर्मुद्रण)

ओम नमो
ले. शांतिनाथ देसाई
अनृ. अजीत मगदम
पृ. 260; रु. 255/-
ISBN : 978-93-86771-88-9

शौर्यगाथा सौराष्ट्रची
ले. अवेरचंद मेघाणी
अनु. अंजनी नरवाने
पृ. 278; रु. 250/-
ISBN : 81-260-1039-8

अंतरातील स्फोट
ले. जयंत नारलीकर
पृ. 136; रु. 100/-
ISBN : 81-7201-422-8 (पुनर्मुद्रण)

चेम्मीन
ले. तकष़ी शिवशंकर पिल्लै
अनु. प्रमोद जोशी
पृ. 220; रु. 250/-
ISBN :978-81-260-2822-1 (पुनर्मुद्रण)

निबंधमाला (भाग-1)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. शंकर बालाजी शास्त्री
पृ. 768; रु. 700/-
ISBN :81-260-1267-6 (पुनर्मुद्रण)

प्राचीन भारतीय लिपिमाला
ले. रायबहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा
अनु. लक्ष्मीनारायण भारतीय
पृ. 296; रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-4925-7

गिलगमेश
ले. डेविड फेरी, अनु. शरद नवारे
पृ. 136; रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-5300-1

संत जानाबाई आणि अन्य मध्ययुगीन संत कवयित्री
संक. विलास खोले
पृ. 212; रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-5306-3

भग्न मूर्तिन्च्या सान्निदयत
ले. सलाम बिन रज़्ज़ाक
अनु. मनीषा पटवर्धवन
पृ. 256; रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-5301-8

ठाकुरांचि नाटके (भाग-1)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. मामा वरेरकर
पृ. 298; रु. 300/-
ISBN : 81-260-1450-4

बाबासाहेब अंबेडकर (विनिबंध)
ले. के. राघवेंद्र राव
अनु. मुक्ता महाजन
पृ. 100; रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5293-6

गोदीचा महासागर
ले. ताजिमा शिंजी
अनु. अमित महाजन
पृ. 108; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-5271-4

निवडक बी. रघुनाथ
संपा. नागनाथ कोट्टपल्ले
पृ. 316; रु. 325/-
ISBN : 81-7201-872-X (पुनर्मुद्रण)

अन्ना भाऊ साठे (बिनिबंध)
ले. बजरंग कोरडे
अनु. विलास गीते
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 81-260-1142-4 (पुनर्मुद्रण)

विट्ठल रामजी शिंदे (विनिबंध)
ले. जी. एम. पवार
पृ. 84; रु. 50/-
ISBN : 81-260-0735-4

प्रेमचंद यान्च्या निवडक गोष्ठी-II
ले. अमृत राय
अनु. बाबा भांड
पृ. 138; रु. 60/-
ISBN : 978-81-260-3116-0 (पुनर्मुद्रण)

बाहिनाबाई चौधुरी (विनिबंध)
ले. प्रकाश सपकाले
पृ. 90; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-19-3

मराठी ग़ज़ल : अर्द्धशतकचा परवास
संपा. राम पंडित
पृ. 240; रु.175/-
ISBN : 978-81-260-4583-9

निवडक शेजवलकर
संपा. राजा दीक्षित
पृ. 244; रु. 250/-
ISBN : 81-260-2355-4

शालोम
संपा. नारायण लाले
पृ. 244; रु. 275/-
ISBN : 978-93-86771-95-7

राजवाड़े लेखसंग्रह
संपा. तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी
पृ. 344; रु. 350/-
ISBN : 81-7201-277-2 (पुनर्मुद्रण)

अशी धरतीची माया
ले. शिवराम कारंथ
अनु. आर. एस. लोकापुर
पृ. 352; रु. 350/-
ISBN: 81-7201-306-3 (पुनर्मुद्रण)

दुर्गा भागवत (विनिबंध)
ले. शोभा नाइक
पृ. 144; रु. 50/-
ISBN : 81-260-4152-8

समकालीन सिंधी कथा 1980-2005
संपा. प्रेम प्रकाश
अनु. गोरख थोराट
पृ. 332; रु. 350/-
ISBN : 978-93-87567-00-9 (पुनर्मुद्रण)

मराठी लोकगीते : संस्कृति अभ्यासची साधने
संक. रमेश वारखडे
पृ. 244; रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-3119-1 (पुनर्मुद्रण)

गजानन माधव मुक्तिबोध
ले. नंदकिशोर नवल
अनु. चंद्रकांत पाटील
पृ. 126; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5390-2

नेपाली

नेपाली कविता यात्रा
संक. एवं संपा. मोहन ठकुरी
पृ. 304; रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-5269-1 (पुनर्मुद्रण)

सुरेश राई (विनिबंध)
ले. असीत राई
पृ. 100; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-68-1

ओड़िया

शची राउतराय चयनिका
संक. एवं संपा. शैलज रवि
पृ. 340; रु. 330/-
ISBN : 978-93-86771-60-5

फतूरानंद चयनिका
संक. एवं संपा. बिजयानंद सिंह
पृ. 358; रु. 210/-
ISBN : 978-81-260-5277-6

दुइ धारिया माझीरे
ले. राजेश जोशी
अनु. सुरेंद्र पाणिग्रही
पृ. 112; रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-2909-9 (पुनर्मुद्रण)

गोपाल छोटराय (विनिबंध)
ले. संघमित्र मिश्र
पृ. 113; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5248-6

ओड़िया लोक कथा
संक. एवं संपा. अरविंद पटनायक
पृ. 168; रु. 160/-
ISBN: 978-81-260-3198-6
(संशोधित पुनर्मुद्रण)

राधामोहन गडनायक
ले. ब्रजनाथ रथ
पृ. 112; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2800-9 (पुनर्मुद्रण)

ओड़िया शिशु किशोर धागा धमाली
संक. एवं संपा. गोविंद चंद्र चाँद
पृ. 216; रु. 210/-
ISBN : 978-81-260-5312-4

गोपाल छोटराय चयनिका
संक. हेमंत कुमार दास
पृ. 408; रु. 380/-
ISBN : 978-81-260-5366-7

असमय
ले. बिमल कर
अनु. गोबिंद चंद्र साहु
पृ. 292; रु. 225/-
ISBN : 978-260-2502-2 (पुनर्मुद्रण)

ओड़िया लघुकथा
संक. एवं संपा. पीतबास राउतराय
पृ. 314; रु. 330/-
ISBN : 978-81-260-5302-5

स्वाधीनोत्तर ओड़िया क्षुद्र गल्प, खंड-IV
संक. एवं संपा. विभूति पट्टनायक
पृ. 344; रु. 340/-
ISBN : 978-81-260-5164-9

रवींद्रनाथ टैगोर (विनिबंध)
ले. शिशिर कुमार घोष
अनु. बिनोद च नायक
पृ. 152; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3381-2 (पुनर्मुद्रण)

संचयन
संक. सवं संपा. बसंत कुमार सत्पथी
पृ. 444; रु. 240/-
ISBN : 978-81-260-4435-1 (पुनर्मुद्रण)

अधूरा आंधार
ले. प्रतीक्षा जेना
पृ. 112; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4525-9 (पुनर्मुद्रण)

समयकू सइबाकू देबिनी
ले. एन. गोपी; अनु. बंगाली नंदा
पृ. 96; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4658-4 (पुनर्मुद्रण)

अनाहत परंपरा
संक. एवं संपा. गायत्री सराफ
पृ. 376; रु. 260/-
ISBN : 978-81-260-4657-7 (पुनर्मुद्रण)

जादुकर
ले. अक्षया स्वाइन
पृ. 100; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4647-8 (पुनर्मुद्रण)

ओड़िया शिशु किशोर कहानी
संक. एवं संपा. बीरेंद्र महांति
पृ. 288; रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-4424-5 (पुनर्मुद्रण)

अनुभवर अक्षरे जान्हा
ले. लीलाधर जगूड़ी
अनु. सविता मिश्र
पृ. 115; पृ. 170/-
ISBN : 978-81-260-5371-1

पाब्लो नेरूदा कविता संचयन
ले. पाब्लो नेरूदा
अनु. अरबिंद बेहेरा
पृ. 449; रु. 420/-
ISBN : 978-93-86771-00-1

तिरुक्कुरल
ले. तिरुवल्लुवर
अनु. बलराम राउत
पृ. 292; रु. 340/-
ISBN : 978-81-260-5396-4

गुजराती श्रेष्ठ गल्प
संक., संपा. एवं अनु. रेणुका श्रीराम सोनी
पृ. 213; रु. 235/-
ISBN : 978-81-260-5391-9

श्री नारायण गुरु (विनिबंध)
ले. टी. भास्करन
अनु. संग्राम जेना
पृ. 160; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-11-7

अस्मितार परंपरा
संक. अपर्णा महांति
पृ. 210; रु. 270/-
ISBN : 978-93-86771-34-6

जीबनलीला
ले. काकासाहेब कालेलकर
अनु. अल्का चाँद
पृ. 408; रु. 420/-
ISBN : 978-93-87567-28-3

शेष गोलोकधंदा
ले. अरुण जोशी
अनु. किशोरी चरण दास
पृ. 188; रु. 170/-
ISBN : 978-81-260-0084-5 (पुनर्मुद्रण)

पंजाबी

गाथा तिस्ता पार दी
ले. देवेश राय
अनु. नीलम शर्मा 'अंशु'
पृ. 968; रु. 1100/-
ISBN : 978-81-260-5240-0

अगन साखी
ले. ललितांबिका अंतर्जनम
अनु. मनजीत इंद्र
पृ. 120; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5353-7

इक्कीसवीं सदी दे पहले दहाके दी पंजाबी भाषा साहित ते सभ्याचार
संपा. जसपाल कौर कांग
पृ. 260; रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-5352-0

गहने पे रघु
ले. काशीनाथ सिंह
अनु. प्रेम प्रकाश
पृ. 164; रु. 130/-
ISBN : 978-93-86771-15-5

मणिक्कवसागर (विनिबंध)
ले. वन्मीकनाथन
अनु. कुलदीप सिंह दीप
पृ. 98; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-29-2

भाई काहन सिंह नाभा (विनिबंध)
ले. परमजीत वर्मा
पृ. 136; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-56-8

पत्थर उछालदा हां
ले. चंद्रकांत देवताले
अनु. बरजिंदर चौहान
पृ. 170; रु. 180/-
ISBN : 978-93-86771-90-2

खुआर औरतां
ले. मालती राव, अनु. परवेश शर्मा
पृ. 248; रु. 220/-
ISBN : 978-93-86771-98-8

राजस्थानी

विजयदान देथा (विनिबंध)
ले. धनंजय अमरावत
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5110-6

भाखर रा भोमिया
संपा. अर्जुन सिंह शेखावत
पृ. 204; रु. 200/- (पुनर्मुद्रण)

राजस्थानी व्रत कथावां
संपा. अर्जुन सिंह शेखावत
पृ. 424; रु. 225/-
ISBN : 978-81-260-0623-6 (पुनर्मुद्रण)

अवतार चरित्र, खंड-1
संपा. भँवरदान रत्नु मधुकर
पृ. 726; रु. 700/-
ISBN : 978-81-260-4885-4

अवतार चरित्र, खंड-2
संपा. भँवरदान रत्नु मधुकर
पृ. 731 से 1544; रु. 765/-
ISBN : 978-81-260-4556-1

संस्कृत

महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा (विनिबंध)
ले. चंद्रकांत शुक्ल
पृ. 144; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-51-3

संताली

फुरगल तायोम तेयाउडिया कहानी, खंड-1
संक. सतकड़ी होता, अनु. विभिन्न अनुवादक
अनु. संपा. दमयंती बेसरा
पृ. 532; रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-5290-5

सिंधी

ईश्वर चंद्र जूँ चूंद कहानियाँ
संपा. ईश्वर भारती
पृ. 200; रु. 125/-
ISBN : 978- 81-260-4927-1

तमिऴ

काट्टिल उरिमै
ले. महाश्वेता देवी
अनु. एस. कृष्णमूर्ति
पृ. 367; रु. 270/-
ISBN : 81-7201-602-6 (पुनर्मुद्रण)

इरंदम इदम
ले. एम. टी. वासुदेवन नायर
अनु. कुरिंजिवेलन
पृ. 464; रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-0893-8

मौनियिन कथैगळ
संक. के. ए. सच्चिदानंदम
पृ. 192; रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-4120-6

विनोदिनी
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. टी. एन. कुमारसामी
पृ. 240; रु. 115/-
ISBN : 978-93-86771-30-8

पेरियर ई.वे.रा. (विनिबंध)
ले. अरू. अप़ागप्पन
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2204-4 (पुनर्मुद्रण)

मौनी (विनिबंध)
ले. के. ए. सच्चिदानंदम
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1711-2 (पुनर्मुद्रण)

ज़ाकिर हुसैन (विनिबंध)
ले. खुर्शीद आलम ख़ान एवं बी. शेख अली
अनु. था. सिद्धार्थन
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 81-260-0579-3

भारतीयर (विनिबंध)
ले. एवं अनु. प्रेमा नंदकुमार
पृ. 110; रु. 50/-
ISBN : 81-260-2472-0

देवन्या पावनर (विनिबंध)
ले. इरा. इलानकुमारन
पृ. 101; रु. 50/-
ISBN : 81-260-1499-7 (पुनर्मुद्रण)

कोंगुवेलिर (विनिबंध)
ले. आर. विजयालक्ष्मी
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 81-260-5281-3

गुरु गोविंद सिंह (विनिबंध)
ले. महीप सिंह
अनु. अल्मेलु कृष्णन
पृ. 127; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5318-6

सिरुवर कधाइ कलनजियम
संक. आर. कामरासु एवं सी. सेतुपति
पृ. 240; रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-5298-1

आसीरवादतिन वन्नम
ले. अरुण शर्मा
अनु. एम. सुशीला
पृ. 368; रु. 225/-
ISBN : 978-81-260-5339-1

जयकांतन (विनिबंध)
ले. के. एस. सुब्रह्मण्यन
पृ. 80; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5332-2

थेरनथेदुता संग इलाक्किय पदलगळ
संक. इरा. मोहन
पृ. 288; रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-5335-3

कादिथा इलाक्कियम
संक. आर. कामरासु
पृ. 320; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5333-9

वे. स्वामीनाथ शर्मा (विनिबंध)
ले. पे. सु. मणि
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0580-7 (पुनर्मुद्रण)

मा. पो. शिवज्ञानम (विनिबंध)
ले. पे. सु. मणि
पृ. 144; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2085-7(पुनर्मुद्रण)

तमिष़ थाथा (विनिबंध)
ले. के. वी. जगन्नाथन
पृ. 80; रु. 50/-
ISBN : 81-7201-634-4 (पुनर्मुद्रण)

कुमारगुरुपरर (विनिबंध)
ले. ए. वी. शांतिकुमार स्वामीगळ
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2699-9 (पुनर्मुद्रण)

पिनाइ कैदी
ले. काशीनाथ सिंह
अनु. मु. ज्ञानम
पृ. 192; रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-5385-8

जे. कृष्णमूर्ति (विनिबंध)
ले. शांता रामेश्वर राव
अनु. अक्कलूर रवि
पृ. 136; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5399-5

महानगळ कूरिया माराबूवष़ी कथैगळ
ले. मनोज दास
अनु. पी. यू. अयूब
पृ. 352; रु. 255/-
ISBN : 978-81-260-2094-6 (पुनर्मुद्रण)

पुदुमैपित्तन (विनिबंध)
ले. वल्लीकण्णन
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2370 (पुनर्मुद्रण)

मारुम उलगिल मरैया ओलिगळ
संक. एवं अनु. के. वासमल्ली एवं आर. कार्तिक नारायणन
पृ. 240; रु. 550/-
ISBN : 978-81-260-5344-5

थनिनयागा अदिगलरिन तमिष़ियल पनगलिप्पु
संक. एवं संपा. आर. कामरासु
पृ. 256; रु. 200/-
ISBN : 978-93-86771-25-4

तमिष़गा याप्पु मरबु पावलारगलिन पापोगुप्पु
संक. आर. संबत
पृ. 304; रु. 215/-
ISBN : 978-93-86771-25-4

शृंगारवेलर
ले. प. वीरमणि
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-27-8

पेरासिरियर ना. सुब्बू रेड्डिआरिन पनमुगम
संक. एवं संपा. आर. कामरासु
पृ. 176; रु. 120/-
ISBN : 978-93-86771-23-0

तेलुंगु नावलगळ, सिरूकथैगळ
ले. रचापालेम चंद्रशेखर रेड्डी
अनु. रुद्र तुलसीदास
पृ. 224; रु. 135/-
ISBN : 978-93-86771-26-1

पनमुगा नोक्किल अयोतिदास पंडितर
संक. एवं संपा. आर. संबत
पृ. 240; रु. 180/-
ISBN :978-93-86771-24-7

स्वामी विवेकानंद (विनिबंध)
ले. नेमाइ साधन बोस
अनु. के. चेल्लप्पन
पृ. 167; रु. 50/-
ISBN : 81-260-1714-7 (पुनर्मुद्रण)

राजम कृष्णन (विनिबंध)
ले. एस. थोथत्री
पृ. 102; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-28-5

भीष्म साहनी (विनिबंध)
ले. रमेश उपाध्याय
अनु. साई सुब्बुलक्ष्मी
पृ. 160; रु. 50/-
ISBN : 978-93-87567-31-3

टे. पो. मीनाक्षीसुंदरनर (विनिबंध)
ले. डी. वी. वीरसामी
पृ. 160; रु. 50/-
ISBN : 81-7201-748-0

राजा राममोहन राय (विनिबंध)
ले. सौम्येंद्रनाथ टैगोर
अनु. के. डी. तिरुनवुक्कारसु
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-87-2

मलयाला चिरूकथैगळ
संक. एस. गुप्तन नायर
अनु. पुष्पवेनी गोवी
पृ. 240; रु. 210/-
ISBN : 81-260-1492-X

सुवारिल ओरु जान्नल इरुनधु वनधदु
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. विनोद कुमार शुक्ल
अनु. एन. कामतची एवं धरनी शंकर
पृ. 256; रु. 200/-
ISBN : 978-93-87567-26-9

तुलिप्पाः नूरनदुगालिल
(संगोष्ठी के आलेख)
संक. आर. संबत
पृ. 256; रु. 200/-
ISBN : 978-93-87567-27-6

वनोली तमिष़ नाटक इलाक्कियम
संक. स्टालिन
पृ. 192. रु. 180/-
ISBN : 978-93-87567-40-5

भगवान बुद्धर (द्वितीय संस्करण)
ले. धर्मानंद कोसांबी, अनु. का. श्री श्री
पृ. 336; रु. 270/-
ISBN : 978-93-87567-35-1

पेद्दिभोतला सुब्बारमय्या कथैगळ
ले. पेद्दिभोतला सुब्बारमय्या
अनु. मधुमिता
पृ. 496
ISBN : 978-93-87567-34-4

प्रपंचन पदैप्पुलगम
संक. महारंदन
पृ. 256; रु. 310/-
ISBN : 978-93-87567-38-2

मन्नुम मनिथारुम
ले. शिवराम कारंथ
अनु. टी.बी. सिद्धलिंगय्या
पृ. 648; रु. 485/-
ISBN : 978-93-87567-57-3

तमिष़ इलाक्किया वरलारू
ले. मु. वरदरासन
पृ. 456; रु. 225/-
ISBN : 81-720-1164-4

का. अयोतिदास पंडितर
ले. गौतम सन्नह
पृ. 112; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2466-6

चेम्मीन
ले. तकष़ी शिवशंकर पिल्लै
अनु. सुंदर रामासामी
पृ. 320; रु. 240/-
ISBN : 978-81-260-0713-3

मनोनमानीयम सुंदरमपिल्लै
ले. न. वेलुसामी
पृ. 144; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1129-7

कंबन
ले. एस. महाराजन
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 978-81-7201-636-0

कविज्ञर कन्नदासन
ले. एम. बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1721-X

सुरथ
ले. आर. कुमारवेलन
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3349-2

तोलकप्पियर
ले. तमिष़हल
पृ. 112; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0056-2

ना. पिचामूर्ति
ले. अशोकमित्रन
पृ. 80; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1546-2

अव्वियर
ले. तमिष़नल
पृ. 112; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0057-0

मणिककाव्यसागर
ले. जी. वन्मीकनाथन
पृ. 96; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2884-9

नमाक्कल रामलिंगम पिल्लै
ले. के. आर. हनुमंतन
पृ. 144; रु. 50/-
ISBN : 81-260-0900-4

तमिषवेल उमामगेश्वरनर
ले. एस. संबाशिवनर
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1632-9

तेलुगु

पाकिस्तान कथानीकळु
संक. इंतिज़ार हुसैन
एवं आसिफ़ फारूख़ी
अनु. एन. सी. रामानुजाचारी
'श्रीविरिंची'
पृ. 368; रु. 275/-
ISBN : 978-93-86771-59-9

देवलापल्ली कृष्ण शास्त्री (विनिबंध)
ले. भूसरपल्ली वेंकटेश्वरलु
पृ. 80; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0816-4

ग़ालिब नाटी कालम
ले. पवन कुमार वर्मा
अनु. एलनाग (एन. सुरेंद्र)
पृ. 240; रु. 190/-
ISBN : 978-93-86771-83-4

श्री कृष्णदेवराय (विनिबंध)
ले. अडपा रामकृष्ण राव
अनु. एस. नरसिंहा
पृ. 112; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5282-0

वैज्ञानिक कथालु
संक. नासूरी वेणुगोपाल एवं नमिनि सुधाकर नायडु
पृ. 364; रु. 230/-
ISBN : 978-81-260-5285-1

विरुदुराजु रामराजु (विनिबंध)
ले. अक्किराजु रमापति राव
पृ. 100; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5292-9

वाट्टिकोटा आलवारस्वामी (विनिबंध)
ले. संगिशेट्टी श्रीनिवास
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5151-9

वुतुकूरी लक्ष्मीकांतम्मा (विनिबंध)
ले. सी. भवानी देवी
पृ. 132; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5294-3

के. पी. पूरनचंद्र तेजस्वी : जीवितमु-साहित्यम
ले. करीगौड़ा बेचनहल्ली
अनु. श्री रंगनाथ रामचंद्र राव
पृ. 244; रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5253-0

गैलिलो संतकाम
ले. कैलाश वाजपेयी
अनु. पारनंदी निर्मला
पृ. 120; रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-5361-5

तापी धर्मराव (विनिबंध)
ले. आर. वेंकटेश्वर राव
(आर.वी. आर.)
पृ. 136; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5310-0

के. एन. वाई. पतंजलि (विनिबंध)
ले. चिंताकिंदी श्रीनिवास राव
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5336-0

कृष्णचंद्र एन्निका चेसिना कथानिकलु
ले. कृश्न चंदर
अनु. आर. चंद्रशेखर रेड्डी
पृ. 296; रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5147-2

बोयी भीमन्ना (विनिबंध)
ले. बी. विज़िया भारती
पृ. 112; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5359-9

भाले टाटा माना बापुजी
ले. बोलवर मुहम्मद कुन्ही
अनु. जे. एस. आर. मूर्ति
पृ. 212; रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-5360-7

अलूरी बैरागी (विनिबंध)
ले. तक्कोलू माचिरेड्डी
पृ. 132; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-03-2

कविकोंदला वेंकट राव (विनिबंध)
ले. सी. वी. राजगोपाल राव
पृ. 72; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-04-09

विद्यापति प्रणय गीताळु
संपा. डब्ल्यू. जी. आर्चर
अनु. एन. गोपी
पृ. 112; रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5362-3

पागी
ले. चंद्रप्रकाश देवल
अनु. एन. गोपी
पृ. 76; रु. 100/-
ISBN : 978-93-86771-47-6

पलागुम्मी पद्मराजु (विनिबंध)
ले. अक्किराजु रमापति राव
पृ. 87; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-35-3

जी. एन. रेड्डी (विनिबंध)
ले. पापिरेड्डी नरसिम्हारेड्डी
पृ. 124; रु. 50/-
ISBN : 978-93-87567-21-4

स्पंदनमापनुलाकु धन्यवादालु
ले. सी. राधाकृष्णन
अनु. एल. आर. स्वामी
पृ. 492; रु. 365/-
ISBN : 978-93-87567-39-9

बंदारू अच्चमामबा (विनिबंध)
ले. एन. अनंतलक्ष्मी
पृ. 118; रु. 50/-
ISBN : 978-93-87567-20-7

उर्दू

गीतांजलि
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. नियाज़ फतेहपुरी
पृ. 109; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-1312-8

कुरतुल-ऐन-हैदर (विनिबंध)
ले. जमील अख़्तर
पृ. 148; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5222-6

कुल्लियात-ए हिंदवी अमीर खुसरो
ले. गोपीचंद नारंग
पृ. 232; रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-5317-9

रशीद जहाँ (विनिबंध)
ले. इरतिज़ा करीम
पृ. 144; रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2641-8

नरेश कुमार शाद (विनिबंध)
ले. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी
पृ. 147; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-37-7

मुंशी द्वारका प्रसाद उफक़ लखनवी (विनिबंध)
ले. सैय्यद याह्या नशीत
पृ. 128; रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-38-4

गुब्बारे-ए-ख़ातिर
ले. मौलाना अबुल कलाम आज़ाद
पृ. 564; रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-0132-3 (पुनर्मुद्रण)

खुतबात-ए-आज़ाद (खंड-1)
ले. मौलाना अबुल क़लाम आज़ाद
पृ. 436; रु. 275/-
ISBN : 978-81-260-1155-1 (पुनर्मुद्रण)

तज़किरा
ले. मौलाना अबुल कलाम आज़ाद
पृ. 560; रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-0422-5

मुझे चाँद चाहिए
ले. सुरेंद्र वर्मा
अनु. चंद्रभान ख़याल
पृ. 728; रु. 830/-
ISBN : 978-93-86771-98-6

आज का कश्मीरी अफ़साना
संक. एवं संपा. शफ़ी शौक़
अनु. अल्ताफ़ अंजुम
पृ. 168; रु. 190/-
ISBN : 978-93-87567-33-7

नियंत्रक-महालेखापरीक्षक द्वारा 31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए साहित्य अकादेमी के लेखाओं पर पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

लेखा की लेखापरीक्षा नियंत्रक-महालेखापरीक्षक (कर्त्तव्य, शक्तियों एवं सेवा की शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20(1) के अंतर्गत कर ली है। वर्ष 2018-2019 तक की अवधि के लिए ही लेखापरीक्षा सौंपी गई थी। वित्तीय विवरणों में अकादेमी के तीन क्षेत्रिय कार्यालयों तथा दो बिक्री कार्यालयों के लेखे भी शामिल हैं। इन वित्तीय विवरणों को तैयार करने की ज़िम्मेदारी अकादेमी के प्रबंधन की है। हमारी ज़िम्मेदारी लेखापरीक्षा के आधार पर इन वित्तीय विवरणों पर विचार व्यक्त करने की है।

2. इस पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की टिप्पणियाँ केवल उत्तम लेखा पद्धतियों, लेखा मानकों प्रकटीकाण नियमों आदि के वर्गीकरण, अनुपालन के संबंध में है। वित्तीय लेन-देन के लेखापरीक्षा की टिप्पणियाँ नियमों, विनियमों, क़ानून एवं कार्यान्वयन पहलुओं, यदि कोई है, का उल्लेख निरीक्षण प्रतिवेदन/नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में पृथक् रूप से किया गया है।
3. हमने लेखापरीक्षा सामान्यतः भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षण मानकों और लागू नियमों के अनुरूप की है। इन मानकों में अपेक्षित है कि लेखापरीक्षा इस प्रकार आयोजित तथा निष्पादित की जाए कि वित्तीय विवरण तथ्यों की ग़लतबयानी से मुक्त हों। वित्तीय विवरणों की लेखापरीक्षा वित्तीय विवरणों में दी गई राशियों तथा तथ्यों के समर्थन में प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर की जाती है। लेखापरीक्षा में लेखा संबंधी नियमों तथा प्रबंधन की महत्त्वपूर्ण सूचनाओं के साथ-साथ वित्तीय विवरणों की प्रस्तुति का पूर्ण मूल्यांकन भी शामिल है। हमें विश्वास है कि हमारी लेखापरीक्षा हमारे विचारों को उचित आधार प्रदान करती है।
4. अपनी लेखापरीक्षा के आधार पर हम सूचित करते हैं कि :
   (i) हमारी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार हमने अपनी लेखापरीक्षा के उद्देश्य से आवश्यक सूचनाएँ और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं।
   (ii) इस प्रतिवेदन से संबंधित तुलनपत्र, आय एवं व्यय खाता/प्राप्ति एवं भुगतान खाता को वित्त मंत्रालय द्वारा स्वीकृत प्रारूप के अनुरूप तैयार किया गया है।
   (iii) हमारे विचार से लेखापरीक्षा के दौरान लेखा पुस्तकों की जाँच करने पर प्रतीत होता है कि साहित्य अकादेमी में लेखा पुस्तकों तथा अन्य संबंधित दस्तावेज़ों को समुचित ढंग से रखा जा रहा है।
   (iv) आगे हम यह सूचित करते हैं कि–

ए. सामान्य

ए.1 साहित्य अकादेमी के लेखा संबंधी टिप्पणियों से पता चलता है कि ''सेवानिवृत्ति संबंधी लाभ से जुड़ा दायित्व, जो निधन/सेवानिवृत्ति पर छुट्टियों का नकदीकरण के रूप में ग्रैच्युटी है, आवर्ती अनुदान की दृष्टि से ग़ैर योजना, जिसमें सेवानिवृत्त होनेवाले कर्मचारियों को देय राशि समाहित है तथा जिसमें अनुदान अवधि हेतु सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए प्रावधान है, में रखा जाना ज़रूरी नहीं है।'' आईसीएआई का एएस-15 यह दर्शाता है कि कर्मचारियों को लाभ संबंधी कर्तव्य बीमांकिक मूल्यांकन पद्धति के आधार पर होने चाहिए। इस प्रकार, संगठन की सेवानिवृत्ति संबंधी लेखा नीति का लेखा मानक-15 से तालमेल नहीं है। इसके बारे में पिछले साल के प्रतिवेदन में भी बताया गया था, लेकिन कोई सुधारात्मक कार्रवाई नहीं की गई है।

ए. 2 अनुदान की संस्वीकृतियों की शर्तों के अनुसार अर्जित ब्याज भारत सरकार को जमा/लौटाया जाना चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं हुआ है।

ए. 3 रु. 41.62 लाख की राशि विविध देनदारों के पास छह महीनों (अनुसूची 11 ए) से अधिक समय से बाक़ी है, उसे प्राथमिकता के आधार पर प्राप्त किया जाना ज़रूरी है।

बी. सहायता अनुदान

वर्ष 2017-2018 के लिए प्राप्त एवं उपयोगार्थ सहायता अनुदान का ब्यौरा निम्नलिखित है–

ब्यौरा	**राशि** (करोड़ में)
वर्ष के दौरान प्राप्त सहायता अनुदान	34.10
गर्त वर्ष का अव्ययित शेष	1.51
वर्ष के दौरान आंतरिक प्राप्तियाँ	3.13
कुल उपलब्ध पूँजी	38.74
वर्ष के दौरान व्यय	36.92
अव्ययित शेष	1.82

वित्तीय वर्ष के अंत में साहित्य अकादेमी के पास रु. 1.82 करोड़ की राशि का अव्ययित शेष है।

सी. प्रबंधन पत्र : लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में जिन कमियों को शामिल नहीं किया गया है, उनके बारे में सचिव, साहित्य अकादेमी को प्रबंधन पत्र के माध्यम से प्रभावी कार्रवाई के लिए अलग से बताया गया है।

(i) पूर्ववर्ती अनुच्छेदों में व्यक्त हमारे विचारों के संदर्भ में हम यह कहना चाहते हैं कि जिस तुलनपत्र, आय एवं व्यय लेखा तथा प्राप्ति एवं भुगतान लेखा का उपयोग इस प्रतिवेदन के लिए किया गया है, वे लेखा बहियों के साथ अनुबंधित हैं।

(ii) हमारे विचार और हमारी सर्वोत्तम सूचना तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरणों के अनुसार, वित्तीय विवरण में दी गई महत्त्वपूर्ण सूचनाओं तथा अनुलग्नक में दिए गए अन्य तथ्यों के आधार पर, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यह रपट भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षा मानकों और लागू नियमों के अनुरूप है।

(क) यह साहित्य अकादेमी के 31 मार्च 2017 तक के कार्यकलापों के तुलनपत्र से संबंधित है; तथा

(ख) उसी तिथि को समाप्त वर्ष के अधिशेष के आय एवं व्यय लेखा से संबंधित है।

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की ओर से

ह./-

महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केंद्रीय व्यय)

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 19 दिसंबर 2018

''प्रस्तुत प्रतिवेदन मूल रूप से अंग्रेज़ी में लिखित पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद है। यदि इसमें कोई विसंगति परिलक्षित होती है तो अंग्रेज़ी में लिखित प्रतिवेदन मान्य होगा।''

अनुलग्नक

(1) आंतरिक लेखापरीक्षा व्यवस्था की पर्याप्तता

- चार्टर-लेखाकार फर्म द्वारा अकादेमी की 31 मार्च 2018 तक की आंतरिक लेखापरीक्षा की गई।

- वैधानिक लेखापरीक्षा संबंधी आपत्तियों के संदर्भ में प्रबंधन की प्रतिक्रिया प्रभावी नहीं है, क्योंकि 2006-07 से 2014-17 तक की अवधि में 29 पैरा अभी भी शेष हैं।

(2) आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था की पर्याप्तता

आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था निम्नलिखित के कारण अपर्याप्त है :–

- 31-03-2018 तक रु. 31.36 लाख (अनुसूची 11 बी) की राशि के लिए गए अग्रिम बकाया हैं, जिनका शीघ्र समायोजन किया जाना आवश्यक है।

- साहित्य अकादेमी के खातों में गलत/दोहरे भुगतान के मामले पाए गए हैं। भुगतान जारी करने की प्रणाली को मज़बूत किया जाना चाहिए।

- वाउचर शीर्षों के वर्गीकरण के बिना भुगतान के लिए पारित किए गए (अर्थात् उपभोग्य/ग़ैर-उपभोग्य) वाउचरों को भुगतान और रद्द के रूप में चिह्नित नहीं किया गया।

- आवधिक रूप से कैश बुक का औचक निरीक्षण नहीं किया गया है।

- अग्रिम रजिस्टर, बीमा रजिस्टर तथा सहायता अनुदान रजिस्टर का रख-रखाव नहीं किया गया है।

- अभुगतेय चेकों के विवरण का समाधान बैंक के साथ आवधिक रूप से नहीं कराया गया है। इसे प्राथमिक आधार पर किया जाना आवश्यक है।

- बीआरएस में यह पाया गया कि अगस्त 2017 से जारी किए गए चेकों के बारे में यह दिखाया गया है कि 'चेक जारी, लेकिन भुगतान हेतु प्रस्तुत नहीं किए गए'। यह सुझाव दिया जाता है कि बीआरएस में दर्शाए गए बाधित चेकों की सदैव पहचान की जानी चाहिए और उन्हें रद्द किया जाना चाहिए।

(3) स्थायी परिसंपत्तियों के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

- केवल 2013-14 तक की स्थाई परिसम्पत्तियों का प्रत्यक्ष सत्यापन किया गया।

- 31 मार्च 2018 तक अकादेमी के पास रु. 14.41 करोड़ मूल्य की स्थाई परिसंपत्तियाँ हैं, किंतु अकादेमी द्वारा रखे गए रजिस्टरों में लेखा में दर्शाए गए सभी मदों के विवरण प्राप्त नहीं होते।

(4) सामान सूची के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

- पुस्तकालय की पुस्तकों का प्रत्यक्ष सत्यापन वर्ष 2017-18 तक किया जा चुका है।

- लेखन-सामग्री तथा उपभोग्य वस्तुओं का प्रत्यक्ष सत्यापन 2016-2017 तक किया जा चुका है।

(5) देय राशि के भुगतान में नियमितता

- लेखा के अनुसार 31 मार्च 2018 तक छह माह की अवधि से अधिक वाला कोई भुगतान बकाया नहीं था।

वार्षिक लेखा
2017-2018

लेखापरीक्षा प्रतिवेदन	185
तुलनपत्र : यथास्थिति 31 मार्च 2018	191
आय एवं व्यय लेखा : 31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए	192
तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण : यथातिथि 31 मार्च 2018	193
31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा	217
सामान्य भविष्य निधि का तुलन-पत्र : यथास्थिति 31 मार्च 2018	219
सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति लेखा	221
सामान्य भविष्य निधि का भुगतान लेखा	222
सामान्य भविष्य निधि की निवेश अनुसूची	223

तुलन-पत्र यथातिथि 31 मार्च 2018

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	चालू वर्ष	गत वर्ष
संग्रह निधि और दायित्व			
संग्रह निधि	1	10,000,000	10,100,692
आरक्षित और अधिशेष	2	2,848,164	5,414,456
नियत अक्षय निधि	3	363,951,967	375,959,933
सुरक्षित ऋण और उधार	4	-	-
असुरक्षित ऋण और उधार	5	-	-
अस्थगित जमा दायित्व	6	-	-
चालू दायित्व और उपबंध	7	35,198,116	31,044,218
योग		**411,998,247**	**422,519,300**
परिसंपत्तियाँ			
स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	144,108,083	166,662,584
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	9	88,785,425	55,247,439
अन्य निवेश	10	10,718,590	10,000,000
चालू परिसंपत्ति, ऋण, अग्रिम आदि	11	168,386,149	190,609,277
विविध व्यय (एक सीमा एक अवलेखित या समायोजित)		-	-
योग		**411,998,247**	**422,519,300**
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	25		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	26		

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	**घनश्याम शर्मा**	**बाबुराजन एस.**	**रेणु मोहन भान**	**के.एस. राव**
दिनांक : 6 जून 2018	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव)	(उपसचिव)	(सचिव)

आय और व्यय लेखा : 31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	चालू वर्ष	गत वर्ष
आय			
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय	12	211,396	-
अनुदान/इमदाद राशि से प्राप्त आय	13	331,225,908	286,687,438
शुल्क/अंशदान प्राप्त	14	316,250	-
निवेश से प्राप्त आय	15	-	-
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त आय	16	21,697,684	19,218,856
प्राप्त ब्याज	17	3,031,361	8,065,952
अन्य आय	18	3,031,361	3,734,737
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में उतार/चढ़ाव	19	7,122,854	10,482,037
योग (ए)		**367,768,734**	**327,784,770**
व्यय			
स्थापना व्यय	20	172,869,732	140,517,363
अन्य प्रशासनिक व्यय	21	30,127,958	9,182,123
संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार की गतिविधियाँ	22	167,438,028	200,627,188
अनुदान, इमदाद आदि पर व्यय	23	-	1,048,212
ब्याज	24	-	-
योग (बी)		**370,435,718**	**351,374,886**
आय पर व्यय का अधिक्य (ए-बी)		(2,666,984)	(23,590,115)
पूर्व अवधि मदें		-	-
पूंजीगत कार्य की प्रगति/प्रकाशन निधि की ओर पूंजीकृत अनुदान		-	-
कुल योग अधिशेष के कारण/(घाटा) संग्रह/पूँजी निधि में अग्रेनीत		(2,666,984)	(23,590,115)
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	25		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	26		

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	**घनश्याम शर्मा**	**बाबुराजन एस.**	**रेणु मोहन भान**	**के.एस. राव**
दिनांक : 6 जून 2018	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव)	(उपसचिव)	(सचिव)

अनुसूची-1

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण : यथातिथि 31 मार्च 2018

(राशि रुपये में)

विवरण		चालू वर्ष	गत वर्ष
संग्रह निधि			
वर्ष के आरंभ में शेष		10,100,692	10,000,000
जमा :	संग्रह निधि में योगदान	-	-
	आय और व्यय लेखा से स्थानांतरित		
	कुल आय/(व्यय) का शेष	-	-
जमा :	संग्रह निवेश पर प्राप्त कुल ब्याज	718,097	873,999
घटा :	वर्ष के दौरान योजनागत संग्रह में स्थानांतरित	(718,097)	(773,307)
घटा :	सामान्य आरक्षित में स्थानांतरित शेष	(100,692)	-
	योग (ए)	**10,000,000**	**10,100,692**
आय और व्यय लेखा			
वर्ष के आरंभ में शेष		-	-
जमा :	उक्त संग्रह/पूंजीगत निधि से स्थानांतरित शेष	-	-
	आय और व्यय लेखा से स्थानांतरित कुल आय/व्यय का शेष	-	-
	एन.ई. से योजना में अस्थायी स्थानांतरण की छूट	-	-
योग (बी)		-	-
वर्ष के अंत में शेष (ए+बी)		**10,000,000**	**10,100,692**

अनुसूची-2

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2018

(राशि रुपये में)

	चालू वर्ष	गत वर्ष
संग्रह निधि और दायित्व		
1. आरक्षित पूँजी :		
पिछले लेखा के अनुसार		
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि		
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ		
योग	-	-
2. आरक्षित पुनर्मूल्यन :		
पिछले लेखा के अनुसार		
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि		
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ		
योग	-	-
3. विशेष आरक्षित :		
पिछले लेखा के अनुसार योजनागत		
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि		
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ		
योग	-	-
4. सामान्य आरक्षित :		
पिछले लेखा के अनुसार–योजनागत	5,414,456	26,587,392
पिछले लेखा के अनुसार–ग़ैर-योजनागत	-	2,417,179
जमा : वर्ष के दौरान अधिकता/(घटा)–योजनागत	(2,666,984)	(23,590,116)
जमा : संग्रह निधि से स्थानांतरित	100,692	-
जमा : पूर्व अवधि समायोजना	-	-
योग	2,848,164	5,414,456
कुल योग	**2,848,164**	**5,414,456**

अनुसूची-3

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2018

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष			
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	सा.भ.नि	योग
अनुसूची-3–नियत/अक्षय निधि				
(ए) निधियों का आदि शेष	166,662,584	108,780,303	100,517,045	375,959,932
(बी) निधियों में बढ़ोतरी				
i. दान/अनुदान/अभिदान				
–अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्ति	2,203,142	-	-	-
–अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति में 4,424,669	4,424,669	-	-	
ii. खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-	4,749,064	4,749,064
iii. अन्य बढ़ोतरियाँ–बैंक ब्याज				
- पुस्तकालय पुस्तकें/भेंट की गई पुस्तकें	-	7,122,854	-	7,122,854
- प्रकाशनों/वीडियो/फ़िल्में/काग़ज़	118,058	-	-	118,058
- अन्य जमा/समायोजना	-	-	48,862	48,862
- अंशदान और ब्याज	-	-	20,599,951	20,599,951
- एनपीएस अंशदान	-	-	4,764,524	4,764,524
योग (बी)	**6,745,869**	**7,122,854**	**30,162,401**	**44,031,124**
योग (ए+बी)	**173,408,453**	**115,903,157**	**130,679,446**	**419,991,056**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए				
i. पूँजी व्यय				
- स्थायी परिसंपत्ति	-	-	-	-
- कार (सकल) की बिक्री में हानि	-	-	-	-
- वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	-	-	-
- वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	29,305,542	-	-	29,305,542
- अन्य	-	-	-	-
- एनएसडीएल को भुगतान			4,764,524	4,764,524
योग	**29,305,542**	**-**	**4,764,524**	**34,070,066**

ii. राजस्व ख़र्च				
- वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-	-
- वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानांतरण	-	-	15,003,834	15,003,834
- सा.भ.नि. अंशदानकर्त्ताओं को ब्याज	-	-	6,965,191	6,965,191
- अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	-	-
योग	**-**	**-**	**21,969,025**	**21,969,025**
योग (सी)	**29,305,542**	**-**	**26,733,549**	**56,039,091**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी-सी	**144,102,911**	**115,903,157**	**103,945,897**	**363,951,965**

नोट :

(1) स्वामित्व फ्लैट/परिसर में 21430992/- रुपए का मूल्यह्रास शामिल है, जिसे लेखापरीक्षा ने पाया कि उसे वित्त वर्ष 2006-07 से वित्त वर्ष 2016-17 अवधि के लिए पहले शुल्क न लगाए जाने के लिए छोड़ दिया गया था।

अनुसूची-3, जारी....

(जारी....अनुसूची-3)

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2018

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष			
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	सा.भ.नि	योग
(ए) निधियों का आदि शेष	10,92,36,207	9,82,98,266	9,27,29,293	30,02,63,767
(बी) निधियों में बढ़ोतरी				
i. वर्ष के प्रारंभ में अव्ययित अनुदान	-	-	-	-
ii. दान/अनुदान	-	-	-	-
iii. पूंजीगत अनुदान/अंशदान	6,55,56,000	-	1,39,72,100	7,95,28,100
iv. ख़ातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-	67,74,631	67,74,631
v. अन्य बढ़ोतरियाँ	-	-	-	-
- नई पेंशन योजना	-	-	26,91,596	26,91,596
- पुस्तकालय पुस्तकें/भेंट की गई पुस्तकें	1,87,501	-	-	1,87,501
- प्रकाशन/वीडियो फ़िल्में / काग़ज़	-	1,04,84,127	-	1,04,84,127
- वर्ष के दौरान समायोजन	10,89,118	-	78,385	11,67,503
- अन्य जमा	-	-	-	-
योग (बी)	**6,68,32,619**	**1,04,84,127**	**2,35,16,712**	**10,08,33,458**
योग (ए+बी)	**17,60,68,826**	**10,87,82,393**	**11,62,46,005**	**40,10,97,224**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए				
i. पूँजी व्यय				
- स्थायी परिसंपत्ति	-	-	-	-
- कार (सकल) की बिक्री में हानि	-	-	-	-
- वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	2,090	4,44,980	4,47,070
- वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	-	-	-	-
- अन्य	94,06,242	-	-	94,06,242
- एनपीएस की राशि पीएफ़आरडीए में स्थानांतरित			34,47,958	34,47,958
- निधि से कटौतियाँ / निकासी			69,69,000	69,69,000
- पूर्ण और अंतिम समायोजन			48,67,022	48,67,022
योग	**94,06,242**	**2,090**	**1,57,28,960**	**2,51,37,292**
ii. राजस्व ख़र्च				
- वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-	-
- वर्ष के दौरान कटौतियाँ / समायोजन / स्थानांतरण	-	-	-	-
- अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	-	-
योग	_	-	-	-
योग (सी)	**94,06,242**	**2,090**	**1,57,28,960**	**2,51,37,292**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी-सी)	**16,66,62,584**	**10,87,80,303**	**10,05,17,045**	**37,59,59,932**

अनुसूची-4

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2018

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
सुरक्षित ऋण और उधार		
1. केंद्र सरकार	-	-
2. राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3. वित्तीय संस्थाएँ		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
4. बैंक		
(क) आवधिक ऋण	-	-
- ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
(ख) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
- ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
- केनरा बैंक से ओवरड्राफ्ट की सुविधा	-	-
5. अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6. डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7. अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

अनुसूची-5

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2018

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
सुरक्षित ऋण और उधार		
1. केंद्र सरकार	-	-
2. राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3. वित्तीय संस्थाएँ		
4. बैंक		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
5. अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6. डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7. आवधिक जमा	-	-
8. अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

अनुसूची-6

विवरण	चालू वर्ष	गत
आस्थगित जमा दायित्व		
(क) पूँजीगत उपस्करों तथा अन्य परिसंपत्तियों के बंधकीकरण द्वारा सुरक्षित स्वीकृतियाँ	-	-
(ख) अन्य	-	-
योग	-	-

अनुसूची-7

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2018

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
चालू दायित्व और उपबंध		
1. स्वीकृति		
प्रतिभूति जमा (द्वारा)		
- पुस्तकालय के सदस्य	9,470,437	8,198,637
- अन्य	436,291	436,291
2. विविध लेनदार		
(क) रॉयल्टी	-	629,085
(ख) अन्य	2,429,658	323,013
3. प्राप्त अग्रिम	227,955	585,787
4. प्रोद्भूत ब्याज पर देय नहीं :		
(ए) सुरक्षित ऋण/उधार	-	-
(बी) असुरक्षित ऋण/उधार	-	-
5. कानूनी दायित्व :		
(ए) अतिशोध्य	-	-
(बी) अन्य	-	-
6. अन्य चालू दायित्व :		
देय वेतन	-	546,899
सा.भ.नि. खाता	311,088	104,549
7. वर्ष के अंत में अव्ययित अनुदान शेष	18,207,687	15,919,957
योग (ए)	**31,083,116**	**26,744,218**
(बी) प्रावधान		
1. कर लगाने के लिए	-	-
2. प्रोद्भूत रॉयल्टी के लिए	800,000	800,000
3. अधिवर्षिता/पेंशन	2,100,000	2,100,000
4. संचित अवकाश भुनाना	900,000	900,000
5. व्यापार वारंटी/दावे	-	-
6. अन्य-देय लेखापरीक्षा शुल्क	150,000	500,000
7. अन्य–व्यावसायिक शुल्क देय	165,000	-
योग (बी)	**4,115,000**	**4,300,000**
योग (ए+बी)	**35,198,116**	**31,044,218**

अनुसूची-8

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2018

(राशि रुपये में)

			कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
क्रम. सं.	विवरण	दर	वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्धन (180 दिन से अधिक)	वर्ष के दौरान परिवर्धन (180 दिन से अधिक)	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक में कुल योग	चालू वर्ष के अंत तक कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
(क)	**स्थायी परिसंपत्ति**												
1	भूमि :												
	(क) पूर्ण स्वामित्व वाली	0%	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	(ख) पट्टे पर	0%	8,695,884	-	-	-	8,695,884	-	-	-	-	8,695,884	8,695,884
2.	भवन :												
	(क) फ्रीहोल्ड भूमि पर	10%	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	(ख) पट्टे वाली भूमि पर	10%	10,025,384	-	-	-	10,025,384	2,239,128	778,626	-	3,017,754	7,007,630	7,786,256
	(ग) फ़्लैट/परिसर का स्वामित्व	10%	36,225,175	-	-	-	36,225,175	-	22,910,410	-	22,910,410	13,314,765	36,225,175
3.	सयंत्र और तंत्र	15%	-	30,125	36,225	-	66,350	-	7,236	-	7,236	59,114	-
4.	वाहन	15%	2,413,155	-	-	-	2,413,155	1,122,269	193,633	-	1,315,902	1,097,253	1,290,886
5.	फर्नीचर और जुड़नार	10%	34,820,759	-	220,170	-	35,040,929	21,397,625	1,353,322	-	22,750,947	12,289,982	13,423,134
6.	कार्यालय उपकरण	15%	29,326,071	99,874	64,750	-	29,490,695	23,461,371	899,542	-	24,360,913	5,129,782	5,864,700
7.	कंप्यूटर/परिधीय	60%	17,131,249	469,750	262,000	-	17,862,999	15,359,770	1,423,337	-	16,783,107	1,079,892	1,771,479
8.	विद्युतीय प्रस्थान	15%	796,302	-	130,256	-	926,558	588,001	41,014	-	629,015	297,543	208,301
9.	पुस्तकालय में पुस्तकें	10%	42,807,640	687,727	149,849	-	43,645,216	27,566,210	1,600,408	-	29,166,618	14,478,598	15,241,430
	भेंट में दी गई पुस्तकालय की पुस्तकें	0%	-	118,058	-	-	118,058	-	-	-	-	118,058	-
10.	वातानुकूलन	15%	6,683,834	57,590	-	-	6,741,424	6,087,995	98,014	-	6,186,009	555,415	595,839
	योग		**188,925,453**	**1,463,124**	**863,250**	**-**	**191,251,827**	**97,822,369**	**29,305,542**	**-**	**127,127,911**	**64,123,916**	**91,103,084**
(ख)	**पूंजीगत कार्य प्रगति पर**		75,559,498	4,424,669	-	-	79,984,167	-	-	-	-	79,984,167	75,559,498
	कुल योग		**75,559,498**	**4,424,669**	**-**	**-**	**79,984,167**	**-**	**-**	**-**	**-**	**79,984,167**	**75,559,498**
	चालू वर्ष का कुल योग (ए+बी)		**197,652,332**	**69,425,837**	-	-	**264,484,951**	**88,416,126**	**9,406,242**	-	**97,822,367**	**166,662,584**	**109,236,206**
	गत वर्ष												
	स्थायी परिसंपत्तियाँ		179,239,604	9,685,849	-	-	188,925,453	88,416,126	9,406,242	-	97,822,367	91,103,086	90,823,478
	पूंजीगत कार्य प्रगति पर		18,412,728	59,739,988	-	2,593,218	75,559,498	-	-	-	-	75,559,498	18,412,728
	गत वर्ष का कुल योग		**197,652,332**	**69,425,837**		**2,593,218**	**264,484,951**	**88,416,126**	**9,406,242**	-	**97,822,367**	**166,662,584**	**109,236,206**

नोट : स्वामित्व फ्लैट/परिसर में 21430992/रुपए का मूल्यह्रास शामिल है, जिसे लेखापरीक्षा ने पाद्य कि उसे वित्त वर्ष 2006-07 से वित्त वर्ष 2016-17 अवधि के लिए पहले शुल्क न लगाए जाने के कारण छोड़ दिया गया था।

अनुसूची-9

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2018

विवरण	चालू वर्ष			गत वर्ष		
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	योजनागत	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	योजनागत	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
1. सरकारी प्रतिभूतियों से	-	-	-	-	-	-
2. अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	-	-	-	-	-	-
3. शेयर	-	-	-	-	-	-
4. डिबेंचर और बॉण्ड्स–आई.डी.बी.आई. बैंक फ्लैक्सी बॉण्ड	-	-	-	-	-	-
5. समानुषंगी और संयुक्त उद्यम	-	-	-	-	-	-
6. अन्य						
- आवधिक जमा	-	82,643,488	82,643,488	-	33,489,000	33,489,000
- आई.डी.बी.आई. बैंक फ्लैक्सी बॉण्ड	-	6,000,000	6,000,000	-	6,000,000	6,000,000
- एनएबीएआरडी भविष्य निर्माण बॉण्ड	-	-	-	-	14,025,000	14,025,000
- आवधिक जमा-नई पेंशन योजना	-	141,937	141,937	-	1,733,439	1,733,439
योग	**-**	**88,785,425**	**88,785,425**	**-**	**55,247,439**	**55,247,439**

अनुसूची-10

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2018

विवरण	चालू वर्ष			गत वर्ष		
निवेश-अन्य	योजनागत	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	योजनागत	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
1. सरकारी प्रतिभूतियों में	-	-	-	-	-	-
2. अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	-	-	-	-	-	-
3. शेयर	-	-	-	-	-	-
4. डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-	-	-	-	-
5. समानुषंगी और संयुक्त उद्यम	-	-	-	-	-	-
6. अन्य (उल्लेख करें)	10,718,590	-	10,718,590	10,000,000	-	10,000,000
योग	**10,718,590**	**-**	**10,718,590**	**10,000,000**	**-**	**10,000,000**

अनुसूची-11ए

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2018

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष			गत वर्ष		
चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि	योजनागत	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	योजनागत	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
(ए) चालू परिसंपत्तियाँ						
1. वस्तुसूची						
(ए) स्टोर एंड स्पेयर्स						
प्रकाशन एवं काग़ज़ का स्टॉक						
पुस्तकें : अकादेमी प्रकाशन	108,379,837	-	**108,379,837**	98,281,472	-	**98,281,472**
अपरोक्ष प्रकाशन	132,430	-	**132,430**	136,275	-	**136,275**
वीडियो फ़िल्म एवं सी.डी.	748,550	-	**748,550**	774,950	-	**774,950**
काग़ज़ : अपने पास	2,832,252	-	**2,832,252**	4,239,541	-	**4,239,541**
मुद्रणालयों में	3,810,088	-	**3,810,088**	5,348,065	-	**5,348,065**
(बी) लूज़ टूल्स	-	-	-	-	-	
(सी) स्टॉक-इन-ट्रेड	-	-	-	-	-	-
तैयार माल	-	-	-	-	-	
कार्य प्रगति पर	-	-	-	-	-	-
कच्चा माल	-	-	-	-	-	-
2. विविध देनदार						
(क) बारह माह की अवधि से अधिक बकाया ऋण	4,162,167	-	**4,162,167**	6,197,024	-	**6,197,024**
(ख) अन्य	4,022,804	-	**4,022,804**	3,485,826	-	**3,485,826**
3. हाथ में शेष धन या बकाया राशि						
(जिसमें चेक/ड्राफ़्ट, रसीदी टिकट और अग्रदाय शामिल है)	617,520	-	**617,520**	1,334,036	-	**1,334,036**
4. बैंक में शेष धन :						
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ :						
- चालू ख़ातों पर	-	-	-	-	-	-
- जमा ख़ातों पर (संग्रह निधि)	-	-	-	-	-	-
- बचत ख़ातों पर	17,590,167	-	**17,590,167**	13,716,870	-	**13,716,870**
- सा.भ.नि. के बचत ख़ातों पर	-	6,231,662	**6,231,662**	-	13,096,674	**13,096,674**
(ख) ग़ैर-अनुसूचित बैंकों के साथ :						
- चालू ख़ातों पर	-	-	-	-	-	-
- जमा ख़ातों पर	-	-	-	-	-	-
- बचत ख़ातों पर	-	-	-	-	-	-
5. डाक-घर के बचत ख़ाते	-	-	-	-	-	-
योग (ए)	**142,295,815**	**6,231,662**	**148,527,477**	**133,514,059**	**13,096,674**	**146,610,733**

अनुसूची-11बी

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2018

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष			गत वर्ष		
चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि (जारी)	योजनागत	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	योजनागत	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
(बी) ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ :						
1. ऋण						
(क) स्टॉफ़	1,132,874	-	**1,132,874**	1,563,984	-	**1,563,984**
(ख) अन्य व्यक्ति/संस्था, जो समान गतिविधियों/कार्यों में संलग्न हैं	-	-	-	-	-	-
(ग) अन्य–सा.भ.नि. अग्रिम	-	6,053,360	**6,053,360**	-	5,743,690	**5,743,690**
2. अग्रिम और अन्य राशियाँ जिन्हें नकदी अथवा सदृश अथवा उसके समतुल्य मूल्य के लिए वसूला जाना है						
(क) पूँजी ख़ातों पर	-	-	-	-	-	-
(ख) पूर्व भुगतान	-	-	-	-	-	-
(ग) अन्य						
स्रोतों से कर कटौती	766,090	-	**766,090**	869,051	-	**869,051**
प्रतिभूति जमा	4,334,419	-	**4,334,419**	4,278,589	-	**4,278,589**
पूर्व भुगतान खर्चे	142,068	-	**142,068**	222,046	-	**222,046**
संयुक्त सेवाएँ वसूली योग्य	1,318,122	-	**1,318,122**	1,318,122	-	**1,318,122**
अन्य वसूली योग्य	3,136,091	-	**3,136,091**	3,473,130	-	**3,473,130**
3. प्रोद्भूत आय						
(क) नियत/अक्षय निधियों से निवेश पर	-	2,564,361	**2,564,361**	-	26,207,439	**26,207,439**
(ख) निवेशों पर–अन्य	-	-	-	-	-	-
(ग) ऋणों तथा अग्रिमों पर	-	-	-	-	-	-
(घ) संग्रह निधि	100,199	-	**100,199**	100,692	-	**100,692**
4. प्राप्त करने योग्य दावे						
(क) वसूली योग्य सा.भ.नि.	-	311,088	**311,088**	-	221,802	**221,802**
(ख) ग़ैर-योजनागत ख़ाता	-	-	-	-	-	-
योग (बी)	**10,929,863**	**8,928,809**	**19,858,672**	**11,825,614**	**32,172,931**	**43,998,545**
योग (ए+बी)	**153,225,678**	**15,160,471**	**168,386,149**	**145,339,673**	**45,269,605**	**190,609,277**

अनुसूची-12

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय		
1. बिक्री से प्राप्त आय		
(क) सभागार रखरखाव प्राप्ति	135,000	-
(ख) फोटोकॉपी शुल्क	76,396	-
योग	**211,396**	-

अनुसूची-13

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
अनुदान/इमदाद (अटल अनुदान और प्राप्त इमदाद)		
1. केंद्र सरकार		
(क) संस्कृति मंत्रालय		
- अकादेमी सेल–राजस्व वेतन	160,710,000	-
- अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य	129,526,000	218,227,000
- अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.	30,017,000	27,739,000
- अकादेमी सेल–पूंजीगत संपत्ति का सृजन	10,000,000	-
- अकादेमी सेल–टीएसपी राजस्व सामान्य	8,203,000	12,155,000
- अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना	1,125,000	-
- विशेष सेल–भीष्म साहनी प्राप्तियाँ	-	689,992
- विशेष सेल–अमृतलाल नागर	-	3,270,000
- विशेष सेल–रवींद्रनाथ ठाकुर प्रकाशन कॉफी टेबल		400,000
- विशेष सेल–भारत महोत्सव–इज़राइल	765,000	-
- विशेष सेल–भारत महोत्सव–थाइलैंड	276,000	-
- विशेष सेल–भारत महोत्सव–स्पेन	388,500	404,250

2. राज्य सरकार	-	-
3. सरकारी अभिकरण	-	-
4. संस्थाएँ/कल्याणकारी निकाय	-	-
5. अंतर्राष्ट्रीय संगठन	-	-
6. अन्य	-	-
जमा : वर्ष के प्रारंभ में अव्ययित शेष	15,919,957	-
घटा : पूर्व अवधि समायोजना	(869,051)	-
- टैगोर स्मृति अनुदान योजना का	-	2,138,990
- सबद (बेनाले) का	-	240,134
- टैगोर के सात नाटकों का	-	321,418
- मॉरिशस में भारत समारोह का	-	61,138
- पूर्वोत्तर का	-	19,793,124
- टी.एस.पी. का	-	3,595,939
- ग़ैर-योजनागत वेतन का	-	13,571,410
घटा : वर्ष के अंत में अव्ययित शेष	(18,207,687)	(15,919,957)
घटा : वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों पर ख़र्च की गई पूंजीकृत अनुदान राशि	(2,203,142)	-
घटा : वर्ष के दौरान पूंजीगत कार्य की प्रगति में ख़र्च की गई पूंजीकृत अनुदान राशि	(4,424,669)	-
घटा : संस्कृति मंत्रालय को अनुदान वापस	-	-
योग	**331,225,908**	**286,687,438**

अनुसूची-14

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
शुल्क/अंशदान		
(1) प्रवेश शुल्क	-	-
(2) वार्षिक शुल्क/अंशदान	-	-
(3) संगोष्ठी/कार्यक्रम शुल्क	-	-
(4) परामर्श शुल्क	-	-
(5) अन्य		
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क	284,450	-
बुक कल्ब सदस्यता शुल्क	31,800	-
योग (ए)	**316,250**	**-**

अनुसूची-15

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	अक्षय निधियों से निवेश	
	चालू वर्ष	गत वर्ष
निवेश से प्राप्त आय		
(1) ब्याज		
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-
(ख) अन्य बॉण्ड/डिबेंचर	-	-
(2) लाभांश		
(क) शेयरों पर	-	-
(ख) म्युचुअल फंड प्रतिभूतियों पर	-	-
(3) किराए	-	-
(4) अन्य		
निवेश से प्राप्त ब्याज	4,749,064	6,851,515
घटा : सा.भ.नि. पूँजी में स्थानांतरित	(4,749,064)	(6,851,515)
घटा : आर्टिस्ट वेलफेयर पूंजी में स्थानांतरित	-	-
योग	-	-

अनुसूची-16

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त आय		
1. रॉयल्टी से प्राप्त आय	-	4,000
2. अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय	21,697,684	19,214,856
3. अन्य	-	-
योग	**21,697,684**	**19,218,856**

अनुसूची-17

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
प्राप्त ब्याज		
1. सशर्त जमा		
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ	713,090	7,472,223
(ख) ग़ैर-अनुसूचित बैंकों के साथ	-	-
(ग) संस्थाओं के साथ	-	-
(घ) अन्य–संग्रह निधि	718,097	-
2. बचत ख़ातों पर :		
(क) अनुसूचित बैंक के साथ	951,254	-
(ख) ग़ैर-अनुसूचित बैंकों के साथ	-	-
(ग) डाक घर के बचत ख़ाते	-	-
(घ) अन्य	-	-
3. ऋणों पर :		
(क) कर्मचारी/स्टाफ़	633,110	593,729
(ख) अन्य	-	-
4. ऋणदाताओं पर ब्याज तथा अन्य प्राप्तियाँ		
(क) जी.पी.एफ./सी.पी.एफ़. पर ब्याज	-	-
(ख) आयकर रिफंड पर ब्याज	15,810	-
योग	**3,031,361**	**8,065,952**

अनुसूची-18

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
अन्य आय		
1. परिसंपत्तियों की बिक्री/निपटान से प्राप्त आय		
(क) निजी परिसंपत्तियाँ	-	-
(ख) परिसंपत्तियाँ जो कि अनुदान अथवा निःशुल्क प्राप्त हुई	-	-
(ग) ग़ैर उपभोज्य सामग्री (स्थायी परिसंपत्ति) की बिक्री	-	-
(घ) पुस्तकालय की खोई हुई पुस्तकों के मूल्य की वूसली	7,326	7,917
2. नियति को प्रोत्साहन	-	-
3. विविध सेवाओं के लिए शुल्क	-	-
4. विविध आय		
अन्य विविध प्राप्तियाँ	368,460	1,147,909
पूर्व अवधि आय	1,906,930	1,930,304
कर्मचारियों का सीजीएचएस अंशदान	283,625	244,357
कर्मचारियों का एनपीएस ग़ैर वापसी योग्य अंशदान	86,808	-
सरदार पटेल अनुवाद प्राप्ति	256,746	-
अतिरिक्त प्रावधान लिखित वापस	1,253,386	-
योग	**4,163,281**	**3,330,487**

अनुसूची-19

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में (उतार)/चढ़ाव		
(ए) अंत शेष माल		
- तैयार सामान (पुस्तकें)	713,090	7,472,223
- कच्चा माल (काग़ज़)	-	-
(बी) घटा : आदि शेष माल		
- तैयार सामान (पुस्तकें)	951,254	-
- कच्चा माल (काग़ज़)	-	-
कुल (उतार)/चढ़ाव(ए-बी)	**3,031,361**	**8,065,952**

अनुसूची-20

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
स्थापना व्यय		
(क) वेतन, मज़दूरी और भत्ते	123,618,474	99,766,093
(ख) नई पेंशन योजना हेतु योगदान	2,389,903	1,808,578
(ग) कर्मचारियों की सेवा-निवृत्ति पर हुए ख़र्च तथा आवाधिक लाभ	41,943,945	32,622,220
(घ) अन्य		
–चिकित्सा सुविधाएँ	3,292,233	4,965,133
–अवकाश यात्रा सुविधा	822,505	1,030,325
–स्टॉफ़ को यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	802,672	325,014
योग	**172,869,732**	**140,517,363**

अनुसूची-21

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
अन्य प्रशासनिक व्यय		
(क) लेखा परीक्षा एवं लेखा शुल्क	150,000	161,620
(ख मुद्रण एवं लेखन सामग्री	1,053,243	170,246
(ग) दूरभाष एवं डाक-व्यय	3,228,317	1,571,761
(घ) अन्य आकस्मिक व्यय	1,710,430	1,454,107
(ङ) वाहन अनुरक्षण	191,581	219,707
(च) किराया, परिकर एवं कर	22,052,177	3,545,776
(छ) अवधि पूर्व ख़र्च	1,456,210	2,058,906
(ज) कानूनी शुल्क	100,500	-
(झ) यात्रा खर्च	20,500	-
(ञ) व्यवसायिक शुल्क	165,000	-
योग	**30,127,958**	**9,182,123**

अनुसूची-22

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार की गतिविधियाँ		
सामान्य		
1. बाल साहित्य पुरस्कार	4,283,349	4,771,085
2. बनारस स्कूल परियोजना	42,603	52,533
3. राजभाषा कार्यक्रम	509,500	677,685
4. भाषाओं का विकास	-	13,916,953
5. फ़ेलोशिप	38,327	227,911
6. साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम	26,330,238	47,981,651
7. आधुनीकिकरण एवं सुधार	9,550,619	10,269,392
8. बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि	17,411,516	27,591,351
9. प्रकाशन योजनाएँ	30,943,448	37,439,274
10. क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना	1,563,843	2,910,698
11. लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ	16,796,057	21,405,222
12. अनुवाद योजनाएँ	7,532,149	14,603,803
13. पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में सुधार	6,463,001	9,339,898
14. युवा पुरस्कार	4,153,950	5,662,534
15. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक्स	2,000	28,726
16. रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतावार्षिकी/कॉफ़ी टेबल पुस्तक का प्रकाशन	528,000	-
17. टैगोर नेशनल फ़ेलोशिप	33,040	680,300
18. अमृतलाल नागर जन्मशतवार्षिकी	-	1,725,112
19. विदेश में भारतीय साहित्य	-	590,790
20. बेनाले ऑफ़ बर्ल्ड पोएट्री	-	149,198
21. रवींद्रनाथ के सात नाटक	-	90,330
22. भीष्म साहनी की जन्मशतवार्षिकी	-	210,000
23. सरदार पटेल अनुवाद योजना	75,674	-
कुल योग	**126,257,314**	**200,324,446**

एन.ई.		
1. बाल साहित्य पुरस्कार (एन.ई.)	956,295	-
2. साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम	19,352,274	-
3. बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि	543,734	-
4. प्रकाशन योजनाएँ	820,229	-
5. क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना	483,965	-
6. लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ	4,738,660	-
7. अनुवाद योजनाएँ	2,524,732	-
8. पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में सुधार	2,000	-
9. युवा पुरस्कार	784,777	-
कुल योग	**30,206,666**	**-**
टी.एस.पी.		
1. बाल साहित्य पुरस्कार (टी.एस.पी.)	21,571	-
2. भाषाओं का विकास	8,789,275	-
3. साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम	37,630	-
4. लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ	143,303	-
5. अनुवाद योजनाएँ	269,204	-
6. युवा पुरस्कार	129,786	-
योग	**9,390,769**	**-**
एस.ए.पी.		
1. स्वच्छता कार्य योजना	311,807	-
कुल योग	**311,807**	**-**
विशेष सेल		
भारत महोत्सव–इज़राइल	790,544	-
भारत महोत्सव–स्पेन	277,440	302,742
भारत महोत्सव–थाईलैण्ड	203,488	-
योग	**1,271,472**	**302,742**
कुल योग	**167,438,028**	**200,627,188**

अनुसूची-23

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
अनुदान, इमदाद आदि पर व्यय		
(क) संस्थाओं/संगठनों को दिए गए अनुदान	-	-
(ख) संस्थाओं/संगठनों को दी गई इमदाद		
- राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता	-	1,048,212
(ग) विभिन्न परियोजनाओं/योजनाओं के अंतर्गत भुगतान	-	-
योग	**-**	**1,048,212**

अनुसूची-24

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
ब्याज		
(क) स्थायी ऋण पर	-	-
(ख) अन्य ऋणों पर (बैंक शुल्क सम्मिलित)	-	-
(ग) अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

प्राप्तियाँ	चालू वर्ष (2017-2018)	गत वर्ष (2016-2017)
I. आदि शेष		
(क) हाथ में रोकड़	699,991	1,589,475
(ख) बैंक में जमा		
i) चालू खातों में	-	-
ii) जमा खातों में	-	-
iii) बचत खातों में	13,716,870	59,108,987
(ग) रसीदी टिकट हाथ में	634,045	419,631
II प्राप्त अनुदान		
(क) भारत सरकार द्वारा		
- अकादेमी सेल–राजस्व वेतन	160,710,000	98,454,000
- अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य	129,526,000	119,773,000
- अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.	30,017,000	27,739,000
- अकादेमी सेल–पूंजीगत परिसंपत्तियों का सृजन	10,000,000	65,556,000
- अकादेमी सेल–टीएसपी राजस्व सामान्य	8,203,000	12,155,000
- अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना	1,125,000	-
- विशेष सेल–भीष्म साहनी प्राप्तियाँ	-	689,992
- विशेष सेल–अमृत लाल नागर	-	3,270,000
- विशेष सेल–रवींद्रनाथ टैगोर प्रकाशन कॉफ़ी टेबल	-	400,000
- विशेष सेल–भारत महोत्सव	1,429,500	404,250
(ख) संस्कृति मंत्रालय से अतिरिक्त पूंजी प्राप्त	-	-
(ग) राज्य सरकार द्वारा	-	-
(घ) अन्य स्रोतों द्वारा	-	-
III निवेशों से आय		
(क) नियत/अक्षय निधियाँ	-	-
(ख) स्वपूंजी (अन्य निवेश)	718,590	781,936

IV प्राप्त ब्याज		
(क) बैंकों में जमा राशि पर ब्याज	1,664,344	6,799,588
(ख) ऋण, अग्रिम आदि	648,920	593,729
V अन्य आय		
(क) माल/सेवाओं की बिक्री से आय	211,396	-
(ख) फीस एवं अंशदान से आय	316,250	-
(ग) रॉयल्टी, प्रकाशन आदि से आय	21,697,684	19,279,873
(घ) विविध आय/प्राप्तियाँ	2,040,844	7,245,107
VI उधार ली गई राशि		
VII कोई अन्य प्राप्तियाँ		
(क) स्टॉफ द्वारा चुकाए गए ऋण	530,110	1,222,130
(ख) लौटाने योग्य जमा राशि	1,271,800	1,807,830
(ग) कॉट्रा प्राप्तियाँ और भुगतान	-	1,984,355
(घ) अन्य भुगतान योग्य	2,241,907	-
(ङ) अल्प अवधि जमा परिपक्व	140,000,000	-
योग	**527,403,251**	**429,273,883**

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	**घनश्याम शर्मा**	**बाबुराजन एस.**	**रेणु मोहन भान**	**के.एस. राव**
दिनांक : 6 जून 2018	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव)	(उपसचिव)	(सचिव)

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

भुगतान	चालू वर्ष	गत वर्ष
I. व्यय		
(क) स्थापना व्यय	172,971,872	140,202,361
(ख प्रशासनिक व्यय	29,862,002	8,586,150
II. विभिन्न योजनाओं/परियोजनाओं के अंतर्गत भुगतान		
- अकादेमी सेल–राजस्व	117,112,826	251,446,024
- अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.	30,624,619	-
- अकादेमी सेल–टीएसपी राजस्व सामान्य	9,412,070	-
- अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना	311,807	-
- विशेष सेल–भारत महोत्सव	1,271,472	302,742
III. निवेशों और जमा राशियों के लिए किए गए भुगतान		
(क) नियत/अक्षय निधियों से	-	-
(ख स्वपूंजियों से (निवेश अन्य)	140,718,590	-
IV. स्थायी परिसंपत्तियों तथा पूंजी पर आधारित कार्यों पर व्यय		
(क) स्थायी परिसंपत्तियों की ख़रीद	2,203,142	5,855,893
(ख) पूंजी पर आधारित कार्यों पर व्यय	4,424,669	-
V. अधिशेष धन/ऋणों की वापसी		
(क) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को	-	-
(ख) राज्य सरकार को	-	-
(ग) अन्य पूंजी उपलब्ध कराने वालों को	-	-
VI. वित्त शुल्क (ब्याज)		
VII. अन्य भुगतान		
स्टॉफ़ को अग्रिम राशि	99,000	511,000
प्रतिभूति जमा राशि दी	55,830	2,468,390
अन्य (वसूली योग्य)	127,665	4,850,417

VIII. अंत शेष		
(क) हाथ में रोकड़	616,016	699,991
(ख) बैंक में शेष	-	-
(i) चालू खातों में	-	-
(ii) जमा खातों में	-	-
(iii) बचत खातों में	17,590,167	13,716,870
(ग) रसीदी टिकट हाथ में	1,504	634,045
योग	**527,403,251**	**429,273,883**

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	**घनश्याम शर्मा**	**बाबुराजन एस.**	**रेणु मोहन भान**	**के.एस. राव**
दिनांक : 6 जून 2018	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव)	(उपसचिव)	(सचिव)

सामान्य भविष्य निधि का तुलनपत्र : यथातिथि 31-03-2018

2016-2017	दायित्व	2017-2018	
	सा.भ.नि. ख़ाता		
90,121,177	01-04-2017	98,588,406	
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :		
13,973,600	कर्मचारियों का सा.भ.नि. में अंशदान	13,634,700	
6,774,631	ग्राहकों के ख़ाते में ब्याज जमा	6,965,251	
110,869,408		**119,188,357**	
	वर्ष के दौरान कटौती :		
6,969,000	अंतिम निकासी	11,939,000	
444,980	अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	-	
4,867,022	पूर्ण एवं अंतिम भुगतान	2,445,836	
12,281,002		**14,384,836**	**104,803,521**
98,588,406			
	नई पेंशन योजना		
15,269,248	01-04-2017 को शेष	93,887	
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :		
1,117,465	कर्मचारियों को नई पेंशन योजना में अंशदान	2,382,262	
1,117,465	अकादेमी का नई पेंशन योजना में आंशदान	2,382,262	
54,955	एन.पी.एस. आवधिक पर प्राप्त ब्याज	-	
17,559,133		**4,764,524**	
	वर्ष के दौरान परिवर्धन		
14,418,999	01-014-2017 को पी.एफ़.आर.डी.ए. में शेष	-	
3,447,958	**घटा :** राशि पीएफ़आरडीए में स्थानांतरित	4,764,524	
17,866,957		**2,289,885**	
86,808	जमा : साहित्य अकादेमी के लिए वापसी योग्य अंशदान	-	
314,903	जमा : साहित्य अकादेमी के कर्मचारियों को वापसी योग्य अंशदान	39,551	
-	जमा : एफ़.डी.–एन.पी.एस. पर ब्याज	9,311	
93,887			**142,749**
	ब्याज (अनुपयुक्त) लेखा		
1,757,867	01-04-2017 को शेष	1,834,751	
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :		
6,402,042	जमा : निवेश पर अर्जित ब्याज	4,570,259	
449,473	जमा : एसबी ख़ातों पर प्राप्त ब्याज	178,805	
8,609,382		**6,583,815**	
	वर्ष के दौरान कटौती :		
6,774,631	घटा : सा.भ.नि. के ग्राहकों के खाते में ब्याज जमा	6,965,191	
-	घटा : बैंक शुल्क	-	
-	घटा : टैक्स कटौती	618,998	**(1,000,374)**
1,834,751			
100,517,044	**योग**		**103,945,896**

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	**घनश्याम शर्मा**	**बाबुराजन एस.**	**रेणु मोहन भान**	**के.एस. राव**
दिनांक : 6 जून 2018	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव)	(उपसचिव)	(सचिव)

सामान्य भविष्य निधि का तुलनपत्र : यथातिथि 31-03-2018

2016-2017	परिसंपत्तियाँ	2017-2018	
	निवेश (लागत पर)		
	आवधिक जमा एवं बॉण्ड (निम्नांकित बैंकों के साथ)		
133,439	केनरा बैंक, नई दिल्ली–नई पेंशन योजना	141,937	
1,600,000	केनरा बैंक, नई दिल्ली–सा.भ.नि.	41,889,949	
6,000,000	आईडीबीआई बैंक, फलैक्सी बॉण्ड	6,000,000	
14,025,000	एनएवीएआरडी–भविष्य निर्माण बॉण्ड	-	
33,489,000	यूको बैंक, नई दिल्ली	40,753,539	
55,247,439			**88,785,425**
	निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–सा.भ.नि.		
20,509,935	01-04-2017 को शेष	26,206,109	
6,402,042	जमा : 2017-2018 के दौरान प्रोदभूत ब्याज	2,563,029	
705,868	घटा : परिपक्वता पर ब्याज	26,206,109	**2,563,029**
26,206,109			
	निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–एन.पी.एस.		
-	01-04-2017 को शेष	1,330	
54,955	जमा : 2017-2018 के दौरान प्रोदभूत ब्याज	1,332	
53,625	घटा : परिपक्वता पर ब्याज	1,330	**1,332**
1,330			
	ग्राहकों को अग्रिम		
6,201,460	1-4-2017 को शेष	5,743,690	
3,228,500	जमा : वर्ष के दौरान स्वीकृत	3,738,600	
3,686,270	घटा : वर्ष के दौरान वसूल की गई राशि	3,428,930	**6,053,360**
5,743,690			
	अन्य अग्रिम–टी.डी.एस.		
187,853	1-4-2017 को शेष	221,802	
33,949	जमा : टैक्स कटौती	89,286	**311,088**
221,802			
	बैंक शेष		
93,219	एस.बी. ख़ाता सं. 01100/401527 एसबीआई, नई दिल्ली	93,219	
13,003,455	एस.बी. ख़ाता सं. 3264, केनरा बैंक, नई दिल्ली	6,138,443	**6,231,662**
13,096,674			
100,517,044	**योग**		**103,945,896**

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	**घनश्याम शर्मा**	**बाबुराजन एस.**	**रेणु मोहन भान**	**के.एस. राव**
दिनांक : 6 जून 2018	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव)	(उपसचिव)	(सचिव)

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति लेखा :
यथातिथि 1-04-2017 से 31-03-2018

2016-2017	प्राप्तियाँ	2017-2018	
	आदि बैंक शेष		
12,227,338	केनरा बैंक	13,003,455	
88,707	स्टैट बैंक ऑफ़ इंडिया	93,219	**13,096,674**
12,316,045			
	सा.भ.नि. ख़ाता		
13,972,100	कर्मचारियों का अंशदान	13,634,700	
3,241,290	सा.भ.नि. से अग्रिमों का भुगतान	3,428,930	
-	उपभोक्ताओं का ब्याज जमा	60	**17,063,690**
17,213,390			
	नई पेंशन योजना		
1,808,578	अकादेमी का योगदान	2,382,262	
1,808,578	कर्मचारियों का योगदान	2,382,262	
53,625	आवधिक जमा पर ब्याज	-	**4,764,524**
3,670,781			
	प्राप्त ब्याज		
285,868	सा.भ.नि. के निवेश पर ब्याज	20,439,716	
449,473	बैंक बचत ख़ातों पर ब्याज	178,805	
420,000	आई.डी.बी.आई. फैलैक्सी बॉण्ड	-	**20,618,521**
1,155,341			
	निवेश		
6,612,004	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–सा.भ.नि.	18,160,132	
1,504,059	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–एन.पी.एस.	-	**18,160,132**
8,116,063			
	साहित्य अकादेमी को स्थानांतरित		**400,000**
42,471,620	**योग**		**74,103,541**

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	**घनश्याम शर्मा**	**बाबुराजन एस.**	**रेणु मोहन भान**	**के.एस. राव**
दिनांक : 6 जून 2018	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव)	(उपसचिव)	(सचिव)

सामान्य भविष्य निधि का भुगतान लेखा :
यथातिथि 01-04-2017 से 31-03-2018

2016-2017	भुगतान	2017-2018	
	सा.भ.नि. ख़ाता		
6,969,000	अंतिम निकासी	11,939,000	
-	बेदावा सा.भ.नि. शेष	-	
4,867,022	पूर्ण और अंतिम भुगतान	2,445,836	**14,384,836**
11,836,022			
	राष्ट्रीय पेंशन योजना		
3,447,958	एन.पी.एस. में निवेश	5,075,698	
-	कर्मचारियों को एन.पी.एस. द्वारा प्रतिदाय	86,808	
980,515	अकादेमी को एन.पी.एस. द्वारा प्रतिदाय	181,465	**5,343,971**
4,428,473			
	ग्राहकों को अग्रिम		
3,227,000	वर्ष के दौरान ग्राहकों को दी गई अग्रिम राशि	3,738,600	
-	साहित्य अकादेमी को स्थानांतरित	400,000	**4,138,600**
3,227,000			
	निवेश		
8,212,004	वर्ष के दौरान सा.भ.नि. खाते में किए गए निवेश	44,000,000	
1,637,498	वर्ष के दौरान एनपीएस में किए गए निवेश	-	**44,000,000**
9,849,502			
	साहित्य अकादेमी से वसूली योग्य राशि		
33,949	जमा : टैक्स कटौती	-	**4,472**
33,949			
	बैंक अंत शेष		
13,003,455	केनरा बैंक	6,138,443	
93,219	एस.बी.आई.	93,219	**6,231,662**
13,096,674			
42,471,620	**योग**		**74,103,541**

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	**घनश्याम शर्मा**	**बाबुराजन एस.**	**रेणु मोहन भान**	**के.एस. राव**
दिनांक : 6 जून 2018	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव)	(उपसचिव)	(सचिव)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
सामान्य भविष्य निधि खाता वर्ष 2017-2018 में निवेश और प्रोदभूत ब्याज की अनुसूची

						निवेश				ब्याज						
क्रम स.	एफ.डी.सं.	क्रय तिथि	परिपक्वता तिथि	निवेश राशि का मूल्य	ब्याज दर %	1-4-2017 को आदिशेष	2017-2018 में परिवर्धन	2017-2018 में परिपक्वता	31-3-2018 को शेष	31-3-2017 तक प्रोदभूत	2017-2018 के दौरान प्रोदभूत	31-3-2018 तक कुल योग	2107-2018 के दौरान प्राप्त समायोजित	31-3-2018 को प्रोदभूत	प्रोदभूत ब्याज पर टीटीएस कटौती	निवेश का कुल मूल्य
	नई पेंशन योजना केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा															
3	एफ.डी.आर.सं. 2417401000282/51	2/9/2018	2/9/2019	141937.00	6.5%	133439.00	141,937	133,439	141,937	1,330	9,444	10,774	9,442	1,332	133	143,136
	योग - 1			141,937		133,439	141,937	133,439	141,937	1,330	9,444	10,774	9,442	1,332	133	143,136
	सा.भ.नि. की राशि बूको बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा															
1	एफ.डी.आर.सं.18250310055601	3/18/2017	05/06/2018	10,000,000	5.00%	10,000,000	12,159,377	10,000,000	12,159,377	2,177,997	621,090	2,799,087	2,159,377	639,710	-	12,799,087
2	एफ.डी.आर.सं.18250310055618	3/18/2017	05/06/2018	1,163,000	6.90%	1,163,000	1,425,136	1,163,000	1,425,136	265,296	101,246	366,542	262,136	104,406	-	1,529,542
3	एफ.डी.आर.सं.18250310055625	3/20/2017	07/06/2018	10,000,000	5.00%	10,000,000	12,159,377	10,000,000	12,159,377	2,178,989	620,858	2,799,847	2,159,377	640,470	-	12,799,847
4	एफ.डी.आर.सं.18250310055632	3/20/2017	07/06/2018	1,163,000	6.90%	1,163,000	1,425,136	1,163,000	1,425,136	265,308	101,198	366,506	262,136	104,370	-	1,529,506
5	एफ.डी.आर.सं.18250310055649	3/19/2017	06/06/2018	10,000,000	5.00%	10,000,000	12,159,377	10,000,000	12,159,377	2,178,492	620,974	2,799,466	2,159,377	640,089	-	12,799,466
6	एफ.डी.आर.सं.18250310055656	3/19/2017	06/06/2018	1,163,000	6.90%	1,163,000	1,425,136	1,163,000	1,425,136	265,302	101,222	366,524	262,136	104,388	-	1,529,524
	योग - 2			33,489,000		33,489,000	40,753,539	33,489,000	40,753,539	7,331,384	2,166,588	9,497,972	7,264,539	2,233,433	-	42,986,972
	सा.भ.नि. की राशि केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा															
1	एफ.डी.आर.सं. 2417307000013/60	16/07/2016	16/04/2017	1,600,000	6.5%	1,600,000	-	1,600,000	-	70,657	4,368	75,025	75,025	-		-
2	एफ.डी.आर.सं. 2417401000282/57	12/5/2017	28/03/2018	2,500,000	6.5%	-	2,500,000	2,500,000	-	-	4,822	4,822	4,822	-		-
3	एफ.डी.आर.सं. 2417401000282/58	3/28/2018	13/2/2019	2,629,983	6.4%	-	5,129,983	2500000.00	2,629,983	-	145,817	145,817	144,426	1,391	139	2,631,235
4	एफ.डी.आर.सं. 2417401000282/59	3/28/2018	13/2/2019	2,629,983	6.4%	-	5,129,983	2500000.00	2,629,983	-	145,817	145,817	144,426	1,391	139	2,631,235
5	एफ.डी.आर.सं. 2417401000282/60	3/28/2018	13/2/2019	2,629,983	6.4%	-	5,129,983	2500000.00	2,629,983	-	145,817	145,817	144,426	1,391	139	2,631,235
6	एफ.डी.आर.सं. 2417401000282/61	2/2/2018	2/2/2019	9,000,000	6.5%	-	9,000,000	-	9,000,000	-	86,287	86,287	-	95,875	9,588	9,086,287
7	एफ.डी.आर.सं. 2417401000282/62	2/2/2018	2/2/2019	9,000,000	6.5%	-	9,000,000	-	9,000,000	-	86,287	86,287	-	95,875	9,588	9,086,287
8	एफ.डी.आर.सं. 2417401000282/63	2/2/2018	2/2/2019	9,000,000	6.5%	-	9,000,000	-	9,000,000	-	86,287	86,287	-	95,875	9,588	9,086,287
9	एफ.डी.आर.सं. 2417401000282/64	2/2/2018	2/2/2019	7,000,000	6.5%	-	7,000,000	-	7,000,000	-	67,112	67,112	-	74,569	7,457	7,067,112
	योग - 3			45,989,949		1,600,000	51,889,949	11,600,000	41,889,949	70,657	772,614	843,271	513,125	366,367	36,638	42,219,678
	आई.डी.बी.आई., नई दिल्ली में आवधिक जमा															
1	आई.डी.बी.आई. फ्लेक्सी बॉण्ड	17.12.2003	16.12.2018	6,000,000	7.00%	6,000,000	-	-	6,000,000	120,822	420,000	540,822	540,822	-		6,000,000
	योग - 4			6,000,000		6,000,000	-	-	6,000,000	120,822	420,000	540,822	540,822	-	-	6,000,000
												-				
	एन.ए.बी.ए.आर.डी. में आवधिक जमा															
1	भविष्य निर्माण बॉण्ड	01.01.2008	31.12.2017	14,025,000	9.26%	14,025,000	-	14,025,000	-	18,683,246	1,291,754	19,975,000	19,975,000	-		-
	योग - 4			14,025,000		14,025,000	-	14,025,000	-	18,683,246	1,291,754	19,975,000	19,975,000	-		-
									-			-		-		-
	कुल योग (1+2+3+4)			99,645,886		55,247,439	92,785,425	59,247,439	88,785,425	26,207,439	4,660,400	30,867,839	28,302,928	2,601,132	36,771	91,349,786
	1-4-2017 को आदि शेष			55,247,439												
	वर्ष के दौरान परिवर्धन			92,785,425												
	योग			148,032,864												
	वर्ष के दौरान परिपक्व			59,247,439												
	31.03.2018 को अंत शेष			88,785,425												
				-												

31-03-2018 को समाप्त वर्ष के लिए
वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

भारत की 'नेशनल एकेडेमी ऑफ़ लेटर्स' साहित्य अकादेमी साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और उसका देशभर में प्रसार करनेवाली केंद्रीय संस्था है तथा सिर्फ़ यही ऐसी संस्था है, जोकि भारत की चौबीस भाषाओं, जिसमें अंग्रेज़ी भी सम्मिलित है, में साहित्यिक क्रिया-कलापों का पोषण करती है। इसका विधिवत् उद्घाटन भारत सरकार द्वारा 12 मार्च 1954 को किया गया था। भारत सरकार के जिस प्रस्ताव में अकादेमी का यह विधान निरूपित किया गया था, उसमें अकादेमी की यह परिभाषा दी गई है—भारतीय साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करनेवाली एक राष्ट्रीय संस्था, जिसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना तथा उनके मध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना होगा। हालाँकि अकादेमी की स्थापना सरकार द्वारा की गई है, फिर भी यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में कार्य करती है। संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत इस संस्था का पंजीकरण सं. 927 दिनांक 7 जनवरी 1955-56 को किया गया।

साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़िरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के कोलकाता, बेंगळूरु, मुंबई में तीन क्षेत्रीय कार्यालय तथा चेन्नई में एक उपकार्यालय है।

अनुसूची-25—महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ

1. लेखा परिपाटी

वित्तीय विवरण ऐतिहासिक मूल्य परिपाटी तथा लेखा की प्रोद्भवन पद्धति के आधर पर तैयार किए गए हैं।

2. वस्तुसूची मूल्यांकन

(2.1) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनके मुद्रित मूल्य की 40 प्रतिशत राशि पर किया गया है।

(2.2) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनकी न्यूनतम लागत तथा कुल विश्वसनीय मूल्य पर किया गया है। लागत उनके तौल के औसत मूल्य या लागत पर आधरित है।

3. स्थायी परिसंपत्तियाँ

(3.1) स्थायी परिसंपत्तियाँ अर्जन की लागत पर आधरित हैं, जिसमें आवक भाड़ा, कर और परिकरत तथा अर्जन से संबंधित आनुषंगिक एवं प्रत्यक्ष व्यय भी सम्मिलित हैं। निर्माण से संबंधित परियोजनाओं के संदर्भ में, पूर्व प्रचालन व्यय (जिनमें परियोजनाओं के पूर्ण होने पर दिए गए ऋणों पर ब्याज शामिल है), पूँजी परिसंपत्तियों के मूल्य का भाग हैं।

(3.2) ग़ैर-अनुवीक्षण अनुदानों (संग्रह निधि के अलावा) द्वारा प्राप्त स्थायी परिसंपत्तियों की पूँजी का मूल्य निर्धरण तदनुरूप जमा आरक्षित पूँजी पर आधरित है।

4. मूल्यह्रास

(4.1) मूल्यह्रास को आयकर के 1961 के अधिनियम में विनिर्दिष्ट लिखित मूल्यों/दरों के अनुरूप किया गया है, इसमें पुस्तकालय की पुस्तकों पर छूट है, जिन पर मूल्यह्रास की दर 10 प्रतिशत है।

(4.2) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों की बढ़ोतरी के संदर्भ में, मूल्यह्रास को परिसंपत्तियों की ब्लॉक पद्धति के आधार पर विचार गया।

(4.3) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों को कटौतियों के संदर्भ में, मूल्यह्रास को दर्शाए जाने की आवश्यता नहीं।

(4.4) सी.ए.जी. लेखा परीक्षा के अवलोकन के प्रकाश में 22.90 लाख रुपये की राशि (अनुसूची 8 देखें–स्थायी परिसंपत्तियाँ) को ख़ातों में दर्शाया गया है।

5. विविध व्यय

आस्थगित राजस्व व्यय गत 5 वर्षों के प्रारम्भ से नहीं लिखा गया।

6. बिक्री के लिए लेखा

बिक्री में उत्पाद शुल्क और बिक्री का कुल लाभ, रियायत तथा व्यापार छूट शामिल हैं।

7. सरकारी अनुदान/इमदाद

(7.1) वह सरकारी अनुदान जो कि संगठन की प्रवृत्ति (या प्रकृति) के हैं, जिन पर पूँजी लागत द्वारा परियोजनाओं को चलाया जाता है उन्हें पूँजी राजस्व माना गया है।

(7.2) विशिष्ट स्थायी परिसंपत्तियों पर दिए गए अनुदान के संदर्भ में, उन्हें उनसे संबंधित परिसंपत्तियों में लागत पर कटौती में दर्शाया गया है।

(7.3) सरकारी अनुदानों/इमदादों को लेखा उगाही के आधर पर किया गया है।

8. विदेशी मुद्रा संचालन

(8.1) विदेशी मुद्रा मेंकिया गया संव्यवहार, जिस तिथि पर लेन-देन दिया गया है, उस तिथि की विनिमय दर पर तय किया गया है।

(8.2) चालू परिसंपत्तियों, विदेशी मुद्र ऋण तथा चालू दायित्वों को वर्ष के अंत तक चलनेवाली विनिमय दरों में परिवर्तित किया गया है तथा यदि विदेशी मुद्रा दायित्व स्थायी परिसंपत्तियों से संबंधित हैं तो उन्हें प्राप्त लाभ/हानि में स्थायी परिसंपत्तियों की लागत में समायोजित किया गया है और अन्य मामलों में उन्हें राजस्व माना गया है।

9. पट्टा

पट्टों के किराए पट्टों की शर्तों के आधर पर ख़र्च किए गए हैं।

10. सेवा-निवृत्ति लाभ

(10.1) किसी कर्मचारी की मृत्यु/सेवा-निवृत्ति में दिए जानेवाले उपदान का दायित्व प्रोद्भूत है, उसके बीमांकित मूल्यांकन पर आधरित है।

(10.2) कर्मचारी को संचित अवकाश का भुगतान प्रोद्भूत है तथा इस बात को भी सुनिश्चित किया गया है कि संबंधित कर्मचारी (जो लाभ के अधिकारी/हक़दार हैं) को मिलनेवाले लाभ प्रत्येक वर्ष के अंत में मिले।

अनुसूची-26–प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ

1. प्रासंगिक दायित्व

(1.1) संगठन (अथवा व्यक्ति) के विरुद्ध किए गए दावों को ऋणों की पावती के रूप में नहीं दर्शाया गया है–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.2) निम्नांकित विवादास्पद मांगे :
आयकर–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
बिक्रीकर–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
नगरपालिका कर–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.3) संगठन द्वारा पार्टियों को दिए गए आदेशों का अनुपालन न किए जाने के विरुद्ध दावे–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)।

2. पूँजीगत प्रतिबद्धताएँ

पूँजी लेखा में उन अनुबंधों का अनुमानित मूल्य जो निष्पादित किए जाने हैं तथा जो उपलब्ध नहीं कराया गया, कुल अग्रिम रु. 776.64 लाख (गत वर्ष 776.64 लाख)।

3. पट्टा दायित्व

भविष्य में प्लॉट और यंत्रों की वित्तीय पट्टे पर की जानेवाली देख-रेख पर व्यय की जानेवाली राशि–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य) उपलब्ध नहीं कराई गई है।

4. 31-3-2018 को अक्षय निधि/उद्दिष्ट पूंजियों के निवेश का समाधान निम्न प्रकार किया गया :

निधि का नाम	अनुसूची सं.	राशि	निधियों का नाम	अनुसूची	राशि
संग्रह निधि	1	1,00,00,000	बैंक शेष	11ए	1,00,00,000
स्थायी परिसंपत्ति निधि	3	14,41,02,911	स्थायी परिसंपत्तियाँ	बी	14,41,02,911
प्रकाशन निधि	3	11,59,03,157	स्टॉफ प्रकाशन	11ए	11,59,03,157
सा.भ.नि./एन.पी.एस.	3	10,39,45,896	अवधिक जमा	9	8,87,85,425
			बैंक शेष	11ए	62,31,662
			निवेश पर प्रोद्भूत ब्याज	11बी	25,64,361
			सा.भ.नि. अग्रिम	11बी	60,53,360
			अन्य अग्रिम	11बी	3,11,088
कुल योग		**37,39,51,964**	**कुल योग**		**37,39,51,964**

5. चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण और अग्रिम

संगठन का मानना है कि सामान्य व्यापार के संदर्भ में चालू परिसंपत्तियों, ऋणों और अग्रिमों से उतना ही उगाही योग्य पैसा हे, जितना कि तुलन-पत्र के कुल योग में दर्शाया गया है।

6. मूल्यह्रास

फ्रलैटों के स्वामित्व के संदर्भ में वर्ष के दौरान भवनों पर मूल्यह्रास प्रभारित नहीं किया गया है, चूँकि अकादेमी प्रमाणिक मूलयांक से भूमि तथा भवन का मूल्यांकन प्राप्त करने की प्रक्रिया में अग्रसित है। मूल्यह्रास द्विभाजन अथवा मूल्यांकन के पश्चात ही दर्शाया जा सकता है।

7. सेवानिवृत्ति लाभ

सेवानिवृत्ति के लाभों के प्रति दायित्व यथा–मृत्यु/सेवानिवृत्ति पर दिए जानेवाले उपदान तथा कर्मचारी को संचित अवकाश के भुगतान के मिलने वाले लाभ, ग़ैर-योजनागत शीर्ष के अंतर्गत आवर्ती अनुदान के संदर्भ में देना आवश्यक नहीं है, जिसमें सेवानिवृत्त होनेवाले कर्मचारी को देय राशि तथा सेवानिवृत्त कर्मचारियों को मिलनेवाली अनुदान अवधि शामिल है।

8. कराधन

1961 के आयकर अधिनियम के अंतर्गत तीन कर योग्य राशि नहीं है, इसलिए आयकर का प्रावधन आवश्यक नहीं है।

9. विदेशी मुद्रा संव्यवहार

(9.1)	आयात के मूल्य की सी.आई.एफ. के आधर पर गणना :	शून्य
	तैयार सामान, कच्चा माल एवं अव्यव (परागमन सहित)	
	तथा पूँजीगत सामान की ख़रीद	
	भंडार, अतिरिक्त और उपभोज्य	
(9.2)	विदेशी मुद्रा में व्यय :	
(क)	विदेशों में पुस्तक मेलों तथा अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन–	
	राजस्व योजना के अंतर्गत	रु.95,292/-
(ख)	वित्तीय संस्थाओ/बैंकों को विदेशी मुद्रा में भेजी गई रकम और ब्याज भुगतान	शून्य
(ग)	अन्य व्यय :	
	कानूनी तथा व्यावसायिक व्यय	शून्य
	विविध व्यय	शून्य
	यात्रा व्यय	शून्य
(9.3)	अर्जन :	
	एफ.ओ.बी. के आधर पर निर्यात मूल्य	शून्य
(9.4)	लेखापरीक्षकों को पारिश्रमिक (सीएजी)	रु. 1,50,000/-

10. अकादेमी संस्कृति मं?ालय भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा पूर्णतः वित्त पोषित है। 31 मार्च 201 को प्राप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भूगतान लेखे के आधार पर अकादेमी द्वारा प्राप्त अनुदान/वित्तीय सहायता की सारांशित निम्नानुसार है–

विवरण	राजस्व वेतन	राजस्व सामान्य	राजस्व सी.सी.ए.	राजस्व एन.ई.	टी.एस.पी.	एफ़.ओ.आई.	एस.ए.पी.	योग
31/04/2017 को अव्ययित आदिशेष	8,26,963	24,47,520		99,79,555	17,96,868	-	-	1,50,50,9.6
परिवर्धन	16,07,10,000	12,95,26,000	1,00,00,000	3,00,17,000	82,03,000	14,29,500	11,25,000	34,10,10,500
अन्य परिवर्धन	-	1,98,81,392	-	-	-	-	-	3,13,41,845
राजस्व से प्राप्त	1,14,34,909	-	-	-	-	25,544	-	-
योग	**17,29,71,872**	**15,18,54,912**	**1,00,00,000**	**3,99,96,555**	**99,99,868**	**14,55,044**	**11,24,000**	**38,74,03,251**
व्यय	17,29,71,872	14,69,74,828	66,27,811	3,06,24,619	94,12,070	12,71,422	3,11,807	36,81,94,479
अन्य भुगतान	-	10,01,085	-	-	-	-	-	10,01,085
योग	**17,29,71,872**	**14,79,75,913**	**66,27,811**	**3,06,24,619**	**94,12,070**	**12,71,472**	**3,11,807**	**36,91,95,564**
31/03/2018 के अव्ययित अंत शेष	-	38,78,999	33,72,189	93,71,936	5,87,798	1,83,572	8,13,193	1,82,07,687

11. गत वर्ष के तदनुरूप आँकड़ों को जहाँ भी आवश्यक हो पुनर्वर्गीकृत/पुनर्व्यवस्थित किया गया है। नामकरण में गत वर्ष में बदलाव के कारण ग़ैर-योजना आंकड़े को योजना आंकड़े (जिसे अब राजस्व के नाम से बदला गया) के साथ विलय कर दिया गया है ताकि उन्हें तुलनीय बनाया जा सके।

12. अनुसूची 1 से 26 जिसमें, प्राप्ति और भुगतान, सा.भ.नि., तुलन पत्र, सा.भ.नि. प्राप्ति और भुगतान, 31.03.2018 को समाप्त वर्ष के तुलन-पत्र के संलग्नक एवं अभिन्न अंग हैं तथा आय और व्यय लेखा भी इसी तिथि को समाप्त वर्ष का संलग्नक एवं अभिन्न अंग है।

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	**घनश्याम शर्मा**	**बाबुराजन एस.**	**रेणु मोहन भान**	**के.एस. राव**
दिनांक : 6 जून 2018	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव)	(उपसचिव)	(सचिव)